अथर्ववेदीय विष्णु सर्वाद्भुत शान्ति यज्ञ

अथर्ववेदीय विष्णु सर्वाद्धुत शान्ति यज्ञ

अथर्ववेदीय विष्णु सर्वाद्भुत शान्ति यज्ञ

अथर्ववेदीय विष्णु सर्वाद्भुत शान्ति यज्ञ

अनुक्रमणिका

अथर्ववेदीय विष्णु सर्वाद्धुत शान्ति यज्ञ

शान्ति का नाम	फल	मन्त्रः	जप सं.	विधान		पंडितों की संख्या	सामग्री	उद्धरण
				आहुति संख्या	समय			
विष्णु शान्ति	युद्ध विषयक आतंक निवारण तथा अभयता प्राप्ति	ॐ इदं विष्णुर्वि चंक्रमे त्रेधा नि दधे पदा। समूढमस्य पांसुरे।(अथर्ववेद ७.२६.४)	कुल ८००० जप प्रतिदिन १६०० जप करना चाहिए।	८०० प्रतिदिन १६० आहुति	५ घंटे ५ दिन	५+२	आज्य एवं चरु	अथर्व परिशिष्ट ग्रन्थ का ६७ वां परिशिष्ट, ५वां खण्ड (श्लोक १ से ४)
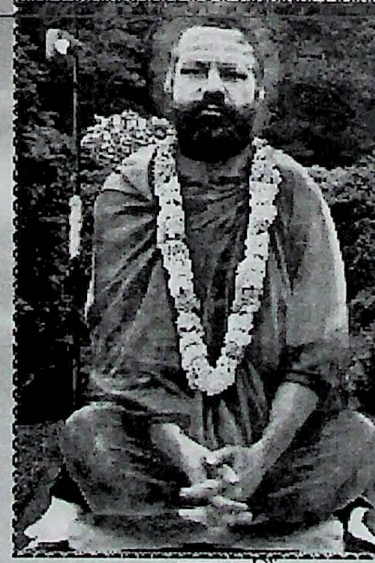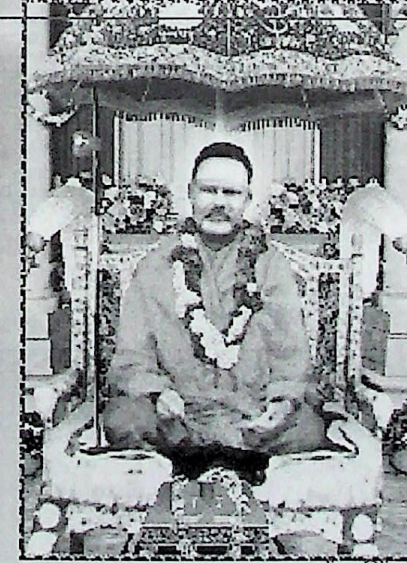
श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य्यपदवाक्यप्रमाणपारावारपारीणयमनियमासनप्राणायामप्रत्याहारधारणाध्यानसमाध्यष्टाङ्गयोगानुष्ठाननिष्ठतपश्चर्य्याचरण-चक्रवर्त्यनादिगुरुपरम्पराप्राप्तवैदिकदर्शनमतस्थापनाचार्य्यसकलनिगमागमसारहृदयवैदिकमार्गप्रवर्तकसर्वतन्त्रस्वतन्त्र-चातुर्वर्ण्यशिक्षक-श्रीमन्महाराजाधिराजगुरुभूमण्डलाचार्य्यजगद्गुर्वनन्तश्रीविभूषितश्रीमदादिशङ्कराचार्य्या:भगवत्पादपद्मभृङ्गायमाना:श्रीमदनेकशासनतिरस्कृतान्तेवासि-जनमनस्तमस्स्तोमा:शश्वत्सार्वभौमविश्वजनीनसनातनधर्मसंरक्षणबद्धपरिकरा:परापरविद्याविद्योतितान्त:करणा: समस्तसम्प्रदायसमन्वयसाधनदत्त-चित्ताविविधविरुदावलिविराजमानमानोन्नता: अलकनन्दागङ्गातीरनिवास्युत्तराम्नाय श्रीमज्ज्योतिष्पीठाधीश्वरा: विश्वप्रशासनस्य संविधानरूपे नित्यापौरुषेय-वैदिकवाङ् मयप्रतिष्ठापका:, प्रत्येकव्यक्तीनामात्मचेतनासु नित्यापौरुषेयवैदिकवाङ्मयम् जागृतकर्तार:, आत्मैवेदं सर्वम्-सर्वं खल्विदं ब्रह्म-अहं ब्रह्मास्मीतिविकासस्यचरमसीमाया: सुगममार्गप्रकाशका:, भावातीतध्यानप्रकाशका:, समस्तऋषिमहर्षिज्ञानीविज्ञानीनांचाराध्यचरणा:, अखिलविश्व-ब्रह्माण्डप्रशासनस्यसंविधानस्वरूपेनित्यापौरुषेयवैदिकवाङ्मयम् इति प्रमाणितकर्तार:, बाल्यकालेस्वनामधन्या:, राजारामेति नामका:, विश्वव्यापीराम-राज्यस्यप्रेरणाप्रदायका:, परमगुरुदेवा:, श्रीमद्ब्रह्मानन्दसरस्वतीस्वामिवर्या: विजयन्तेतराम्।
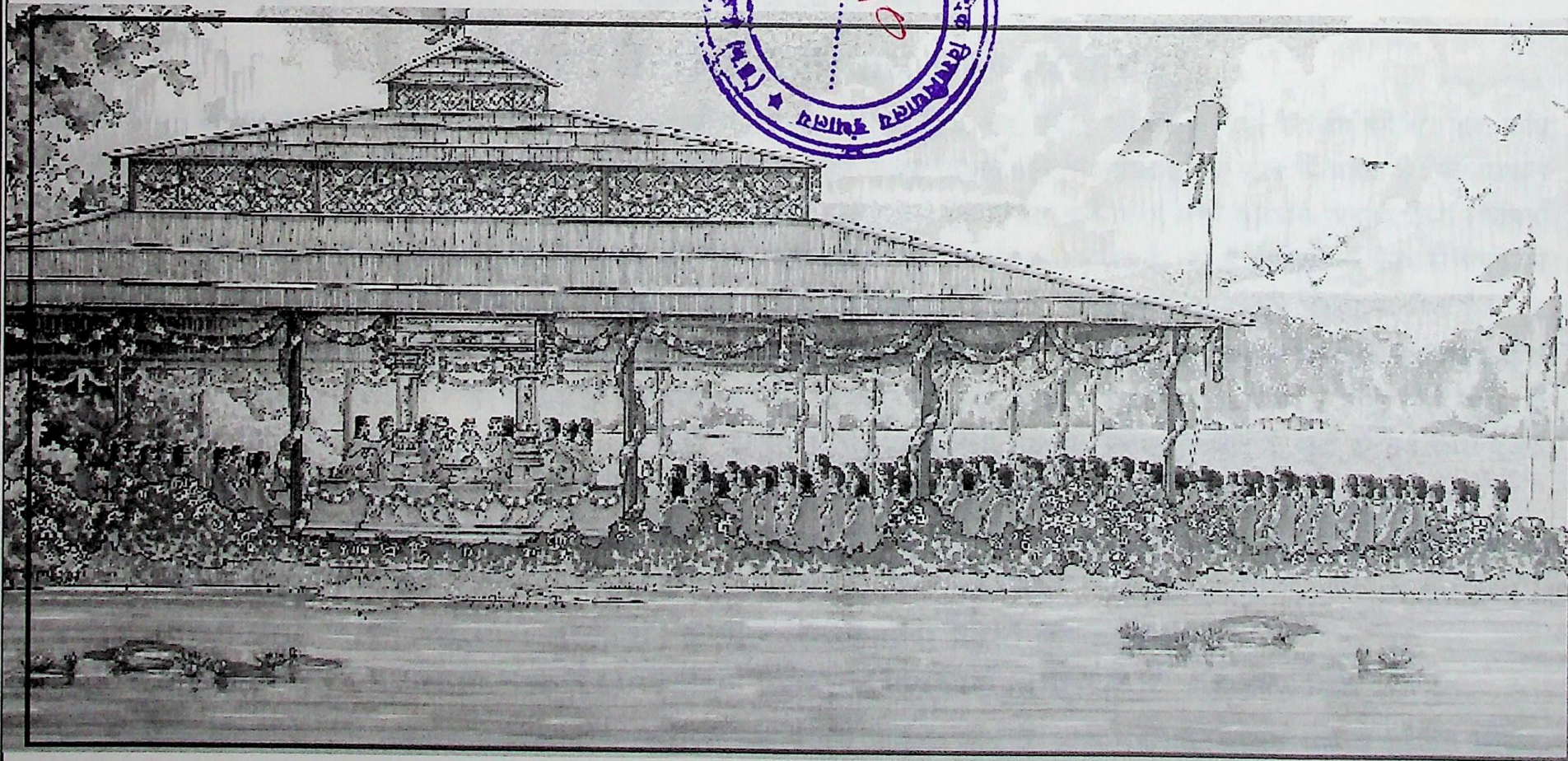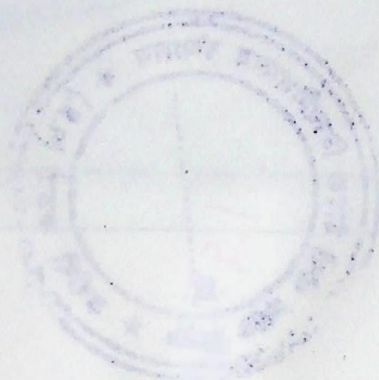
याज्ञिकों के लिए अनिवार्य कुछ विचार

प्रयोग सीखने के उपयोग—सभी यज्ञ कार्यों का प्रयोजन, देवताओं को प्रसन्नकर उनसे विश्व, राष्ट्र, प्रदेश, परिवार या स्वयं के लिए अपेक्षित फल प्राप्ति है। सामान्य पूजनादियों से सीमित फलप्राप्ति होती है। परन्तु यज्ञ सामूहिक, गहन एकाग्र विधान होने के कारण इसका फल भी अनन्त है। एक सफल शस्त्रचिकित्सक जिस प्रकार लगन से कठिन शारीरिक कष्ट को दूर करता है, उसी प्रकार एक सफल प्रयोगकर्ता अपने शास्त्रोक्त अनुभव सिद्ध (ऋषियों से) प्रयोग द्वारा वांछित फल दिलाने में समर्थ होता है। इसके अतिरिक्त प्रयोग सीखने का एक और भी उपयोग है, वह है देवताओं के क्रोध से अपने को बचाना। शास्त्रातिक्रमण कर यज्ञ कराने वाला आचार्य "यज्ञकर्ता विनश्यति" विनाश को प्राप्त होता है। अतः प्रयोग की शुद्धता अत्यन्त अपेक्षित है।

प्रयोग सीखने के लिए अर्हता—प्रयोग में जिन वैदिक मन्त्रों का उपयोग होता है उन सभी मन्त्रों का गुरुमुख से उच्चारण अनिवार्य है। प्रयोग कर्ता निष्पाप हो इसलिए त्रिकाल सन्ध्यावन्दन करने वाला हो। आडम्बर की ओर महत्व न देकर शास्त्राधारित सामग्रियों के प्रयोग में निष्ठा रखने वाला हो अधिक समय तक बैठने एवं समय-समय पर स्नानादि कर्म करने की क्षमता हो। प्रयोग कर्ता निरन्तर त्रिकालसन्ध्यादि से शुद्ध हो एवं जिस देवता सम्बन्धी यज्ञ करते है, उस देवता विषयक मन्त्र, जप आदियों से उस देवता के निकट हो एवं शक्तिमान भी हो।

प्रयोगकर्ता की दिनचया—दिनचर्या का अत्यधिक महत्व है। दिनचर्या शुद्ध होने से प्रयोगकर्ता निष्पाप एवं शक्तिसंपन्न होता है। सुबह उठते ही प्रातः स्मरण स्वपरम्परानुसार करना चाहिये।

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती। करमूले स्थिता गौरी प्रभाते करदर्शनम्॥
समुद्रवसने देवि पर्वतस्तन मण्डले। विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे॥ *(पौराणिक, संग्रह स्मृति)*

प्रातः स्मरण के बाद शौच, दन्त धावनादि से निवृत्त होकर स्नान के लिए चलना चाहिये। शौच के समय यज्ञोपवीत दक्षिण कर्ण में लपेटना चाहिये,

कारण दक्षिण कर्ण में गङ्गादि सभी तीर्थ वास करते हैं। उसके संसर्ग से यज्ञोपवीत पवित्र रहता है।

स्नान विधि—वारुणेनैव विप्रस्तु स्नातस्सर्वत्र शस्यते। अशिरस्कं भवेत् स्नानं स्नानाशक्तौ विधीयते॥ *(आश्वलायन स्मृति)*

नदी जल में ब्राह्मणों को स्नान करना श्रेष्ठ है। यदि शरीर स्नान में आरोग्य न रहे तो कण्ठ तक के भाग का स्नान करना चाहिये।

स्नानं तु द्विविधं प्रोक्तं गौणं मुख्य प्रभेदतः। तयोस्तु वारूणं मुख्यं तत् पुनः षड्विधं स्मृतम्॥ *(स्मृतिमुक्तावली शंखः)*

स्नान के दो भेद हैं, एक गौण और दूसरा मुख्य। इसमें नदी स्नान मुख्य है। उसके छः भेद है।

नित्यं नैमित्तिकं काम्यं क्रियाङ्गं मलकर्षणम्। क्रियास्नानं तथा षष्ठं षोढाः स्नानं प्रकीर्तितम्॥ *(स्मृतिमुक्तावली शंखः)*

१. नित्य स्नान — प्रतिदिन करने वाला स्नान।
२. नैमित्तिक — विशेष पूजन आदि से पूर्व करने वाला स्नान।
३. काम्यं — इच्छापूर्ति के लिए तीर्थ स्नान।
४. क्रियाङ्ग स्नानं — विशेष कार्य के अङ्गभूत दुबारा स्नान।
५. मलकर्षणम् — शरीर अशुद्धि निवारण के लिए।
६. क्रिया स्नानं — अवभृथ स्नान आदि।

शीतमुष्णोदकात् पुण्यं अपारक्यं परोदकात्। भूमिष्ठमुधृतात् पुण्यं ततः प्रस्त्रवणोदकम्॥ *(निर्णय सिन्धौ मार्कण्डेयः)*

गरम पानी से ठण्डा पानी श्रेष्ठ है। दूसरे के कुओं आदि के जल से अपने घर का जल श्रेष्ठ है। कुऐं से खींचे गये पानी से भूमि पर स्थित जल में स्नान श्रेष्ठ है।

ततोऽपि सारसं पुण्यं ततः पुण्यं नदी जलम्। तीर्थतोयं ततः पुण्यं महानद्यम्बु पावनम्॥ *(निर्णय सिन्धौ मार्कण्डेयः)*

उससे सरोवर का जल पुण्यकर है, उससे नदी जल पुण्य है, उससे तीर्थ जल (पुष्करादि) पवित्र है, उससे भी श्रेष्ठ महानदियों का जल है। (जो नदियाँ समुद्रो में जाती हैं वे महानदियाँ हैं। उदाहरण—गङ्गा-कावेरी आदि।) सिर डुबोकर किया स्नान श्रेष्ठ है, अनिवार्य में कण्ठ तक का स्नान कर सकते हैं। स्नान के समय अघमर्षण मन्त्रों का पाठ कर सकते हैं।

वस्त्र धारण विधिः—याज्ञिकों के लिए, प्रयोग कर्त्ताओं के लिए वस्त्र के नियम भी हैं।

वस्त्र विधिः—स्वयं धौतेन कर्तव्याः क्रियाधर्म्याः विपश्चिता। न तु नेजक धौतेन नाहतेन न कुत्रचित्॥ *(स्मृतिमुक्तावल्यां पुलस्त्यः)*

अपने धुले वस्त्र क्रियाओं में श्रेष्ठ माना गया है। धोबी द्वारा धुला वस्त्र एवं नाहत वस्त्र का प्रयोग नहीं करना चाहिये। (नाहत वस्त्र का विवरण आगे है)

क्षौमं वासः प्रशंसन्ति तर्पणे सदृशं तथा। काषाय धौतवस्त्रं च नोल्बणं तत्र कर्हिचित्॥ *(स्मृति संग्रह)*

पूजन एवं तर्पण कार्यों में रेशम के मडी वस्त्र, एवं आँचल युक्त गेरुए रंग के धुले वस्त्र, नीले वस्त्र श्रेष्ठ है, आँखों को चुंधियाने वाले रंग के वस्त्र निषिद्ध हैं।

आहतं वस्त्रम्—ईषाद् धौतं नवं श्वेतं सदृशं यन्न धारितम्। आहतं तद् विजानीयात् सर्व कर्मसुपावनम्॥ *(याजुष प्रयोगरत्ने कपर्दि)*

एक बार धुला हुआ नया सफेद वस्त्र, आँचल वाला, जो कभी न पहना हो ऐसे वस्त्र आहत वस्त्र कहलाता है सभी कर्मों में यह वस्त्र श्रेष्ठ हैं।

अलाभे धौतवस्त्रस्य शाणक्षौमाविकानि च। *(स्मृति मुक्तावल्यां वस्त्र धारण प्रकरण)*

धुले वस्त्र के प्राप्ति न होने पर बोरे के धागों से बना वस्त्र, रेशम का वस्त्र अथवा ऊनी वस्त्र पहन सकते हैं।

होम देवार्चनाद्यासु क्रियासु पठने तथा। नैक वस्त्रः प्रवर्तेत द्विजो नाचमने जपे॥ *(स्मृति मुक्तावल्यां, वस्त्र धारण प्रकरण)*

होम, देवतापूजन, यज्ञादि, अध्ययन में, आचमन करते समय एवं जप करते समय पण्डित को दो वस्त्र धारण करना चाहिये एक अधोवस्त्र एक उत्तरीय, शीतप्रदेश में उत्तरीय, के ऊपर ऊनी वस्त्र ओढ़ सकते हैं।

आचमन विधिः—आचमन किसी भी क्रिया से पूर्व आत्म शुद्धि के लिए किया जाता है। १. श्रौताचमन, २. स्मार्त्ताचमन, ३. पौराणिकाचमन। स्मार्ताचमन एवं पौराणिकाचमन अधिक प्रचलित है।

विप्रस्य दक्षिणे पाणौ मूलेङ्गुष्ठस्य नित्यदा। स्याद् ब्रह्मतीर्थ मध्ये च आग्नेय मघनाशनम्॥ *(अश्वलायन स्मृति)*

ब्राह्मणों के दाहिने हाथ के अङ्गुष्ठ के नीचे मणि बन्ध के ऊपर सर्वदा ब्रह्मतीर्थ रहता है। दाहिने हाथ के बीच में पापों को नाश करने वाला आग्नेय तीर्थ है। (अग्निका)

मध्ये चाङ्गुष्ठ तर्जन्योः पैत्रं तीर्थं द्विजस्य तु। आर्षं कनिष्ठिकामूले दैवमग्राङ्गुलीषु वै॥ *(अश्वलायन स्मृति)*

दाहिने हाथ के अङ्गुठे एवं तर्जनी के बीच में पितृ तीर्थ है। पितरों को जल यहाँ से देते हैं। कनिष्ठिका के नीचे ऋषि तीर्थ है। ऋषियों को गुरुओं को जल इसी से दिया जाता है। सभी अङ्गुलियों के अग्र भाग से देवताओं को जल देते हैं। वहाँ देव तीर्थ है।

प्रपिबेत् ब्रह्मतीर्थेन जलेनाचमनं चरन्। पीत्वान्येन जलं पाप्मा तीर्थेनेति मतिर्मम॥ *(अश्वलायन स्मृति)*

आचमन करने वाले पण्डित को ब्रह्मतीर्थ से ही आचमन करना चाहिये, दूसरे तीर्थ से आचमन करने पर पण्डित पापभाजन होता है। कुछ लोग आचमन करते समय अग्नि तीर्थ का जल पीते हैं। यह सर्वथा उचित नहीं है। आचमन का जल हृदय तक पहुँचे इतना होना चाहिये। आचमन में स्वाहा से अन्त होने वाले मन्त्रों से जल पीया जाता है। नमः शब्द से अन्त होने वाले मन्त्रों से जल छोड़ा जाता है।

आसनम्—आस्यते यस्मिन् इति आसनम्।

सन्ध्यादि नित्य कर्मों के लिये, पूजन, यज्ञादि कर्मों के लिए प्रयोगकर्ता के बैठने का आसन का भी शास्त्रोक्त महत्व है।

श्रेष्ठ आसन—चैलाजिन कुशोत्तरम्।

पहले कुशासन, उसके ऊपर कृष्णाजिन (काले हिरण का चर्म), उसके ऊपर वस्त्र। अगर ये आसन उपलब्ध न हो तो—

कौशेयं कंबलं वापि अजिनं पट्टमेव च। दारुजं तालपत्रं च आसनं षड्विधं स्मृतम्॥ *(ब्रह्मकर्मसमुच्चय)*

१. कुश से बना दर्भासन, २. कम्बल, ३. हिरण का चर्म, ४. रेशम का वस्त्र,

५. लकड़ी का आसन, ६. ताडपत्र का आसन इनमें किसी का भी उपयोग कर सकते हैं।

आसनारूढ पादस्तु प्रौढपादस्स उच्यते। प्रौढपादैः कृतं कर्म सर्वं तत् निष्फलं भवेत्॥ *(वीरमित्रोदयपरिभाषा)*

आसन के ऊपर किसी भी स्थिति में चरण स्पर्श नहीं होना चाहिये। चरण स्पर्श होने पर संपूर्ण कर्म निष्फल हो जायेगा। बैठने पर चरण आसन से बाहर होना चाहिये। पांव रखने के लिए अलग से चौकी रख सकते हैं। पूर्णाहुति आदि के समय एवं सन्ध्या में खड़े रहते समय भी आसन पर पैर नहीं रखना चाहिये। पूजन के समय, सन्ध्या के समय एवं यज्ञों में इसका विशेष रूप से पालन करना चाहिये।

प्राणायाम—यह शरीर एवं मन की शुद्धि के लिए हैं।

सव्याहृतिं सप्रणवां सावित्रीं शिरसा सह। त्रिःपठेदायत प्राणः प्राणायामस्स उच्यते॥ *(अश्वलायन स्मृति-४-८५)*

इसके दो भेद और तीन अङ्ग है।

१. समन्त्रक प्राणायामः—यह केवल सन्ध्यावन्दन करने वाले द्विजों के लिए है। इसमें सप्तव्याहृति, प्रणव, गायत्री एवं शिरस् मिलाकर प्राणायाम करते हैं। (आगे गणेश पूजन में इसका मन्त्र है।)

२. अमन्त्रक प्राणायामः—और सभी के लिए मन्त्र रहित यह प्राणायाम है।

इसके पूरक, कुम्भक, एवं रेचक अङ्ग है। अशौच में समन्त्रक प्राणायाम पण्डित के लिए निषिद्ध है। प्राणायाम मन्त्रों की आवृत्ति एक ही स्थिति में होनी चाहिये। रेचक एवं पूरक में कठिन होने के कारण कुम्भक में (जब श्वास रुका रहता है) आवृत्ति करना उचित है। सम्भव हो तो शेष अवस्थाओं में भी कर सकते हैं। एक मन्त्र को दो अवस्थाओं की सन्धि में नहीं जपना चाहिये।

सन्ध्या वन्दनः—सन्ध्याहीनोऽशुचिर्नित्यं अनर्हः सर्वकर्मसु। *(अश्वलायन स्मृति-४-१४५)*

त्रिकाल सन्ध्या न करने वाला अशुचि है। सभी कार्यों के लिए अनर्ह है। ऐसे व्यक्ति द्वारा किये गये अश्वमेधादि यज्ञ भी निरर्थक होते हैं। स्व स्वशाखानुसार सन्ध्यावन्दन करना चाहिये। उसमें कुछ ज्ञातव्य विषय—

कृताञ्जलिर्जपेद् देवीं सावित्रीं वाग्यतः स्थितः। *(अश्वलायन स्मृति ४-१४५)*
स्नाने दाने जपे होमे विवाहे भोजने बुधः। *(अश्वलायन स्मृति ४-८६)*
विरामूत्रोत्सर्जनेऽर्चाया मौनी स्यात् दन्तधावने॥ *(याजुष प्रयोग रत्नाकर-प्रयोग प्राणवल्लभे)*

मौन भाव से अञ्जली बाँधकर सावित्री का स्मरण करना चाहिये, स्नान, दान, जप, होम, भोजन, शौच, पूजा एवं दन्तधावन में मौन रहना चाहिये।

निषण्णो यो जपेत् प्रातः प्रलपन् प्रह्ववानपि। तत्काले नान्य मन्त्रांश्च तस्य निष्फलतामियात्॥ *(अश्वलायन स्मृति ४-१००)*

प्रातः जो पण्डित बैठकर, परस्पर बात करते हुए, झुककर, बीच-बीच में दूसरे मन्त्र जपते हुए जो गायत्री जप करते है उनका सम्पूर्ण कर्म निरर्थक हो जाता है।

आपन्नश्चाशुचिः काले तिष्ठन्नपि जपेद् दश। नक्षत्रास्तमये प्रातः सावित्रीं मनसा सकृत्॥ *(अश्वलायन स्मृति ४-१०१)*

जब कोई आपत्ति हो तब भी खड़े रहकर दस गायत्री करना चाहिये। नक्षत्र अस्त हो गये हो ऐसी स्थिति में भी कम से कम एक बार सावित्री को आपद्ग्रस्त द्वारा स्मरण अवश्य करना चाहिये।

न प्रावृतः शयानश्च नोष्णीषी न च पादुकी। शूद्राद्यैः प्रेक्षितश्चेक्षन् नान्तरिक्षं जपेन् मनुम्। *(अश्वलायन स्मृति ४-१०३)*

गायत्री जाप करते समय न तो मुँह ढकना चाहये, न हि लेटे हुए जप करना चाहिये, न पगडी बाँधकर जप करना चाहिये, शूद्रादियों को देखते हुए जप नहीं करना चाहिये।

उत्तमा तारकोपेता मध्यमाऽव्यक्त तारका। अधमा सूर्यसहिता प्रातः सन्ध्या त्रिधा मता॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-सन्ध्या प्रकरण)*

नक्षत्र युक्त समय प्रातः उत्तम है, नक्षत्र लुप्त होने पर मध्यम एवं सूर्य उदित होने पर की गयी संध्या अधम है।

उत्तमा सूर्यसहिता मध्यमाऽव्यक्ततारका। अधमा तारकोपेता सायं सन्ध्या त्रिधा मता॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-सन्ध्या प्रकरण)*

सूर्य के रहते की गयी सायं सन्ध्या उत्तम है, नक्षत्र प्रकट होने से पूर्व की गयी सन्ध्या मध्यम है। नक्षत्रों के रहने पर की गयी सन्ध्या अधम है।

सन्ध्या में जप विधान एवं जप संख्या—

जपेद् द्विजः सदा मौनी पवित्रःस्यात्तु जापकः। ऋजुर्नैश्चल्यवान् तिष्ठन् जपेत् प्रातः कृताञ्जलिः॥ *(अश्वलायन स्मृति ४-६६)*

जप करते समय हमेशा मौन रहना चाहिये। पवित्र रहना चाहिये, सीधे रहकर निश्चल स्थिति में स्थिर रहकर, हाथ जोड़कर खड़े होकर प्रातः काल में जप करना चाहिये।

सहस्त्रं वा तदर्धं वा शक्त्यात्वष्टोत्तरं शतम्। एकपादेन वा तिष्ठन् एकाङ्गुष्ठेन वा जपन्॥ *(अश्वलायन स्मृति ४-६७)*

एक हजार जप, पाँच सौ जप, शक्ति कम रहने पर १०८ जप खडे रहकर अथवा एक पैर पर खडे रहकर या अङ्गुठे के आधार पर खड़े होकर जप करना चाहिये।

भस्मादि धारणम्—

ललाटे मूर्ध्नि कण्ठे च विलिखेत् गोपिचन्दनम्। भस्मना वा त्रिपुण्ड्रं च मुद्भिश्चैवोर्ध्वपुण्ड्रकम्॥ *(अश्वलायन स्मृति ७-१५५)*

माध्व सम्प्रदाय वाले मस्तक में सिर के दाहिने ओर एवं कण्ठ में गोपि चन्दन से मुद्रा धारण करना चाहिये। यजुर्वेदियों के लिये भी "मानस्तोके" आदि मन्त्रों से अभिमन्त्रितकर धारण करें। स्मार्त सम्प्रदाय वाले को तिर्यक् त्रिपुण्ड्र धारण करना चाहिये। मानस्तोके आदि मन्त्रों से भस्म को अभिमन्त्रित कर धारण करना चाहिये। श्रीवैष्णव सम्प्रदाय वाले तिरुमण (पवित्र मिट्टी) से उर्ध्व पुण्ड्र लगाना चाहिये।

अपवित्रेन यज्जप्तं अस्नातेन कृतं हुतम्। यच्च शून्य ललाटेन तदत्यल्प फलं भवेत्॥ *(अश्वलायन स्मृति १०-१२५)*

अपवित्र व्यक्ति द्वारा किया गया जप, स्नान न किये व्यक्ति द्वारा किया होम, मस्तक में स्वसम्प्रदाय चिह्न से रहित व्यक्ति द्वारा किये गये सभी पूजन अत्यल्प फल देने वाले होते हैं।

सदोपवीतिना भाव्यं सदा बद्ध शिखेन च। विशिखो व्युपवीतश्च यत्करोति न तत् कृतम्॥ *(अश्वलायन स्मृति)*

प्रयोगकर्ता को सर्वदा यज्ञोपवीत एवं शिखा धारण करना चाहिये। ऐसा न करने पर जो कर्म किया गया वह न करने के बराबर अर्थात् व्यर्थ है।

यज्ञोपवीते द्वे धार्ये श्रौते स्मार्ते च कर्मणि। तृतीयमुत्तरीयार्थे वस्त्राभावे चतुर्थकम्॥ *(स्मृतिमुक्तावल्यां पुलस्त्यः)*

श्रौत-स्मार्त कर्म करने वाले ब्रह्मचारियों को एक यज्ञोपवीत और गृहस्थों को दो यज्ञोपवीत धारण करना चाहिये। उत्तरीय के न रहने पर उत्तरीय के बदले तीसरा यज्ञोपवीत धारण करना चाहिये।

दैवकर्म उपवीति, पितृकर्म प्राचीनावीति। ऋषिकर्म मानुषे कर्म निवीतिः॥ *(वचन)*

दैवकर्म करते समय यज्ञोपवीत बायें भुजापर, पितृकर्म करने पर यज्ञोपवीत दाहिने भुजा पर एवं ऋषि मनुष्य कर्म में निवीति याने हार जैसे डालना चाहिये।

जप माला—अङ्गुलीभिः प्रजपतस्त्वेकस्यैक गुणं भवेत्। ब्रह्मैरानन्त्यमाप्नोति रौद्रैश्च मणिभिर्द्विजः॥ *(अश्वलायन स्मृति ४-६४)*

अङ्गुलियों से जप करने पर एक जप का एक फल मिलता है। ब्राह्मै एवं रुद्र मणियों से जपने पर अनन्त फल मिलता है।

ब्राह्मः कुशमयो रौद्रो रुद्राक्षः पापनाशनः। सावित्र्यास्तु जपस्ताभ्यां मेकस्त्वानन्त्यमृच्छति॥ *(अश्वलायन स्मृति ४-६५)*

कुश से बनी माला ब्राह्म कहलाता है, रुद्राक्ष से बनी माला रौद्र कहलाता है। इन दो मालाओं से किया गया गायत्री जप अनन्त फल देता है।

प्रथम दिन

पवित्र नदी, जलाशय या तीर्थ से जल भरने जाने से पहले यज्ञ मराडप में—भू-शुद्धि,देह शुद्धि, आचमन, पवित्र धारण, प्राणायाम, क्षेत्र देवता प्रार्थना, गणपति प्रार्थना, नदी की ओर प्रस्थान नदी पर पहुँचकर: देह शुद्धि, आचमन, पवित्र धारण, प्राणायाम, शिखाबन्धन, संकल्प, गुरु प्रार्थना, गणपति प्रार्थना, नदी में पूजन, षोडशोपचार पूजन (श्रीसूक्त विधान से) ध्यान, आवाहन, आसन, पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, यज्ञोपवीत, आभरण, गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल, नीराजन, मन्त्र पुष्प, नमस्कार, प्रसन्नार्घ्य, प्रार्थना, सर्वोपचार पूजा, इसके पश्चात नदी से कलश में जल भरना है। उस कलश में वरुण का आवाहन, उसके बाद शान्ति पाठ करते हुए मराडप प्रवेश।

भू-शुद्धि— ॐ स्योनास्मै भव पृथिव्यनृक्षरा निवेशनी। यच्छांस्मै शर्म सप्रथाः॥ *(अथर्ववेद १८.२.१९)*
इस मन्त्र से जल प्रोक्षण करने से भूमि शुद्ध होती है।

देह शुद्धि—ॐ या आपो याश्च देवता या विराड् ब्रह्मणा सह। शरीरं ब्रह्म प्राविशच्छरीरेऽधि प्रजापतिः॥ *(अथर्ववेद ११.८.३०)*

आचमन मन्त्र—ऋग्वेदाय स्वाहा। यजुर्वेदाय स्वाहा। सामवेदाय स्वाहा। (स्वाहा मन्त्र से जल पीना चाहिये।)
अथर्ववेदाय नमः। इतिहास पुराणेभ्यो नमः। अग्नये नमः। वायवे नमः। प्राणाय नमः। सूर्याय नमः। चन्द्राय नमः। दिग्भ्यो नमः। इन्द्राय नमः। पृथिव्यै नमः। अन्तरिक्षाय नमः। दिवे नमः। ब्रह्मणे नमः। विष्णवे नमः। सदाशिवाय नमः। द्विराचम्य .. इस प्रक्रिया को दुबारा करना चाहिये।

पवित्र धारणम्— ॐ सुतासो मधुमत्तमाः सोमा इन्द्राय मन्दिनः। पवित्रवन्तो अक्षरन्देवान्गच्छन्तु वो मदाः॥ *(अथर्ववेद २०.१३७.४)*
ॐभूर्भुवः स्वः कहकर जल सिञ्चन करें॥ (इन मन्त्रों से पवित्र शुद्धिकर धारण करना चाहिये आसन के नीचे दो कुश डाल लेना चाहिये।)

प्राणायाम—प्रणवस्य परब्रह्म ऋषिः, दैवी गायत्री छन्दः, परमात्मा देवता प्राणायामे विनियोगः।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योतीरसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवस्वरोम्। *(ऋग्वेद ३.६२.१०)*

(रेखाङ्कित मन्त्र को तीन बार कुम्भक में जप करना चाहिये।)

करन्यासः– ॐ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ तर्जनीभ्यां नमः। ॐ मध्यमाभ्यां नमः। ॐ अनामिकाभ्यां नमः। ॐ कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

अङ्गन्यास, हृदयादिन्यासः–ॐ हृदयाय नमः। ॐ शिरसे स्वाहा। ॐ शिखायै वषट्। ॐ कवचाय हुम्। ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ अस्त्राय फट्। ॐ भूर्भुवः स्वरोमिति दिग्बन्धः

क्षेत्र देवता पूजनम्

परिवार में या सामूहिक रूप में जो भी शुभकार्य किया जाता है, वह निर्विघ्नतया समाप्त हो उसके लिए क्षेत्र देवता पूजन सबसे पहले करना चाहिये। प्रत्येक क्षेत्र के प्रधान देवता अलग है। अतः उस क्षेत्र के जो देवता है उनका प्रथम पूजन आवश्यक है। उस क्षेत्र के अर्चक स्वतः पूजन करते हैं, अतः हमें केवल फल समर्पण कर प्रार्थना करनी चाहिये। **पूर्ण फल में**—दो नारियल, दो केले, पुष्प एवं दक्षिणा, मङ्गलद्रव्य।

अर्पण मन्त्र—**ॐ पुष्पंवतीः प्रसूमंतीः फलिनीरफला उत। संमातरं इव दुह्रामस्मा अरिष्टतांतये ॥** *(अथर्ववेद ८.७.२७)*

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव। तेन मे सफलावाप्तिर्भवेद् जन्मनि जन्मनि ॥ *(प्रयोग संग्रह)*

ॐ स्थान देवताभ्यो नमः। पूर्णफलं समर्पयामि।

तीर्थ गमन से पहले इसे संपन्न करना चाहिये। किसी भी स्थिति में इसका निराकरण नहीं करना चाहिये।

गणेश प्रार्थना—सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः। लम्बोदरश्च विकटो विघ्नराजो विनायकः॥

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः। द्वादशैतानि नामानि यः पठेत् श्रृणुयादपि॥

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा। सङ्ग्रामे संकटेचैव विघ्नस्तस्य न जायते॥

शुक्लांबरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यातेत्सर्व विघ्नोपशान्तये॥ (याजुषपूर्वप्रयोगरप्राकर)

ॐ इमा या ब्रह्मणस्पते विषूचीर्वात ईरते। सध्रीचीरिन्द्र ताः कृत्वा मह्यं शिवतमास्कृधि
स्वस्ति नो अस्त्वभयं नो अस्तु नमोऽहोरात्राभ्यामस्तु॥ (अथर्ववेद १९.८.६)

(इन मन्त्रों से गणपति प्रार्थना कर पुष्पाक्षत छोड़ना चाहिये।)

नदी की ओर प्रस्थान, नदी पर पहुँचकर-देह शुद्धि—ॐ या आपो याश्च देवता या विराड् ब्रह्मणा सह।
शरीरं ब्रह्म प्राविशच्छरीरेऽधि प्रजापतिः॥ (अथर्ववेद ११.८.३०)

(इन मन्त्रों से देहशुद्ध कर आगे आचमन से गणेश पूजन प्रारम्भ करें।)

आचमन मन्त्र—ऋग्वेदाय स्वाहा। यजुर्वेदाय स्वाहा। सामवेदाय स्वाहा। (स्वाहा मन्त्र से जल पीना चाहिये।)
अथर्ववेदाय नमः। इतिहास पुराणेभ्यो नमः। अग्नये नमः। अग्नये नमः। वायवे नमः। प्राणाय नमः। सूर्याय नमः। चन्द्राय नमः। दिग्भ्यो नमः। दिग्भ्यो नमः। इन्द्राय नमः। इन्द्राय नमः। पृथिव्यै नमः। पृथिव्यै नमः। अन्तरिक्षाय नमः। अन्तरिक्षाय नमः। दिवे नमः। ब्रह्मणे नमः। विष्णवे नमः। सदाशिवाय नमः। द्विराचम्य .. इस प्रक्रिया को दुबारा करना चाहिये।

पवित्र धारणम्—ॐ सुतासो मधुमत्तमाः सोमा इन्द्राय मन्दिनः। पवित्रवन्तो अक्षरन्देवान्गच्छन्तु वो मदाः॥ (अथर्ववेद २०.१३७.४)
ॐभूभुर्वः स्वः कहकर जल सिञ्चन करें॥ (इन मन्त्रों से पवित्र शुद्धिकर धारण करना चाहिये आसन के नीचे दो कुश डाल लेना चाहिये।)

प्राणायाम—प्रणवस्य परब्रह्म ऋषिः, दैवी गायत्री छन्दः, परमात्मा देवता प्राणायामे विनियोगः।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योतीरसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवस्वरोम्। (ऋग्वेद ३.६२.१०)

(रेखाङ्कित मन्त्र को तीन बार कुम्भक में जप करना चाहिये।)

शिखाबन्धनम्—

ऊर्ध्वकेशि विरूपाक्षि मांसशोणित भक्षणे। तिष्ठ देवि शिखाबन्धे चामुण्डे ह्यपराजिते॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

(इस मन्त्र से शिखाबन्धन करना चाहिये।)

महासंकल्प—हेमाद्रि संकल्प

ॐस्वस्ति श्री समस्तजगदुत्पत्तिस्थितिलयकारणस्य रक्षा-शिक्षा-विचक्षणस्य प्रणतपारिजातस्य अशेषपराक्रमस्य श्रीमदनन्तवीर्यस्यादि नारायणस्य अचिन्त्यापरिमितशक्त्या ध्रियमाणानां महाजलौघमध्ये परिभ्रमताम् अनेक कोटि ब्रह्माण्डानाम् एकतमे अव्यक्त- महदहंकार - पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशाद्यावरणैरावृते अस्मिन् महति ब्रह्माण्डखण्डे आधारशक्तिश्रीमदादि- वाराह-दंष्ट्राग्र- विराजिते कूर्मानन्त- वासुकि-तक्षक-कुलिक - कर्कोटक -पद्म - महापद्म - शंखाद्यष्टमहानागैर्ध्रियमाणे ऐरावत-पुण्डरीक-वामन-कुमुद-अञ्जन-पुष्पदन्त-सार्वभौम-सुप्रतीकाष्टदिग्गजोपरिप्रतिष्ठितानाम् अतल-वितल-सुतल-तलातल-रसातल-महातल-पाताल-लोकानामुपरिभागे भुवर्लोक-स्वर्लोक-महर्लोक -जनोलोक - तपोलोक - सत्यलोकाख्य षड्लोकानामधोभागे भूर्लोके चक्रवाल शैल - महावलयनागमध्यवर्तिनो महाकाल महाफणि राजशेषस्य सहस्रफणामणिमण्डल मण्डिते दिग्दन्तिशुण्डादण्डोद्दण्डिते अमरावत्यशोकवती भोगवती - सिद्धवती- गान्धर्ववती - काशी- काञ्ची - अवन्ती अलकावती यशोवतीतिपुण्यपुरीप्रतिष्ठिते लोकालोकाचलवलयिते लवणेक्षु- सुरा- सर्पि - दधिक्षीरोदकार्णवपरिवृते जम्बू-प्लक्ष-कुश-क्रौञ्च - शाक शाल्मलिपुष्कराख्यसप्तद्वीपयुते इन्द्र-कांस्य-ताम्र-गभस्ति-नाग-सौम्य-गान्धर्व-चारणभारतेतिनव-खण्डमण्डिते सुवर्णगिरिकर्णिकोपेत महासरोरुहाकार पञ्चाशत् कोटि योजनविस्तीर्णभूमण्डले अयोध्या मथुरा-माया-काशी-काञ्ची-अवन्तिका-पुरी द्वारावतीतिमोक्षदायिकसप्तपुरीप्रतिष्ठिते सुमेरु निषधत्रिकूट-रजतकूटाम्रकूट-चित्रकूट-हिमवद्विन्ध्याचलानां महापर्वत प्रतिष्ठिते हरिवर्ष किंपुरुषयोश्च दक्षिणे नवसहस्रयोजन विस्तीर्णे मलयाचल-सह्याचल विन्ध्याचलानामुत्तरे स्वर्णप्रस्थ-चण्डप्रस्थ-चान्द्र-सूक्तावन्तक-रमणक महारमणक-पाञ्चजन्य-सिंहल

लंङ्केति-नवखण्डमण्डिते गंगा-भागीरथी-गोदावरी- क्षिप्रा-यमुना- सरस्वती-नर्मदा-ताप्ती-चन्द्रभागा-कावेरी-पयोष्णी-कृष्णावेणी-भीमरथी-तुंगभद्रा-ताम्रपर्णी- विशालाक्षी- चर्मण्वती-वेत्रवती- कौशिकी-गण्डकी- विश्वामित्रीसरयूकरतोया- ब्रह्मानन्दामहीत्यनेक पुण्यनदी विराजिते भारतवर्षे भरतखण्डे जम्बूद्वीपे कूर्मभूमौ साम्बवती कुरुक्षेत्रादि समभूमौ आर्यावर्तान्तर्गते ब्रह्मावर्तैकदेशे गंगायमुनयोर्मध्यभागे योजनव्यापिविस्तीर्णोक्षेत्रे, ज्ञानयुग प्रवर्तकानां महर्षि महेशयोगिवर्याणां परमाराध्यगुरुदेवै : अनन्तश्रीविभूषितैः ज्योतिष्पीठाधीश्वरैः जगद्गुरु श्रीमच्छङ्कराचार्य ब्रह्मानन्दसरस्वतीमहाभागैः सम्पादितशतमखकोटि होम महायज्ञपावितायां भूमौ.............................. सकलजगत्स्त्रष्टुः परार्धद्वय जीविनो ब्रह्मणो द्वितीये परार्धे एकपञ्चाशत्तमे वर्षे प्रथम मासे प्रथम पक्षे प्रथम दिवसे अह्नस्तृतीये यामे तृतीये मुहूर्ते रथन्तरादिद्वात्रिंशत्कल्पानांमध्ये अष्टमे श्वेतवाराहकल्पे स्वायंभुवादि मन्वन्तराणां मध्ये सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे कृत त्रेताद्वापरकलिसंज्ञकानां चतुर्णां युगानां मध्ये वर्तमाने अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमपादे प्रभवादि षष्ठि सम्वत्सराणां मध्ये.........................
...............................संवत्सरे..................................अयने...............................ऋतौ ....मासे ....पक्षे
.... तिथौ .... वासरे .... नक्षत्रे .... योगे .... करणे ....राशि स्थिते श्रीसूर्ये
.... राशि स्थिते श्रीचन्द्रे...................... राशि स्थिते श्रीकुजे.................................. राशि स्थिते श्रीबुधे
.... राशि स्थिते श्रीदेवगुरौ .... राशि स्थिते श्रीशुक्रे.......................... राशि स्थिते श्रीशनौ............ राशि स्थिते श्रीराहौ................ राशि स्थिते श्रीकेतौ.............एवं गुण विशेषण विशिष्टायां पुण्यायाम् महापुण्य शुभ तिथौ.......................................

गुरु प्रार्थना —

नमो गुरुभ्यो गुरुपादुकाभ्यो नमः परेभ्यः परपादुकाभ्यः।
आचार्य सिद्धेश्वर पादुकाभ्यो नमोऽस्तु लक्ष्मीपति पादुकाभ्यः॥ *(श्रृङ्गेरी मठीय आचार्य प्रार्थनम्)*

श्री गुरु परमगुरु परमेष्ठी गुरु सद्गुरु पादुकाभ्यो नमो नमः। हम लोग ब्रह्मानन्दं गुरु तं नमामि। गुरु परम्परा को भी बोल सकते हैं। कर सकते हैं।
हरौ रुष्टे गुरुस्त्राता गुरौ रुष्टे न कश्चन॥ ईश्वर के रुष्ट होने पर गुरुजी रक्षा करते हैं एवं गुरुजी के कुपित होने पर कोई भी रक्षक नहीं है।

भूतोच्चाटन मन्त्र—

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुविसंस्थिताः। ये भूता विघ्नकर्तारः ते गच्छन्तु शिवाज्ञया॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-आसन विधि प्रकरण)*
ॐ अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम्। सर्वेषामविरोधेन ब्रह्मकर्म समारभे॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-आसन विधि प्रकरण)*
ॐ तीक्ष्णादंष्ट्रमहाकाय कल्पान्ते दहनोपम। भैरवाय नमस्तुभ्यं अनुज्ञां दातुमर्हसि॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

इति भैरवं नमस्कृत्य। (इन मन्त्रों से भूतोच्चाटन कर भैरव जी से यज्ञ रक्षा की प्रार्थना करते हैं।)

ॐ इमा या ब्रह्मणस्पते विषूचीर्वात ईरते। सध्रीचीरिन्द्र ताः कृत्वा मह्यं शिवतमास्कृधि
स्वस्ति नो अस्त्वभयं नो अस्तु नमोऽहोरात्राभ्यामस्तु॥ *(अथर्ववेद १९.८.६)*

(इन मन्त्रों से गणपति प्रार्थना कर पुष्पाक्षत छोड़ना चाहिये।)

तदनन्तरं तीर्थपूजनम्—**ॐ अप्सु ते राजन् वरुण गृहो हिरण्ययो मिथः।**
ततो धृतव्रतो राजा सर्वा धामानि मुञ्चतु॥ *(अथर्ववेद ७.८३.१)*
अस्मिन् कावेरी तीर्थे ॐ भूः वरुणमावाहयामि। ॐ भुवः वरुणमावाहयामि।
ॐ स्वः वरुणमावाहयामि। ॐ भूर्भुवस्वः वरुणमावाहयामि। श्री वरुण मूर्तये नमः।
ध्यायामि-ॐ एमां कुमारस्तरुण आ वत्सो जगता सह।
एमां परिस्रुतः कुम्भ आ दध्नः कलशैरगुः॥ *(अथर्ववेद ३.१२.७)*

ध्यानं समर्पयामि। श्री वरुण मूर्तये नमः।

हिरण्यवर्णामिति पञ्चदशर्चस्य सूक्तस्य, आनन्द कर्दम चिक्लीतेन्दिरासुता ऋषयः। श्रीरग्निश्च देवते। सूक्तेस्मिन् आद्याः तिस्रोनुष्टुभः, कां सोस्मीति चतुर्थी बृहती, चन्द्रां प्रभासां, आदित्यवर्णे इति पञ्चमी षष्ठ्यौ त्रिष्टुभौ, ततोष्टावनुष्टुभः, तां म आवह जातवेद इति पञ्चदशी प्रस्तार पंक्तिश्छन्दस्का, हिरण्यवर्णामिति बीजं, कां सोस्मितामिति शक्तिः, तां म आवह जातवेद इति कीलकम्, कावेरी तीर्थपूजने विनियोगः।

ॐ हिरंण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रंजाम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातंवेदो म आ वंह॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः आवाहयामि।

ॐ तां म आ वंह जातवेदो लक्ष्मीमनंपगामिनीम्। यस्यां हिरंण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः। आसनं कल्पयामि।

ॐ अश्वपूर्वां रंथमध्यां हस्तिनांदप्रमोदिंनीम्। श्रियं देवीमुपं ह्वये श्रीर्मादेवी जुंषताम्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः। पादारविन्दयोः पाद्यं पाद्यं समर्पयामि।

ॐ कां सोस्मितां हिरंण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलंन्तीं तृप्तां तर्पयंन्तीम्।
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपं ह्वये श्रियंम्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः। हस्तयोः अर्घ्यमर्घ्यं समर्पयामि।

ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलंन्तीं श्रियं लोके देवजुंष्टामुदाराम्।
तां पद्मिनीमीं शरंणमहंप्रपंद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृंणे॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः, मुखे आचमनीयं समर्पयामि।

ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथबिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः। *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

श्रीवरुणाश्रित कावेर्यै नमः, शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः, वस्त्रं समर्पयामि।

ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वान्निर्णुद मे गृहात्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः, उपवीतं समर्पयामि। वस्त्रोपवीतान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

ॐ यद्धिरण्यं सूर्येण सुवर्णं प्रजावन्तो मनवः पूर्व ईषिरे।
तत् त्वा चन्द्रं वर्चसा सं सृजत्यायुष्मान् भवति यो बिभर्ति॥ *(अथर्ववेद १९.२६.२)*

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः, आभरणं समर्पयामि।

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्व भूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः, गन्धं समर्पयामि।

ॐ शुकेषु ते हरिमाणं रोपणाकासु दध्मसि। अथो हारिद्रवेषु ते हरिमाणं नि दध्मसि॥ *(अथर्ववेद १.२२.४)*

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः, हरिद्राचूर्णं समर्पयामि। श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः, कुंकुमचूर्णं समर्पयामि।

ॐ अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत। अर्चन्तु पुत्रका उत पुरं न धृष्ण्वर्चत॥ *(अथर्ववेद २०.९२.५)*

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्री श्रयतां यशः॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः, पुष्पाणि समर्पयामि। गङ्गायै नमः। यमुनायै नमः। गोदावर्यै नमः। सरस्वत्यै नमः। नर्मदायै नमः। सिन्धवे नमः। कावेर्यै नमः। श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः। नामपूजां समर्पयामि।

ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः, धूपमाघ्रापयामि।

ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे। निचदेवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः, दीपं दर्शयामि। धूप दीपानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि। निवेदनार्थे, चतुरस्र मण्डल करके उसके ऊपर नैवेद्य रखें।

ॐ यदन्नमद्म्यनृतेन देवा दास्यन्नदास्यन्नुत संगृणामि।
वैश्वानरस्य महतो महिम्ना शिवं मह्यं मधुमदस्त्वन्नम्॥ *(अथर्ववेद ६.७१.३)*

ॐसत्यंत्वर्तेन परिषिञ्चामि। श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः। कदलीफल नैवेद्यं निरीक्षस्व। सुरभिमुद्रां प्रदर्श्य। अमृतोपस्तरणमसि। ॐप्राणाय स्वाहा। ॐअपानाय स्वाहा। ॐव्यानाय स्वाहा। ॐउदानाय स्वाहा। ॐसमानाय स्वाहा। ॐदेवेभ्यः स्वाहा।

ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः, कदलीफल नैवेद्यं निवेदयामि। अमृतापिधानमसि। उत्तरापोशनार्थे जलं समर्पयामि। हस्तप्रक्षालनार्थे जलं समर्पयामि। गण्डूषार्थे जलं समर्पयामि। शुद्धाचमनार्थे जलं समर्पयामि। करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि।

पूगीफल समायुक्तं नागवल्लीदलैर्युतम्। चूर्ण कर्पूरसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः, ताम्बूलं समर्पयामि।

मङ्गल नीराजनम्—

ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्। सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः, मङ्गल नीराजनम् समर्पयामि।

मन्त्रपुष्पम्—ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ (अथर्ववेद ७.५.१)

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः मन्त्रपुष्पं समर्पयामि।

प्रदक्षिणा—ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः। प्रदक्षिणां समर्पयामि।

ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्य मन्वहम्। सूक्तंपंचदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः। नमस्कारान् समर्पयामि।

ॐ जल बिम्बाय विद्महे, नील पुरुषाय धीमहि। तन्नस्त्वम्बु प्रचोदयात्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः। इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यं, प्रसन्नार्घ्यं समर्पयामि।

प्रार्थना—ॐ प्रास्मत् पाशान् वरुण मुञ्च सर्वान् य उत्तमा अधमा वारुणा ये।
दुष्वप्न्यं दुरितं नि ष्वास्मदथ गच्छेम सुकृतस्य लोकम्॥ (अथर्ववेद ७.८३.४)

श्री वरुणाश्रित कावेर्यै नमः, प्रार्थनां समर्पयामि। पुनः पूजां करिष्ये। छत्रं धारयामि। चामरेण बीजयामि। गीतं गायामि। नाट्यं नटामि। आन्दोलिकामारोहयामि। अश्वमारोहयामि। गजमारोहयामि। समस्तराजोपचार देवोपचार वेदोपचार पूजां समर्पयामि। अनया पूजया श्री वरुणाश्रित कावेरी प्रीयताम्। लोपदोष

प्रायश्चित्तार्थं नामत्रय मन्त्रजपमहं करिष्ये। ॐअच्युताय नमः। ॐअनन्ताय नमः। ॐगोविन्दाय नमः। त्रिवारं जपित्वा।

ॐ तद् विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीवचक्षुराततम्॥ *(अथर्ववेद ७.२६.७)*

ॐ स्वस्ति। यहाँ पर तीर्थ पूजन संपन्न हुआ। समयाभाव में श्री सूक्त मन्त्रों के बिना भी कर सकते हैं। कावेरी के स्थान पर गङ्गादि नदियों का नाम उन-उन प्रदेशों में जोड़ना चाहिये।

कलशेषु तीर्थजल पूजनम्—यज्ञशाला में कलशों में भरने के लिए जितनी तीर्थ जल की आवश्यकता है, एवं पूजन के लिए जितना जल अपेक्षित है, पण्डितों के आचमन के लिए जितना जल अपेक्षित है उतना जल कुम्भों में भरकर लाना चाहिये। तीर्थ जल पूजन के पश्चात् जल भरने की प्रक्रिया प्रारम्भ होती है। कलशों को पहले स्वच्छ कर लेना चाहिये। पहले तीर्थ की स्तुति करनी चाहिये। उदाहरण कावेरी—

कवेरकन्यकेगस्त्ये जाये देवी सरिद्वरे। ब्रह्मकुण्ड समुद्भूते लोपामुद्रे नामेस्तु ते॥

सह्यशैल समुद्भूते रंगक्षेत्र निवासिनि। त्वामहं प्रार्थये देवि कावेरि प्रणमाम्यहम्॥ *(स्मृति संग्रह)*

कावेर राज की पुत्री, महर्षि अगस्त जी की पत्नी लोपामुद्रा नाम वाली तुम लोककल्याण के लिए ब्रह्मकुण्ड से कावेरी नदी के रूप में परिवर्तित होकर रंगनाथ जी के क्षेत्र में बहती हो ऐसे तम्हें नमस्कार है। अन्य नदियों में जल भरते समय उनकी स्तुति करनी चाहिये। निम्नलिखित मन्त्रों से धीरे-धीरे शुद्ध जल भरना चाहिए।

ॐ अम्बयो यन्त्यध्वभिर्जामयो अध्वरीयताम्। पृञ्चतीर्मधुना पयः॥

ॐ अमूर्या उप सूर्ये याभिर्वा सूर्यः सह। ता नो हिन्वन्त्वध्वरम्॥

ॐ अपो देवीरुप ह्वये यत्र गावः पिबन्ति नः। सिन्धुभ्यः कर्त्वं हविः॥

ॐ अप्स्वं१न्तरमृतमप्सु भेषजम्।

अपामुत प्रशस्तिभिरश्वा भवथ वाजिनो गावो भवथ वाजिनीः॥ *(अथर्ववेद १.४.१-४)*

इन दस मन्त्रों से जल भरकर कलशों का संक्षेप पूजन करना चाहिये। एषु कलशेषु वरुणावाहने विनियोगः।

ॐ अप्सु तें राजन् वरुण गृहो हिंरण्ययों मिथः। ततों धृतव्रंतो राजा सर्वा धामांनि मुञ्चतु॥ *(अथर्ववेद ७.८३.१)*

ऐषु कलेशेषु। ॐभूः वरुणमावाहयामि। ॐभुवः वरुणमावाहयामि। ॐस्वः वरुणमावाहयामि। ॐभूर्भुवस्वः वरुणमावाहयामि। श्री वरुणमूर्तये नमः। ॐलं पृथिव्यात्मना गन्धं कल्पयामि। ॐहं आकाशात्मना पुष्पं कल्पयामि। ॐयं वाय्वात्मना धूपं कल्पयामि। ॐरं अग्न्यात्मना दीपं कल्पयामि। ॐवं अबात्मना नैवेद्यं कल्पयामि। ॐपं. परमात्मना पञ्चोपचारपूजां समर्पयामि।

यह पञ्चोपचार पूजन जहाँ भी समय कम हो वहाँ कर सकते हैं। इसके पश्चात् पण्डित जी के द्वारा सिर पर कुम्भ धारण कर यज्ञशाला तक शान्ति सूक्तों का पाठ करते हुए यात्रा के रूप में चलना चाहिये। शान्तिसूक्त ब्रह्मकर्म समुच्चय में है।

नदी से कलशों में जल शान्तिसूक्तों का पठन करते हुए पूजा स्थल में लाये। पूर्व दिशा के पवित्र जगह पर सभी कलशों को रखना चाहिये। गणपति मण्डल एवं गुरु मण्डल की रचना करनी चाहिये। जिसका विवरण तीसरे अध्याय में है। गुरुमण्डल पर गुं गुरवे नमः कहकर पुष्प माला चढ़ायें। गणेश मण्डल पर गं गणपतये नमः कहकर पुष्पाक्षत चढायें।

तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव। विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेंऽघ्रियुगं स्मरामि॥

ॐ ध्रुवं ते राजा वरुणो ध्रुवं देवो बृहस्पतिः। ध्रुवं त इन्द्रंश्चाग्निश्च राष्ट्रं धांरयतां ध्रुवम्॥ *(अथर्ववेद ६.८८.२)*

सुमुहूर्तोस्तु। सुप्रतिष्ठितमस्तु। (ऊपर के मन्त्रों से मुहूर्त में जो भी दोष हैं उनके निवारण की प्रार्थना है।)

आसन शुद्धि—ॐपृथ्वीति मेरुपृष्ठऋषिः सुतलं छन्दः आदि कूर्मो देवता आसन शुद्ध्यर्थे जपे विनियोगः

ॐ पृथ्वित्वया धृता लोका देवित्वं विष्णुना धृता।

त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चये-संकल्प प्रकरणे)*

भूतोच्चाटन मन्त्र-

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुविसंस्थिताः। ये भूता विघ्नकर्तारः ते गच्छन्तु शिवाज्ञया॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-आसन विधि प्रकरण)*

ॐ अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम्। सर्वेषामविरोधेन ब्रह्मकर्म समारभे॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-आसन विधि प्रकरण)*

ॐ तीक्ष्णदंष्ट्रमहाकाय कल्पान्ते दहनोपम। भैरवाय नमस्तुभ्यं अनुज्ञां दातुमर्हसि॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

इति भैरवं नमस्कृत्य। (इन मन्त्रों से भूतोच्चाटन कर भैरव जी से यज्ञ रक्षा की प्रार्थना करते हैं।)

शिखाबन्धनम्—ऊर्ध्वकेशि विरूपाक्षि मांसशोणित भक्षणे। तिष्ठ देवि शिखाबन्धे चामुण्डे ह्यपराजिते॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

(इस मन्त्र से शिखाबन्धन करना चाहिये।)

देह शुद्धि—ॐ या आपो याश्च देवता या विराड् ब्रह्मणा सह। शरीरं ब्रह्म प्राविशच्छरीरेऽधि प्रजापतिः॥ *(अथर्ववेद ११.८.३०)*

(इन मन्त्रों से देहशुद्ध कर आगे आचमन से गणेश पूजन प्रारम्भ करें।)

आचमन मन्त्र—ऋग्वेदाय स्वाहा। यजुर्वेदाय स्वाहा। सामवेदाय स्वाहा। (स्वाहा मन्त्र से जल पीना चाहिये।)

अथर्ववेदाय नमः। इतिहास पुराणेभ्यो नमः। अग्नये नमः। अग्नये नमः। वायवे नमः। प्राणाय नमः। सूर्याय नमः। चन्द्राय नमः। दिग्भ्यो नमः। दिग्भ्यो नमः। इन्द्राय नमः। इन्द्राय नमः। पृथिव्यै नमः। पृथिव्यै नमः। अन्तरिक्षाय नमः। अन्तरिक्षाय नमः। दिवे नमः। ब्रह्मणे नमः। विष्णवे नमः। सदाशिवाय नमः। द्विराचम्य .. इस प्रक्रिया को दुबारा करना चाहिये।

पवित्र धारणम्—ॐ सुतासो मधुमत्तमाः सोमा इन्द्राय मन्दिनः।
पवित्रवन्तो अक्षरन्देवान्गच्छन्तु वो मदाः॥ *(अथर्ववेद २०.१३७.४)*

ॐभूर्भुवः स्वः कहकर जल सिञ्चन करें॥ (इन मन्त्रों से पवित्र शुद्धिकर धारण करना चाहिये आसन के नीचे दो कुश डाल लेना चाहिये।)

प्राणायाम—प्रणवस्य परब्रह्म ऋषिः, दैवी गायत्री छन्दः, परमात्मा देवता प्राणायामे विनियोगः।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योतीरसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवस्वरोम्। *(ऋग्वेद ३.६२.१०)*

(रेखाङ्कित मन्त्र को तीन बार कुम्भक में जप करना चाहिये।)

गणेश प्रार्थना—सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः। लम्बोदरश्च विकटो विघ्नराजो विनायकः॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः। द्वादशैतानि नामानि यः पठेत् शृणुयादपि॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा। सङ्ग्रामे संकटेचैव विघ्नस्तस्य न जायते॥
शुक्लांबरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यातेत्सर्व विघ्नोपशान्तये॥ *(याजुषपूर्वप्रयोगप्राकर)*
ॐ इमा या ब्रह्मणस्पते विषूचीर्वात ईरते। सध्रीचीरिन्द्र ताः कृत्वा मह्यं शिवतमास्कृधि
स्वस्ति नो अस्त्वभयं नो अस्तु नमोऽहोरात्राभ्यामस्तु॥ *(अथर्ववेद १९.८.६)*

(इन मन्त्रों से गणपति प्रार्थना कर पुष्पाक्षत छोड़ना चाहिये।)

गुरु प्रार्थना —

नमो गुरुभ्यो गुरुपादुकाभ्यो नमः परेभ्यः परपादुकाभ्यः।
आचार्य सिद्धेश्वर पादुकाभ्यो नमोऽस्तु लक्ष्मीपति पादुकाभ्यः॥ *(शृङ्गेरी मठीय आचार्य प्रार्थनम्)*

श्री गुरु परमगुरु परमेष्ठी गुरु सद्गुरु पादुकाभ्यो नमो नमः।

कलश पूजनम्—कलश में पूर्ण जल भरकर रखना चाहिये। फिर उसमें गन्ध अक्षत पुष्प कलश के अन्दर डालना चाहिये एवं बाहर भी चारों ओर लगाना चाहिये। गायत्री मन्त्र से तीन बार कलश छूकर जप करना चाहिये।

ॐ कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः। मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥
कुक्षौ तु सागरास्सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदस्सामवेदोह्यथर्वणः॥
अङ्गैश्चसहितास्सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः। अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा॥
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः। सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः॥
गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिंकुरु॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-देवपूजा प्रकरण)*

(इन मन्त्रों को कलश छूकर पाठ करना चाहिये।)

ॐ एमां कुमारस्तरुण आ वत्सो जगता सह। एमां परिस्रुतः कुम्भ आ दध्नः कलशैरगुः॥ *(अथर्ववेद ३.१२.७)*

सितमकरनिषण्णां शुभ्रवर्णां त्रिनेत्रां करधृत कलशोद्यत्पंकजाभीत्यभीष्टाम्।
विधि हरिहररूपां सेन्दुकोटीरचूडां भसितसितदुकूलां जाह्नवीं तां नमामि॥ *(स्मृति संग्रह)*

(इस मन्त्र से कलश में गङ्गाजी का ध्यान करना चाहिये।)

शङ्खपूजन—शंख को पहले धोकर, उसमें जल भरकर, शंख को गन्ध पुष्प अक्षत लगाकर पीठ के ऊपर रखना चाहिये। गायत्री मन्त्र से तीन बार शंख छूकर जप करना चाहिये।

ॐ शङ्खं चन्द्रार्कदैवत्यं वारुणञ्चाधि दैवतम्। पृष्ठे प्रजापतिं विद्यात् अग्रे गङ्गा सरस्वती॥
त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया। शङ्खेतिष्ठन्ति विप्रेन्द्र तस्माच्छंखं प्रपूजयेत्॥
विलयं यान्ति पापानि हिमवत् भास्करोदये। दर्शनादेव शङ्खस्य किं पुनः स्पर्शने भवेत्॥
पाञ्चजन्यं महात्मानं पापघ्नं तु पवित्रकम्। शंखमध्यस्थितं तोयं भ्रामितं केशवोपरि॥

अङ्गलग्नं मनुष्याणां ब्रह्महत्यायुतं दहेत्। गर्भादेवादि नारीणां विशीर्यन्ते सहस्त्रधा॥
तव नादेन पाताले पाञ्चजन्य नमोस्तुते॥ ॐ पाञ्चजन्याय विद्महे पद्मगर्भाय धीमहि। तन्नः शङ्खः प्रचोदयात्॥

(ब्रह्मकर्म समुच्चय-देवपूहा प्रकरण)

ॐ पवनायै नमः। ॐ पाञ्चजन्यायै नमः। ॐ पर्जन्यायै नमः। ॐ अम्बुराजायै नमः। ॐ कम्बु राजायै नमः। ॐ पद्मबान्धवायै नमः। ॐ धवलाय नमः। ॐ निस्स्वनाय नमः। ॐ दिव्य भोगदाय नमः।

ॐ शङ्खमूले परब्रह्मा शङ्खाग्रे तु सरस्वती। यः स्नापयति गोविन्दं तस्य पुण्यमनन्तकम्॥ *(स्मृतिमुक्तावल्यां शङ्खपूजा प्रकरण)*

(इतना कहकर शंख को नमस्कार करना चाहिये।) शंख के जल को कलश में डालना चाहिये। पुनः शंख में कुछ जल लेकर भगवान् के सिर पर तीन बार प्रोक्षण करना चाहिये। यज्ञशाला या पूजास्थल का प्रोक्षण करें। पूजा की सामग्रियों का सिञ्चन करें। पूजा में प्रयुक्त सभी वस्तुओं का प्रोक्षण करें। शेष जल नीचे छोड़ दे। शंख को धोकर पुनः पानी भरकर यथा स्थान रख देना चाहिये।

आत्माराधनम्—हृदि स्थितं पंकजमष्टपत्रं सकेसरं कर्णिकमध्यनाळम्।
अङ्गुष्ठमात्रं मुनयो वदन्ति ध्यायेत् च विष्णुं पुरुषं पुराणम्।
हृदयकमल मध्ये सूर्य बिम्बासनस्थं सकल भुवन बीजं सृष्टिसंहारहेतुम्।
निरतिशयसुखात्मज्योतिषं हंसरूपं परमपुरुषमाद्यं चिन्तयेदात्ममूर्तिम्॥
आराधयामि मणि सन्निभमात्मलिङ्गं मायापुरी हृदय पंकजसन्निविष्टम्।

श्रद्धा नदी विमलचित्त जलाभिषेकै र्नित्यं समाधि कुसुमैर्न पुनर्भवाय॥
देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो हंसः सदाशिवः। त्यजेदज्ञान निर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥
स्वामिन् सर्व जगन्नाथ यावत्पूजावसानकम्। तावत् त्वं प्रीति भावेन कुम्भेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥ *(देवपूजा)*

ॐआत्मने नमः। ॐअन्तरात्मने नमः। ॐपरमात्मने नमः। (इससे आत्मशुद्धि होती है। इन मन्त्रों को कहकर अपने सिर पर अक्षत डालना चाहिये।)

मराडप पूजनम्—उत्तप्तोज्वल काञ्चनेन रचितं तुङ्गाङ्गरंगस्थलम्। शुद्धस्फाटिक भित्तिकाविरचितै स्तम्भैश्च हैमैः शुभैः॥
द्वारैश्चामर रत्नराजखचितैः शोभावहैर्मराडपैः। तत्रान्यै रपिचित्र शङ्खधवलैः प्रभ्राजितं स्वस्तिकैः॥
मुक्ताजाल विलम्बिमराडपयुतैर्वज्रैश्च सोपानकैः। नानारत्न विनिर्मितैश्च कलशैरत्यन्त शोभावहम्॥
माराक्योज्वल दीपदीप्तिखचितं लक्ष्मीविलासास्पदम्।
ध्यायेन् मराडपमर्चनेषु सकलेष्वेवं विधं साधकः॥ *(अनुष्ठान पद्धति-मराडप संस्कारे)*

नवरत्नखचित श्री सौभाग्य मराडपाय नमः। मराडपपूजां सर्मपयामि। (उपरोक्त चार मन्त्र कहते हुए मराडप का पूजन करना चाहिये।)

गरापति पूजनम्—

गरोश मराडल रचना—भूमि के शुद्ध होने पर उस पवित्र भूमि पर गरोश मराडल का निर्मारा करना चाहिये। दक्षिरा में भूमि पर रंगोली से रेखाओं को खींचकर उसमें रंग (निर्दिष्ठ) भरते हैं। उत्तर में पीठ (चौकी) पर सफेद वस्त्र बिछाकर हल्दी कुंकुम मिश्रित जल से रेखाओं को खींचकर चावलों को रंगकर सुखाकर भरते हैं। भूमि पर बने मराडल प्रतिदिन विसर्जित स्वयं होता है। अगले दिन फिर से बनाना पड़ता है। चौकी पर बने मराडल यज्ञ की समाप्ति पर्यन्त रहता है। इस मराडल में लकीरों को निर्दिष्ट दिशा में ही खींचना चाहिये।

शक्रासुरानिलहुताशन वारुणेश। भागाश्रितं परिलिखेत् रसकोणमन्तः॥ *(प्रयोग दीपिका)*

पहले शक्र (इन्द्र) की दिशा पूर्व से, असुर (नैऋत्य) नैऋत्य दिशा की ओर वहाँ से अनिल (वायव्य) दिशा कीओर वहाँ से पूर्व मिलाना चाहिये (पहला त्रिकोण) दूसरा त्रिकोण हुताशन अर्थात् अग्नेय से प्रारम्भ कर वरुण अर्थात् पश्चिम दिशा तक एवं वहाँ से ईश (ईशान) तक खीचें। पुनः आग्नेय में मिलायें यह षट्कोण हुआ।

पाशीश पावक दिशाभ्युदितं त्रिकोणम्। विघ्नार्चनेषु रचितं नवकोण चक्रम्॥ *(प्रयोग दीपिका)*

पहले बने षट्कोण के अन्दर एक त्रिकोण बनाना चाहिये। इस प्रकार नवकोण चक्र बनता है, त्रिकोण पाशी (वरुण) पश्चिम से प्रारम्भ कर, ईश (ईशान्य) तक खीचें पुनः ईशान्य से पावक आग्नेय तक खीचें।

प्रादेश प्रमितियुतं गणेश बिम्बं। षट्कोणाकृति वर्तुलत्रिराढ्यम्॥ *(प्रयोग दीपिका)*

तद् बाह्यं चतुरस्त्रमण्डलं लिखित्वा। तन्मध्ये यजतु गणेश्वरं विपश्चित्॥ *(प्रयोग दीपिका)*

नवकोण गणेश मण्डल (पद्मयुतं)
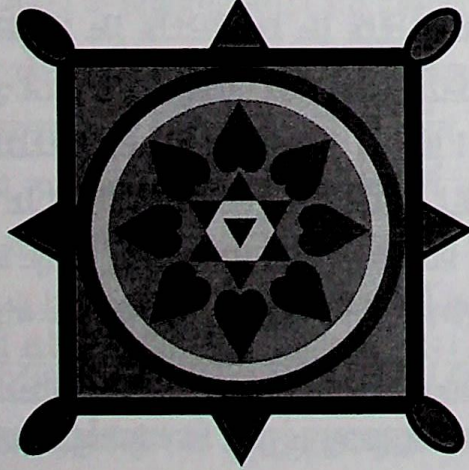
नवकोण गणेश मण्डल
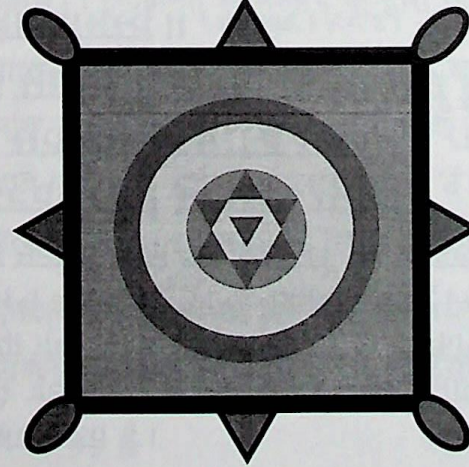
गणपति मण्डल रचना
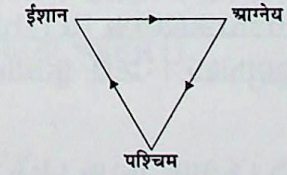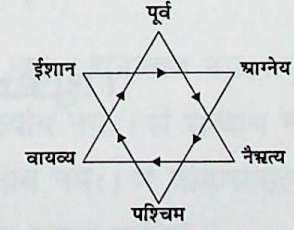
लकीर खींचते समय दक्षिण से कोई लकीर खींचना प्रारम्भ न करें।

नवकोण चक्र बनाकर तीन वर्तुल; तवनदकद्ध लगाकर उसके बाहर दो चौकाकार बनायें, पीठ बनायें, इन सबका सम्मिलित मण्डल अगले पन्ने में उल्लिखित है। उसमें भरने योग्य रंगों का निरूपण भी उसी पन्ने में है इस प्रकार मण्डल बनाकर उसमें गणेश जी का पूजन करना चाहिये। दो प्रकार के मण्डलों का चित्र प्रेषित है। इन दोनों में किसी एक का प्रयोग कर सकते हैं।

अङ्गन्यास-करन्यास—शरीर में गणपति का आवाहन करने से पूर्व न्यास करना चाहिये। गणकऋषिः। निचृद् गायत्री छन्दः। गणपतिर्देवता। न्यासे विनियोगः। गां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। गीं तर्जनीभ्यां नमः। गूं मध्यमाभ्यां नमः। गैं अनामिकाभ्यां नमः। गौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। गः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। गां हृदयाय नमः। गीं शिरसे स्वाहा। गूं शिरसे स्वाहा। गूं शिखायै वषट्। गैं कवचाय हुम्। गौं नैत्रत्रयाय वौषट्। गः अस्त्राय फट्। हाथों में पुष्प लेकर अपने शरीर में विद्यमान गणेश जी को निःश्वास द्वारा पुष्पो में कल्पित करके ध्यान मन्त्र से ध्यान कर उन फूलों को मण्डल में या मूर्ति के चरणों में अर्पण करना चाहिये।

ध्यान मन्त्र—गजवदनमचिन्त्यं तीक्ष्णदंष्ट्रं त्रिनेत्रं, बृहदुदरमशेषं भूतिरूपं पुराणं।
अमरवर सुपूज्यं रक्तवर्णं पुराणं। पशुपति सुतमीशं विघ्नराजं नमामि॥ *(स्मृति संग्रह)*
ॐ इमा या ब्रंह्मणस्पते विषूंचीर्वात ईरंते। सध्रीचींरिन्द्र ताः कृत्वा मह्यं शिवतंमास्कृधि।
स्वस्ति नों अस्त्वभंयं नो अस्तु नमोंऽहोरात्राभ्यांमस्तु॥ *(अथर्ववेद १९.८.६)*

गं गणपतये नमः। ध्यायामि, ध्यानं समर्पयामि।

आवाहनम्—ॐ सहस्त्रंबाहुः पुरुंषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रंपात्। स भूमिं विश्वतों वृत्वात्यंतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥ *(अथर्ववेद १९.६.१)*
ॐ हिरंण्यवर्णां हरिंणीं सुवर्णरजतस्त्रंजाम्। चन्द्रां हिरंण्मयीं लक्ष्मीं जातंवेदो म आवंह॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

गङ्गणपतये नमः। आवाहयामि। आवाहनं समर्पयामि।

द्वारपाल पूजनम्—ॐ पूर्वद्वारे द्वारश्रियै नमः। धात्रे नमः विधात्रे नमः। ॐ दक्षिणद्वारे द्वारश्रियै नमः। जयाय नमः। विजयाय नमः। ॐ पश्चिमद्वारे द्वारश्रियै

नमः। ॐचण्डाय नमः। ॐप्रचण्डाय नमः। ॐउत्तरद्वारे द्वारश्रियै नमः। ॐशंङ्खनिधये नमः। ॐपुष्पनिधयेनमः। ॐऊर्ध्व द्वारश्रियै नमः। ॐआकाशाय नमः। ॐअन्तरिक्षाय नमः। ॐअधोद्वारे द्वारश्रियै नमः। ॐभूम्यै नमः। ॐपातालाय नमः। ॐपूर्व समुद्राय नमः। ॐदक्षिणसमुद्राय नमः। ॐपश्चिम समुद्राय नमः। ॐउत्तर समुद्राय नमः। ॐऋग्वेदाय नमः। ॐयजुर्वेदाय नमः। ॐसामवेदाय नमः। ॐअथर्ववेदाय नमः। ॐकृतयुगाय नमः। ॐत्रेतायुगाय नमः। ॐद्वापरयुगाय नमः। ॐकलियुगायनमः। इति द्वारपालपूजां समर्पयामि। (इन मन्त्रों से मण्डप के द्वारों की पूजा होती है।)

गणपति पीठ पूजनम्—गुं गुरुभ्यो नमः। गं गणपतये नमः। आधारशक्त्यै नमः। मूलप्रकृत्यै नमः। आदि कूर्माय नमः। अनन्ताय नमः। पृथिव्यै नमः। धर्माय नमः। ज्ञानाय नमः। वैराग्याय नमः। ऐश्वर्याय नमः। अधर्माय नमः। अज्ञानाय नमः। अवैराग्याय नमः। अनैश्वर्याय नमः। सं सत्वाय नमः। रं रजसे नमः। तं तमसे नमः। मं मायायै नमः। विं विद्यायै नमः। पं पद्माय नमः। अं अर्क मण्डलाय नमः। उं सोममण्डलाय नमः। मं वह्निमण्डलाय नमः। अं आत्मने नमः। उं अन्तरात्मने नमः। पं परमात्मने नमः। ॐ षीं ज्ञानात्मने नमः। (इन मन्त्रों से गणपति मण्डल की पूजा करना चाहिये।)

नवशक्ति पूजा—तीव्रायै नमः। ज्वालिन्यै नमः। नन्दायै नमः। भोगदायै नमः। कामरूपिण्यै नमः। उग्रायै नमः। तेजोवत्यै नमः। सत्यायै नमः। विघ्ननाशिन्यै नमः। ॐ षीं गं सर्वशक्तियुक्त कमलासनाय नमः। (इन मन्त्रों से गणपति मण्डल में विद्यमान नौ शक्तियों का पूजन करना चाहिये।)

स्वात्मसंस्थमजं शुद्धं त्वामद्य गणनायक।

अरण्यामिव हव्याशं मूर्तौ (बिम्बे, कुम्भे) आवाहयाम्यहम्॥ *(देवपूजा)*

मण्डल में या मूर्ति में या कुम्भ में गणेश जी का आवाहन कर उसमें प्राणप्रतिष्ठा मन्त्रों से प्राणप्रतिष्ठा करनी चाहिये। उद्भव या प्रतिष्ठापित मूर्तियों में भी प्राणप्रतिष्ठा कर सकते हैं। इससे उन मूर्तियों की शक्ति बढ़ती है।

प्राणप्रतिष्ठा

अस्य श्री प्राणप्रतिष्ठा महामन्त्रस्य ब्रह्म विष्णुरुद्राऋषयः। गायत्र्युष्णिक् बृहती छन्दांसि प्राणशक्तिः परा देवता आं बीजं ह्रीं शक्ति क्रों कीलकं। श्रीमहागणेश्वर प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः।

ध्यानम्— रक्तांबोधिस्थपोतोल्लसदरुण सरोजाधिरूढा कराब्जैः पाशं कोदण्ड मिक्षूद्भवमथ गुणमप्यंकुशं पञ्चबाणान्॥
विभ्राणासृक्कपालं त्रिनयन लसिता पीनवक्षोरुहाढ्या देवी बालर्कवर्णा भवतु सुखकरी प्राणशक्ति परानः॥ *(स्मृति संग्रह)*

ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हंसः महागणेश्वर प्राणाः इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हंसः महागणेश्वर जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हंसः महागणेश्वरस्य सर्वेन्द्रियाणि वाक् मनः चक्षुः श्रोत्र घ्राण प्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

ॐ तदंस्तु मित्रावरुणा तदंग्ने शं योरस्मभ्यंमिदमंस्तु शस्तम्।
अशीमहिं गाधमुत प्रंतिष्ठां नमों दिवे बृंहते सादंनाय॥ *(अथर्ववेद १६.११.६)*

गृहावै सूक्तं, प्रतिवीतं तत्, प्रतिवीततमया वाचा शस्तव्यम्। स यद्यपित दूरात् पशूंल्लभते, गृहानेवैनानाजिगमिषति गृहाहिपशूनां प्रतिष्ठा। *(गो.ब्रा.)*
सशक्ति साङ्ग सायुध सवाहन सपरिवार श्री महागणेश्वर भगवन् अत्रैवागछागच्छ आवाहयिष्ये। आवाहयामि। आवाहितो भव। संस्थापितो भव। सन्निहितो भव। सन्निरुद्धो भव। अव कुण्ठितो भव। अमृती कृतो भव व्याप्तो भव। सुप्रसन्नो भव।

एकदुन्तायं विद्महें वक्रतुण्डायं धीमहि। तन्नों दन्तिः प्रचोदयांत्॥ गणक ऋषिः। निचृद् गायत्री छन्दः। गणपतिर्देवता। गां हृदयाय नमः। गीं शिरसे स्वाहा। गूं शिखायै वषट्। गैंकवचायहुं। गौंनेत्रत्रयायबौषट्। गः अस्त्राय फट्। भूर्भुवः स्वरोम् इति दिग्बन्धः। (इन मन्त्रों से गणपति जी को छूकर उनमें प्राणप्रतिष्ठा की कल्पना करनी चाहिये।)

ध्यान— ॐ रक्तो रक्ताङ्गरागांशुककुसुमयुतस्तुन्दिलः चन्द्रमौळि। नैत्रैर्युक्तस्त्रिभिर्वामन करचरणो बीजपूरात्तनासः॥

हस्ताग्राक्लृप्तपाशांकुशरद वरदो नागवक्त्रोऽहिभूषो। देवः पद्मासनो नो भवतु नतसुरो भूतये विघ्नराजः॥ *(स्मृति संग्रह)*

ॐ गं गणपतये नमः। ध्यानं सपर्मयामि। (लाल रंग वाले, लाल अङ्गरागधारण करने वाले, लाल वस्त्र वाले, लाल पुष्पवाले, मोटे पेट वाले, चन्द्र को सिर पर धरे, त्रिनेत्र वाले, सूंढ में बीजपूरफल धारण करने वाले हाथों में पाश अंकुश दान्त वरमुद्रा धारण करने वाले। हाथि मुखवाले, सर्पभूषण पद्मासन में बैठकर देवताओं से स्तुति कराने वाले गणेश जी हमारा मङ्गल करें।) ॐ गं गणपतये नमः। (इस मूल मन्त्र को आठ बार जप करें एवं संक्षेप में पञ्च ोपचार पूजन करें।) ॐ लं पृथिव्यात्मना गन्धं कल्पयामि। ॐ हं आकाशात्मना पुष्पं कल्पयामि। ॐ यं वाय्वात्मना धूपं कल्पयामि। ॐ रं अग्न्यात्मना दीपं कल्पयामि। ॐ वं अबात्मना नैवेद्यं कल्पयामि। ॐ पं. परमात्मना पञ्चोपचारपूजां समर्पयामि।

आसनम्—ॐ त्रिभिः पुद्भिर्द्यामरोहत्पादस्येहाभवत्पुनः। तथा व्यक्रामद्विष्वंडशनानशने अनु॥ *(अथर्ववेद १९.६.२)*

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ गं गणपतये नमः। आसनं समर्पयामि।

द्रव्याभावेतु पूजायां पुष्पैरपि समर्पयेत्। पुष्पाभावेतु तोयेन तोयाभावे तु चेतसा॥ *(तन्त्र संग्रहे)*

पूजन करते समय जब किसी द्रव्य की कमी होती है, तो उसके स्थान पर पुष्पों से पूजन कर सकते हैं, अगर पुष्प भी नहीं है तो जल से पूजन करना चाहिये। पानी भी न हो तो मन से पूजा की कल्पना करनी चाहिये। द्रव्याभावे अक्षतान् समर्पयामि यह गलत परम्परा है। इसे नहीं करना चाहिये।

उद्वाहावाहने नस्तः स्थिरायामुद्धवार्चने। अस्थिरायां विकल्पः स्यात् तण्डुलेतु भवेद् द्वयम्॥ *(लक्षण संहिता)*

प्रतिष्ठित एवं उद्भव मूर्तियों के पूजन मं आवाहन विसर्जन दोनों की आवश्यकता नहीं है। अस्थिर मूर्ति आदि में दोनों कर सकते हैं। परन्तु धरती पर बने मण्डलों में नित्य आवाहन विसर्जन करना चाहिये। ताकि वे दूषित न हो। उपरोक्त दो श्लोक पूजा के नहीं है। केवल प्रयोग विधान है। अपवृत्ते कर्मणि लौकिकः सम्पद्यते। इस सूत्र से पूजा समाप्ति के बाद स्वतः देवता विसर्जन हो जाता है।

पाद्यम्— ॐ तावन्तो अस्य महिमानस्ततो ज्यायांश्च पूरुषः। पादोस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥ *(अथर्ववेद १९.६.३)*

ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम्। श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ गं गणपतये नमः। पादारविन्दयोः पाद्यं पाद्यं समर्पयामि। (दो पैर होने के कारण पाद्यं-पाद्यं कहकर दो बार पाँव धोने के लिये जल दिया जाता है।) पर्वत की मिट्टी, दूर्वा, सरसूं, तिल, पानी का मिश्रण पाद्य कहलाता है।

अर्घ्य— ॐ पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्येश्वरो यदन्येनाभवत्सह॥ *(अथर्ववेद १९.६.४)*

ॐ कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ गं गणपतये नमः। हस्तयोः अर्घ्यमर्घ्यं समर्पयामि। (दहि-पानी, दूध-अक्षत, गोधूम, तिल, सरसूँ एवं कुश का अग्रभाग ये अष्टाङ्ग मिलकर अर्घ्य जल होता है।)

आचमन— ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्य किं बाहू किमूरू पादा उच्येते॥ *(अथर्ववेद १९.६.५)*

ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टमुदाराम्।
तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मेनश्यतां त्वां वृणे॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ गं गणपतये नमः। मुखे आचमनीयं समर्पयामि। (जाफल, लौंग, तक्कोला इन्हें आचमन जल में डालना चाहिये।)

पञ्चामृत स्नान— साधन उपलब्ध हो गणेश जी प्रधान देवता हो तो इसे कर सकते हैं। (पञ्चामृत स्नान से पहले मूर्ति को शुद्ध कर लें।)

१. पयः (दूध)— ॐ सं सिञ्चामि गवां क्षीरं समाज्येन बलं रसम्।
संसिक्ता अस्माकं वीरा ध्रुवा गावो मयि गोपतौ॥ *(अथर्ववेद २.२६.४)*

ॐ गं गणपतये नमः। क्षीर स्नानं समर्पयामि। पय स्नान के बाद शुद्धोदक से स्नान।

ॐ शुद्धा न आपस्तन्वेक्षरन्तु यो नः सेदुरप्रिये तं नि दध्मः। पवित्रेण पृथिवि मोत् पुनामि॥ *(अथर्ववेद १२.१.१३)*

ॐ गं गणपतये नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

२. दधि (दही)—ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभि नो मुखा करत्प्र ण आयूंषि तारिषत्॥ *(अथर्ववेद २०.१३७.३)*

ॐ गं गणपतये नमः दधि स्नानं सपर्मयामि। दधि स्नान के बाद शुद्धोदक से स्नान

ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे॥ *(अथर्ववेद १.५.१)*

ॐ गणपतये नमः। शुद्धोदक स्नानं सपर्पयामि।

३. घृत (घी)—ॐ घृतं ते अग्ने दिव्ये सधस्थे घृतेन त्वां मनुरद्या समिन्धे।

घृतं ते देवीर्नप्त्य१ आ वहन्तु घृतं तुभ्यं दुह्रतां गावो अग्ने॥ *(अथर्ववेद ७.८२.६)*

ॐ गं गणपतये नमः। घृतस्नानं समर्पयामि। घी से स्नान कराने के बाद शुद्ध जल से स्नान।

ॐ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः॥ *(अथर्ववेद १.५.२)*

ॐ गं गणपतये नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

४. मधु (शहद)—ॐ मधुमान् भवति मधुमदस्याहार्यं भवति। मधुमतो लोकान् जयति य एवं वेद॥ *(अथर्ववेद ९.१.२३)*

ॐ गं गणपतये नमः, मधु स्नानं समर्पयामि। शहद के स्नान कराने के बाद शुद्ध जल से स्नान।

ॐ तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः॥ *(अथर्ववेद १.५.३)*

ॐ गं गणपतये नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

५. शर्करा (शक्कर)—ॐ स्वादोःस्वादीयः स्वादुना सृजा समदः सु मधु मधुनाभि योधीः॥ *(अथर्ववेद ५.२.३)*

ॐ गं गणपतये नमः शर्करा स्नानं समर्पयामि। शर्करा स्नान के पश्चात् शुद्ध जल से स्नान कराये।

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् प्रसूत आ रभे॥ *(अथर्ववेद १९.५१.२)*

ॐ गं गणपतये नमः शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

फलम्—ॐ पुष्पवतीः प्रसूमतीः फलिनीरफला उत। संमातर इव दुह्रामस्मा अरिष्टतातये॥ *(अथर्ववेद ८.७.२७)*

ॐ गं गणपतये नमः फल स्नानं समर्पयामि। फल स्नान के बाद शुद्ध जल से स्नान करायें।

ॐ ब्राह्मणो स्य मुखमासीद्बाहू राजन्यो भवत्। मध्यं तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत॥ *(अथर्ववेद १९.६.६)*

ॐ आदित्यवर्णो तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मा यान्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

(अगर गणेश जी का ही होम या पूजा हो तो अथर्वशीर्ष एवं गणेश सूक्त के मन्त्रों से अभिषेक करना चाहिये।)

ॐ गं गणपतये नमः शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि॥

वस्त्रम्— ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत। मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायत॥ *(अथर्ववेद १९.६.७)*

ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन्कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ गं गणपतये नमः वस्त्रं समर्पयामि। (रूई का वस्त्र प्रतिदिन बदलना चाहिये। पीताम्बर, रेशम या मडि वस्त्र पूजा में रखने पर दूसरे दिन भी उसे झाडकर पुनः गायत्री मन्त्र से प्रोक्षण कर दुबारा उस उपयोग में ला सकते हैं।)

यज्ञोपवीतम्—ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्चशुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ विराडग्रे समभवद्विराजो अधि पूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः॥ *(अथर्ववेद १९.६.९)*

ॐ क्षुत् पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्॥ (पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)

ॐ गं गणपतये नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि। दो यज्ञोपवीत। वस्त्र एवं यज्ञोपवीत। देने के बाद आचमनम्। ॐ गं गणपतये नमः आचमनं समर्पयामि।

आभरणम्—ॐ यद्धिरण्यं सूर्येण सुवर्णं प्रजावन्तो मनवः पूर्वं ईषिरे।
तत् त्वां चन्द्रं वर्चसा सं सृजत्यायुष्मान् भवति यो बिभर्ति॥ (अथर्ववेद १९.२६.२)

ॐ गं गणपतये नमः। आभरणं समर्पयामि।

गन्धम्— ॐ नाभ्यां आसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन्॥ (अथर्ववेद १९.६.८)
ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ (पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)

ॐ गं गणपतये नमः गन्धं समर्पयामि।

अक्षताः—ॐ अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत। अर्चन्तु पुत्रका उत पुरं न धृष्णवर्चत॥ (अथर्ववेद २०.९२.५)

ॐ गं गणपतये नमः अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पाणि—ॐ विराडग्रे समभवद्विराजो अधि पूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः॥ (अथर्ववेद १९.६.९)
ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥ (पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)

ॐ गं गणपतये नमः पुष्पाणि समर्पयामि। इसके पश्चात् गणेश मराडल के अङ्गपूजा

प्रथमवरण पूजनम्—(पुष्प चढ़ायें)—आग्नेय में—गां हृदयाय नमः। ईशान में—गीं शिरसे स्वाहा नमः। नैऋत्य में—गूं शिखायै वषट् नमः। वायव्य में— गैं कवचाय हुं नमः। अग्नेय में गौं नेत्रत्रयाय वौषट् नमः। गः अस्त्राय फट् नमः। गङ्गणपतये नमः। प्रथमावरणपूजां समर्पयामि।

सूत्र—पूज्य पूजकयोर्मध्ये या सा प्राची प्रकीर्तिता। प्रतिष्ठित देवता जिस भी दिशा को देख रहे हैं। शास्त्रों के अनुसार वही पूर्व दिशा मान्य है। इसी के आधार पर शेष दिशाओं का निर्धारण करना चाहिये। जहाँ देवता पूर्वाभिमुख है वहाँ दिशाये यथावत् रहेंगे।

द्वितीयावरण पूजा—ॐ गं गणंजयाय नमः—(पूर्व में)। ॐ गिं विघ्नेशाय नमः—(आग्रेय में)। ॐ गुं एकदंष्ट्रय नमः—(दक्षिण में)। ॐ गृं वीराय नमः—(नैऋत्य में)। ॐ ग्लृं गजवक्त्राय नमः—(पश्चिम में)। ॐ गें लम्बोदराय नमः—(वायव्य में)। ॐ गों वरदाय नमः—(उत्तर में)। ॐ गं भक्तप्रियाय नमः—(ईशान में)। ॐ गं गणपतये नमः। द्वितीयावरणपूजां समर्पयामि।

तृतीयावरण पूजा—इस पूजन के समय दिक्पाल अपनी-अपनी दिशा में ही रहते है। अतः वास्तव दिशाओं में ही इनका पूजन करना चाहिये।

तृतीयावरण पूजा—पूर्वे इन्द्रं—ॐ लं इन्द्राय सुराधिपतये पीतवर्णाय शची समेनाथ वज्रहस्ताय ऐरावतवाहनाय सशक्तिकाय साङ्गाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय सर्वालंकार भूषिताय गणेश मूर्ति पार्षदाय नमः। आग्रेये अग्निं—ॐ रं अग्नये तेजोधिपतये पिंङ्गल वर्णाय स्वाहा समेताय शक्तिहस्ताय मेषवाहनाय सशक्तिकाय साङ्गाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय सर्वालंकार भूषिताय गणेशमूर्ति पार्षदाय नमः। दक्षिणे यमं—ॐ डं यमाय प्रेताधिपयते श्यामला समेताय, कृष्णवर्णाय, दण्डहस्ताय, महिषवाहनाय सशक्तिकाय साङ्गाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय सर्वालंकार भूषिताय गणेशमूर्ति पाषर्दाय नमः। नैऋत्ये निऋतिं—ॐ क्षं निर्ऋतये रक्षोधिपतये रक्षा समेताय, रक्तवर्णाय खङ्गहस्ताय नरवाहनाय सशक्तिकाय, साङ्गाय, सायुधाय, सवाहनाय, सपरिवाराय सर्वलंकार भूषिताय गणेशमूर्मि पार्षदाय नमः।

पश्चिमें वरुणम्—ॐ वं वरुणाय जलाधिपतये सिद्धा समेताय, शुभ्रवर्णाय, पाशहस्ताय, मकरवाहनाय सशक्तिकाय साङ्गाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय सर्वालंकार भूषिताय गणेशमूर्ति पार्षदाय नमः। **वायव्ये वायुं**—ॐ यं वायवे प्राणाधिपतये, धूम्रवर्णाय अंजना समेताय, अङ्कुशहस्तायय वाहनाय सशक्तिकाय साङ्गाय, सायुधाय, सवाहनाय, सपरिवाराय, सर्वालंकार भूषिताय गणेशमूर्ति पार्षदाय नमः। **उत्तरे सोमं**—ॐ सोमाय नक्षत्राधिपतये शुक्लवर्णाय गदाहस्ताय रोहिणी समेताय अश्ववाहनाय सशक्तिकाय, साङ्गाय, सायुधाय, सवाहनाय, सपरिवाराय, सर्वालंकार भूषिताय गणेशमूर्ति पार्षदाय नमः। **ईशाने ईश्वरं**—ॐ हं ईशानाय विद्याधिपतये पार्वती समेताय, स्फटिकवर्णाय, त्रिशूलहस्ताय, वृषभ वाहनाय सशक्तिकाय साङ्गाय सायुधाय स वाहनाय सपरिवाराय सर्वालंकार भुषिताय गणेशमूर्ति पार्षदाय नमः। **आकाशे ब्रह्माणं**—ॐ यं ब्रह्मणे लोकाधिपतये सरस्वतीसमेताय शुभ्रवर्णाय पाशहस्ताय हंस वाहनाय सशक्तिकाय साङ्गाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय सर्वालंकार भूषिताय गणेशमूर्ति पार्षदाय नमः। **पाताले अनन्तं (विष्णुं)**—ॐ ऐं अनन्ताय

नागाधिपतये क्षीरवर्णाय चक्रहस्ताय लक्ष्मी समेताय गरुडवाहनाय सशक्तिकाय साङ्गाय सायुधाय स वाहनाय सपरिवाराय सर्वालंकार भूषिताय गणेशमूर्ति पार्षदाय नमः। तृतीयावरण पूजां सर्मपयामि।

चतुर्थावरण पूजनम्— ॐ वज्राय नमः। ॐ शक्तये नमः। ॐ दण्डाय नमः। ॐ खड्गाय नमः। ॐ पाशाय नमः। ॐ अंकुशाय नमः। ॐ गदायै नमः। ॐ त्रिशूलाय नमः। ॐ चक्राय नमः। ॐ पाषाय नमः। ईशाने ब्रह्माणं नैऋत्ये अनन्तं पूजयेत्। अग्रे—कुम्भोदराय नमः। (कुम्भोदर गणेश जी के नैमलिय धारण करने के अधिकारी है। उत्तर ईशान के बीच इनका वास है।) *(गणेश जी के पूजन प्रधान होने पर यहाँ फूलों से या दूर्वा से सहस्रनामादि कर सकते हैं।)*

धूपम्— **वनस्पति रसोत्पन्नो गन्धाढ्यः सुमनो हरः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम्॥** *(प्रयोगरत्नाकर)*
ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तो अस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥ *(अथर्ववेद १९.६.१०)*
ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ गं गणपतये नमः धूपं आघ्रापयामि।

दीपम्— **साज्यं चिवर्ति संयुक्तं वह्निना योजितं मया। गृहाण मङ्गलं दीपं त्रैलोक्य तिमिरापह॥** *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*
ॐ तं यज्ञं प्रावृषा प्रौक्षन्पुरुषं जातमग्रशः। तेनं देवा अयजन्त साध्या वसवश्च ये॥ *(अथर्ववेद १९.६.११)*
ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे। नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ गं गणपतये नमः। दीपं दर्शयामि। धूपं दीपानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि।

नैवैद्यम्— नैवेद्य रखने के स्थल पर मण्डल बनायें। विश्वामित्र ऋषिः। देवी गायत्री छन्दः। सविता देवता। निवेदने विनियोगः। एक बार गायत्री मन्त्र से नैवेद्य पर प्रोक्षण करें। सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि, इन मन्त्र से दिन में, एवं ऋतं त्वासत्येन परिषिञ्चामि, इन मन्त्र से रात्रि में परिषिञ्चन करें। यथा सम्भव नैवेद्यं निरीक्षस्व, कहकर प्रार्थना करें। अमृतोपस्तरणमसि मन्त्र से जल छोडें। बायें हाथ में ग्रास मुद्रा (जैसे बछड़े को घास खिलाते हैं) एवं दाहिने हाथ से निम्न मुद्राओं से देवता को नैवेद्य अर्पण करें। मन में कल्पना करें कि भगवान् को खिला रहे हैं।

प्राणाय स्वाहा—अङ्गुष्ठ एवं कनिष्ठिका मिलाकर, अपानाय स्वाहा—अङ्गुष्ठ एवं तर्जनी मिलाकर व्यानाय स्वाहा—अङ्गुष्ठ एवं मध्यमा मिलाकर, उदानाय स्वाहा—अङ्गुष्ठ एवं अनामिका मिलाकर, समानाय स्वाहा—सभी अङ्गुलियों को मिलाकर।

ॐ तस्मादश्वा अजायन्त ये च के चोभयादतः। गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः॥ (अथर्ववेद १९.६.१२)

ॐ गं गणपतये नमः। क्रमुक ताम्बूलं समर्पयामि।

ताम्बूल के पश्चात् नीराजन (आरती)

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दो ह जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत॥ (अथर्ववेद १९.६.१३)

ॐ एह यातु वरुणः सोमो अग्निर्बृहस्पतिर्वसुभिरेह यातु।
अस्य श्रियमुपसंयात सर्व उग्रस्य चेत्तुः संमनसः सजाताः॥ (अथर्ववेद ६.७३.१)

ॐ गं गणपतये नमः। मङ्गल नीराजनं दर्शयामि। कुर्यादारार्तिकं पञ्चवर्तिका मनुसंख्यया। पादयोश्च चतुर्वारं द्विः कृत्वोनाभि मण्डले। एककृत्वो मुखे सप्त कृत्वः सर्वाङ्ग एव हि॥ नीराजन में पाँच बाती हो पादो को चार बार नाभि मण्डल में दो बार, मुख को एक बार एवं सम्पूर्ण शरीर को सात बार आरती करनी चाहिये।

मन्त्र पुष्पम्—ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्। पशूँस्तांश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये॥ (अथर्ववेद १९.६.१४)

ॐ इमा या ब्रह्मणस्पते विषूचीर्वात ईरते। सध्रीचीरिन्द्र ताः कृत्वा मह्यं शिवतमास्कृधि
स्वस्ति नो अस्त्वभयं नो अस्तु नमोऽहोरात्राभ्यामस्तु॥ (अथर्ववेद १९.८.६)

ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ गं गणपतये नमः। मन्त्रपुष्पं समर्पयामि। (इन मन्त्रों से गणेश जी पर फूल चढायें।)

प्रदक्षिणा नमस्कार—यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च। तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिण पदे-पदे॥ *(स्मृति संग्रह)*

ॐ स॒प्तास्यां॑सन्परि॒धय॒स्त्रिः स॒प्त स॒मिधः॑ कृ॒ताः। दे॒वा यद्य॒ज्ञं त॑न्वा॒ना अब॑ध्न॒न्पुरु॑षं प॒शुम्॥ *(अथर्ववेद १९.६.१५)*

ॐ तां म॒ आव॑ह॒ जातवेदो ल॒क्ष्मीमन॑पगा॒मिनी॑म्। यस्यां॒ हिर॑ण्यं॒ प्रभू॑तं॒ गावो॑ दा॒स्योऽश्वा॑न् वि॒न्देय॒ पुरु॑षान॒हम्॥ *(स्मृति संग्रह)*

(इन मन्त्रों से प्रदक्षिणा करनी चाहिये।) ॐ गं गणपतये नमः। प्रदक्षिणानमस्कारान् समर्पयामि।

प्रसन्नार्घ्यं—ॐ ए॒क॒द॒न्ताय॑ वि॒द्महे॑वक्रतु॒ण्डाय॑ धीमहि। तन्नो॑ दन्तिः प्रचो॒दया॑त्॥ *(स्मृति संग्रह)*

इदमर्घ्यम्, इदमर्घ्यम्, इदमर्घ्यम्॥ (इस पूरी प्रक्रिया को तीन बार करना चाहिये, जल छोड़ना चाहिये।)

उत्तरपूजनम्—ॐ छत्रं समर्पयामि, चामरेणावीजयामि, गीतं गायामि, नाट्यं नटामि, आन्दोळिकामारोहयामि। अश्वमारोहयामि। गजमारोहयामि। समस्तराजोपचार देवोपचार पूजां समर्पयामि।

ॐ मू॒र्ध्नो दे॒वस्य॑ बृ॒ह॒तो अं॒शवः॑ स॒प्त स॑प्त॒तीः। राज्ञः॒ सोम॑स्याजायन्त जा॒तस्य॒ पुरु॑षा॒दधि॑॥ *(अथर्ववेद १९.६.१६)*

ॐ यः॑ शुचि॒ः प्रय॑तो भू॒त्वा जु॒हुया॑दाज्य॒ मन्व॑हम्। सू॒क्तं॑ प॒ञ्चद॑शर्चं॒ च श्री॒काम॑ः सत॒तं ज॑पेत्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ गं गणपतये नमः। सर्वोपचार पूजां समर्पयामि।

प्रार्थना—ॐ वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्य समप्रभ। अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥ *(याजुषपूर्व प्रयोग रत्नाकर)*

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुध्यात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि॥ *(स्मृति संग्रह)*
ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविः ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्। ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना॥ *(भगवद्गीता)*

ॐ गं गणपतये नमः। अनेन महागणपतिः प्रीयताम्। (यहाँ पर गणेश पूजन संपन्न हुआ।)

प्रथम दिन द्वितीय प्रहर

पञ्चगव्य मराडल (प्रथम विधान)

१-पूर्व में गोमूत्र

२-पश्चिम में दूध

३-दक्षिण में गोमय

४-उत्तर में दहि

५-आग्रेय में घी

६-वायव्य में कुशोदक

७-प्रधान पात्र मध्य में
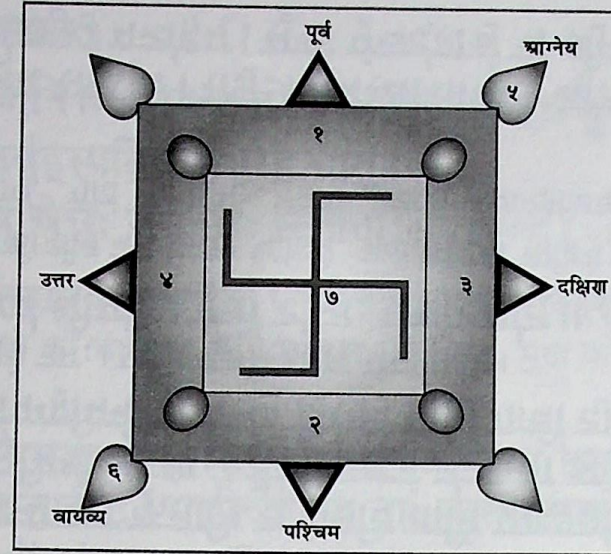
पञ्चगव्य प्राशन—मङ्गलार्थं शुभार्थं च आरम्भे पुण्यकर्मणाम्। निर्विघ्नेन फलावाप्त्यै पुण्याहं कथ्यते बुधैः॥ *(लक्षण संहिता)*

मङ्गल के लिए, शुभ के लिए, निर्विघ्नता से फल प्राप्ति के लिए, सभी पुण्य कार्यों के आरम्भ में पुण्याह करना आवश्यक है।

पञ्चगव्य विधनस्य लक्षणं कथ्यतेऽधुना। शैवे च वैष्णवे चैव साधारणमतः परम्॥ *(लक्षण संहिता)*

शैव एवं वैष्णव सभी संप्रदायों में समान पञ्चगव्य विधान बता रहे हैं।

स्वस्तिके व्रीहिसंपूर्णे न्यस्त्वा पात्रमधोमुखम्। मन्थानं चोपरि न्यस्य सकूर्च फलपुष्पकम्॥ *(लक्षण संहिता)*

स्वस्तिक मण्डल में चालों को एक केले के पत्ते में रखें। पात्र को नीचे मूँह करके रखें। मथनी को उसके ऊपर रखें। कूर्च एवं फल पुष्प को भी उस उल्टे किये बर्तन पर रखें। स्वस्तिक मण्डल अलग पत्रे में लिखा है। चार दिशाओं में एवं आग्नेय वायव्य में छः कटोरे उल्टा कर रखें। करशुद्धिं पुराकृत्य प्राणायाम त्रयं चरेत्। पहले हाथें को धोकर उसके बाद तीन बार प्राणायाम करें। (प्राणायाम विधान गणेश पूजन में है।)

स्ववामाग्रे गुरुं पूज्य दक्षिणे गणनायकम्। *(लक्षण संहिता)*

(पहले हि गुरु गणेश पूजन हुआ है। अतः ॐ गुं गुरवे नमः कहकर गुरुमण्डल पर एवं ॐ गं गणपतये नमः कहकर गणेश जी पर फूल चढ़ायें।)

अस्त्रेण प्रोक्ष्य पात्रं तदुपरि विशदानक्षतान् क्षिप्य। तारेणास्मिन् मूलेन पुष्पं पृथगारिमनुना धूपदीपौ प्रदर्श्य॥
उत्तानीकृत्य पुष्पाक्षतमपि विधिना सोक्तमन्त्रैश्च गव्या।
नेकैकान् प्रोक्त संख्यान्यपि च करमनुक्षाल्य संपूजयेत् च॥ *(लक्षण संहिता)*

पहले उल्टा किये सात बरतनों पर ॐ गः अस्त्राय फट् कहकर पानी छोड़े उसके ऊपर अक्षता डालें। फिर पुष्प धूप दीप का अर्पण करें। फिर एक-एक

को उल्टा कर सही रूप में रखें। एवं उनका भी अक्षत पुष्प धूप दीप से पूजन करें।

गोमूत्रं स्थापयेत् पूर्वं गोमयं दक्षिणे स्मृतम्। क्षीरं तु पश्चिमे स्थाप्य उत्तरे दधि संस्मृतम्॥
आग्नेयान्तु घृतं प्रोक्तं वायव्यान्तु कुशोदकम्। *(स्मृति संग्रह)*

गोमूत्र के बरतन को पूर्व दिशा में रखें, गोमय बरतन को दक्षिण में रखें, दूध के बरतन को पश्चिम दिशा में, उत्तर में दहि के बरतन को आग्नेय दिशा में घी के बरतन एवं वायव्य दिशा में कुशोदक के बरतन को रखें।

पात्र में डालने योग्य पञ्चगव्यों का प्रमाण—

गोमूत्रमेकमानं स्यात् अर्धमानं तु गोमयम्। क्षीरं सप्तगुणं प्रोक्तं दधि त्रिगुणमुच्यते॥
सर्पिरेकगुणं तद्वत् कुशोदकमुदीरितम्। गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधिसर्पिः कुशोदकम्॥
द्रव्याणि क्रमशः प्रोक्त लक्षणानि च संग्रहेत्। रक्तगोमूत्रमुद्दिष्टं कृष्णागोर्गोमयं स्मृतम्।
पयः पल्लवयाम्रायाः श्वेतगोर्दधि संग्रहेत्॥ कपिलाया घृतं ग्राह्यं कुशाग्राभ्यां कुशोदकम्॥ *(लक्षण संहिता)*

यहाँ पर प्रत्येक गव्य संग्रह के लिए निर्दिष्ट गाय बताये गये है सम्भव न होने पर देशी गायों से संग्रह कर सकते हैं।

रक्त वर्णीय गाय से संगृहीत गोमूत्र एक प्रमाण — ५० ग्राम
काली गाय से संग्रहीत गोमय (गोबर) अर्घ प्रमाण — २५ ग्राम
पत्ते के साम्रवर्णीय गाय से संगृहीत दूध सात प्रमाण — ३५० ग्राम
सफेद गाय से संगृहीत दधि का तीन प्रमाण — १५० ग्राम

कपिला (सफेद रक्त वर्ण मिश्रित) गाय से संगृहीत घी एक प्रमाण	—	५० ग्राम
कुश के अग्रों के दो टुकड़े एक प्रमाण पानी मे	—	५० ग्राम
कुल	—	**६७५ ग्राम**

इस प्रमाण से वस्तुओं का सङ्ग्रह करें। एवं पहले पात्रों में इन द्रव्यों को भरें। प्रधान पात्र खाली रखें। एक-एक पात्र में देवताओं का आवाहन करें।

गोमूत्रे देवतादित्यः गोमये वायुरीरितः। सोमं तु क्षीरे ह्यावाह्य दध्नि शुक्रं समर्चयेत्॥
घृते त्वग्निं तु संस्थाप्य गंधर्वं तु कुशोदके। *(बोधायनीय प्रयोगमाला)*

गोमूत्र में सूर्य का आवाहन— ॐ भूः गोमूत्रे आदित्याय नमः आदित्यं आवाहयामि। ॐ भुवः आदित्याय नमः आदित्यं आवाहयामि। ॐ स्वः आदित्याय नमः आदित्यं आवाहयामि। ॐ भूर्भूवः स्वः आदित्याय नमः आदित्यं आवाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि।

गोमय मे वायु का आवाहन— ॐ भूः वायवे नमः वायुं आवाहयामि। ॐ भुवः वायवे नमः वायुं आवाहयामि। ॐ स्वः वायवे नमः वायुं आवाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः वायुं आवाहयामि। स्थापयामि पूजयामि।

गोदुग्ध में सोम का आवाहन— ॐ भूः सोमाय नमः सोमं आवाहयामि। ॐ भुवः सोमाय नमः सोमं आवाहयामि। ॐ स्वः सोमाय नमः सोमं आवाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः सोमाय नमः सोममावाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि।

दहि में शुक्र का आवाहन— ॐ भूः शुक्राय नमः शुक्रमावाहयामि। ॐ भुवः शुक्राय नमः शुकमावाहयामि। ॐ स्वः शुक्राय नमः शुक्रमावाहयामि। ॐ भूर्भुवस्वः शुक्राय नमः शुक्रमावाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि।

घी में अग्नि का आवाहन करें। ॐ भूः अग्नये नमः अग्निमावाहयामि। ॐ भुवः अग्नये नमः अग्निमावाहयामि। ॐ स्वः अग्नये नमः अग्निमावाहयामि। ॐ भूर्भुवः

स्वः अग्नये नमः अग्निमावाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि।

कुशोदक में गन्धर्व का आवाहन करें। ॐ भूः गन्धर्वाय नमः। गन्धर्वमावाहयामि। ॐ भुवः गन्धर्वाय नमः। गन्धर्वमावाहयामि। ॐ स्वः गन्धर्वाय नमः। गन्धर्वमावाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः गन्धर्वाय नमः। गन्धर्वमावाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि। छ कटोरियों में देवताओं का आवाहन संपन्न हुआ।

अब संक्षेप में सब का पूजन करें। ॐ आवाहित देवताभ्यो नमः। ॐ लं पृथिव्यात्मना गन्धं कल्पयामि। ॐ हं आकाशात्मना पुष्पं कल्पयामि। ॐ यं वाय्वात्मना धूपं कल्पयामि। ॐ रं अग्न्यात्मना दीपं कल्पयामि। ॐ वं अंबात्मना नैवेद्यं कल्पयामि। ॐ पं परमात्मना पञ्चोपचारपूजां समर्पयामि। इसके पश्चात् निम्न मन्त्रों से प्रधान पात्र में पूरण करें। भरें।

गोमूत्र पूरण मन्त्र— **ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।**

गोमय पूरण मन्त्र— **ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥** *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

दूध भरने का मन्त्र— **ॐ सं सिञ्चामि गवां क्षीरं समाज्येन बलं रसम्।**
संसिक्ता अस्माकं वीरा ध्रुवा गावो मयि गोपतौ॥ *(अथर्ववेद २.२६.४)*

दहि भरने का मन्त्र— **ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।**
सुरभि नो मुखा करत्प्र ण आयूंषि तारिषत्॥ *(अथर्ववेद २०.१३७.३)*

घी भरने का मन्त्र— **ॐ घृतं ते अग्ने दिव्य सधस्थे घृतेन त्वां मनुरद्या समिन्धे।**
घृतं ते देवीर्नप्त्य आ वहन्तु घृतं तुभ्यं दुह्रतां गावो अग्ने॥ *(अथर्ववेद ७.८२.६)*

कुशोदक भरने का मन्त्र— **ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् प्रसूत आ रभे॥** *(अथर्ववेद १९.५१.२)*

अब मन्त्रों से प्रधान पात्र में भरने के बाद निम्न मन्त्रों से मन्थन करें। (मथनी से)

ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे॥ *(अथर्ववेद १.५.१)*

ॐ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः॥ *(अथर्ववेद १.५.२)*

ॐ तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः॥ *(अथर्ववेद १.५.३)*

उपरोक्त मन्त्रों से मन्थन करना चाहिये। तदनन्तर प्रधान पात्र में आवाहन करें। इरावती वसिष्ठो विष्णुस्त्रिष्टुप्। पञ्चगव्यमध्ये विष्णवावाहने विनियोगः।

ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदा। समूढमस्य पांसुरे॥ *(अथर्ववेद ७.२६.४)*

ॐविष्णवे नमः। ॐभूः विष्णुमावाहयामि। ॐभुवः विष्णुमावाहयामि। ॐस्वः विष्णुमावाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः विष्णुमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

ॐ रुद्रस्यैलबकारेभ्योऽसंसूक्तगिलेभ्यः। इदं महास्येभ्यः श्वभ्यो अकरं नमः॥ *(अथर्ववेद ११.२.३०)*

ॐरुद्राय नमः। ॐभूः रुद्रमावाहयामि। ॐभुवः रुद्रमावाहयामि। ॐस्वः रुद्रमावाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः रुद्रमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

ॐ विश्वे देवा वसवो रक्षतेममुतादित्या जागृत यूयमस्मिन्।

मेमं सनाभिरुत वान्यनाभिर्मेमं प्रापत् पौरुषेयो वधो यः॥ *(अथर्ववेद १.३०.१)*

ॐविश्वेदेवेभ्यो नमः। ॐभूः विश्वेदेवमावाहयामि। ॐभुवः विश्वेदेवमावाहयामि। ॐस्वः विश्वेदेवमावाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः विश्वेदवमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। कलश छूकर आठ बार या एक सौ आठ बार गायत्री मन्त्र का जप करें। आवाहित देवताभ्यो नमः, षोडशोपचार पूजां समर्पयामि। (यहाँ पर संक्षेप में षोडशोपचार पूजन करना चाहिये—इसका विधान गणेश पूजन में है) इसके बाद निम्न मन्त्र से प्राशन (सेवन) करें।

ॐ यत्वगस्थि गतं पापं देहे तिष्ठति मामके। प्राशनं पञ्चगव्यस्य दहत्यग्निरिवेन्धनम्। *(स्मृति संग्रह)*

यहाँ पर पञ्चगव्यप्राशन संपन्न हुआ।

इसके प्रमाण श्लोक—शन्नो देवीति गोमूत्रं गन्धद्वारेति गोमयम्। आप्यायस्वेति चक्षीरंदधिक्राव्णो दधि क्रमात्॥
आज्यं शुक्रमसीत्युक्तं देवस्यत्वा कुशोदकम्। पूरणे पञ्चगव्यानामिति मन्त्राः प्रकीर्तिताः॥
गाय त्र्यावाह्य पूजादि सर्वकर्म समाचरेत्। इरावती इदं विष्णुर्मानस्तोकेति शंवति॥ *(लक्षण संहिता)*

पुण्याह प्रकरणम्

मङ्गलार्थं शुभार्थं तदारम्भे पुण्यकर्मणाम्। निर्विघ्नेन फलावाप्त्यै पुण्याहः कथ्यते बुधैः॥ *(लक्षण संहिता)*

संपन्न किये जाने वाले कार्य मङ्गलमय हो, शुलफल देने वाला हो, एवं निर्विघ्नता से फल प्राप्ति हो इसलिए सभी कार्यो में पुण्याह वाचन अनिवार्य है।

अत्र हेमाद्रौ दानकाण्डे बह्वचपरिशिष्टत्वेनोक्तः

सकल साधारण शिष्टाचार प्राप्तश्च पुण्याह वाचन प्रयोगो लिख्यते। हेमाद्रि ग्रन्थ के दानकाण्ड में बहुत से ऋषियों के मत से कहा गया अधिक रूप से समाज में प्रचलित पुण्याहविधान बता रहे है। **कृतमङ्गलस्नानः** = पहले मङ्गल स्नान करें। **स्वलंकृतः** = मस्तक में सप्रदाय चिन्हों से अलंकृत हो। **संभृत मङ्गल संभारोः** = सभी मङ्गल द्रव्यों को एकत्र करें। **मङ्गलल रंगवल्ली मंडित शुद्ध स्थलेः** = मङ्गलमय रंगोली से सुशोभित पवित्र स्थल पर। **प्राङ्मुखो यजमानः** = यजमान पूर्व दिशा की ओर मूँह कर बैठें। **ऊर्णा वस्त्राद्याच्छादिते पीठे उपविश्यः** = ऊनी वस्त्रादि से आच्छादित पीठ पर बैठकर।

यदि गृहस्थ हो तो—पत्नीं स्वदक्षिणतः प्रांङ्मुखीमुपवेश्यत्न=दाहिनी ओर पूर्वाभिमुख पत्नी को बैठाकर। यह गृहस्थों के द्वारा करने वाले विवाहादि

में—संस्कार्य च तथैवोपवेश्यः=उनका भी स्नानादि से शुद्धि हो।

तदनन्तर—ब्राह्मणैः = ब्राह्मणों के द्वारा "यशस्करं बलवन्तं कनिकदज्जनुष" आदि माङ्गल्य मन्त्रों से मङ्गल तिलक धारण करें। इसके बाद दो बार आचमन करें। एवं प्राणायाम करें। गणेश जी की प्रार्थना करें। हाथ में पवित्र को धारण करें। स्थान देवता का पूजन करें। इसके पश्चात् गणेशपूजन करें। इतना हम पहले ही कर चुके हैं। पञ्चगव्य प्राशन (पुण्याहवाचन के बाद) (पञ्चगव्यपीना चाहिये)।
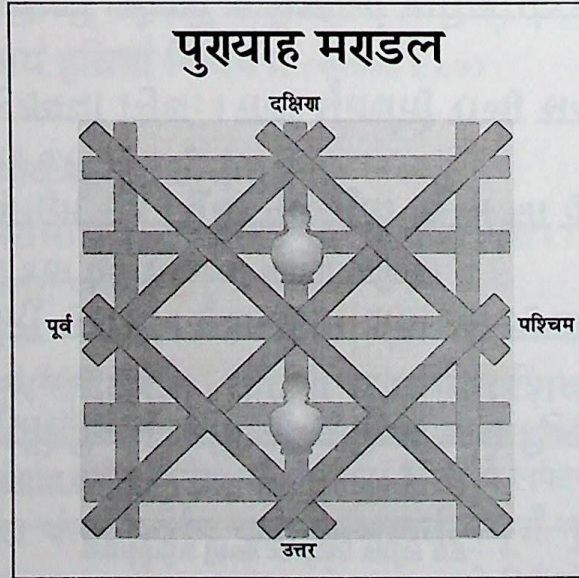
यहाँ से पुण्याहवाचन प्रारम्भ—कर्ता स्वपुरतः=पुण्याहवाचन करने वाले अपने आगे भूमि पर—

ॐ भूमे मातर्नि धेहि मा भद्रया सुप्रतिष्ठितम्। संविदाना दिवा कवे श्रियां मा धेहि भूत्याम् ॥ *(अथर्ववेद १२.१.६३)*

इस मन्त्र को पढकर भूमि को उत्तर एवं दक्षिण दिशा में स्पर्श करें।

ॐ अक्षितास्त उपसदोऽक्षिताः सन्तु राशयः। पृणन्तो अक्षिताः सन्त्वत्तारः सन्त्वक्षिताः ॥ *(अथर्ववेद ६.१४२.३)*

इस मन्त्र से पत्तल आदि बिछाकर दो चावल की राशी उत्तर एवं दक्षिण में बनाना याहिये।

ॐ एमां कुमारस्तरुण आ वत्सो जगता सह। एमां परिस्रुतः कुम्भ आ दध्नः कलशैरगुः ॥ *(अथर्ववेद ३.१२.७)*

इस मन्त्र को पढ़कर चावल पर दो कलशों को स्थापित करें।

ॐ अप्सु ते राजन् वरुण गृहो हिरण्ययो मिथः। ततो धृतव्रतो राजा सर्वा धामानि मुञ्चतु ॥ *(अथर्ववेद ७.८३.१)*

इस मन्त्र से कलशों में तीर्थ जल भरें।

ॐ गंधद्वारांदुराधर्षांनित्यपुष्टांकरीषिणीं। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

इस मन्त्र से गंध (चन्दन) कलश में डालें।

ॐ आयने ते परायणे दूर्वा रोहंतु पुष्पिणीः। उत्सो वा तत्र जायतां ह्रदो वा पुण्डरीकवान् ॥ *(अथर्ववेद ६.१०६.१)*

इस मन्त्र से दूर्वा (दूब) कलश में डालें।

ॐ पर्णोऽसि तनूपानः सयोनिर्वीरो वीरेण मया। संवत्सरस्य तेजसा तेन बध्नामि त्वा मणे ॥ *(अथर्ववेद ३.५.८)*

इस मन्त्र से कलश पर अश्वत्थ, बरगद, आम, जामुन, कटहल के पत्तों को रखें। (पञ्च पल्लव)

ॐ पुष्पवतीः प्रसूमतीः फलिनीरफला उत। संमातर इव दुह्रामस्मा अरिष्टतातये ॥ *(अथर्ववेद ८.७.२७)*

इस मन्त्र से द्राक्षा आदि छोटे फलों को कलश में डालें।

ॐ यद्धिरंण्यं सूर्येण सुवर्णं प्रजावंन्तो मनंवः पूर्व ईषिरे।
तत् त्वां चन्द्रं वर्चसा सं सृजत्यायुष्मान् भवति यो बिभर्ति॥ *(अथर्ववेद १९.२६.२)*

इस मन्त्र से रत्नों को (पुष्प को) कलश में डालें।

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्यं जातः पतिरेकं आसीत्।
स दांधार पृथिवीमुत द्यां कस्मै देवायं हविषां विधेम॥ *(अथर्ववेद ४.२.७)*

इस मन्त्र से हिरण्य या सिक्का कलश में डाले।

ॐ परिं धत्त धत्त नो वर्चसेमं जरामृत्युं कृणुत दीर्घमायुः।
बृहस्पतिः प्रायच्छद् वासं एतत् सोमाय राज्ञे परिधातवा उं॥ *(अथर्ववेद २.१३.२)*

इस मंत्र से वस्त्र को कलश पर लपेटें या मौली से कलश पर बांधे।

कलशों को वस्त्र बाँधने का विधान-प्रमाण श्लोक—

कलशान् वेष्टयेत् सर्वान् सूत्रेनैकेन बुद्धिमान्। वर्धिनी सूत्रयुग्मेन शिवकुम्भान् त्रिसूत्रकैः॥ *(क्रियासार)*

सामान्यतः सभी कलशों को मौली से एक बार लपेटना चाहिये। वर्धिनी कलश जो कि अस्त्र कलश भी कहलाता है यह यज्ञ की रक्षा के लिए रखा जाता है इसे मौली से दो बार लपेटना चाहिये। शिवकुम्भ अर्थात प्रधान कलश को तीन बार मौली से लपेटना चाहिये।

ॐ पूर्णा दर्वे परां पत सुपूर्णा पुनरा पंत। सर्वान् यज्ञान्त्संभुञ्जतीषमूर्जं न आ भंर॥ *(अथर्ववेद ३.१०.७)*

इस मन्त्र से चावल से भरे पात्र को कलश के मुख पर रखना चाहिये। उत्तरकलशे वरुणावाहने विनियोगः। उत्तर दिशा में जो कलश है उसमें नीचे लिखे

मन्त्र से वरुण देवता का आवाहन करें।

ॐ अप्सु ते राजन् वरुण गृहो हिरण्ययो मिथः। ततो धृतव्रतो राजा सर्वा धामानि मुञ्चतु॥ (अथर्ववेद ७.८३.१)

कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं आवाहयामि। (आवाहन करें)

ॐभूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः। चन्दनं समर्पयामि। ॐभूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः। पुष्पं समर्पयामि। ॐभूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः। धूपं समर्पयामि। ॐभूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः। दीपं समर्पयामि। ॐभूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः। नैवेद्यं समर्पयामि। इन पञ्चोपचारों से पूजन करें।

ॐ प्रास्मत् पाशान् वरुण मुञ्च सर्वान् य उत्तमा अधमा वारुणा ये।
दुष्वप्न्यँ दुरितं नि ष्वास्मदथ गच्छेम सुकृतस्य लोकम्॥ (अथर्ववेद ७.८३.४)

ॐभूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः। मन्त्रपुष्पं समर्पयामि। अनेन पूजनेन वरुणः प्रीयताम्। इसके पश्चात् कलश छूकर मन्त्र पाठ करें।

कलशस्य मुखेविष्णुः कंठेरुद्रः समाश्रितः। मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथयजुर्वेदः सामवेदोह्यथर्वणः॥
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः॥
अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा। आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षय कारकाः॥ (ब्रह्मकर्म समुच्च-देवपूजा प्रकरण)

उत्तर कलश में अक्षत डालें। मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्य देवो भव। अतिथिदेवो भव। सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमो नमः। इसके बाद घुटने टेककर बैठें, अंजलि में उत्तर दिशा के कलश को ग्रहण करें। ब्राह्मणों से आशीर्वाद की प्रार्थना करें।

ब्राह्मण—सत्या आशिष सन्तु *(आपकी इच्छा पूर्ण हो)*। दीर्घानागानद्योगिरयस्त्रीणि विष्णुपदानि च तेनायुः प्रमाणेन पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु *(आपको दीर्घायुष्य प्राप्त हो) (यजमान ब्राह्मणे के हाथ में जल देते हैं)*। ब्राह्मणहस्ते शिवा आपः सन्तु। ब्राह्मण कहते हैं—सौमनस्यमस्तु *(आपका मन स्वस्थ हो)*। अक्षतं चारिष्टं चास्तु *(दिये गये अक्षतों से अरिष्ट निवारण हो)*। गंधाः पान्तु *(कहकर गन्ध देवे)*। सौमंगल्यं चास्तु *(आपको मङ्गल हो)*। अक्षताः पान्तु *(कहकर अक्षत देवे)*।

आयुष्यमस्तु *(आपको दीर्घायुष्य हो)*। पुष्पाणि पान्तु *(कहकर फूल देवें)*। सौश्रियमस्तु *(उत्तम संपत् प्राप्त हो)*। तांबूलानि पान्तु *(कहकर ताम्बुल देवें)*। ऐश्वर्यमस्तु *(ऐश्वर्य प्राप्त हो)*। दक्षिणाः पान्तु *(कहकर दक्षिणा सिक्का दें)*। बहुदेयं चास्तु *(भगवान् आपको बहुत देने योग्य बनायें)*। दीर्घमायुः श्रेयः शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु *(आपको दीर्घायुष्य, श्रेय, शान्ति, पुष्टि एवं सन्तोष प्राप्त हो)*।

श्रीर्यशोविद्याविनयोवित्तं बहुपुत्रं चायुष्यं चास्तु।

यं कृत्वा सर्ववेद यज्ञ क्रिया करणकर्मारम्भाः शुभाः शोभनाः प्रवर्तन्ते तमहमोंकारमादिंकृत्वा ऋग्यजुः सामाशीर्वचन बह्वृषिमतं सं विज्ञातं भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये। (ब्राह्मण यजमान से कहते हैं जिसके करने से सभी वेदों का यज्ञ कार्यों का आरम्भ शुभ होता है ऐसे ॐकार से प्रारम्भ कर बहुत से ऋषियों के द्वारा अच्छी तरह से विचार कर ऋग्वेद यजुर्वेद एवं सामवेदोक्त आशीर्वाद मन्त्रों से (हम-ब्राह्मण) आपका पुण्याह करना चाहते हैं।
यजमान कहते हैं—विप्राः ओं वाच्यतां।

ॐ पार्थिवस्य रसे देवा भगस्य तन्वो३ बले। आयुष्यमस्मा अग्निः सूर्यो वर्च आ धाद् बृहस्पतिः॥
आयुरस्मै धेहि जातवेदः प्रजां त्वष्टरधिनिधेह्यस्मै।
रायस्पोषं सवितरा सुवास्मै शतं जीवाति शरदस्तवायम् *(अथर्ववेद २.२९.१-२)*

व्रतनियम तपः स्वाध्याय क्रतुदमदान विशिष्टानां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम् *(यह वाक्य यजमान कहते है कि ब्राह्मणों का मन स्थिर हो)*। विप्राः-समाहित मनसः स्मः *(हम स्वस्थ मनवाले हैं)*। यजमानः-प्रसीदन्तु भवन्तः *(आप प्रसन्न हो)*। **विप्राः**- प्रसन्नाः स्मः *(हम प्रसन्न है)*। यहाँ से प्रत्येक पंक्ति के बाद उत्तर कलश के जल को बड़े बरतन में छोड़े। शान्ति रस्तु *(शान्ति हो)*। पुष्टिरस्तु *(पुष्टि हो)*। तुष्टिरस्तु *(तुष्टि हो)*। वृद्धिरस्तु *(वृद्धि हो)*। अविघ्नमस्तु *(निर्विघ्न हो)*। आयुष्यमस्तु *(आयुष्य हो)*। आरोग्यमस्तु *(आरोग्य हो)*। शिवं कर्मास्तु *(कर्म में मङ्गल हो)*। कर्म समृद्धिरस्तु *(कर्म में समृद्धि हो)*। धर्म समृद्धिरस्तु *(धर्म में समृद्धि हो)*। वेदासमृद्धिरस्तु *(वेद समृद्ध हो)*। शास्त्रसमृद्धिरस्तु *(शास्त्रसमृद्धि हो)*। पुत्र समृद्धिरस्तु *(पुत्र समृद्धि हो)*। धनधान्य समृद्धिरस्तु *(धन एवं धान्य की समृद्धि हो)*। इष्ट संपदस्तु *(इच्छित ऐश्वर्य मिलें)*।

ऐशान्यां बहिर्देशे सर्वारिष्टनिरसन मस्तु *(बाहर देश में सभी प्रकार के अरिष्टों का निवारण हो)*। यत्पापं तत् प्रतिहतमस्तु *(जो भी पाप है वह दूर हो)*। यच्छ्रेयः तदस्तु *(जो श्रेयस्कर हो वह मिले)*। उत्तरोत्तरा: क्रिया: शुभा: शोभना: संपद्यंताम् *(आगे-आगे करने वाले कार्य शुभ एवं सुन्दर हो)*। इष्टा: कामा: संपद्यंताम् *(इच्छित कामनाऐं पूर्ण हो)*। तिथिकरणमुहूर्त नक्षत्र संपदस्तु *(तिथि, करण, मुहूर्त एवं नक्षत्र संपत्ति हो—अर्थात् ये सब श्रेष्ठ हो)*।

तिथिकरणमुहूर्त नक्षत्र ग्रहलग्नाधिदेवता: प्रीयन्ताम् *(तिथिकरण मुहूर्त एवं नक्षत्र ग्रहों के सहित एवं देवताओं के सहित प्रसन्न हों)*। दुर्गा पाञ्चाल्यौ प्रीयेताम् *(दुर्गा एवं पाञ्चाली प्रसन्न हो)*। अग्निपुरोगा विश्वेदेवा: प्रीयंताम् *(अग्नि के साथ विद्यमान विश्वेदेव प्रसन्न हो)*। इन्द्र पुरोगा: मरुद्गणा: प्रीयंताम् *(इन्द्रपुरोगा: मरुद्गण प्रसन्न हो)*। ब्रह्मपुरोगा: सर्वेवेदा: प्रीयन्ताम् *(ब्रह्मा जी के साथ विद्यमान सभी वेद प्रसन्न हो)*।

विष्णुपुरोगा: सर्वेदेवा: प्रीयन्ताम् *(विष्णु के साथ विद्यमान सभी देवता प्रसन्न हो)*। माहेश्वरी पूरोगा उमामातर: प्रीयंताम् *(माहेश्वरी देवी के साथ विद्यमान उमामातर प्रसन्न हो)*। वसिष्ठपुरोगा ऋषिगणा: प्रीयंताम् *(वसिष्ठ जी के साथ विद्यमान ऋषिगण प्रसन्न हों)*। अरुंधतीपुरोगा एकपत्न्य: प्रीयंताम् *(अरुन्धती के साथ विद्यमान एकपत्नी देवियाँ प्रसन्न हो)*। ऋषयश्छंदास्याचार्यावेदादेवायज्ञाश्च प्रीयंताम् *(ऋषिगण, छन्द, आचार्य, वेद, देवता एवं यज्ञ प्रसन्न हो)*। ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम् *(ब्रह्मा एवं ब्राह्मण प्रसन्न हो)*। श्री सरस्वत्यौ प्रीयेताम् *(लक्ष्मी एवं सरस्वती प्रसन्न हो)*। श्रद्धामेधे प्रीयेताम् *(श्रद्धा एवं मेधा देवी प्रसन्न हो)*। भगवती कात्यायनी प्रीयताम् *(भगवती कात्यायनी देवी प्रसन्न हो)*। भगवती माहेश्वरी प्रीयताम् *(भगवती माहेश्वरी प्रसन्न हो)*। भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम् *(भगवती पुष्टिकारी प्रसन्न हो)*।

भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम् *(भगवती ऐश्वर्यदेनेवाली प्रसन्न हो)*। भगवती वृद्धिकरी प्रीयताम् *(भगवती वृद्धि करने वाली प्रसन्न हो)*। भगवंतौ विघ्नविनायकौ प्रीयेताम् *(भगवान् विघ्नेश एवं विनायक प्रसन्न हो)*। भगवान् स्वामी महासेन: सन्त्रीक: स सुत: सपार्षद: सर्वस्थानगत: प्रीयताम् *(भगवान् कार्तिकेय सपरिवार प्रसन्न हो)*। हरि हर हिरण्यगर्भा: प्रीयंताम् *(विष्णु, शिव, ब्रह्मा जी प्रसन्न हो)*।

सर्वा: ग्रामदेवता: प्रीयताम् *(सभी ग्राम देवता प्रसन्न हो)*। सर्वा: कुलदेवता: प्रीयताम् *(सभी कुल देवता प्रसन्न हो)*। सर्वा: वास्तुदेवता: प्रीयताम् *(सभी वास्तु देवता प्रसन्न हो)*। बहिरप: *(नैऋत्य में बड़े बरतन से बाहर कलश जल छोडें)*। हताब्रह्मद्विष: *(ब्रह्मद्वेषियों का नाश हो)*। हता: परिपन्थिन: *(शत्रुओं का नाश हो)*। हता अस्य कर्मणोविघ्नकर्तार: *(इस कर्म के विघ्न करने वाले का नाश हो)*। शत्रव: पराभवं यातु *(शत्रु पराजित हो)*।

शाम्यन्तु घोराणि *(सभी घोर शान्त हो)*। शाम्यन्तु पापानि *(सभी पाप शान्त हो)*। शांम्यंत्वीयत: *(सभी उत्पातों की शान्ती हो)*। शुभानिवर्धताम् *(मङ्गल अभिवृद्धि*

हो)। शिवा आपः सन्तु *(जल मङ्गलमय हो)*। शिवाऋतवः सन्तु *(ऋतुऐं मङ्गलमय हो)*। शिवा अग्नयः सन्तु *(अग्नियां मङ्गलमय हो)*। शिवा आहुतयः सन्तु *(आहुतियां मङ्गलमय हो)*। शिवा ओषधयः सन्तु *(औषधियां मङ्गलमय हो)*। शिवा वनस्पतयः सन्तु *(वनस्पतियां मङ्गलमय हो)*। शिवा अतिथयः सन्तु *(आगन्तुक मङ्गलमय हो)*।

अहोरात्रे शिवेस्याताम् *(रातदिन मङ्गल हो)*। **निकामेनिंकामेनः पुर्जन्यो वर्षतु** *(समय पर बारीश होवे)*। **फलिन्यों न ओषधयः पच्यंताम्। योगक्षेमो नः कल्पताम्** *(हमारा योगक्षेम हो)*। शुक्राङ्गारकबुधबृहस्पतिशनैश्चर राहुकेतु सोम सहिताः आदित्य पुरोगाः सर्वे ग्रहाः प्रीयंताम् *(सूर्यादि शुक्र, कुज, बुध, गुरु, शनि, राहु, केतु, चन्द्र ग्रह प्रसन्न हों)*। भगवान्नारायणः प्रीयताम् *(भगवान् नारायण प्रसन्न हो)*। भगवान् पर्जन्थः प्रीयताम् *(भगवान पर्जन्य प्रसन्न हो)*। प्रीयतां भगवान् स्वामी महासेनः *(भगवान सुब्रह्मण्य प्रसन्न हो)*। पुण्याहकालान्वाचयिष्ये। वाच्यतां इति विप्राः ब्राह्मण कहते हैं—पढें।

ॐ पुण्यं पूर्वा फल्गुन्यौ चात्र हस्तश्चित्रा शिवा स्वाति सुखो मे अस्तु।
राधे विशाखे सुहवानुराधा ज्येष्ठा सुनक्षत्रमरिष्ट मूलम्॥ *(अथर्ववेद १९.७.३)*

मह्यं सकुटुम्बिनेमहाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणायाद्यकरिष्यमाणामुककर्मणः पुण्याहं भवंतो ब्रुवंत्विति त्रिर्वदेत्।
(यजमान अपने सकुटुम्ब प्रणाम करते हुए आज संपन्न होने वाले कर्म के लिए पुण्याह की याचना करते हुए तीन बार कहते हैं। जिसका प्रत्युत्तर ब्राह्मण तीन बार देते हैं।)

१. ॐ पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु। ॐ अस्तु पुण्याहम्। २. ॐ पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु। ॐ अस्तु पुण्याहम्। ३. ॐ पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु। ॐ अस्तु पुण्याहम्।

ॐ वेदः स्वस्तिर्द्रुघणः स्वस्तिः परशुर्वेदिः परशुर्नः स्वस्ति।
हविष्कृतो यज्ञिया यज्ञकामास्ते देवासो यज्ञमिमं जुषन्ताम्॥ *(अथर्ववेद ७.२८.१)*

इसके बाद नीचे लिखा वाक्य का तीन बार यजमान कहें। एवं ब्राह्मण प्रत्युत्तर दें। मह्यं सकुटुम्बिने महाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणायाद्यकरिष्यमाणामुककर्मणः स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु। (ब्राह्मण कहते हैं)—ॐ आयुष्मते स्वत्ति। इन उपरोक्त वाक्यों को तीन बार दोहराना चाहिये। इसके बाद पुनः पहले जैसे उत्तर कलश से जल नीचे रखे बड़े पात्र में थोड़ा-थोड़ा कर गिराते हुए मंत्रपाठ करें।

ॐ अधंइमन्त्रो योनिं य आबभूवामृतांसुर्वर्धमानः सुजन्मा।
अदब्धासुर्भ्राजमानोऽहेव त्रितो धर्ता दाधार त्रीणि॥ *(अथर्ववेद ५.१.१)*

इसके बाद पुनः नीचे लिखे वाक्यों को तीन बार यजमान कहें। एवं ब्राह्मण प्रत्युत्तर दें। मह्यं सकुटुंबिने महाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणायाद्य करिष्यमाण अस्य कर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।
(ब्राह्मण कहते हैं)—ॐ ऋध्यतां। इन उपरोक्त वाक्यों को तीन बार दोहराना चाहिये। इसके बाद मन्त्र पाठ करते हुए उत्तरकलश से नीचे रखे पात्र में जल छोड़ना चाहिये।

ॐ एह यांतु वरुणः सोमो अग्निर्बृहस्पतिर्वसुभिरेह यांतु।
अस्य श्रियमुपसंयांत सर्व उग्रस्य चेत्तुः संमनसः सजाताः॥ *(अथर्ववेद ६.७३.१)*

इसके बाद पुनः नीचे लिखे वाक्यों को तीन बार यजमान कहें एवं ब्राह्मण प्रत्युत्तर दें। मह्यं सकुटुंबिने महाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणायाद्य करिष्यमाण अमुक कर्मणः श्रीरस्त्विवति भवंतो ब्रुवन्तु। (ब्राह्मण कहते हैं)—ॐ अस्तु श्रीः। इन वाक्यों को तीन बार कहना चाहियें। वर्षशतं परि पूर्णमस्तु। गोत्राभिवृद्धिरस्तु। कर्माङ्ग देवता प्रीयताम्। (ब्राह्मण आशीर्वाद देते हैं—सौ साल पूर्ण हो। आप की वंश वृद्धि हो। कर्माङ्ग देवता आप पर प्रसन्न हो।)

तदप्येषः श्लोक कोभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे॥ आविक्षितस्य कामप्रेः विश्वेदेवाः सभासद इति॥

इसके पश्चात् उत्तरकलश को दाहिने हाथ में एवं दक्षिण दिशा में रखे कलश को बायें हाथ में लेकर दोनों की धाराओं को मिलाकर नीचे रखें पात्र में मन्त्रोच्चारण करते हुए छोड़ना चाहिये।

ॐ आशानामाशापालेभ्यश्चतुर्भ्यो अमृतेभ्यः।
इदं भूतस्याध्यक्षेभ्यो विधेमं हविषा वयम्॥
य आशानामाशापालाश्चत्वार स्थनं देवाः।

ते नो निर्ऋत्याः पाशेभ्यो मुञ्चतांहसोअंहसः ॥
अस्तामस्त्वा हविषा यजाम्यश्लोणास्त्वा घृतेन जुहोमि ।
य आशानामाशापालस्तुरीयो देवः स नः सुभूतमेह वक्षत् ॥
स्वस्ति मात्र उत पित्रे नो अस्तु स्वस्ति गोभ्यो जगते पुरुषेभ्यः ।
विश्वं सुभूतं सुविदत्रं नो अस्तु ज्योगेव दृशेम सूर्यम् ॥ *(अथर्ववेद १.३१.१-४)*

इसके पश्चात् पात्र में स्थित जल से यजमान का अभिषिञ्चन नीचे लिखे मन्त्रों से करना चाहिये।

ॐ पृथिवी शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिर्द्यौः शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिर्वनस्पतयः
शान्तिर्विश्वे मे देवाः शान्तिः सर्वे मे देवाः शान्तिः शान्तिः शान्तिः शान्तिभिः ।
ताभिः शान्तिभिः सर्व शान्तिभिः शमयामोऽहं यदिह घोरं यदिह
क्रूरं यदिह पापं तच्छान्तं तच्छिवं सर्वमेव शमस्तु नः ॥ *(अथर्ववेद १९.९.१४)*

बलायश्रियैयशसेन्नाद्याय। ॐभूर्भुवः स्वः अमृताभिषेकोअस्तु ॥ शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु। इसके बाद दो बार आचमन करें। पुण्याह वाचन पवित्रता के लिए किया जाता है। इसके चार विभाग कर सकते हैं (प्रयोग की दृष्टि से)—

१. मण्डलरचना—कलशस्थापन।

२. ब्राह्मणों को द्रव्यादि दान—खडे होकर उत्तर कलश से जल छोड़ते हुए मन्त्र पठन।

३. दोनों कलशों को दोनों हाथों मे लेकर उन्हे नीचे रखे पात्र में छोड़ते हुए करने वाले मन्त्र पठन।

४. पात्र में स्थित जल से यजमान, उपस्थित ब्राह्मण, यज्ञस्थल एवं सामग्रियों पर प्रोक्षण विशेषतः यजमान का अभिषिञ्चन।

इसके ४-५ प्रकार प्रचलित है। परन्तु उपरिलिखित विधान वैदिकों में अधिक मान्यता प्राप्त है।

पुण्याह वाचन प्रकरण समाप्त

पुण्याह बाचन में **कर्माङ्ग देवता प्रीयतां** कहना पड़ता है। विवाह में पुण्याह करने पर कर्माङ्ग देवता—**अग्निः प्रीयताम्**। औपासन होम में पुण्याह करने पर कर्माङ्ग देवता—**अग्नि सूर्य प्रजापतयः प्रीयंताम्**। स्थालीपाक होम में पुण्याह करने पर **कर्माङ्ग देवता अग्निः प्रीयताम्**। गर्भाधान संस्कार में पुण्याहकरने पर **कर्माङ्ग देवता ब्रह्मा प्रीयताम्**। पुंसवन संस्कार में पुण्याह करने पर **कर्माङ्ग देवता प्रजापतिः प्रीयताम्**। सीमांत संस्कार में पुण्याह करने पर **कर्माङ्ग देवता धाता प्रीयताम्**। जातकर्म संस्कार में पुण्याह करने पर **कर्माङ्ग देवता मृत्युः प्रीयताम्**। नामकरण, निष्क्रमण (बच्चे को घर से पहली बार बाहर लाना) अन्न प्राशन संस्कार में पुण्याह करने पर **कर्माङ्ग देवता सविता प्रीयताम्**। चौल संस्कार में पुण्याह करने पर **कर्माङ्ग देवता केशिनः प्रीयताम्**। उपनयन संस्कार में पुण्याह करने पर **कर्माङ्ग देवता इन्द्रः श्रद्धा मेधाः प्रीयंताम्**। मेघाजनन (उपनयन के चौथे दिन) पुण्याह करने पर **कर्माङ्गदेवता सुश्रवाः प्रीयताम्**। पुनरुपनयन (प्रायश्चित) संस्कार में पुण्याह करने पर **कर्माङ्ग देवता अग्निः प्रीयताम्**। समावर्तन संस्कार में पुण्याह करने पर कर्माङ्ग देवता **इन्द्रः प्रीयताम्**। उपाकर्म, महानाम्नि, महाव्रत, उपनिषत्, गोदान इन कर्मो में पुण्याह करने पर कर्माङ्गदेवता—**सविता प्रीयताम्**। वास्तुहोम में दो बार पुण्याह होता हैं—पहले बार कर्माङ्ग देवता-**वास्तोष्पतिः प्रीयताम्**। दूसरी बार पुण्याह के कर्माङ्ग देवता-**प्रजापतिः प्रीयताम्**। आग्रयण (नूतन धान्य खाने से पूर्व करने वाला) संस्कार में कर्माङ्गदेवता-**आग्रयण देवताः प्रीयताम्**। सर्पबलि संस्कार में पुण्याह करने पर कर्माङ्गदेवता **सर्पाः प्रीयंताम्**। तडागादि (तालाब आदि निर्माण में) पुण्याह करने पर कर्माङ्ग देवता **(वरुणः प्रीयताम्।)** ग्रह यज्ञ में पुण्याह करने पर कर्माङ्ग देवता **नवग्रहाः प्रीयंताम्**। कूष्मांड होम, चान्द्रयण एवं अग्न्याधान में पुण्याह करने पर कर्माङ्ग देवता-**अग्न्यादयः प्रीयंताम्**। (दक्षिणाग्नि आर्हपत्य आहवनीय तीन अग्नियों को अग्निमन्थन से अग्नि को प्रज्वलित कर विधि पूर्वक स्थापित करने का विधान अग्न्याधान कहलाता है। अग्निष्टोम (सोमयाग) में पुण्याह करने पर कर्माङ्ग देवता **अग्निः प्रीयताम्**। शेष सभी काम्य कर्म वाले यज्ञों में पुण्याह करने पर कर्माङ्ग देवता-**प्रजापतिः प्रीयताम्**। **उदाहरण**—सर्वाद्भुत शान्ति में कर्माङ्गदेवता-**प्रजापतिः प्रीयताम्**।

पुण्याह प्रकरण समाप्त

नान्दि श्राद्ध प्रकरण

देव कार्य करने से पूर्व पितृ कार्य करना आवश्यक है। अतः सभी यज्ञों में एवं सभी संस्कारों में जहाँ भी पुण्याह वाचन होता है वहाँ नान्दी श्राद्ध आवश्यक है।

कुर्याच्च कर्ता स्वयमेव तत्र नान्दीमुख श्राद्धमथोपचारैः।
उद्दिश्य देवान् पितृभिः समेतानावाह्य विप्रद्वितये यथोक्तान्॥
अर्चासनावाहन सार्घ्यतोय गन्धाक्षतैः पुष्पसपाद्यधूपैः।
दीपांजनाच्छादन नत्युपेतैः कराम्बुधारान्तरितैर्यथावत्॥ *(लक्षण संहिता)*

यजमान सभी कर्मों के प्रारम्भ में पितरों से युक्त देवताओं को लक्ष्य करके स्वयं नान्दी श्राद्ध करना चाहिये। इसमें कनिष्ट दो ब्राह्मणों को आसन, आवाहन, अर्ध्य, आचमन, गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप, अंजन, आच्छादन, नमस्कारों से पूजन करना चाहिये। बीच-बीच में जल देते हुए करना चाहिये।

पितृणां च गणाः सप्त त्रिषु लोकेषु विश्रुताः। अमूर्ताश्च समूर्ताश्च द्विधा भिन्नाः प्रकीर्तिताः॥
अग्नि ष्वात्ताबर्हिषदः आज्यपाः सोमपा इति। अमूर्तास्तेषु चत्वारः पितरश्च पितामहाः॥
प्रपितामहास्तथा प्रोक्ता समूर्तास्तेष्वितित्रयः। अमूर्ता देवकार्येषु समूर्ताः पितृकर्मसु॥
अग्निजिह्वा विप्रजिह्वा विश्वेदेवा द्विधा स्मृताः। नान्दीमुखे सत्यवसू काम्यके धुरिलोचनौ॥
क्रतुदक्षावुत्सवे तु पार्वणे च पुरूरवौ। सपिण्डीकरण श्राद्धे अष्टकायां तथैव च॥
विश्वेदेवाः कालकामौ विप्रजिह्वा दशस्मृताः। अग्निजिह्वास्त्रयः प्रोक्ता वह्निस्थास्ते त्रयः स्मृताः॥ *(लक्षण संहिता)*

इत्येते तद्विशेषज्ञैर्विश्वेदेवास्त्रयोदश। तीनों लोको में सात पितृगण (समूह) प्रसिद्ध है। उनमे दो भाग है एक-अमूर्त (शरीर हीन) दूसरा-समूर्त (आकार युक्त)।

उनमें—**अमूर्त के चार भाग है।** १. अग्निष्वात्ता (अग्नि में वास करने वाले), २. बर्हिषदः (कुश में रहने वाले), ३. आज्यपाः (घी पीने वाले), ४. सोमपाः (सोमपान करने वाले)

पिता-पितामह एवं **प्रपितामह समूर्त** वर्ग में आते हैं। देवकार्य में (यज्ञ यागादियों में) अमूर्त पितरों का पूजन करना चाहिये। पितृकार्यों में समूर्तो को (पिता-पितामह-प्रपितामह) पूजन करना चाहिये। विश्वेदेवों का दो भाग है। ये हमेशा पितरों के साथ रहते है। उनके रक्षक देवता है। इनके दो भाग है—

१. अग्निजिह्वा—अग्नि द्वारा हविस् स्वीकार करने वाले विश्वदेव। ये तीन हैं। ये अग्नि में वास करते हैं। इनहें **अग्निजिह्वा** नाम से ही जाना जाता है।

२. विप्रजिह्वा—ब्राह्मणों के मुख (जिह्वा) द्वारा आहर स्वीकार करने वाले विश्वदेव। इनके दस देवता हैं। नान्दीमुख में सत्य एवं वसु, काम्य श्राद्ध मे धूरि एवं लोचन, रथोत्सव आदियो में क्रतु एवं दक्ष, पार्वरा (विशेष समय पर-मासिक आदि) पुरु एवं रव, सपिराडीकररा श्राद्ध में काल एवं कामयेदस विश्वेदेवता विप्रजिह्व कहलाते हैं।

दत्वा तराडुलपूर्गापात्रयुगले संकल्प्य भुक्तिं तयोः। ताम्बूलादि सुदक्षिरणान्तिकमनुज्ञातः समुद्वाहयेत्॥ *(लक्षरा संहिता)*

चावल से भरे दो पात्रों मे उनके भोजन का संकल्प करके ताम्बूल दक्षिणादि सभी देकर अन्त में विसर्जन करना चाहिये। (इनमें आहार के बदले कच्चा पदार्थ अर्थात् चालव, सब्जी, दाल आदि कच्चे पदार्थ ब्राह्मणों को संकल्प करके दिया जाता है।) **प्रयोग आगे है। यह मात्र विषय की जानकारी है। नान्दि श्राद्ध के दो प्रकार है—**

१. स्वार्थ—अपने लिए जब करते हैं। तब समूर्त पितरों का श्राद्ध अर्थात् पिता-पितामह-प्रपितामह माता-पितामहि-प्रपितामहि सपत्नीक मातामह-सपत्नीक मातृपितामह, सपत्नीक मातृप्रपितामह (इन नौ पितरों को पूजना चाहिये)।

२. विश्वकल्याराार्थ या परार्थ, उत्सवादि में अमूर्त पितरों का पूजन—

१. अग्निष्वात्ता, २. बर्हिषदः, ३. आज्यपाः, ४. सोमपा इन पितरों का पूजन करना चाहिये।

संकल्प—देशकालौ संकीर्त्य (देश काल को बताकर)करिष्यमारा मंगलकार्याङ्गभूतं मातृकापूजनं नान्दीश्राद्धं च करिष्ये। (मातृका पूजन एवं नान्दी श्राद्ध करना है)। पुरायाह कलश के दक्षिरा में नान्दी दो मराडल

दो पात्रों में भोजन के लिए आवश्यक चावल, सब्जी, दाल, मेवा दक्षिरा रखें।

मातृका पूजनम्—पान सुपारी दक्षिणा के ऊपर कूर्च (कुश से बना) रखकर उसमें मातृका आवाहन करके उनमें मातृका पूजन करना चाहिये। नान्दी मण्डल के आगे मातृका पूजन करना चाहिये।

ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा। वाराही तथेन्द्राणी चामुण्डाः सप्तमातरः॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

सात मातृकायें।

गौरीपद्मा शचीमेधासावित्रीविजयाजया। देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः॥
धृतिः पुष्टिस्तथातुष्टिरात्मनः कुलदेवताः॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

(गौर्यादि षोडश मातृकायें)। ब्राह्म्यादि सप्त मातृः गौर्यादि षोडश मातृः आवाहयामि। विनायकं आवाहयामि। दुर्गा आवाहयामि। क्षेत्रपालं आवाहयामि। गणपतिं आवाहयामि। मातृस्वसारं आवाहयामि। पितृस्वसारं आवाहयामि। एताभ्यो देवताभ्यो नमः। ध्यायामि। ध्यानं समर्पयामि। इनका षोडशोपचार पूजन करना याहिये। **उदाहरण**—आवाहित देवताभ्यो नमः। आसनं समर्पयामि आदि। षोडशोपचार पूजन संक्षेप में करें। (गणेश पूजन में है।)

अन्त में पुष्पांजलि मन्त्र—ॐ देवानां पत्नीरुशतीरवन्तु नः प्रावन्तु नस्तुजये वाजसातये।
याः पार्थिवासो या अपामपि व्रते ता नो देवीः सुहवाः शर्म यच्छन्तु॥ *(अथर्ववेद ७.४९.१)*

ॐभूर्भुवः स्वः आवाहित देवताभ्यो नमः। मन्त्रपुष्पं समर्पयामि।

ॐ तदस्तु मित्रावरुणा तदग्ने शं योरस्मभ्यमिदमस्तु शस्तम्।
अशीमहि गाधमुत प्रतिष्ठां नमो दिवे बृहते सादनाय॥ *(अथर्ववेद १९.११.६)*

गृहावै सूक्तं, प्रतिवीतं तत्, प्रतिवीततमया वाचा शस्तव्यम्। स यद्यपित दूरात् पशूंल्लभते, गृहानेवैनानाजिगमिषति गृहाहिपशूनां प्रतिष्ठा। *(गो.ब्रा.)*

इन मन्त्रों को पढकर पुष्पाक्षत चढ़ायें।

मातृका पूजन समाप्तम्

नान्दी श्राद्ध—ॐ विश्वे देवा वसवो रक्षतेममुतादित्या जागृत यूयमस्मिन्।
मेमं सनाभिरुत वान्यनाभिर्मेमं प्रापत् पौरुषेयो वधो यः॥ (अथर्ववेद १.३०.१)

ॐसत्यवसुसंज्ञकाविश्वेदेवाः नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। ॐभूभुर्वः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें। सोमयाग, गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्त, आधान इन कर्मो के अङ्गभूत नान्दी श्राद्ध में क्रतु दक्ष संज्ञक विश्वेदेव अन्य सभी संस्कारों में सत्यवसु संज्ञक विश्वेदेव कहना चाहिये।

मातृपितामहीप्रपितामह्यः नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। ॐभूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ मे रखकर उस पर से जल छोडें। पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। ॐभूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोड़ें। सपत्नीक मातामह मातृपितामह मातृप्रपितामहाः नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। ॐभूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोड़ें। सपत्नीक मातामह मातृपितामह मातृप्रपितामहाः नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। ॐभूभुर्वः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोड़ें।

सत्यवसु संज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणायोः इदमासनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूभुर्वः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध, अक्षत, पुष्प, दुर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोड़ें। मातृपितामही प्रपितामह्यः नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणायोः इदमासनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। हाथ में गंध अक्षत पुष्प दूर्वा लेकर उस पर जल छोडें।

सपत्नीक माता मह मातृपितामह मातृपितामहाः नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणायोः इदमासनगंधाद्युपचार कल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। हाथ में गंध अक्षतपुष्पदूर्वा लेकर उस पर जल छोडें।

ॐभूभुर्वः स्वः सत्यं त्वर्तेनपरिषिञ्चामि कहकर मण्डल पर रखें दोनो पात्रों को परिषेचनकर दक्षिण दिशा के पात्र को "इदं विश्वेभ्यो देवेभ्यः। उत्तर दिशा के पात्र को "इदं नान्दीमुख पितृभ्यः। कहकर दान संकल्प कर—ब्राह्मणों को दे देवें।

सत्यवसु संज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामंसोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर

ताम्बूल दक्षिणा पर जल छोड़कर नीचे रखना चाहिये।

मातृपितामहीप्रपितामह्यः नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामं सोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणा पर जल छोड़कर नीचे रखें। पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामं सोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। सपत्नीक मातामह मातृपितामह मातृप्रपितामहाः नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामं सोपस्करं सताम्बुलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणा पर जल छोडकर नीचे रखें। आगे लिखें मन्त्रों से खड़े होकर उपस्थान करें।

कृतस्य नान्दी श्राद्धस्य प्रतिष्ठाफलसिद्ध्यर्थं द्राक्षामलक निष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये। कहकर हाथ में दक्षिणा लेकर उस पर जल छोड़कर नीचे रख दें।

प्रार्थना— मातापितामही चैव तथैव प्रपितामही। पितापितामहश्चैव तथैव प्रपितामहः॥
मातामहस्तत्पिताच प्रमातामहकादयः। एतेभवन्तु सुप्रीताः प्रयच्छन्तु च मङ्गलम्॥

कहकर जल छोड़े। अनेन नान्दीसमाराधनेन नान्दीमुखदेवताः प्रीयंतां। आचम्यमंगलाक्षतकुंकुमादि धारण करें।

विसर्जन—यज्ञ पर अन्तिम दिन में, उपनयन में व्रत समाप्ति पर विवाह में व्रतसमाप्ति पर प्रायः हर कर्म की समाप्ति पर विसर्जन निम्न मन्त्र से करना चाहिये।

ॐ इडांयास्पुदं घृतवंत् सरीसृपं जातंवेदुः प्रतिं हुव्या गृंभाय।
ये ग्राम्याः पुशवों विुश्वरूंपास्तेषां सप्तानां मयिु रन्तिंरस्तु॥ *(अथर्ववेद ६.७३.१)*

यथाचारं हिरण्येन भाण्डवादनं। मन्त्र कहते हुए सिक्के से थाली के निचले भाग में शब्द करना चाहिये। (घण्टावादन के बदले)

ॐ उत्तिंष्ठब्रह्मणस्पते देुवान् युज्ञेनं बोधय।
आयुंः प्राणं प्रजां पुशून् कीुर्तिं यजंमानं च वर्धय *(अथर्ववेद १६.६३.१)*

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादायमत्कृतां। इष्टकामार्थसिद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

इन मन्त्रों से आवाहित देवताओं को उठाना चाहिये।

प्रमाण (विचार)—गौर्यादि मातृकापूजनं नान्दी श्राद्धाङ्गम्।

गौर्यादि मातृकापूजन नान्दी श्राद्ध के अङ्ग है, स्वतन्त्र नहीं। **यत्र नान्दी श्राद्धं न क्रियते तत्र मातृकापूजनमपि न कार्य** जहाँ नान्दी श्राद्धं नहीं करते हैं वहाँ मातृकापूजन भी न करें।

स्वार्थ नान्दी श्राद्ध करने वालों के कुछ नियम। ये यज्ञ में आवश्यक नहीं है अतः अर्थ नहीं लिखा है।

तत्रपूर्वं मातृपार्वणां ततः पितृपार्वणां ततः सपत्नीक मातामह पार्वणां इति पार्वण त्रयात्मकं नान्दी श्राद्धं। मातृजीवने सपत्नमातृमरणेपि न मातृपार्वणां। एवं मातामहीजीवने मातामहीसपत्नीमरणेपि न मातामहादेः सपत्नीकत्वं। अत्र कर्तुजीवत्पितृकत्वे निर्णयः। जीवेन्तु यदि वर्गाद्यस्तंवर्गं तुपरित्यजेदितिन्यायेन जीवत्पितृकः स्वापत्संस्कारेषु मातृमातामहपार्वणायुतं नान्दी श्राद्धं कुर्यात्। मातारि जीवत्यां मातामहपार्वणामेकमेव। मातामहे जीवति मातृपार्वणामेकमेव॥

केवल मातृपार्वणे विश्वेदेवा न कार्याः। वर्गत्रयाद्योषु मातृपितृ मातामहेषु जीवस्तु नान्दी श्राद्ध लोप एव सुतसंस्कारेषूचितः।

द्वितीय विवाहाधानपुत्रेष्टि सोमयागादिषु स्व संस्कार कर्मसु येभ्य एव पितादद्यात्तेभ्योदद्यात्तुतस्सुतः। तथा च मृतमातृमातामह कोपिजीवत्पित्रक स्वसंस्कारे पितुर्मातृपितामही प्रपितामह्यः पितुः पितृपितामहप्रपितामहाः पितुर्मातामहमातृपितामह मातृप्रपितामहा इत्येव पार्वण त्रयुमुद्दिश्यश्राद्धं कुर्यात्। न तु स्वमातृमाता मह पार्वणोद्देशः। पिररि पितामहे च जीवति स्वसंस्कारे पितामहस्य मातृपितामहीप्रपितामह्य इत्याद्युद्देशः। एवं प्रपितामहेपियोज्यं। पितुर्मात्रादि जीवने तत्पार्वण लोप एव। तथा च येभ्य एव पितादद्यादितिपक्षस्य वर्गाद्य जीवने तत्पार्वण लोप इति द्वारलोपपक्षस्य च स्वसंस्कार स्वापत्यसंस्कार भेदेन व्यवस्था सिद्धांतितेति ज्ञेयं। केचिन्तु पक्षद्वस्यस्यैच्छिकोविकल्पो न तु व्यवस्थित इत्याहुः। एवं मृत पितृकस्य जीवन्मातृमातामहस्य पितृपार्वणेनैव नांदी श्राद्धसिद्धिर्ज्ञेया। समावर्तनस्य माणवक कर्तृत्वेपितदंगभूत नान्दी श्राद्धे पितुस्तदभावे ज्येष्ठभ्रात्रा देरधिकार इति केचित्। तत्र पितापुत्र समावर्तने स्वपितृभ्यो नान्दी श्राद्धं कुर्यात्। पिताजीवत्पितृकश्चेत्सुत संस्कारत्वात् द्वारलोप पक्षेयुक्त इतिभाति।

माणवकपितुः प्रवासादिना असंनिधाने भ्रात्रादिर्माणवकस्य पितुर्मातृपितामहीप्रपितामह्य इत्याद्युच्चार्यश्राद्धंकुर्यात्। मृत पितृक माणवक समावर्तने पितृव्य

भ्रात्रादिरस्य माणवकस्य मातृपितामहीत्याद्युच्चारयेत्। भ्रात्रादेरभावे स्वयमेव पितृभ्यो दद्यात्। एवं जीवत्पितृकोपिपितुरसन्निधाने भ्रात्रादेरभावे पितुः पितृभ्यः स्वयमेव नांदीमुखं कुर्यात्। उपनयनेनकर्माधिकारस्य जातत्वात्। एवं विवाहे पि द्रष्टव्यं।

मृत पितृकस्य चौलोपनयनादिकं पितृव्यमातुलादिः कुर्वन् अस्य संस्कार्यस्य पितृपितामहेत्याद्युच्चार्य श्राद्धं कुर्यात्। जीवतः पितुरसन्निधानेन कुर्वन् मातुलादिरस्य संस्कार्यस्य पितुर्जनकादीनुद्दिश्य कुर्यान्नतु संस्कार्यस्य मृतानपि मात्रादीनिति संक्षेपः।

नान्दी श्राद्ध प्रकरण समाप्त

देवनान्दी—देवनान्दी में मातृका पूजन आवश्यक नहीं है। यज्ञ,(अतिरुद्र, सहस्रचण्डी) रथोत्सव आदि सार्वजनिक आचरणों में देवनान्दी ही करना चाहिये। **क्रतुदक्षावुत्सवे तु।** इस वाक्य से क्रतु एवं दक्ष नामक विश्वेदेव देवता हैं। देवनान्दी में पितृदेवता चार है। अमूर्त्य।

१. अग्निष्वात्ता, २. बर्हिषदः, ३. आज्यपाः, ४. सोमपाः

संकल्प—देशकालौ संकीर्त्य करिष्यमाण कर्माङ्ग भूतं नान्दीसमाराधनं करिष्ये। पहले दो मण्डल बनायें।

दत्वातण्डुलपूर्णपात्रयुगले संकल्प्य भुक्तिं तयोः।
ताम्बूलादि सुदक्षिणान्तिकमनुज्ञातः समुद्वाहयेत्॥ *(लक्षण संहिता)*

दो पात्रों में चावल, काजू किशमिश, फल, दाल, आदि दो मण्डलों पर रखें।

ॐ विश्वे देवा वसवो रक्षतेममुतादित्या जागृत यूयमस्मिन्।
मेमं सनाभिरुत वान्यनाभिर्मेमं प्रापत् पौरुषेयो वधो यः॥ *(अथर्ववेद १.३०.१)*

ॐ क्रतुदक्षसंज्ञका विश्वेदेदेवाः—नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूभुर्वस्वः इयं च वृद्धिः। इससे दुर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें। अग्निष्वात्ताः पितृगणाः नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूभुर्वः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोड़ें।

बर्हिषदः पितृगणाः—नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें। **आज्यपाः पितृगणाः**—नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दुर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें। **सोमपाः पितृगणाः** नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें।

ॐ क्रतुदक्ष संज्ञका विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणायोः इदमासनगंधाद्युपचार कल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध अक्षत पुष्प दूर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें।**ॐ अग्निष्वात्ताः पितृगणाः** नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणायोः इदं आसनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध अक्षत पुष्प दूर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें। **बर्हिषदः पितृगणाः** नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणायोः इदमासनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध अक्षत पुष्प दुर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें। **आज्यपाः पितृगणाः** नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणायोः इदमासनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध, अक्षत, पुष्प, दुर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें।

सोमपाः पितृगणाः नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणायोः इदमासनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भूवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध, अक्षत, पुष्प, दुर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें। ॐभूर्भुवः स्वः सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि कहकर मण्डल पर रखे दोनों पात्रों को परिषेचन कर दक्षिणादिशा के पात्र को ''इदं विश्वेभ्यो देवेभ्यः'' उत्तरदिशा के पात्र को ''इदं नान्दीमुख पितृभ्यः'' कहकर दान संकल्प कर ब्राह्मणों को दे देवें।

क्रतुदक्षसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामं सोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणापर जल छोड़कर नीचे रखना चाहिये। **अग्निष्वात्ताः पितृगणाः** नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामंसोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणापर जल छोडकर नीचे रखना चाहिये। **बर्हिषदः पितृगणाः** नान्दीमुखाः गुग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं दमनामं सोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणापर जल छोड़कर नीचे रखना चाहिये। **आज्यपाः पितृगणाः** नान्दीमुखा युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामंसोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणापर जल छोडकर नीचे रखना चाहिये।

सोमपाः पितृगणाः नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामं सोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर

ताम्बूल दक्षिणा पर जल छोड़कर नीचे रखना चाहिये। आगे लिखे मन्त्रों से खड़े होकर उपस्थान करें।
कृतस्य देवनान्दी समाराधनस्य प्रतिठाफलसिद्ध्यर्थं द्राक्षामलक निष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृये। कहकर हाथ में दक्षिणा लेकर उस पर जल छोडकर नीचे रख दें।

प्रार्थना—अग्निष्वात्वा बर्हिषदः आज्यपाः सोमपास्तथा। एते भवन्तु मे प्रीताः प्रयच्छन्तु च मङ्गलम्॥ कहकर जल छोड़ें। अनेन नान्दीसमाराधनेन नान्दीमुखदेवताः प्रीयंताम्। **आचम्य**—मंगल तिलक रकें। **विसर्जन**—यज्ञ के अन्तिम दिन विसर्जन करें।

ॐ इडांयास्पदं घृतवंत् सरीसृपं जातवेदः प्रतिं हव्या गृंभाय।
ये ग्राम्याः पशवों विश्वरूंपास्तेषां सप्तानां मयि रन्तिंरस्तु॥ *(अथर्ववेद ६.७३.१)*

यथाचारं हिरण्येन भाण्डवादनं। मन्त्र कहते हुए सिक्के से थाली के निचले भाग में शब्द करना चाहिये। (घण्टा वादन के बदले)

१. सर्वाद्भुत शान्ति याग के लिए-१—आचाय, एक कुण्ड में १-ब्रह्मा, ईशान्य में १-कलश पूजन, होमाङ्ग पूजन दक्षिणा में १-इतर पूजन, पश्चिम में १-तर्पण के लिए, परिचारक (कर्मचारी) १-एक ब्राह्मण-कुल ५ पंण्डित रहने पर

१५ पण्डित से संपन्न कर्म में—२-१५ पण्डित कर्म में (एक कुण्ड में), २-१५ पण्डित से संपन्न याग में—१ आचार्य, १ ब्रह्मा, १-कलश पूजन, १-इतर पूजन, १-तर्पण पूजन, १-परिचारक ब्राह्मण, ९-ऋत्विज होम के लिए

३-५५ पण्डित से संपन्न याग में—१- आचार्य (५ कुण्ड में), १-ब्रह्मा, १-कलश पूजन, १-इतर पूजन, १-तर्पण के लिए, १-परिचारक ब्राह्मण, ४५-ऋत्विज होम के लिए, ४-अग्निमुख जानकार उप आचार्य (९×५)

४-१०० पण्डित से संपन्न या में—१-आचार्य (९ कुण्ड में), १-ब्रह्मा, १-कलश पूजन, १-इतर पूजन, १-तर्पण के लिए, ५-परिचारक ब्राह्मण, ८१-ऋत्विज होम के लिए, ९-अग्निमुख जानकार उपआचार्य (९×९), इसी अनुपात में अधिक संख्या में कर सकते हैं।

ॐ उत्तिंष्ठ ब्रह्मणस्पते देवान् यज्ञेनं बोधय।
आयुंः प्राणं प्रजां पशून् कीर्तिं यजंमानं च वर्धय। *(अथर्ववेद १९.६३.१)*

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मत्कृताम्। इष्टकामार्थसिद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*
(इन मन्त्रों से आवाहित देवताओं को उठाना चाहिये।)

देवनान्दी समास

ऋत्विग्वरणम् (संकल्प लेकर)—देशकालौ संकीर्त्य करिष्यमाण कर्मणि आचार्यादि ऋत्विग्वरणं करिष्ये। ब्राह्मणं संपूज्य अमुक प्रवारान्वितं अमुक गोत्रोत्पन्नं अमुक वेदान्तर्गत अमुख शाखाध्यायिनं अमुक शर्माणं ब्राह्मणं अस्मिन् यज्ञे-

आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः। तथा त्वं मम यागेस्मिन् आचार्यो भव सुव्रत॥ त्वां वृणे। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

विप्रः-वृतोस्मि (मैनें स्वीकार किया है) यथाज्ञानतः कर्म करिष्यामि (यथा ज्ञान कर्म करूँगा)

ब्रह्मवरण—यथा चतुर्मुखोब्रह्मा स्वर्गे लोके पितामहः। तथा त्वं मम यज्ञेस्मिन् ब्रह्मा भव द्विजोत्तम॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

अमुकप्रवरान्वितः अमुकगोत्रः अमुकशर्माहं अमुक प्रवरान्वितं अमुकगोत्रोत्पन्नं अमुक वेदान्तर्गत अमुक शाखाध्यायिनं अमुक शर्माणं ब्रह्माणं त्वां वृणे। वृतोस्मि। यथाज्ञानतः कर्म करिष्यामि॥

सदस्य वरणम्—त्वंनो गुरुः पितामातात्वं प्रभुस्त्वं परायणं। त्वत्प्रसादाच्चविप्रर्षे सर्वं मेस्यान्मनोगतम्॥
आपद्विमोक्षणार्थायकुरुयज्ञमतन्द्रितः। ऋत्विग्भिः सहितः शुद्धैः संयतैः सुसमाहितैः॥
आचार्येण च संयुक्तः कुरु कर्म यथोदितं॥ *(ब्रह्म कर्म समुच्चय)*

अमुकप्रवरान्वितः अमुकगोत्रः अमुकशर्माहं अमुकप्रवरान्वितं अमुकगोत्रोत्पन्नं अमुकवेदान्तर्गत अमुकशाखाध्यायिनं अमुकशर्माणं सदस्यत्वेन त्वां वृणे। **वृतोऽस्मि। यथाज्ञानतः कर्म करिष्यामि।**

उपद्रष्टृवरण—भगवन् सर्वधर्मज्ञ सर्वधर्मभृतांवर। वितते ममयज्ञेस्मिन्नुपद्रष्टाभवद्विज॥ *(ब्रह्म कर्म समुच्चय)*

अमुकप्रवरान्वितः अमुक गोत्रः शर्माहं अमुकप्रवरान्वितं अमुकगोत्रत्पन्नं अमुकवेदान्तर्गत अमुकशाखाध्यायिनं अमुकशर्माणं उपद्रष्टृत्वेन त्वां वृणे। वृतोस्मि।

यथाज्ञानतः कर्म करिष्यामि।

ऋत्विग्वरणम्—ऋत्विजश्च यथा पूर्वं शक्रादीनां मखेऽभवन्। यूयं तथा मे भवत ऋत्विजोर्हथसत्तमाः॥ *(ब्रह्म कर्म समुच्चय)*

अमुक प्रवरान्वितः अमुक गोत्रः अमुक शर्माहं अमुक प्रवरान्वितं अमुक गोत्रोत्पन्नं अमुकवेदान्र्तगत अमुकशाखाध्यायिनं अमुकशर्माणं ऋत्विक्त्वेन त्वां वृणे। वृतोस्मि। यथा ज्ञानतः कर्म करिष्यामि। ऋत्विजो वृत्वा मधुपर्कमाहरेत्। ऋत्विग् वरण के पश्चात् मधुपर्क देना चाहिये।

मधुपर्क मे देय वस्तु (संग्रह)—पाद्यार्थं, अर्घ्यार्थं मंत्रवत्त्रिराचमनीयार्थं, शुद्ध अष्ट आचमनीयार्थं च जलपात्रचतुष्टयं, मधुपर्क कांस्यपात्रं गां, विष्टरं (आसन) च संपाद्य कर्ता आचम्य, प्राणानायम्य, देशकालौ स्मृत्वा, ऋत्विग्भ्यः मधुपर्क पूजां करिष्ये। विष्टरः पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयं मधुपर्कः गौः इत्येतेषां त्रिः त्रि एकैकं वेदयन्ते। **विष्टरो विष्टरो विष्टरः**। प्रतिगृह्यतां। प्रतिगृण्हामि। (आसन, आसन, आसन) स्वीकार करता हूँ।

२५ दर्भाओं से बना आसन विष्टर कहलाता है। अहंवर्ष्मेत्यस्य वामदेवो विष्टरोनुष्टुप् विष्टरोपवेशने विनियोगः।

ॐ अहं वर्ष्म सजतानां विद्युतामिव सूर्यः। इदं तमधितिष्ठामियोमाकश्चाभिदासति॥ *(आश्वलायन गृह्य सूत्र)*

इति उदगग्रे विष्टर उपविशेत्। दर्भाग्र उत्तराभिमुख हो। उस पर बैठें। **पाद्यं पाद्यं पाद्यं**। प्रतिगृह्तां। प्रतिगृण्हामि। (पैरों के लिए जल) (स्वीकार करें) (स्वीकार करता हूँ।) दाहिने पाँव धोयें।

ॐ अस्मिन्राष्ट्रे श्रिय॒ मावेंशया॒म्यतों दे॒वीः प्रतिंपश्या॒म्यापः॥
द॒क्षिणं पा॒दम॒वनें नि॒जेऽस्मिन् रा॒ष्ट्र इन्द्रि॒यं दंधामि॥ *(ऋग्वेद ऐतरेय ब्राह्मण)* **बायें पाँव धोये।**
ॐ सव्यं पा॒दम॒वनें नि॒जेऽस्मिन् राष्ट्र इंन्द्रियंवर्धयामि॥ पूर्वम॒न्यमपंरमन्यं॒ पादा॒ववंनेनि॒जे॥
ॐ देवाराष्ट्रंस्य गुप्त्या अभयस्यावंरुद्ध्यै॥ आपंः पादाव॒नेजंनीर्द्विषंतं निर्दहन्तु मे॥ *(ऋग्वेद ऐतरेय ब्राह्मण)*

इन मन्त्रों को पढ़कर यजमान जल डालकर हाथ से ऋत्विगों का चरण धोवें।

सकृदाचम्य—एक बार आचमन करके ॐऋग्वेदाय स्वाहा। ॐयजुर्वेदाय स्वाहा। ॐसामवेदाय स्वाहा। ॐअथर्व वेदाय नमः। (हाथ धोले) पुनः

अर्घ्यमर्घ्यमर्घ्यं। प्रतिगृह्यतां। प्रतिगृह्णामि। (अर्घ्यजल स्वीकार करें) स्वीकार करता हूँ। अर्घ्य जल को ऋत्विक् अञ्जलि में स्वीकार करना चाहिये। आचमनीयं आचमनीयं आचमनीयं प्रतिगृह्यतां। प्रतिगृह्णामि। (आचमनीय जल पात्र देवें। स्वीकार करता हूँ।) आचमनीय पात्र को नीचे रखकर एक चमच जल **अमृतोपस्तरणमसि** कहकर पीना चाहिये। पुनः पहले वाले पात्र से एक बार आचमन करना चाहिये। **मधुपर्कमाषियमाणमीक्षयते** मधुपर्क लाते हुए देखना चाहिये। ॐमित्रस्य त्वा चक्षुषा प्रतीक्षे॥ (मधुपर्क लाते हुए देखना चाहिये।) मधुपर्को मधुपर्को मधुपर्कः। प्रतिगृह्यतां। (मधुपर्क को स्वीकार करें।)

ॐ देवस्यं त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् प्रसूत आ रंभे॥ *(अथर्ववेद १६.५१.२)*

(मधुपर्क स्वीकार करता हूँ कहकर दोनो हाथों की अञ्जली से मधुपर्क स्वीकार करना चाहिये।)

ॐ मधुमान् भवति मधुमदस्याहार्यं भवति। मधुमतो लोकान् जयति य एवं वेद॥ *(अथर्ववेद ६.१.२३)*

इन मन्त्रों को कहते हुए मधुपर्क देखें। उस पात्र को बाये हाथ में रखकर अङ्गुली पर लगे मधुपर्क को "ॐवसवस्त्वा गायत्रेण छन्दसा भक्षयन्तु" कहकर उसे पूर्व की ओर उछालना चाहिये। ॐरुद्रास्त्वा त्रैष्टुभेन छन्दसा भक्षयन्तु कहकर उसे दक्षिण की ओर उछालना चाहिये। ॐआदित्यास्त्वा जागतेन छन्दसा भक्षयन्तु कहकर उसे पश्चिम दिशा में उछालना चाहिये। ॐविश्वेत्वादेवा आनुष्टुभेन छन्दसा भक्षयन्तु कहकर उत्तर दिशा में उछालना चाहिये। (एक बार लेकर चार दिशाओं में उछालाना चाहिये।) पुनः तीन बार उसी मुद्रा में लेकर (अंगुष्ठ अनामिका मिलाकर) तीन बार ॐभूतेभ्यस्त्वा, ॐभूतेभ्यस्त्वा, ॐभूतेभ्यस्त्वा कहकर तीन बार ऊपर उछालना चाहिये। मधुपर्क पात्रं भूमौ निधाय। (मधुपर्क पात्र को भूमि पर रखना चाहिये।) मधुपर्क के एक भाग को हाथ में लेवें।

ॐ विराजोदोहोसि कहकर उसका प्राशन करें। लौकिक उदक (सामान्य पात्र के जल से एक बार आचमन करें।) पुनः एक भाग मधुपर्क (एक चमच) को हाथ में लेवें। ॐविराजो दोहमशीय कहकर उसका प्राशन करें। लौकिक उदक सामान्य पात्र के जल से एक बार आचमन करें। पुनः एक भाग

मधुपर्क को हाथ में लेवें। **ॐ मयि—दोहः पद्यायै विराजः** कहकर उसका प्राशन करें। लौकिक उदक (सामान्य पात्र के जल से) एक बार आचमन करें।

मधुपर्कशेषं उदगुपविष्टायब्राह्मणाय दद्यात् लोकवि द्विष्टत्वात् अप्सु वा क्षिपेत्।

मधुपर्कशेष को उत्तर में बैठे ब्राह्मण को देना चाहिये, नहीं तो उसे जल में छोड़ना चाहिये। मधुपर्क स्वादिष्ट होता है, फिर भी अल्प ही लेना चाहिये। ततः पूर्वनिवेदित आचमनीयैकदेशं-ॐअमृतापिधानमसि इति पीत्वा लौकिक उदकेन आचम्य आचमनीय जलशेषं सर्वं गृहीत्वा ॐसत्यं यशः श्री र्मयि श्रीः श्रयतां इति प्राश्य लौकिकेन उदकेन द्विराचमेत्।

इसमें मन्त्राचमन के लिए एक पात्र होता है, एवं लौकिक आचमन के लिए एक पात्र होता है। मन्त्राचमन तीन बार होता है। १. अमृतोपस्तरणमसि। २. अमृतापिधानमसि। ३. ॐसत्यं यशः श्री र्मयि श्रीः श्रयतां। इन तीन मन्त्रों से मन्त्राचमन होता है। आठ स्थल पर लौकिक आचमन इस प्रयोग में होता है।

अनन्तर पहले बताये गये मन्त्राचमन के भाग—**ॐ अमृतापिधानमसि** कहकर पीना चाहिये, फिर लौकिक जल से आचमन करना चाहिये। फिर मन्त्राचमन पात्र में शेष सभी जल को हाथ में लेकर ''ॐसत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां'' कहकर पी लेना चाहिये। पुनः लौकिक जल से दो बार आचमन करना चाहिये।

ततः दात्रा गौः गौः गौः इति त्रिर्निवेदितां गां निष्क्रयं वा। इसके पश्चात् यजमान तीन बार गाय का नाम लेना चाहिये। गोमूल्य दान देना चाहिये। **उस समय कहने वाले मन्त्र**—मातारुद्राणामित्यस्य भार्गवो जमदग्निर्गोस्त्रिष्टुप्। गोरुत्सर्जनेविनियोगः।

ॐ मातारुद्राणांदुहितावसूनांस्वसादित्यानाममृतस्य नाभिः।
प्रनुवोंचंचिकितुषेजनायमागामनांगामदितिं वधिष्ट॥ *(ऋग्वेद ८.१०१.१५)*

कहकर गो को छोड़ना चाहिये। (ॐउत्सृजत इति विसृजेत्) ततो दाता गंधमाल्यवस्त्र युगोपवीतयुगाभरणादिभिर्यथाविभवं ब्राह्मणान् पूजयेत्॥ अनन्तर दाता

पं को देने वाले वस्त्रादि देकर गन्ध पुष्पों से ब्राह्मणों का पूजन करना चाहिये।

मधुपर्क बनाने का विधान—

मया संपूजितैरत्र दक्षिणाभिश्चतोषितैः। क्रियतां (इष्ट) यागो मे प्रार्थयामि प्रसीदत। *(अनुष्ठान पद्धति-क्रियासार)*

दधनिमध्वानीय सर्पिर्वा मध्वलाभे। दही में शहद मिलायें, शहद के अभाव में घी डालें दही न मिलने पर दूध एवं घी मिलाकर मधुपर्क तैयार करें। घी न मिलने पर दूध एवं गूड मिलाकर मधुपर्क तैयार करें। सभी दानों में यजमान पूर्वाभिमुख बैठें दान लेने वाले उत्तराभिमुख बैठें।

वरस्य या भवेच्छाखा तच्छाखागृह्यचोदितः। मधुपर्कः प्रदातव्यो ह्यन्यशाखेपि दातरि॥ *(अनुष्ठान पद्धति-क्रियासार)*

मधुपर्कः देते समय लेने वाले ब्राह्मण के शाखनुसार ही मन्त्रोच्चारण करें उस शाखा के मंत्र न आने पर यजमान की शाखा का मंत्रोच्चारण करें। तात्पर्य आचार्य को जिस शाखा के मन्त्र आते हैं उसी का प्रयोग कर सकते हैं।

पञ्चाशता भवेद्ब्रह्मातदर्धेन तु विष्टरः। ऊर्ध्वकेशो भवेद् ब्रह्मा लम्बकेशस्तु विष्टरः॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय टिप्पणी)*

दक्षिणावर्तको ब्रह्मा वामावर्तस्तु विष्टरः। ५० कुशाओं से ब्राह्मासन, २५ कुशाओं से विष्टर तैयार होता है। ब्रह्मासन में अग्रभाग ऊपर होना चाहिये, एवं प्रदक्षिणाकार में इसे लपेटना चाहिये। विष्टरासन में अग्रभाग नीचे होना चाहिये, एवं अप्रदक्षिणाकार में लपेटना चाहिये। ब्रह्मासन में अग्र दक्षिणाभिमुख होना चाहिये। विष्टरासन में अग्रभाग उत्तरभिमुख होना चाहिये। **यह आसन की प्राचीन परंपरा है।**

मधुपर्क प्रकरण समाप्त

प्रथम दिन द्वितीय प्रहर सम्पन्न

द्वितीय दिन प्रथम प्रहर

भू-शुद्धि— ॐ स्योनास्मै भव पृथिव्यनृक्षरा निवेशनी। यच्छास्मै शर्म सप्रथाः॥ *(अथर्ववेद १८.२.१९)*
इस मन्त्र से जल प्रोक्षण करने से भूमि शुद्ध होती है।

देह शुद्धि—ॐ या आपो याश्च देवता या विराड् ब्रह्मणा सह। शरीरं ब्रह्म प्राविशच्छरीरेऽधि प्रजापतिः॥ *(अथर्ववेद ११.८.३०)*

आचमन मन्त्र—ऋग्वेदाय स्वाहा। यजुर्वेदाय स्वाहा। सामवेदाय स्वाहा। (स्वाहा मन्त्र से जल पीना चाहिये।) अथर्ववेदाय नमः। इतिहास पुराणेभ्यो नमः। अग्नये नमः। वायवे नमः। प्राणाय नमः। सूर्याय नमः। चन्द्राय नमः। दिग्भ्यो नमः। इन्द्राय नमः। पृथिव्यै नमः। अन्तरिक्षाय नमः। दिवे नमः। ब्रह्मणे नमः। विष्णवे नमः। सदाशिवाय नमः। द्विराचम्य .. इस प्रक्रिया को दुबारा करना चाहिये।

पवित्र धारणम्— ॐ सुतासो मधुमत्तमाः सोमा इन्द्राय मन्दिनः। पवित्रवन्तो अक्षरन्देवान्गच्छन्तु वो मदाः॥ *(अथर्ववेद २०.१३७.४)*
ॐभूर्भुवः स्वः कहकर जल सिञ्चन करें॥ (इन मन्त्रों से पवित्र शुद्धिकर धारण करना चाहिये आसन के नीचे दो कुश डाल लेना चाहिये।)

प्राणायाम—प्रणवस्य परब्रह्म ऋषिः, दैवी गायत्री छन्दः, परमात्मा देवता प्राणायामे विनियोगः।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योतीरसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवस्वरोम्। *(ऋग्वेद ३.६२.१०)* (रेखाङ्कित मन्त्र को तीन बार कुम्भक में जप करना चाहिये।)

करन्यासः- ॐअङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐतर्जनीभ्यां नमः। ॐमध्यमाभ्यां नमः। ॐअनामिकाभ्यां नमः। ॐकनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐकरतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

अङ्गन्यास, हृदयादिन्यासः-ॐहृदयाय नमः। ॐशिरसे स्वाहा। ॐशिखायै वषट्। ॐकवचाय हुम्। ॐनेत्रत्रयाय वौषट्। ॐअस्त्राय फट्। ॐभूर्भुवः स्वरोमिति दिग्बन्धः

आसन शुद्धि— ॐ स्योनास्मै भव पृथिव्यनृक्षरा निवेशनी। यच्छास्मै शर्म सप्रथाः॥ *(अथर्ववेद १८.२.१९)*

इस मन्त्र से जल प्रोक्षण करने से भूमि शुद्ध होती है।

शिखाबन्धनम्—

ऊर्ध्वकेशि विरूपाक्षि मांसशोणित भक्षणे। तिष्ठ देवि शिखाबन्धे चामुण्डे ह्यपराजिते॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

(इस मन्त्र से शिखाबन्धन करना चाहिये।)

महासंकल्प—हेमाद्रि संकल्प

ॐस्वस्ति श्री समस्तजगदुत्पत्तिस्थितिलयकारणस्य रक्षा-शिक्षा-विचक्षणस्य प्रणतपारिजातस्य अशेषपराक्रमस्य श्रीमदनन्तवीर्यस्यादि नारायणस्य अचिन्त्यापरिमितशक्त्या ध्रियमाणानां महाजलौघमध्ये परिभ्रमताम् अनेक कोटि ब्रह्माण्डानाम् एकतमे अव्यक्त- महदहंकार - पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशाद्यावर णैरावृते अस्मिन् महति ब्रह्माण्डखण्डे आधारशक्तिश्रीमदादि- वाराह-दंष्ट्राग्र- विराजिते कूर्मानन्त- वासुकि-तक्षक-कुलिक - कर्कोटक -पद्म - महापद्म - शंखाद्यष्टमहानागैर्ध्रियमाणे ऐरावत-पुण्डरीक-वामन-कुमुद-अञ्जन-पुष्पदन्त-सार्वभौम-सुप्रतीकाष्टदिग्गजोपरिप्रतिष्ठितानाम् अतल-वितल-सुतल-तलातल-रसातल-महातल-पाताल-लोकानामुपरिभागे भुवर्लोक-स्वर्लोक-महर्लोक -जनोलोक - तपोलोक - सत्यलोकाख्य षड्लोकानामधोभागे भूर्लोके चक्रवाल शैल - महावलयनागमध्यवर्तिनो महाकाल महाफणि राजशेषस्य सहस्रफणामणिमण्डल मण्डिते दिग्दन्तिशुण्डादण्डोद्दण्डिते अमरावत्यशोकवती भोगवती - सिद्धवती- गान्धर्ववती - काशी- काञ्ची - अवन्ती अलकावती यशोवतीतिपुण्यपुरीप्रतिष्ठिते लोकालोकाचलवलयिते लवणेक्षु- सुरा- सर्पि - दधिक्षीरोदकार्णवपरिवृते जम्बू-प्लक्ष-कुश-क्रौञ्च - शाक शाल्मलिपुष्कराख्यसप्तद्वीपयुते इन्द्र-कांस्य-ताम्र-गभस्ति-नाग-सौम्य-गान्धर्व-चारणभारतेतिनव-खण्डमण्डिते सुवर्णगिरिकर्णिकोपेत महासरोरुहाकार पञ्चाशत् कोटि योजनविस्तीर्णभूमण्डले अयोध्या मथुरा-माया-काशी-काञ्ची-अवन्तिका-पुरी द्वारवतीतिमोक्षदायिकसप्तपुरीप्रतिष्ठिते सुमेरु निषधत्रिकूट-रजतकूटाम्रकूट-चित्रकूट-हिमवद्विन्ध्याचलानां महापर्वत प्रतिष्ठिते हरिवर्ष किंपुरुषयोश्च दक्षिणे नवसहस्रयोजन विस्तीर्णे मलयाचल-सह्याचल विन्ध्याचलानामुत्तरे स्वर्णप्रस्थ-चण्डप्रस्थ-चान्द्र-सूक्तावन्तक-रमणक महारमणक-पाञ्चजन्य-सिंहल

लंङ्केति-नवखण्डमण्डिते गंगा-भागीरथी-गोदावरी- क्षिप्रा-यमुना- सरस्वती-नर्मदा-ताप्ती-चन्द्रभागा-कावेरी-पयोष्णी-कृष्णावेणी-भीमरथी-तुंगभद्रा-ताम्रपर्णी- विशालाक्षी- चर्मण्वती-वेत्रवती- कौशिकी-गण्डकी- विश्वामित्रीसरयूकरतोया- ब्रह्मानन्दामहीत्यनेक पुण्यनदी विराजिते भारतवर्षे भरतखण्डे जम्बूद्वीपे कूर्मभूमौ साम्बवती कुरुक्षेत्रादि समभूमौ आर्यावर्तान्तर्गते ब्रह्मावर्तैकदेशे गंगायमुनयोर्मध्यभागे योजनव्यापिविस्तीर्णक्षेत्रे, ज्ञानयुग प्रवर्तकानां महर्षि महेशयोगिवर्याणां परमाराध्यगुरुदेवै : अनन्तश्रीविभूषितैः ज्योतिष्पीठाधीश्वरैः जगद्गुरु श्रीमच्छङ्कराचार्य ब्रह्मानन्दसरस्वतीमहाभागैः सम्पादितशतमखकोटि होम महायज्ञपावितायां भूमौ.............................. सकलजगत्स्रष्टुः परार्धद्वय जीविनो ब्रह्मणो द्वितीये परार्धे एकपञ्चाशत्तमे वर्षे प्रथम मासे प्रथम पक्षे प्रथम दिवसे अह्नस्तृतीये यामे तृतीये मुहूर्ते रथन्तरादिद्वात्रिंशत्कल्पानांमध्ये अष्टमे श्वेतवाराहकल्पे स्वायंभुवादि मन्वन्तराणां मध्ये सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे कृत त्रेताद्वापरकलिसंज्ञकानां चतुर्णां युगानां मध्ये वर्तमाने अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमपादे प्रभवादि षष्ठि सम्वत्सराणां मध्ये........................ ....संवत्सरे...................................अयने..............................ऋतौ ....मासे ....पक्षे .... तिथौ .... वासरे .... नक्षत्रे .... योगे .... करणे ....राशि स्थिते श्रीसूर्ये .... राशि स्थिते श्रीचन्द्रे...................... राशि स्थिते श्रीकुजे................................ राशि स्थिते श्रीबुधे .... राशि स्थिते श्रीदेवगुरौ .... राशि स्थिते श्रीशुक्रे........................... राशि स्थिते श्रीशनौ............ राशि स्थिते श्रीराहौ................ राशि स्थिते श्रीकेतौ.............एवं गुण विशेषण विशिष्टायां पुण्यायाम् महापुण्य शुभ तिथौ...

गुरु प्रार्थना —

नमो गुरुभ्यो गुरुपादुकाभ्यो नमः परेभ्यः परपादुकाभ्यः।
आचार्य सिद्धेश्वर पादुकाभ्यो नमोऽस्तु लक्ष्मीपति पादुकाभ्यः॥ *(श्रृङ्गेरी मठीय आचार्य प्रार्थनम्)*

श्री गुरु परमगुरु परमेष्ठी गुरु सद्गुरु पादुकाभ्यो नमो नमः। हम लोग ब्रह्मानन्दं गुरु तं नमानि। गुरु परम्परा को भी बोल सकते हैं। कर सकते हैं। हरौ रुष्टे गुरुस्त्राता गुरौ रुष्टे न कश्चन॥ ईश्वर के रुष्ट होने पर गुरुजी रक्षा करते हैं एवं गुरुजी के कुपित होने पर कोई भी रक्षक नहीं है।

भूतोच्चाटन मन्त्र—

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुविसंस्थिताः। ये भूता विघ्नकर्तारः ते गच्छन्तु शिवाज्ञया॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-आसन विधि प्रकरण)*

ॐ अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम्। सर्वेषामविरोधेन ब्रह्मकर्म समारभे॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-आसन विधि प्रकरण)*

ॐ तीक्ष्णादंष्ट्रमहाकाय कल्पान्ते दहनोपम। भैरवाय नमस्तुभ्यं अनुज्ञां दातुमर्हसि॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

इति भैरवं नमस्कृत्य। (इन मन्त्रों से भूतोच्चाटन कर भैरव जी से यज्ञ रक्षा की प्रार्थना करते हैं।)

गणपति प्रार्थना—ॐ इमा या ब्रह्मणस्पते विषूचीर्वात ईरते। सध्रीचीरिन्द्र ताः कृत्वा मह्यं शिवतमास्कृधि स्वस्ति नो अस्त्वभयं नो अस्तु नमोऽहोरात्राभ्यामस्तु॥ *(अथर्ववेद १९.८.६)* इन मन्त्रों से गणपति प्रार्थना कर पुष्पाक्षत छोड़ना चाहिये।

जल कलश पूजनम्—कलश में पूर्ण जल भरकर रखना चाहिये। फिर उसमें गन्ध अक्षत पुष्प कलश के अन्दर डालना चाहिये एवं बाहर भी चारों ओर लगाना चाहिये। गायत्री मन्त्र से तीन बार कलश छूकर जप करना चाहिये।

ॐ कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः। मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥
कुक्षौ तु सागरास्सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदस्सामवेदोह्यथर्वणः॥
अङ्गैश्चसहितास्सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः। अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा॥
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः। सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः॥
गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिंकुरु॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-देवपूजा प्रकरण)*

ॐ अप्सु तें राजन् वरुण गृहो हिरण्ययो मिथः। ततों धृतव्रतो राजा सर्वा धामानि मुञ्चतु॥ (अथर्ववेद ७.८३.१)

ॐ एमां कुमारस्तरुण आ वत्सो जगता सह। एमां परिस्रुतः कुम्भ आ दध्नः कलशैरगुः॥ (अथर्ववेद ३.१२.७)

श्री वरुण मूर्तये नमः।

(इन मन्त्रों को कलश छूकर पाठ करना चाहिये।)

सितमकरनिषण्णां शुभ्रवर्णां त्रिनेत्रां करधृत कलशोद्यत्पंकजाभीत्यभीष्टाम्।
विधि हरिहररूपां सेन्दुकोटीरचूडां भसितसितदुकूलां जाह्नवीं तां नमामि॥ (स्मृति संग्रह)

(इस मन्त्र से कलश में गङ्गाजी का ध्यान करना चाहिये।)

आत्माराधनम्—हृदि स्थितं पंकजमष्टपत्रं सकेसरं कर्णिक मध्यनालं॥
अङ्गुष्ठमात्रं मुनयो वदन्ति ध्यायेत् च विष्णुं पुरुषं पुराणम्॥
हृदयकमलमध्ये सूर्यबिम्बासनस्थं सकलभुवनबीजं सृष्टिसंहारहेतुम्।
निरतिशयसुखात्म ज्योतिषं हंसरूपं परमपुरुषमाद्यं चिन्तयेदात्ममूर्तिम्॥
आराधयामि मणि सन्निभमात्मलिङ्गम्। मायापुरीरहृदय पंकज सन्निविष्टम्॥
श्रद्धा नदी विमलचित्त जलभिषेकैं। नित्यं समाधि कुसुमैर्न पुनर्भवाय॥
देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो हंसः सदाशिवः। त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥
स्वामिन् सर्व जगन्नाथ यावत्पूजावसानकम्। तावत् त्वं प्रीति भावेन बिम्बेस्मिन् सन्निधिं कुरु॥ (देवपूजा)

ॐ आत्मने नमः। ॐ अन्तरात्मने नमः। ॐ परमात्मने नमः। ॐ ज्ञानात्मने नमः। आत्मपूजां समर्पयामि। इससे आत्मशुद्धि होती है। (इन मन्त्रों को कहकर

अपने सिर पर अक्षत डाल लेवें।) **त्रिवाक्येण पुण्याह वाचन—**

ॐ पार्थिवस्य रसे देवा भगस्य तन्वो३ बले। आयुष्यमस्मा अग्निः सूर्यो वर्च आ धाद् बृहस्पतिः॥

आयुरस्मै धेहि जातवेदः प्रजां त्वष्टरधिनिधेह्यस्मै।

रायस्पोषं सवितरा सुवास्मै शतं जीवाति शरदस्तवायम् (अथर्ववेद २.२९.१-२)

ॐ पुण्यं पूर्वा फल्गुन्यौ चात्र हस्तश्चित्रा शिवा स्वाति सुखो मे अस्तु।

राधे विशाखे सुहवानुराधा ज्येष्ठा सुनक्षत्रमरिष्ट मूलम्॥ (अथर्ववेद १९.७.३)

मह्यं सकुटुम्बिनेमहाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणायाद्यकरिष्यमाणामुककर्मणः पुण्याहं भवंतो ब्रुवंत्विति त्रिर्वदेत्।

(यजमान अपने सकुटुम्ब प्रणाम करते हुए आज संपन्न होने वाले कर्म के लिए पुण्याह की याचना करते हुए तीन बार कहते हैं। जिसका प्रत्युत्तर ब्राह्मण तीन बार देते हैं।)

१. ॐ पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु। ॐ अस्तु पुण्याहम्। २. ॐ पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु। ॐ अस्तु पुण्याहम्। ३. ॐ पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु। ॐ अस्तु पुण्याहम्।

ॐ वेदः स्वस्तिर्द्रुघणः स्वस्तिः परशुर्वेदिः परशुर्नः स्वस्ति।

हविष्कृतो यज्ञिया यज्ञकामास्ते देवासो यज्ञमिमं जुषन्ताम्॥ (अथर्ववेद ७.२८.१)

इसके बाद नीचे लिखा वाक्य का तीन बार यजमान कहें। एवं ब्राह्मण प्रत्युत्तर दें। मह्यं सकुटुम्बिने महाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणायाद्यक रिष्यमाणामुककर्मणः स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु। (ब्राह्मण कहते हैं)—ॐ आयुष्मते स्वत्ति। इन उपरोक्त वाक्यों को तीन बार दोहराना चाहिये। इसके बाद पुनः पहले जैसे उत्तर कलश से जल नीचे रखे बड़े पात्र में थोड़ा-थोड़ा कर गिराते हुए मंत्रपाठ करें।

ॐ अर्धइमन्त्रो योनिं य आबभूवामृतासुर्वर्धमानः सुजन्मा।

अदब्धासुर्भ्राजमानोऽहेव त्रितो धर्ता दाधार त्रीणि ॥ *(अथर्ववेद ५.१.१)*

इसके बाद पुनः नीचे लिखे वाक्यों को तीन बार यजमान कहें। एवं ब्राह्मण प्रत्युत्तर दें। मह्यं सकुटुंबिने महाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणायाद्य करिष्यमाण अस्य कर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।

(ब्राह्मण कहते हैं)—ॐ ऋध्यतां। इन उपरोक्त वाक्यों को तीन बार दोहराना चाहिये। इसके बाद मन्त्र पाठ करते हुए उत्तरकलश से नीचे रखे पात्र में जल छोड़ना चाहिये।

ॐ एह यांतु वरुणः सोमो अग्निर्बृहस्पतिर्वसुभिरेह यांतु।
अस्य श्रियमुपसंयांत सर्वं उग्रस्यं चेत्तुः संमनसः सजाताः ॥ *(अथर्ववेद ६.७३.१)*

इसके बाद पुनः नीचे लिखे वाक्यों को तीन बार यजमान कहें एवं ब्राह्मण प्रत्युत्तर दें। मह्यं सकुटुंबिने महाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणायाद्य करिष्यमाण अमुक कर्मणः श्रीरस्त्विति भवंतो ब्रुवन्तु। (ब्राह्मण कहते हैं)—ॐ अस्तु श्रीः। इन वाक्यों को तीन बार कहना चाहियें। वर्षशतं परि पूर्णमस्तु। गोत्राभिवृद्धिरस्तु। कर्माङ्ग देवता प्रीयताम्। (ब्राह्मण आशीर्वाद देते हैं—सौ साल पूर्ण हो। आप की वंश वृद्धि हो। कर्माङ्ग देवता आप पर प्रसन्न हो।)

मातृका पूजनम्—पान सुपारी दक्षिणा के ऊपर कूर्च (कुश से बना) रखकर उसमें मातृका आवाहन करके उनमें मातृका पूजन करना चाहिये। नान्दी मण्डल के आगे मातृका पूजन करना चाहिये।

ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णावी तथा। वाराही तथेन्द्राणी चामुण्डाः सप्तमातरः ॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

सात मातृकायें।

गौरीपद्मा शचीमेधासावित्रीविजयाजया। देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः ॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

धृतिः पुष्टिस्तथातुष्टिरात्मनः कुलदेवताः। (गौर्यादि षोडश मातृकायें)। ब्राह्म्यादि सप्त मातृः गौर्यादि षोडश मातृः आवाहयामि। विनायकं आवाहयामि। दुर्गा आवाहयामि। क्षेत्रपालं आवाहयामि। गणपतिं आवाहयामि। मातृस्वसारं आवाहयामि। पितृस्वसारं आवाहयामि। एताभ्यो देवताभ्यो नमः। ध्यायामि। ध्यानं समर्पयामि। इनका षोडशोपचार पूजन करना याहिये। **उदाहरण**—आवाहित देवताभ्यो नमः। आसनं समर्पयामि आदि। षोडशोपचार

पूजन संक्षेप में करें। (गणेश पूजन में है।)

अन्त में पुष्पांजलि मन्त्र—ॐ देवानां पत्नीरुशतीरवन्तु नः प्रावन्तु नस्तुजये वाजसातये।

याः पार्थिवासो या अपामपि व्रते ता नो देवीः सुहवाः शर्म यच्छन्तु ॥ *(अथर्ववेद ७.४९.१)*

ॐ भूर्भुवः स्वः आवाहित देवताभ्यो नमः। मन्त्रपुष्पं समर्पयामि।

ॐ तदस्तु मित्रावरुणा तदग्ने शं योरस्मभ्यमिदमस्तु शस्तम्।

अशीमहि गाधमुत प्रतिष्ठां नमो दिवे बृहते सादनाय॥ *(अथर्ववेद १९.११.६)*

गृहावै सूक्तं, प्रतिवीतं तत्, प्रतिवीततमया वाचा शस्तव्यम्। स यद्यपित दूरात् पशूंल्लभते, गृहानेवैनानाजिगमिषति गृहाहिपशूनां प्रतिष्ठा। *(गो.ब्रा.)*

इन मन्त्रों को पढकर पुष्पाक्षत चढ़ायें।

मातृका पूजन समासम्

आवाहित देवनान्दी पूजन—देवनान्दी में मातृका पूजन आवश्यक नहीं है। यज्ञ,(अतिरुद्र, सहस्त्रचण्डी) रथोत्सव आदि सार्वजनिक आचरणों में देवनान्दी ही करना चाहिये। **क्रतुदक्षावुत्सवे तु**। इस वाक्य से क्रतु एवं दक्ष नामक विश्वेदेव देवता हैं। देवनान्दी में पितृदेवता चार है। अमूर्त्य।

१. अग्निष्वात्ता, २. बर्हिषदः, ३. आज्यपाः, ४. सोमपाः

संकल्प—देशकालौ संकीर्त्य करिष्यमाण कर्माङ्ग भूतं नान्दीसमाराधनं करिष्ये। पहले दो मण्डल बनायें।

दत्वातण्डुलपूर्णपात्रयुगले संकल्प्य भुक्तिं तयोः।

ताम्बूलादि सुदक्षिणान्तिकमनुज्ञातः समुद्वाहयेत्॥ *(लक्षण संहिता)*

दो पात्रों में चावल, काजू किशमिश, फल, दाल, आदि दो मण्डलों पर रखें।

ॐ विश्वे देवा वसवो रक्षतेममुतादित्या जागृत यूयमस्मिन्।

मेमं सनांभिरुत वान्यनांभिर्मेमं प्रापत् पौरुंषेयो वधो यः॥ *(अथर्ववेद १.३०.१)*

ॐ क्रतुदक्षसंज्ञका विश्वेदेदेवाः—नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूभुर्वस्वः इयं च वृद्धिः। इससे दुर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें। अग्निष्वात्ताः पितृगणाः नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूभुर्वः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोड़ें।

बर्हिषदः पितृगणाः—नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें। **आज्यपाः पितृगणाः—**नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दुर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें। **सोमपाः पितृगणाः** नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें।

ॐ क्रतुदक्ष संज्ञका विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणयोः इदमासनगंधाद्युपचार कल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध अक्षत पुष्प दूर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें।**ॐ अग्निष्वात्ताः पितृगणाः** नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणयोः इदं आसनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध अक्षत पुष्प दूर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें। **बर्हिषदः पितृगणाः** नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणयोः इदमासनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध अक्षत पुष्प दुर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें। **आज्यपाः पितृगणाः** नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणयोः इदमासनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध, अक्षत, पुष्प, दुर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें।

सोमपाः पितृगणाः नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणयोः इदमासनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भूवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध, अक्षत, पुष्प, दुर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें। ॐभूर्भुवः स्वः सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि कहकर मण्डल पर रखे दोनों पात्रों को परिषेचन कर दक्षिणादिशा के पात्र को "इदं विश्वेभ्यो देवेभ्यः" उत्तरदिशा के पात्र को "इदं नान्दीमुख पितृभ्यः" कहकर दान संकल्प कर ब्राह्मणों को दे देवें।

क्रतुदक्षसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामं सोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणापर जल छोड़कर नीचे रखना चाहिये। **अग्निष्वा्त्ताः पितृगणाः** नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामंसोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणापर जल छोडकर नीचे रखना चाहिये। **बर्हिषदः पितृगणाः** नान्दीमुखाः गुग्म

ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं दमनामं सोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणापर जल छोड़कर नीचे रखना चाहिये। **आज्यपाः पितृगणाः** नान्दीमुखा युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामंसोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणापर जल छोडकर नीचे रखना चाहिये।

सोमपाः पितृगणाः नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामं सोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणा पर जल छोड़कर नीचे रखना चाहिये। आगे लिखे मन्त्रों से खड़े होकर उपस्थान करें।

एतद वै ब्रध्नस्यं विष्टपं यदोंदनः
ब्रध्नलोंको भवति ब्रध्नस्यं विष्टपिं श्रयते य एवं वेदं
एतस्माद् वा ओंदनात् त्रयंस्त्रिंशतं लोकान् निरंमिमीत प्रजापंतिः
तेषां प्रज्ञानांय यज्ञमंसृजत
स य एवं विदुषं उपद्रष्टा भंवति प्राणं रुंणद्धि
न चं प्राणं रुणद्धिं सर्वज्यानिं जींयते
न चं सर्वज्यानिं जीयतें पुरैनं जरसंः प्राणो जंहाति *(अथर्ववेद ११.३.५०-५६)*

कृतस्य देवनान्दी समाराधनस्य प्रतिठाफलसिद्ध्यर्थं द्राक्षामलक निष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृये। कहकर हाथ में दक्षिणा लेकर उस पर जल छोडकर नीचे रख दें।

प्रार्थना—अग्निष्वात्वा बर्हिषदः आज्यपाः सोमपास्तथा। एते भवन्तु मे प्रीताः प्रयच्छन्तु च मङ्गलम्॥ कहकर जल छोड़ें। अनेन नान्दीसमाराधनेन नान्दीमुखदेवताः प्रीयंताम्। **आचम्य**—मंगल तिलक रकें। **विसर्जन**—यज्ञ के अन्तिम दिन विसर्जन करें।

ॐ इडांयास्पुदं घृतवंत् सरीसृपं जातवेदुः प्रतिं हृव्या गृभाय।

ये ग्राम्याः पुशवों विुश्वरूपाुस्तेषां सप्तानां मयिु रन्तिंरस्तु॥ *(अथर्ववेद ६.७३.१)*

यथाचारं हिरण्येन भाण्डवादनं। मन्त्र कहते हुए सिक्के से थाली के निचले भाग में शब्द करना चाहिये। (घण्टा वादन के बदले)

१. सर्वाद्भुत शान्ति याग के लिए-१—आचाय, एक कुण्ड में १-ब्रह्मा, ईशान्य में १-कलश पूजन, होमाङ्ग पूजन दक्षिण में १-इतर पूजन, पश्चिम में १-तर्पण के लिए, परिचारक (कर्मचारी) १-एक ब्राह्मण-कुल ५ पंण्डित रहने पर

१५ पण्डित से संपन्न कर्म में—२-१५ पण्डित कर्म में (एक कुण्ड में), २-१५ पण्डित से संपन्न याग में—१ आचार्य, १ ब्रह्मा, १-कलश पूजन, १-इतर पूजन, १-तर्पण पूजन, १-परिचारक ब्राह्मण, ९-ऋत्विज होम के लिए

३-५५ पण्डित से संपन्न याग में—१- आचार्य (५ कुण्ड में), १-ब्रह्मा, १-कलश पूजन, १-इतर पूजन, १-तर्पण के लिए, १-परिचारक ब्राह्मण, ४५-ऋत्विज होम के लिए, ४-अग्रिमुख जानकार उप आचार्य (९×५)

४-१०० पण्डित से संपन्न या में—१-आचार्य (९ कुण्ड में), १-ब्रह्मा, १-कलश पूजन, १-इतर पूजन, १-तर्पण के लिए, ५-परिचारक ब्राह्मण, ८१-ऋत्विज होम के लिए, ९-अग्रिमुख जानकार उपआचार्य (९×९), इसी अनुपात में अधिक संख्या में कर सकते हैं।

ॐ उत्तिंष्ठब्रह्मणस्पते देुवान् यज्ञेनं बोधय।

आयुः प्राुणं प्रुजां पशून् कीुर्तिं यजमानं च वर्धय॥ *(अथर्ववेद १९.६३.१)*

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मत्कृताम्। इष्टकामार्थसिद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

(इन मन्त्रों से आवाहित देवताओं को उठाना चाहिये।)

देवनान्दी समाप्त

ब्राह्मण वन्दन— **ॐ ब्राुह्मणों स्यु मुखंमासीद्बाहू रांजुन्यों भवत्।**

मध्यं तदस्य यद्वैश्यः पुद्भयां शूद्रो अजायत ॥ (अथर्ववेद १९.६.६)

इस मन्त्र से ब्राह्मण पूजा करें। ''करिष्यमाण कर्मणः आरम्भमुहूर्तः सुमुहुर्तो अस्तु इति अनुगृणहन्तु''। यजमान पूछते है॥ ''सुमुहूर्तमस्तु''।

सर्वतोभद्र मण्डल में—पञ्चगव्य प्रोक्षण—

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ सं सिञ्चामि गवां क्षीरं समाज्येन बलं रसम्।

संसिक्ता अस्माकं वीरा ध्रुवा गावो मयि गोपतौ ॥ (अथर्ववेद २.२६.४)

ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्यवाजिनः।

सुरभि नो मुखा करत्प्र ण आयूंषि तारिषत्॥ (अथर्ववेद २०.१३७.३)

ॐ घृतं ते अग्ने दिव्ये सधस्थे घृतेन त्वां मनुरद्या समिन्धे।

घृतं ते देवीर्नप्त्य१ आ वहन्तु घृतं तुभ्यं दुह्रतां गावो अग्ने॥ (अथर्ववेद ७.८२.६)

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् प्रसूत आ रभे॥ (अथर्ववेद १९.५१.२)

जल कलश पूजन—कलश में पूर्ण जल भरकर रखना चाहिये। फिर उसमें गन्ध अक्षत पुष्प कलश के अन्दर डालना चाहिये एवं बाहर भी चारों ओर लगाना चाहिये। गायत्री मन्त्र से तीन बार कलश छूकर जप करना चाहिये।

ॐ कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः। मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागरास्सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदस्सामवेदोह्यथर्वणः॥

अङ्गैश्चसहितास्सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः। अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा॥
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः। सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः॥
गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिंकुरु॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-देवपूजा प्रकरण)*
ॐ अप्सु ते राजन् वरुण गृहो हिरण्ययो मिथः। ततो धृतव्रतो राजा सर्वा धामानि मुञ्चतु॥ *(अथर्ववेद ७.८३.१)*
ॐ एमां कुमारस्तरुण आ वत्सो जगता सह। एमां परिस्रुतः कुम्भ आ दध्नः कलशैरगुः॥ *(अथर्ववेद ३.१२.७)*

(इन मन्त्रों को कलश छूकर पाठ करना चाहिये।)

सितमकरनिषण्णां शुभ्रवर्णां त्रिनेत्रां करधृत कलशोद्यत्पंकजाभीत्यभीष्टाम्।
विधि हरिहररूपां सेन्दुकोटीरचूडां भसितसितदुकूलां जाह्नवीं तां नमामि॥ *(स्मृति संग्रह)*

(इस मन्त्र से कलश में गङ्गाजी का ध्यान करना चाहिये।)

शङ्खपूजन—शंख को पहले धोकर, उसमें जल भरकर, शंख को गन्ध पुष्प अक्षत लगाकर पीठ के ऊपर रखना चाहिये। गायत्री मन्त्र से तीन बार शंख छूकर जप करना चाहिये।

ॐ शङ्खं चन्द्रार्कदैवत्यं वारुणं चाधिदैवतम्। पृष्ठे प्रजापतिं विद्यात् अग्रे गङ्गा सरस्वती॥
त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया। शङ्खे तिष्ठन्ति विप्रेन्द्र तस्माच्छंखं प्रपूजयेत्॥
विलयं यान्ति पापानि हिमवत् भास्करोदये। दर्शनादेव शङ्खस्य किं पुनः स्पर्शने भवेत्॥
पाञ्चजन्यं महात्मानं पापघ्नं तु पवित्रकम्। शंखमध्यस्थितं तोयं भ्रामितं केशवोपरि॥
अङ्गलग्नं मनुष्याणां ब्रह्महत्यायुतं दहेत्॥ गर्भादेवारि नारीणां विशीर्यन्ते सहस्रधा।

तव नादेन पाताले पाञ्चजन्य नमोस्तुते॥ ॐ पाञ्चजन्याय विषहे पन्नगर्भाय धीमहि। *(देवपूजा)*
तन्नः शङ्खः प्रचोदयात्। ॐ पवनायै नमः। ॐ पाञ्चजन्यायै नमः। ॐ पर्जन्यायै नमः। ॐ अम्बुराजायै नमः। ॐ कम्बुराजायै नमः। ॐ पषबान्धवायै नमः। ॐ धवलायै नमः। ॐ निःस्वनायै नमः। ॐ धृतिकलायै नमः। शङ्खनवशक्ति पूजां समर्पयामि।

अथ नामपूजा—ॐ पवनाय नमः। ॐ पाञ्चजन्याय नमः। ॐ पषगर्भाय नमः। ॐ अम्बुराजाय नमः ॐ कम्बुराजायै नमः। ॐ धवलाय नमः। ॐ निस्सवनाय नमः। ॐ दिव्यभोगदाय नमः।

शंखमूले परब्रह्मा शङ्खाग्रे तु सरस्वती। यः स्नापयति गोविन्दं तस्य पुरायमनन्तकम्॥ *(स्मृति मुक्तावल्यां शङ्खपूजा प्रकरणम्)*
(इतना कहकर शंख को नमस्कार करना चाहिये।)

शंख के जल को कलश में डालना चाहिये। पुनः शंख के कुछ जल लेकर तीन बार प्रोक्षरा करना चाहिये। यज्ञशाला एवं पूजास्थल का प्रोक्षरा करें। पूजा के सामग्रियों का प्रोक्षरा करें। एवं तदनन्तर अपने को प्रोक्षरा करें। एवं ब्राह्मणों का भी प्रोक्षरा करें। शेष जल नीचे छोड़ देवें। शंख को धोकर पुनः पानी भरकर यथा स्थान रख देना चाहिये।

आत्माराधनम्—**हृदि स्थितं पंकजमष्टपत्रं सकेसरं कर्णिक मध्यनालं॥**
अङ्गुष्ठमात्रं मुनयो वदन्ति ध्यायेत् च विष्णुं पुरुषं पुराराम्॥
हृदयकमलमध्ये सूर्यबिम्बासनस्थं सकलभुवनबीजं सृष्टिसंहारहेतुम्।
निरतिशयसुखात्म ज्योतिषं हंसरूपं परमपुरुषमाद्यं चिन्तयेदात्ममूर्तिम्॥
आराधयामि मणि सन्निभमात्मलिङ्गम्। मायापुरीरहृदय पंकज सन्निविष्टम्॥
श्रद्धा नदी विमलचित्त जलभिषेकै। र्नित्यं समाधि कुसुमैर्न पुनर्भवाय॥
देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो हंसः सदाशिवः। त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

स्वामिन् सर्व जगन्नाथ यावत्पूजावसानकम्। तावत् त्वं प्रीति भावेन बिम्बेस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥ *(देवपूजा)*

ॐआत्मने नमः। ॐअन्तरात्मने नमः। ॐपरमात्मने नमः। ॐज्ञानात्मने नमः। आत्मपूजां समर्पयामि। इससे आत्मशुद्धि होती है। (इन मन्त्रों को कहकर अपने सिर पर अक्षत डाल लेवें।)

मण्डप पूजनम्—उत्तप्तोज्वल काञ्चनेन रचितं तुङ्गाङ्ग रंगस्थलं। शुद्धस्फाटिक भित्तिका विरचितैस्तम्भैश्च हैमैः शुभैः।
द्वारश्चामर रत्नराजखचितैः शोभावहैर्मण्ठपैः। तत्रान्यैरपि चित्र शंखधवलैः प्रभ्राजितं स्वस्तिकैः॥
मुक्ताजाल विलम्बिमण्टपयुतैर्वज्रैश्च सोपानकैः। नानारत्नविनिर्मितैश्च कलशैरत्यन्त शोभावहम्।
माणिक्योज्वल दीपदीप्तिखचितं लक्ष्मीविलासास्पदम्। ध्यायेत् मण्टपमर्चनेषु सकलेष्वेवं विधं साधकः॥

(स्मृति सङ्ग्रह - अनुष्ठान पद्धति)

नवरत्न खचित श्री सौभाग्य मण्टपाय नमः मण्टपपूजां समर्पयामि। (उपरोक्त मन्त्रों से सर्वतोभद्रमण्डल एवं नवग्रह मण्डल एवं प्रधान कलश रखने वाला मण्डप का पूजन करना चाहिये।)

अङ्गन्यास करन्यास—(शरीर में विष्णुजी का आवाहन करने से पूर्व में ये न्यास करना चाहिये।) अस्य मन्त्रस्य साध्यनारायणार्षि। देवीगायत्री छन्द। विष्णुर्देवता। सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः- साध्यनारायणर्षये नमः शिरसि १। देवीगायत्रीछन्दसे नमः मुखे २। विष्णुदेवतायै नमः हृदि ३। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ४। इति ऋष्यादिन्यासः।

करन्यास :- ॐ क्रुद्धोल्काय अंगुष्ठायभ्यां नमः १। ॐ महोल्काय तर्जनीभ्यां नमः २। ॐवीरोल्काय मध्यामाभ्यां नमः ३। ॐ द्युल्काय अनामिकभ्यां नमः ४। ॐसहस्त्रोल्काय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५। इति करन्यासः।

इतना करने के पश्चात पहले सर्वतोभद्र मण्डल की पूजा करें।

सर्वतोभद्र मण्डल पूजन—आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्य करिष्यमाण सग्रहमख सर्वाद्भुतशान्ति होमाङ्गत्वेन ऐशान्यां कलशार्चनं करिष्ये।

आचमन कर, प्राणायाम करें। देशकाल संकीर्तनपूर्वक ग्रहसहित सर्वाद्भुत शान्ति याग के अङ्ग के रूप में ईशान्य दिशा में कलशपूजन करुंगा कहकर संकल्प लेवें।

यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वतः। स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु॥ १ ॥

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशं। सर्वेषां अविरोधेन यज्ञकर्म समारभे॥ २ ॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

इति गौरसर्षपान् विकीर्य-इतना कहकर सफेद सरसूँ को चारों ओर कलशार्चन स्थल में बिखेरना चाहिये।

इन मन्त्रों से कुशों से प्रोक्षण करें। पञ्चगव्य से भूमि प्रोक्षण निम्नलिखित मन्त्र से करें। आपोहिष्ठेति सृचस्यांबरीषः सिंधुद्वीप आपो गायत्री भूमि प्रोक्षणे विनियोगः।

ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे॥

ॐ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः॥

ॐ तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः॥ *(अथर्ववेद १.५.१-३)*

कुशोदकेन च प्रोक्षेत्। कुश जल से प्रोक्षण करें।

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स ब्राह्याभ्यन्तरं शुचिः॥

इतना कहकर हाथ जोड़कर खड़े हो। इतना करने के बाद मण्डल रचना करें। दोनों मण्डल बनायें। पहले कलश पूजन करें। (यहाँ भी कलश

पूजन करना चाहिये।) कलश में पूर्ण जल भरकर रखना चाहिये। फिर उसमें गन्ध अक्षत पुष्प कलश के अन्दर डालना चाहिये। बाहर भी चारों ओर लगाना चाहिये। गायत्री मन्त्र से तीन बार कलश छूकर पज करना चाहिये।

सर्वतोभद्र मण्डल में देवता पूजनम्—मध्ये ब्रह्माणं, (मध्य में ब्रह्मा का आवाहन करें।)

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरताद् वि सीमतः सुरुचो वेन आवः।
स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च वि वः॥ *(अथर्ववेद ४.१.१)*

ॐभूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः। ब्रह्माणमावाहयामि। भो ब्रह्मन् इहागच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदो भव। **उत्तरे सोमं—**(उत्तर में सोम का आवाहन करें।)

ॐ सुतासो मधुमत्तमाः सोमा इन्द्राय मन्दिनः। पवित्रवन्तो अक्षरन्देवान्गच्छन्तु वो मदाः॥ *(अथर्ववेद २०.१३७.४)*

ॐभूर्भुवः स्वः सोमय नमः। सोमं आवाहयामि। भो सोम इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदो भव। **ईशान्यं ईशानं—**(ईशान्य दिशा में ईशन का आवाहन करें।)

ॐ ईशानां त्वा भेषजानामुज्जेष आ रभामहे। चक्रे सहस्रवीर्यं सर्वस्मा ओषधे त्वा॥ *(अथर्ववेद ४.१७.१)*

ॐभूर्भुवः स्वः ईशानाय नमः। ईशानमावाहयामि। भो ईशान इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजा गृहाण वरदो भव। **पूर्वे इन्द्रं—**(पूर्व में इन्द्र का आवाहन करें।)

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं हवेहवे सुहवं शूरमिन्द्रम्॥
हुवे नु शक्रं पुरुहूतमिन्द्रं स्वस्ति न इन्द्रो मघवान् कृणोतु॥ *(अथर्ववेद ७.८६.१)*

ॐभूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयामि। भो इन्द्र इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहाण। वरदो भव॥ **आग्नेयामग्निं—**(आग्ने दिशा में अग्नि का आवाहन करें।)

ॐ अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्व वेदसम्। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुं॥ *(अथर्ववेद २०.१०१.१)*

ॐ भूर्भुवः स्वः। अग्नेय नमः। अग्निमावाहयामि। भो अग्ने इहा गच्छ इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरणो भव। **दक्षिणे यमं**—(दक्षिण दिशा में यम का आवाहन करें।)

ॐ य॒माय॒ सोम॑ः पवते य॒माय॑ क्रियते ह॒विः। य॒मं ह॑ य॒ज्ञो गच्छत्य॒ग्निदू॑तो॒ अरं॑कृतः॥ *(अथर्ववेद १८.२.१)*

ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः। यममावाहयामि। भो यम इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदो भव। **नैऋत्यां निऋतिं**—(नैऋत्य दिशा में निऋति को।)

ॐ यत् ते॑ दे॒वी निर्ऋ॑तिराब॒बन्ध॒ दाम॑ ग्री॒वास्व॑विमो॒क्यं यत्।
तत् ते॒ वि ष्या॒म्यायु॑षे॒ वर्च॑से॒ बला॑यादोम॒दमन्न॑मद्धि॒ प्रसू॑तः॥ *(अथर्ववेद ६.६३.१)*

ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋतये नमः। निर्ऋतिमावाहयामि। भो निऋति इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूहां गृहाण। वरदो भव। **पश्चिमे वरुणं**—(पश्चिम दिशा में वरुण का आवाहन करें।)

ॐ अ॒प्सु ते॑ राजन् वरुण गृ॒हो हि॑र॒ण्ययो॑ मि॒थः। ततो॑ धृ॒तव्र॑तो॒ राजा॒ सर्वा॒ धामा॑नि मु॒ञ्चतु॥ *(अथर्ववेद ७.८३.१)*

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः। वरुणमावाहयामि। भो वरुण इहागच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदो भव। **वायव्यां वायुं**—(वायव्य दिशा में वायु का आवाहन करें।)

ॐ गो॒सनिं॒ वाच॑मुदेयं॒ वर्च॑सा मा॒भ्युदि॑हि। आ रु॑न्धां स॒र्वतो॑ वा॒युस्त्वष्टा॒ पोषं॑ दधातु मे॥ *(अथर्ववेद ४.२०.१०)*

ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः। वायुमावाहयामि। भो वायो इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूहां गृहाण। वरदो भव। **वायुसोममध्ये अष्टवसून्**—वायु एवं सोम के बीच में अष्ट वसुओं को (वायव्य एवं उत्तर के बीच में)

ॐ अ॒स्मिन् वसु॒ वस॑वो धारय॒न्त्विन्द्र॑ः पूषा वरु॑णो मि॒त्रो अ॒ग्निः।
इ॒ममा॑दि॒त्या उ॒त विश्वे॑ च दे॒वा उत्त॑रस्मि॒न् ज्योति॑षि धारयन्तु॥ *(अथर्ववेद १.९.१)*

ॐ भूर्भुवः स्वः अष्टवसुभ्यो नमः। अष्टवसून् आवाहयामि। भो अष्टवसवः इहा गच्छ। इह तिष्ठतः। पूजां गृहाण। वरदो भवत। **सोमेशानयोर्मध्ये**

एकादशरुद्रान्—(सोमन एवं ईशान के बीच में एकादश रुद्रों का आवाहन करें।) (उत्तर एवं ईशान के बीच में)

ॐ रुद्रस्यैलबकारेभ्योऽसंसूक्तगिलेभ्यः। इदं महास्येभ्यः श्वभ्यो अकरं नमः॥ *(अथर्ववेद ११.२.३०)*

ॐभूर्भुवः स्वः एकादशरुद्रेभ्यो नमः। एकादश रुद्रानावाहयामि। भो एकादशरुद्राः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृषीत। वरदा भवत। **ईशानेन्द्रयोर्मध्ये द्वादशादित्यान्**—(ईशान्य एवं पूर्व के बीच में द्वादशादित्यों का आवाहन करें।)

ॐ उच्चा पतन्तमरुणं सुपर्णं मध्ये दिवस्तरणिं भ्राजमानम्।
पश्याम त्वा सवितारं यमाहुरजस्त्रं ज्योतिर्यदविन्दुदत्त्रिः॥ *(अथर्ववेद १३.२.३६)*

ॐभूर्भुवः स्वः द्वादशादित्येभ्यो नमः। द्वादशादित्यानावाहयामि। भो द्वादशादित्याः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृह्णीत। वरदो भवत। **इन्द्राग्निमध्ये अश्विनौ**—(पूर्वा एवं आग्नेय के बीच में अश्विनी देवताओं को आवाहन करें।)

ॐ यदुन्तरिक्षे यद्दिवि यत्पञ्च मानुषाँ अनु। नृम्णं तद्धत्तमश्विना *(अथर्ववेद २०.१३९.२)*

ॐभूर्भुवः स्वः अश्विभ्यां नमः। अश्विनौ आवाहयामि। भो अश्विनौ इहा गच्छतं। इह तिष्ठतं पूजां गृषीतं। वरदौ भवतं। **अग्नियम मध्ये विश्वेदेवान् सपैतृकान्**—(आग्नेय एवं दक्षिण के बीच में पितृसाहित विश्वेदेवों का आवाहन करें।)

ॐ विश्वे देवा वसवो रक्षतेममुतादित्या जागृत यूयमस्मिन्।
मेमं सनाभिरुत वान्यनाभिर्मेमं प्रापत् पौरुषेयो वधो यः॥ *(अथर्ववेद १.३०.१)*

ॐभूर्भुवः स्वः विश्वेभ्योदेवेभ्यो नमः विश्वान् देवान् आवाहयामि। भो विश्वेदेवाः इहा गच्छत। इह तिष्ठत पूजां गृह्णीत। वरदा भवत। **यम निर्ऋतिमध्ये सप्तयक्षान्**—(दक्षिण एवं नैर्ऋत्य के बीच में सप्त यक्षों का आवाहन करें।)

ॐ देवान् यन्नाथितो हुवे ब्रह्मचर्यं यदूषिम। अक्षान् यद् बभ्रूनालभे ते नो मृडन्त्वीदृशे॥ *(अथर्ववेद ७.१०९.७)*

ॐभूर्भुवः स्वः सप्तयक्षेभ्यो नमः सप्तयक्षान् आवाहयामि। भो सप्तयक्षाः इहा गच्छत। इह तिष्ठत पूजां गृह्णीत। वरदा भवत। **निर्ऋति वरुण मध्ये**

भूतनागान्—(नैऋत्य एवं पश्चिम के बीच में भुतगण एवं नागों का आवाहन करें।)

ॐ अरायान् ब्रूमो रक्षांसि सर्पान् पुण्यजनान् पितृन्। मृत्यूनेकशतं ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः ॥ *(अथर्ववेद ११.६.१६)*

ॐभूर्भुवः स्वः सर्पेभ्यो नमः। सर्पान् आवाहयामि। भो सर्पाः इहागच्छत। इह तिष्ठत पूजां गृह्णीत। वरदा भवत। **वरुणवायुमध्ये गंधर्वाप्सरसः**—(पश्चिम एवं वायव्य के बीच में गन्धर्व एवं अप्सराओं का आवाहन करें।)

ॐ तं पुण्यं गन्धं गंधर्वाप्सरस उप जीवन्ति पुण्यंगन्धिरुपजीवनीयो भवति य एवं वेद ॥ *(अथर्ववेद ८.१०-५.८)*

ॐभूर्भुवः स्वः गन्धर्वाप्सरोभ्यो नमः। गन्धर्वाप्सरस आवाहयामि। भो गन्धवाप्सरसः इहा गच्छत। इह तिष्ठत पूजां गृह्णीत। वरदा भवत।

ब्रह्म सोममध्ये स्कन्दं नन्दीश्वरं शूलं महाकालं च- (मध्ये में स्थित ब्रह्मा एवं सोम (उत्तर) के मध्य में स्कन्द नन्दीश्वर शूल एवं महाकाल का आवाहन करें।)

ॐ यन्मे स्कन्नं मनसो जातवेदो यद्वास्कन्दद्धविषो यत्रयत्र।
उत्प्रुषो विप्रुषः सं जुहोमि सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः ॥ *(कौशिक सूत्र ६.१)*

ॐभूर्भुवः स्वः स्कन्दाय नमः। स्कन्दमावाहयामि। भो स्कन्द इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहाण। वरदो भव।

ॐ सहस्त्रशृङ्गो वृषभो यः समुद्रादुदाचरत्। तेना सहस्येना वयं नि जनान्त्स्वापयामसि ॥ *(अथर्ववेद ४.५.१)*

ॐभूर्भुवः स्वः नन्दीश्वराय नमः नन्दीश्वरं आवाहयामि। भो नंदीश्वर इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहाण। वरदो भव।

ॐ यां ते रुद्र इषुमस्यदङ्गेभ्यो हृदयाय च। इदं तामद्य त्वद् वयं विषूचीं वि वृहामसि ॥ *(अथर्ववेद ६.९०.१)*

ॐभूर्भुवः स्वः शूलायनमः शूलमावाहयामि। भो शूल इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूहां गृहाण। वरदो भव।

ॐ कालेन वातः पवते कालेन पृथिवी मही। द्यौर्मही काल आहिता ॥ *(अथर्ववेद १९.५४.२)*

ॐभूर्भुवः स्वः महाकालाय नमः। महाकालमावाहयामि। भो महाकाल इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूहां गृहाण। वरदो भव। **ब्रह्मेशानमध्ये दक्षं**—(बीच में विद्यमान ब्रह्मा एवं ईशान्य दिशा के बीच में दक्ष का आवाहन करें।)

ॐ आशीर्णा ऊर्जमुत सौप्रजास्त्वं दक्षं धत्तं द्रविणं सचेतसौ।
जयं क्षेत्राणि सहसायमिन्द्र कृण्वानो अन्यानधरान्त्सपत्नान्॥ (अथर्ववेद २.२९.३)

ॐभूर्भुवः स्वः दक्षाय नमः। दक्षमावाहयामि। भो दक्ष इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहाण। वरदो भव। ब्रह्मेन्द्रमध्ये दुर्गां विष्णुं च (ब्रह्मा एवं इन्द्र के बीच में अर्थात् बीच में स्थित ब्रह्मा एवं पूर्व के बीच में दुर्गा एवं विष्णु का आवाहन करें।)

ॐ तामग्निवर्णां तपसाज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषुजुष्टाम्।
दुर्गां देवीं शरणमहंप्रपद्ये सुतरसितरसे नमः॥ (यजुर्वेद-दुर्गासूक्त)

ॐभूर्भुवः स्वः दुर्गायै नमः। दुर्गां आवाहयामि। भो दुर्गे इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदा भव।

ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदा। समूढमस्य पांसुरे॥ (अथर्ववेद ७.२६.४)

ॐभूर्भुवः स्वः विष्णवेनमः। विष्णुं आवाहयामि। भो विष्णो इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूहां गृहाण। वरदो भव। ग्रह्माग्नि मध्ये स्वधां (बीच में स्थित ब्रह्मा एवं आग्नेय दिशा के बीच में स्वधा को)

ॐ एतत् ते प्रततामह स्वधा ये च त्वामनु (अथर्ववेद १८.४.७५)

ॐभूर्भुवः वः स्वधायै नमः। स्वधामावाहयामि। भो स्वधे इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहाण। वरदा भव। **ब्रह्म यममध्ये मृत्युरोगान्**—(बीच में स्थित ब्रह्मा एवं दक्षिण दिशा के बीच में मृत्यु एवं रोगों का आवाहन करें।)

ॐ परं मृत्यो अनु परेहि पन्थां यस्ते एष इतरो देवयानात्।
चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमीहेमे वीरा बहवो भवन्तु॥ (अथर्ववेद १२.२.२१)

ॐभूर्भुवः स्वः मृत्युरोगेभ्यो नमः। मृत्यरोगान् आवाहयामि। भो मृत्युरोगाः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृषीत। वरदा भवत। ब्रह्म निऋतिमध्ये गणपतिं

(बीच में स्थित ब्रह्मा एवं नैऋत्य दिशा के बीच में गणपति का आवाहन करें।)

ॐ इमा या ब्रह्मणस्पते विषूचीर्वात ईरते। सध्रीचीरिन्द्र ताः कृत्वा मह्यं शिवतमास्कृधि स्वस्ति नो अस्त्वभयं नो अस्तु नमोऽहोरात्राभ्यामस्तु॥ (अथर्ववेद १९.८.६)

ॐभूर्भुवः स्वः गणपतये नमः। गणपतिमावाहयामि। भो गणपति इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदो भव। **ब्रह्मवरुणमध्ये अपः**—(बीच में स्थित ब्रह्मा एवं पश्चिम दिशा के बीच में जल का आवाहन करें।)

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्रवन्तु नः॥ (अथर्ववेद १.६.१)

ॐभूर्भुवः स्वः अद्भ्यो नमः। अपः आवाहयामि। भो आपः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृह्णीत। वरदा भवत। **ब्रह्मवायुमध्ये मरुतः**—(बीच में स्थित ब्रह्मा एवं वायव्य दिशा के बीच में मरुत् का आवाहन करें।)

ॐ मरुतो यस्य हि क्षये पाथा दिवो विमहसः। स सुगोपातमो जनः॥ (अथर्ववेद २०.१.२)

ॐभूर्भुवः स्वः मरुद्भ्यो नमः। मरुतः आवाहयामि। भो मरुतः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृह्णीत। वरदा भवत। ब्रह्मणः पादमूले कर्णिकाधः पृथिवीं (बीच में स्थित ब्रह्मा जी के नीचे पादमूल में पृथिवी का आवाहन करें।)

ॐ स्योनास्मै भव पृथिव्यनृक्षरा निवेशनी। यच्छास्मै शर्म सप्रथाः॥ (अथर्ववेद १८.२.१९)

ॐभूर्भुवः स्वः भूम्यै नमः। भूमिं आवाहयामि। भो भूमे इहा गच्छा। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदा भव। **तत्रैव गङ्गादिसर्वनद्यः**—(उसी स्थान पर अर्थात पृथिवी पर ही गङ्गादि सभी नदियों का आवाहन करें।)

ॐ अप्सु ते राजन् वरुण गृहो हिरण्ययो मिथः। ततो धृतव्रतो राजा सर्वा धामानि मुञ्चतु॥ (अथर्ववेद ७.८३.१)

ॐभूर्भुवः स्वः गङ्गादि नदीभ्यो नमः। गङ्गादि नदीः आवाहयामि। भो गङ्गादिनद्यः इहागच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृह्णीत। वरदा भवत। तत्रैव सप्तसागराः। (वहीं पर सात सागरों का आवाहन करें।)

ॐ समुद्रो नदीभिरुदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः।
तामा विशत तां प्र विशत सा वः शर्म च वर्म यच्छतु॥ (अथर्ववेद १९.१९.७)

ॐभूर्भुवः स्वः सप्तसागरेभ्यो नमः। भो सप्तसागराः इहागच्छत। इह तिष्ठतः। पूहां गृह्णीत। वरदा भवत। तदुपरि मेरवे नमः। **मेरुं आवाहयामि।** (उसके ऊपर मेरु पर्वत का आवाहन करें।) (भूमि पर) सोमसमीपे गदायै नमः। **गदां आवाहयामि।** (सोम के पास (उत्तर) गदा का आवाहन करें।) ईशान समीपेत्रिशूलाय नमः। **त्रिशूलं आवाहयामि।।** (ईशान के पास ईशान में त्रिशूल का आवाहन करें।) इन्द्रसमीपे वज्राय नमः। **वज्रं आवाहयामि।** (इन्द्र के पास पूर्व में वज्र का आवाहन करें।) अग्नि समीपे शक्तये नमः। **शक्तिं आवाहयामि।** (अग्नि के पास आग्नेय में शक्ति का आवाहन करें।) यम समीपे दण्डाय नमः। **दण्डं आवाहयामि।** (यम के पास दक्षिण में दण्ड का आवाहन करें।) निर्ऋति समीपे खड्गय नमः। **खड्गमावाहयामि।** (निर्ऋति के पास नैऋत्य के खड्ग का आवाहन करें।) वरुण समीपे पाशाय नमः। **पाशं आवाहयामि।** (वरुण के पास पश्चिम में पाश का आवाहन करें।) वायु समीपे अंकुशाय नमः। **अंकुशं आवाहयामि।** (वायु के पास वायव्य दिशा में अंकुश का आवाहन करें।)

तद्बाहये उत्तरादि क्रमेण (मण्डल के बाहर) गौतमाय नमः। **गौतमं आवाहयामि।** (उत्तर में गौतम जी का आवाहन करें।) भारद्वाजाय नमः। **भरद्वाजं आवाहयामि।** (ईशान में भरद्वाज जी का आवाहन करें।) विश्वामित्राय नमः। **विश्वामित्रं आवाहयामि।** (पूर्व में विश्वामित्र जी का आवाहन करें।) कश्यपाय नमः। **कश्यपं आवाहयामि।** (आग्नेय में अश्यप जी का आवाहन करें।) जमदग्नये नमः। **जमदग्निं आवाहयामि।** (दक्षिण में जमदग्नि जी का आवाहन करें।) वसिष्ठाय नमः। **वसिष्ठं आवाहयामि।** (नैर्ऋत्य में वसिष्ठ जी का आवाहन करें।) अत्रये नमः। **अत्रिं आवाहयामि।** (पश्चिम में अत्रि जी का आवाहन करें।) अरुंधत्यै नमः। **अरुंधतीं आवाहयामि।** (वायव्ये में अरुंधति जी का आवाहन करें।) ततः पूर्वादि क्रमेण मातृः। (पूर्वादि क्रम से मण्डल के बाहर मातृगणों का आवाहन करें।) ऐंद्र्यै नमः। **ऐन्द्रीं आवाहयामि।** (पूर्व में ऐन्द्री का आवाहन करें।) कौमार्यै नमः। **कौमारीं आवाहयामि।** (आग्नेय में कौमारी का आवाहन करें।) ब्राह्मै नमः। **ब्राह्मीं आवाहयामि।** (दक्षिण में ब्राह्मी का आवाहन करें।) वाराह्यै नमः। **वाराहीं आवाहयामि।** (नैऋत्य में वाराही का आवाहन करें।) चामुण्डायै नमः। **चामुण्डां आवाहयामि।** (पश्चिम में चामुण्डा का आवाहन करें।) वैष्णव्यै नमः। **वैष्णवीं आवाहयामि।** (वायव्य में वैष्णवी का आवाहन करें।) वैनायक्यै नमः। **वैनायकीं आवाहयामि।** (ईशान्य में वैनायकी का आवाहन करें।) इति सर्वतो

भद्र देवताः। (यहाँ पर सर्वतोभद्रमण्डल में विद्यमान सभी देवताओं का आवाहन संपन्न हुआ।)

ॐ तदस्तु मित्रावरुणा तदग्ने शं योरस्मभ्यमिदमस्तु शस्तम्।
अशीमहि गाधमुत प्रतिष्ठां नमो दिवे बृहते सादनाय॥ *(अथर्ववेद १९.११.६)*

गृहावै सूक्तं, प्रतिवीतं तत्, प्रतिवीततमया वाचा शस्तव्यम्। स यद्यपित दूरात् पशूंल्लभते, गृहानेवैनानाजिगमिषति गृहाहिपशूनां प्रतिष्ठा। *(गो.ब्रा.)*

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरताद् वि सीमतः सुरुचो वेन आवः।
स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च वि वः॥ *(अथर्ववेद ४.१.१)*

एताः ब्रह्मादि देवताः सुप्रतिष्ठिताः सन्तु। (इन मन्त्रों को कहकर आवाहित ब्रह्मादि देवताओं का प्रतिष्ठा करें।)

अनेन मंत्रेण पूजयेत्। (इस मन्त्र से पूजन करें।) ॐब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। ध्यायामि। ध्यानं समर्पयामि। ॐब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। आवाहयामि। आसनं समर्पयामि। ॐब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। स्वागतं। पादारविन्दयोःपाद्यं पाद्यं समर्पयामि। ॐब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि। ॐब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। मुखे आचमनीयं समर्पयामि। ॐब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे॥ *(अथर्ववेद १.५.१)*

ॐ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः॥ *(अथर्ववेद १.५.२)*

ॐ तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः॥ *(अथर्ववेद १.५.३)*

स्नानं समर्पयामि। ॐब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। स्नानाङ्ग आचमनं समर्पयामि। ॐब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ परि धत्त धत्त नो वर्चसेमं जरामृत्युं कृणुत दीर्घमायुः।
बृहस्पतिः प्रायच्छद् वास एतत् सोमाय राज्ञे परिधातवा उ॥ *(अथर्ववेद २.१३.२)*

वस्त्रयुग्मं समर्पयामि। वस्त्राङ्ग आचमनं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहज पुरस्तात्।

आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुंच शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥ *(ऋग्वेद)*

यज्ञोपवीतं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ यद्धिरंरायं सूर्येण सुवर्णां प्रजावन्तो मनंवः पूर्वं ईषिरे।

तत् त्वां चन्द्रं वर्चसा सं सृजत्यायुष्मान् भवति यो बिभर्ति॥ *(अथर्ववेद १९.२६.२)*

आभरणं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ गन्धं द्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीं। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपंह्वये श्रियम्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

गन्धं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ अर्चंत प्रार्चंत प्रियंमेधासो अर्चंत। अर्चन्तु पुत्रका उत पुरं न धृष्णवर्चत॥ *(अथर्ववेद २०.९२.५)*

अक्षतान् समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ आयंने ते परायणे दूर्वारोहन्तु पुष्पिणीः।

उत्सों वा तत्र जायंतां ह्रदो वां पुण्डरींकवान्॥ *(अथर्ववेद ६.१०६.१)*

नाम पूजां करिष्ये—ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ सोमाय नमः। ॐ ईशानाय नमः। ॐ इन्द्राय नमः। ॐ अग्नेय नमः। ॐ यमाय नमः। ॐ निर्ऋतये नमः। ॐ वरुणाय नमः। ॐ वायवे नमः। ॐ अष्टवसुभ्यो नमः। ॐ एकादश रुद्रेभ्यो नमः। ॐ द्वादशादित्येभ्यो नमः। ॐ अश्विभ्यां नमः। ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। ॐ सप्तयक्षेभ्यो नमः। ॐ भूतनागेभ्यो नमः। ॐ गंधर्वाप्सरोभ्यो नमः। ॐ स्कन्दाय नमः। ॐ नन्दीश्वराय नमः। ॐ शूलाय नमः। ॐ महाकालाय नमः। ॐ दुर्गायै नमः। ॐ विष्णवे

नमः। ॐ स्वधायै नमः। ॐ मृत्युरोगेभ्यो नमः। ॐ गणपतये नमः। ॐ अद्भ्यो नमः। ॐ मरुद्भ्यो नमः। ॐ पृथिव्यै नमः। ॐ गङ्गादि सर्वनदीभ्यो नमः। ॐ सप्त सागरेभ्यो नमः। ॐ मेरवे नमः। ॐ गदायै नमः। ॐ त्रिशूलाय नमः। ॐ वज्राय नमः। ॐ शक्तये नमः। ॐ दण्डाय नमः। ॐ खड्गाय नमः। ॐ पाशाय नमः। ॐ अंकुशाय नमः। ॐ गौतमाय नमः। ॐ भरद्वाजाय नमः। ॐ विश्वामित्राय नमः। ॐ कश्यपाय नमः। ॐ जमदग्नये नमः। ॐ वसिष्ठाय नमः। ॐ अत्रये नमः। ॐ अरुन्धत्यै नमः। ॐ ऐन्द्र्यै नमः। ॐ कौमार्यै नमः। ॐ ब्राह्मै नमः। ॐ वाराह्यै नमः। ॐ चामुण्डायै नमः। ॐ वैष्णव्यै नमः। ॐ माहेश्वर्यै नमः। ॐ वैनायक्यै नमः। (देवताओं के ५७ समूह।) नाम पूजां समर्पयामि। (ये सभी देवता सर्वतो भद्र मण्डल से आवाहित हैं।) ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

वनस्पति रसोत्पन्नो गन्धाढयः सुमनोहरः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम्॥ धूपं आघ्रापयामि। *(प्रयोगरत्नाकर)*
ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

आज्यं त्रिवर्ति संयुक्तं वह्निना योजितं मया। गृहाण मङ्गलं दीपं त्रैलोक्य तिमिरापह॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*
दीपं दर्शयामि धूपदीपानन्तरं आचमनं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। (नैवेद्य को गायत्री मन्त्र से प्रोक्षण करें नैवेद्य मण्डल पर रखें। **सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि।** इस मन्त्र से परिषिञ्चन करें।) **अमृतोपस्तरणमसि** कहकर जल छोड़ें। ॐ प्राणाय स्वाहा (अङ्गुष्ठ एवं कनिष्ठिका मिलाकर) ॐ अपानाय स्वाहा (अङ्गुष्ठ एवं तर्जनी मिलाकर) ॐ व्यानाय स्वाहा (अङ्गुष्ठ एवं मध्यमा मिलाकर) ॐ उदानाय स्वाहा (अङ्गुष्ठ एवं अनामिका मिलाकर) ॐ समानाय स्वाहा (सभी अङ्गुलियों को मिलाकर) ॐ देवेभ्यः स्वाहा नैवेद्यं निवेदयामि। **अमृतापिधानमसि** कहकर जल छोड़ें। नैवेद्यं विसर्जयामि। हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि। गण्डूषं समर्पयामि। पुनराचमनं समर्पयामि। (कहकर जल छोड़ें) ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

पूगीफल समायुक्तं नागवल्ल्यादलैर्युतम्। चूर्ण कर्पूर संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यतां। क्रमुक ताम्बूलं समर्पयामि। *(देवपूजा)*
ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ एह यांतु वरुणः सोमो अग्निर्बृहस्पतिर्वसुभिरेह यांतु।
अस्य श्रियमुपसंयांत सर्व उग्रस्य चेत्तुः संमनसः सजाताः॥ *(अथर्ववेद ६.७३.१)*

मङ्गलनीराजनं समर्पयामि। नीराजनान्ते परिमल पत्र पुष्पाणि समर्पयामि। मन्त्रपुष्पं समर्पयामि। प्रदक्षिणां समर्पयामि। नमस्कारान् समर्पयामि।

देवाराधनमण्डलं सुरगणावासं सदामङ्गलं। कुर्तुः दर्शनमात्रतः शुभकरं तत् पञ्च भूतात्मकं॥
अर्णाद्यक्षरसंयुतं भयहरं तद् याग पुण्यार्जितं। नानामन्त्रमयं समस्त फलदं ध्यायेन्मनोनन्दनं॥
अरिष्टानि बहून्यस्मिन् दुष्कृतानि शतानि च। मण्डलानि निरीक्षन्ते यथा युद्धेषु कातराः॥ *(अनुष्ठान पद्धति)*

(युद्ध भूमि में कायर जैसे देखते ही भीत हो जाते हैं, वैसे ही मण्डल को देखते ही सभी अरिष्ट दूर हो जाते हैं।) **अनया पूजया ब्रह्मादि मण्डल देवताः प्रीयन्तां** यहाँ पर सर्वतोभद्र मण्डल पूजन संपन्न हुआ।

द्वितीय दिन द्वितीय प्रहर

प्रधानदेवता विष्णु पूजनम्-

देह शुद्धि—ॐ या आपो याश्च देवता या विराड् ब्रह्मणा सह।
शरीरं ब्रह्म प्राविशच्छरीरेऽधि प्रजापतिः॥ *(अथर्ववेद ११.८.३०)*

आचमन मन्त्र—ऋग्वेदाय स्वाहा। यजुर्वेदाय स्वाहा। सामवेदाय स्वाहा। (स्वाहा मन्त्र से जल पीना चाहिये।) अथर्ववेदाय नमः। इतिहास पुराणेभ्यो नमः। अग्नये नमः। वायवे नमः। प्राणाय नमः। सूर्याय नमः। चन्द्राय नमः। दिग्भ्यो नमः। इन्द्राय नमः। पृथिव्यै नमः। अन्तरिक्षाय नमः। दिवे नमः। ब्रह्मणे नमः। विष्णवे नमः। सदाशिवाय नमः। द्विराचम्य .. इस प्रक्रिया को दुबारा करना चाहिये।

पवित्र धारणम्—ॐ सुतासो मधुमत्तमाः सोमा इन्द्राय मन्दिनः।
पवित्रवन्तो अक्षरन्देवान्गच्छन्तु वो मदाः॥ *(अथर्ववेद २०.१३७.४)*

ॐभूर्भुवः स्वः कहकर जल सिञ्चन करें॥ (इन मन्त्रों से पवित्र शुद्धिकर धारण करना चाहिये आसन के नीचे दो कुश डाल लेना चाहिये।)

प्राणायाम—प्रणवस्य परब्रह्म ऋषिः, दैवी गायत्री छन्दः, परमात्मा देवता प्राणायामे विनियोगः।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योतीरसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवस्वरोम्। *(ऋग्वेद ३.६२.१०)*

(रेखाङ्कित मन्त्र को तीन बार कुम्भक में जप करना चाहिये।)

आसन शुद्धि—ॐ स्योनास्मै भव पृथिव्यनृक्षरा निवेशनी। यच्छांस्मै शर्मं सप्रथाः॥ *(अथर्ववेद १८.२.१९)*

इस मन्त्र से जल प्रोक्षण करने से भूमि शुद्ध होती है।

शिखाबन्धनम्—

ऊर्ध्वकेशि विरूपाक्षि मांसशोणित भक्षणे। तिष्ठ देवि शिखाबन्धे चामुण्डे ह्यपराजिते॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

(इस मन्त्र से शिखाबन्धन करना चाहिये।)

महा संकल्प —..........

गुरु प्रार्थना —

नमो गुरुभ्यो गुरुपादुकाभ्यो नमः परेभ्यः परपादुकाभ्यः।
आचार्य सिद्धेश्वर पादुकाभ्यो नमोऽस्तु लक्ष्मीपति पादुकाभ्यः॥ *(श्रृङ्गेरी मठीय आचार्य प्रार्थनम्)*

श्री गुरु परमगुरु परमेष्ठी गुरु सद्गुरु पादुकाभ्यो नमो नमः। हम लोग ब्रह्मानन्दं गुरु तं नमानि। गुरु परम्परा को भी बोल सकते हैं। कर सकते हैं। हरौ रुष्टे गुरुस्त्राता गुरौ रुष्टे न कश्चन॥ ईश्वर के रुष्ट होने पर गुरुजी रक्षा करते हैं एवं गुरुजी के कुपित होने पर कोई भी रक्षक नहीं है।

भूतोच्चाटन मन्त्र—

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुविसंस्थिताः। ये भूता विघ्नकर्तारः ते गच्छन्तु शिवाज्ञया॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-आसन विधि प्रकरण)*

ॐ अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम्। सर्वेषामविरोधेन ब्रह्मकर्म समारभे॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-आसन विधि प्रकरण)*

ॐ तीक्ष्णादंष्ट्रमहाकाय कल्पान्ते दहनोपम। भैरवाय नमस्तुभ्यं अनुज्ञां दातुमर्हसि॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

इति भैरवं नमस्कृत्य। (इन मन्त्रों से भूतोच्चाटन कर भैरव जी से यज्ञ रक्षा की प्रार्थना करते हैं।)

गणपति प्रार्थना—ॐ इमा या ब्रंह्मणस्पते विषूंचीर्वात ईरंते। सध्रीचींरिन्द्र ताः कृत्वा मह्यं शिवतंमास्कृधि स्वस्ति नों अस्त्वभंयं नो अस्तु नमोंऽहोरात्राभ्यांमस्तु॥ *(अथर्ववेद १६.८.६)* इन मन्त्रों से गणपति प्रार्थना कर पुष्पाक्षत छोड़ना चाहिये।

जल कलश पूजनम्—कलश में पूर्ण जल भरकर रखना चाहिये। फिर उसमें गन्ध अक्षत पुष्प कलश के अन्दर डालना चाहिये एवं बाहर भी चारों ओर लगाना चाहिये। गायत्री मन्त्र से तीन बार कलश छूकर जप करना चाहिये।

ॐ कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः। मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥
कुक्षौ तु सागरास्सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदस्सामवेदोह्यथर्वणः॥
अङ्गैश्चसहितास्सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः। अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा॥
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः। सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः॥
गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिंकुरु॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-देवपूजा प्रकरण)*

ॐ अप्सु तें राजन् वरुण गृहो हिंरण्ययों मिथः। ततों धृतव्रंतो राजा सर्वा धामांनि मुञ्चतु॥ *(अथर्ववेद ७.८३.१)*

ॐ एमां कुंमारस्तरुंण आ वत्सो जगंता सह। एमां परिस्रुतः कुम्भ आ दध्नः कलशैरगुः॥ *(अथर्ववेद ३.१२.७)*

श्री वरुण मूर्तये नमः। (इन मन्त्रों को कलश छूकर पाठ करना चाहिये।)

सितमकरनिषण्णां शुभ्रवर्णां त्रिनेत्रां करधृत कलशोद्यत्पंकजाभीत्यभीष्टाम्।
विधि हरिहररूपां सेन्दुकोटीरचूडां भसितसितदुकूलां जाह्नवीं तां नमामि ॥ *(स्मृति संग्रह)*

(इस मन्त्र से कलश में गङ्गाजी का ध्यान करना चाहिये।)

आत्माराधनम्—हृदि स्थितं पंकजमष्टपत्रं सकेसरं कर्णिक मध्यनालं ॥
अङ्गुष्ठमात्रं मुनयो वदन्ति ध्यायेत् च विष्णुं पुरुषं पुराणम् ॥
हृदयकमलमध्ये सूर्यबिम्बासनस्थं सकलभुवनबीजं सृष्टिसंहारहेतुम्।
निरतिशयसुखात्म ज्योतिषं हंसरूपं परमपुरुषमाद्यं चिन्तयेदात्ममूर्तिम् ॥
आराधयामि मणि सन्निभमात्मलिङ्गम्। मायापुरीरहृदय पंकज सन्निविष्टम् ॥
श्रद्धा नदी विमलचित्त जलभिषेकै। र्नित्यं समाधि कुसुमैर्न पुनर्भवाय ॥
देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो हंसः सदाशिवः। त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत् ॥
स्वामिन् सर्व जगन्नाथ यावत्पूजावसानकम्। तावत् त्वं प्रीति भावेन बिम्बेस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥ *(देवपूजा)*

ॐ आत्मने नमः। ॐ अन्तरात्मने नमः। ॐ परमात्मने नमः। ॐ ज्ञानात्मने नमः। आत्मपूजां समर्पयामि। इससे आत्मशुद्धि होती है। (इन मन्त्रों को कहकर अपने सिर पर अक्षत डाल लेवें।)

कलश स्थापन विधान—तत्र षोडश प्रस्थ परिमितान् शालीन् निक्षिप्य तदर्धं तण्डुलं तदर्धं तिलं तदर्धं सर्षपं इति वस्त्रान्तरितैः द्रव्यैः पीठं विरचय्य तस्मिन् कूर्च न्यस्य अन्यत्र उपकलशार्थं पीठान् विरचय्य तस्मिन् सौवर्णादि कुम्भान् अस्त्र मन्त्रेण जलैः क्षालयित्वा सूत्रवेष्टितान् आधोमुखान् न्यस्येत्।

सर्वतोभद्रमण्डल के ऊपर एक वस्त्र बिछाना चाहिये। उस पर १६ सेर धान, पुनः उस पर वस्त्र डालें ८ सेर चावल, पुनः उस पर वस्त्र डाले। उस पर ४ से तिल, पुनः वस्त्र डालें। उस पर २ सेर सफेद सरसूँ (अभाव में काला सरसूँ) उस पर दो कुश रखें (कुर्च) सोना चान्दी कॉच ताम्र पात्र (कलश) रखें। **इसके ४ प्रकार हैं—**

१. सर्वतोभद्र मण्डल में देवताओं के ५७ आवाहन है। अतः ५७ कलश रख सकते हैं।

२. अष्टदिक्पालों के आठ एवं शेष के लिए एक प्रधान कलश-कुल ६

३. चार दिक्पालों के चार एवं शेष के लिए एक प्रधान कलश कलश कुल ५ कलश।

४. १ कलश (सभी देवताओं का एक ही पूजन।)

अस्त्र मन्त्रों से कलशो को धोना चाहिये। ॐषीं स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर घोर घोर तर तनूरूप चट चट प्रचट प्रचट कर कह वम वम बन्ध बन्ध घातय घातय हुं फट्॥ इस मन्त्र को कहते हुए कलशों को स्वच्छ करें। उसे सूत्रों से बॉधकर, प्रधान कलश को तीन सूत्र से शेष कलशों को एक सूत्र से पंजर बॉधना चाहिये। (पंजर का अर्थ धागों से कलश के चारों ओर लपेटने का विधान) फिर कलशो को उलटा करके रखना चाहिये। दक्षिणभागे पुष्पचन्दक्षतादीन् न्यस्य आग्नेय भागे दीपादिकं न्सस्य, वामभागे स्वस्तिके वस्त्र गालितं जलं संस्थाप्य गुरुः नववस्त्रं संवेष्ट्य आचम्य उपवीतवत् उत्तरीयं वस्त्रं धृत्वा देवं संवंद्य प्रधान द्वारे मण्टपं प्रविश्य कलश समीपे स्वासने उपविश्य पवित्रपाणिः गुरून् गणपतिं च संवंद्य अस्त्रेण करशोधनं कृत्वा ताळत्रयादिग्बन्धन आग्निप्राकारांश्च कुर्यात्।

दाहिने ओर फूल चन्दन अक्षतादिकों को रखकर, आग्नेय भाग में दीप रखें। बायें भाग में स्वस्तिक चिन्ह लिखकर उस पर धान डालकर उस पर शुद्ध पात्र रखें। पात्र का मुख वस्त्र से बन्द रखें। उसमें जल भरें। आचार्य नवीन वस्त्र को धारण करें। उत्तरीय को यज्ञोपवीत के समान पहनें (ब्रह्म वस्त्र) भगवान

का स्मरण अपने आसन पर बैठें। आचमन करें। पवित्र धारण करें। गुरु गणेश को नमस्कार करें। पहले लिखित "ॐ ह्ही स्फुर स्फुर-अस्त्र मन्त्र से हाथ धो लेवें। तीन बार ताल (हाथ) से हाथ मिलाने पर होन वाला)शब्द करें। फिर दिग्बन्ध अग्निप्राकार को करें।

सूक्ष्म मध्य महाशब्दाः दक्षसव्योम्योद्भवाः। बोधासेचनिकोद्दीप्ति करा वह्नेस्त्रितालकाः॥ *(अनुष्ठान पद्धति-टिप्पणी)*

तीन प्रकार के ताळ (ताली) शब्द पहले सूक्ष्म, फिर मध्यम, एवं फिर अधिक शब्द का होना चाहिये। सूक्ष्म ताल दाहिने हाथ नीचे रखें उस पर बायें हाथ से ताली बजायें। इससे दाहिने हाथ में अग्नि उत्पन्न हुआ। मध्यम ताल में बायें हथेली नीचे उस पर दाहिने हाथ से ताल करें। तब दाहिने हाथ की अग्नि बायें हाथ में रखकर उसमें घी की हवन की कल्पना करनी चाहिये। फिर महाताल से दोनों हाथ को मिलाने से अग्नि प्रज्वलन की कल्पना करनी चाहिये। यह अग्नि का त्रिताल कहलाता है।

इसके पश्चात् दश दिशाओं का दिग्बन्धन करें ताकि कोई असुर यज्ञ में बाधा न पहुँचा सके। जहाँ बैठे हैं हवीं पर अस्त्र मन्त्र को पढते हुए चिटकी बजाकर दस दिशाओं का दिग्बन्धन करें। "ॐ ह्री स्फुर स्फुर मन्त्र को पढकर अन्त में **प्राचीं दिशं बध्नामि** कहकर चिटकी बजायें। **फिर** ॐ ह्री स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर घोर घोर तरतनूरूप चट चट प्रचट प्रचट कह कह वम वम बन्ध बन्ध घातय घातय हुं फट्" आग्नेयीं दिशं बध्नामि कहकर चिटकी बजायें*(प्रपञ्चसार)*। **फिर** याम्यां दिशं बध्नामि। नैर्ऋतीं दिशं बध्नामि। वारुणीं दिशं बध्नामि। वायवीं दिशं बाध्नामि। साम्यं दिशं बध्नामि। ऐशानीं दिशं बध्नामि। ऊर्ध्वा दिशं बध्नामि। अधरां दिशं बध्नामि। प्रत्येक दिशा में इन मन्त्रों में पहले अस्त्र मन्त्र पढें एवं दिशं बध्नामि कहकर उस-उस दिशा में चिटकी बजायें। करयोः उद्दीप्त अग्निं दशदिक्षु विकिरेत्। हथ में उत्पन्न अग्नि को चारों ओर फेंकना चाहिय। (इसकी कल्पना करनी चाहिये) इससे यज्ञ एवं यज्ञशाला की रक्षा संपन्न हुआ।

अब अपने शरीर शुद्धि के लिए **नाडी शोधन करें।** इसके लिए द्वादशवारं प्रणवं संजप्य प्राणायामान् कृत्वा स्वस्य विराड्रूपं संकल्प्य अं इति त्रिवारुमुच्चार्य

पिङ्गलया वायु विमुच्य षडवारेण पिङ्गलया प्रपूर्य द्वादशवारेण परिकुम्य इडया तं वायुं विमुञ्चेत् पुनः उं इति त्रिवारमुच्चार्य इडया वायुं विमुच्य षड्वारेण वायुं इडया प्रपूर्य द्वादशवारेण इडां प्रकुम्य तं वायुं पिङ्गलया मुञ्चेत्। पुनः तद् वायुं सुषुम्ना मुखे आकृष्य मं इति षड्वारं प्रजप्य अं उं इति षड्वारं प्रजाय पिङ्गलया इडया च प्रपूर्य पुनः सुषुम्नां आपूर्य द्वादशवारं प्रजप्य सुषुम्नां परिकुम्य तद्वायुं व्यत्यस्य बहिस्त्यजेत्।

इति नाडी शुद्धि प्रकारः।

१२ बार ॐकार का जप करें। प्राणायाम (संमंत्रक) करें। यहाँ मन्त्र केवल ॐकार। अपने को विराट पुरुष की कल्पना करें। अं को तीन बार कहते हुए पिङ्गला से (नाक के दाहिने छिद्र) अन्दर के कश्मल पूरित वायु को बाहर छोडें। फिर पिङ्गला से (नाक के दाहिने छिद्र से) ६ बार अं कहते हुए वायु को अन्दर लेना चाहिये। १२ बार अं कहते हुए उस वायु का कुम्भक (स्तम्भन) करें। इडा से (बायें नाक के छिद्र से) बाहर छोडें। फिर उं का तीन बार कहते हुए इडा से (नाक के बायें छेद से) वायुं को छोडें। फिर ६ बार उं कहते हुए इडा से वायु को अन्दर लेना चाहिये। १२ बार उं कहते हुए उस वायु का कुम्भक (स्तम्भन) करें। उस वायु को पिङ्गल से (नाक के दाहिने छिद्र से)बाहर करें। फिर अं उं कहकर छः बार पिङ्गल एवं इडा दोनों नाक के छिद्रों से वायु को खीच, फिर उस वायु को ब्रह्मरन्ध्र के सुषुम्ना में खींचकर अर्थात् मस्तिष्क नाडि से वायु को भरें। १२ बार मं का जप करते हुए सुषुम्ना में कुम्भक (स्तम्भन करें) उस वायु को उलटी नाक से। दाहिने नाक से खीचे वायु को बाये छिद्र से एवं बायें छिद्र से खीचें वायु को दाहिने छिद्र से छोडें।

यहाँ पर नाडि शोधन संपन्न हुआ। इससे शरीर शुद्धि होती है। जब तक शरीर शुद्धि नहीं होती है तब तक शरीर में देवता नहीं आते हैं। कर्म सफल नहीं होता है। अतः नाडी शोधन आवश्यक हैं। अभ्यास से यह क्रिया बहुत सरल है। **प्रणवेन षोडशवारं प्राणायामं कृत्वा पिङ्गलया वायुं विमुच्य द्वात्रिंशद्वारं प्राणायामं कृत्वा इडया वायुं प्रपूर्य चतुःषष्टिवारेण सुषुम्ना नाड्यां कुम्भकं कुर्यात्॥**

इति रेचक पूरक कुम्भक प्रकारः

ॐकार से १६ बार कहते हुए पिङ्गल। (नाक से दाहिने छिद्र से) वायु को बाहर छोडे। ३२ बार ॐकार कहते हुए इडा से नाक के बायें छिद्र से ..वायु को अन्दर भर लेवें। ६४ बार ॐकार कहते हुए सुषुम्ना नाडि में (ब्रह्मरन्ध्र मस्तिष्क में) कुम्भक (स्तम्भन) करें। साधना करने से यह सम्भव है। **अनेन अत्यन्त दुरितनिवृत्तिः स्यात्।** इसके अत्यधिक पापों का निवारण होता है।

एवं रेचकादिना जीवपरमात्मनोः ऐक्यं मनसा ध्यात्वा पुनः ॐ ह्रीं हं सः इत्यनेन मूलाधारस्थं जीवं, सुषुम्ना मार्गेण द्वादशांतस्थ परमात्मनि संयोज्य लं इति पादाग्रं वं इति नाभिं रं इति हृदयं यं इति कण्ठं हं इति तालुदेशं संस्पृश्य क्रमेण पृथ्वी अप् तेज वायु आकाशानां मण्डलानि संकल्प्य ह्लां इति पञ्चविंशति संख्यं पञ्चप्राणायामान् कृत्वा ह्लां हुँ फट् इति पादागादि नाभ्यन्तं व्याप्य पृथिवीं अप्सु संहरामि। पुनः ह्वीं इति पञ्चविंशति संख्य चतुर्वारं प्राणायामान् कृत्वा ह्वीं हुं फट् इति नाभ्यादि हृदयान्तं व्याप्य अपः अग्नौ संहरामि। पुनः ह्रूं इति पञ्चविंशति संख्यं त्रिवारं प्राणायामान् कृत्वा ह्रूं हुं फट् इति हृदयादि कण्ठां व्याप्य अग्निं वायौ संहरामि। पुनः ह्यौं इति पञ्चविंशति संख्यं द्विवारं प्राणायामं कृत्वा ह्यौं हुं फट् इति कण्ठादि ताल्वन्तं व्याप्य वायुं आकाशे संहरामि। पुनः हौं इति पञ्चविंशति संख्यं सकृत् प्राणायामं कृत्वा ह्यौं हुं फट् इति ताल्वादि द्वादशान्तं व्याप्य आकाशं परमात्मनि संहरामि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

इति भूत संहारः

यह भूत संहार प्रक्रिया यह महत्व पूर्ण अङ्ग है। इसमें पञ्च महाभूतों का संहार कर उन्हें परमात्मा में लन करा देते हैं। तब शरीर में केवल परमात्मा का शुद्ध रूप मात्र रहता है। कोई कश्मल नहीं। रेचक पूरक कुम्भकों से जीव एवं परमात्मा की एकता का चिन्तन करना चाहिये। फिर ॐ ह्रीं हं सः कहते

हुए मूलाधार .. शरीर के नीचले हिस्से में विद्यमान जीव को सुषुम्ना मार्ग से ब्रह्मरन्ध्र में स्थित परमात्मा में मिलाना चाहिये। लं कहकर पैर के अग्र भाग को, वं कहकर नाभि को, रं कहकर हृदय को, यं कहकर कण्ठ को एवं हं कहकर तालु प्रदेश को स्पर्श करें। फिर मन में पृथ्वी, जल, तेज, वायु एवं आकाश मण्डलों का चिन्तन करें।

२५ बार ह्लां कहते हुए ५ प्राणायाम करते हुए ह्लां हुं फट् कहते हुए पैर से नाभि तक हाथ फिराते हुए वायु तत्व को नाभि में स्थित जल तत्व में मिलाने का संकल्प करना चाहिये। २५ बार ह्लीं करते हुए ४ प्राणायाम करते हुए ह्लीं हुं फट् कहते हुए नाभि से हृदय तक हाथ फिराते हुए जल तत्व को हृदय स्थित अग्नितत्व में मिलाने का संकल्प करना चाहिये। फिर २५ बार ह्लीं कहते हुए ३ प्राणायाम करते हुए ह्लूं हुं फट् कहते हुए हृदय से कण्ठ तक हाथ फिराते हुए अग्नितत्व को वायु तत्व में (कण्ठ में स्थित) मिलाने का संकल्प करना चाहिये। फिर २५ बार हौं कहते हुए दो प्राणायाम करते हुए हौं हुं फट् कहते हुए कण्ठ से तालु प्रदेश तक हाथ फिराते हुए वायु तत्व को तालु स्थित आकाश तत्व में मिलाने का संकल्प करना चाहिये। फिर २५ वा हौं कहते हुए एक प्राणायाम करते हुए हौं हुं फट् कहते हुए तालु प्रदेश से ब्रह्मरन्ध्र तक फिराते हुए आकाश तत्व को ब्रह्न्ध्र स्थित परमात्म तत्व में लीन करना चाहिये। **अब मात्र निर्विकार परमात्मा शरीर में है।**

शोषण विधान—इस विधान से शरीर में विद्यमान सभी कल्मशों का शोषण होता है।

यं इति वायु बीजेन षोडशवारं प्राणायामं कृत्वा वायुं इडया विमुच्च इडामुखे नाभिपषे च षड् बिन्दु सहितं धम्रं वायुमण्डलं तस्मिन् धुम्रं यं बीजं च ध्यात्वा, तद् बीजेन द्वात्रिंशद्वारं प्राणायामं कृत्वा इडया तद् वायुमण्डलेन सह वायुमापूर्य मण्डल द्वयं एकीकृतं ध्यात्वा, चतुःषष्टि वारं प्राणायामं कृत्वा परिकुम्भ्य एकीकृत वायुमण्डलात् संजातेन वायुना देहं संशोषितं ध्यात्वा तद् वायुं पिङ्गलया मुञ्चेत। *(अनुष्ठान पद्धति)*

इति शोषणं

यं नामक वायुतत्व के बीच मन्त्र को १६ बार कहते हुए इडा (नाक के बायें छिद्र) से साँस छोड़ते हुए प्राणायाम करें। बायें नाक के छेद में एवं नाभि के नंध्र में छः बिन्दु युक्त वायुमण्डल को एवं उसमें धूम्र वर्ण के यं बीच का ध्यान करें उस बीजमन्त्र को ३२ बार कहते हुए प्राणायाम करें। इडा (बायें नाक के छेद) से वायु को भरकर दोनों मण्डलों का एकीकृत मानकर इडा मण्डल यानि बायें नाक के छिद्र में स्थित मण्डल एवं नाभिप) यानि नाभि में स्थित मण्डल) फिर ६४ बार बीज मन्त्र को जपते हुए कुम्भक (स्तम्भन) करते हुए एकीकृत वायुमण्डल से उत्पन्न वायु से देह सूख गया है समझकर उस वायु को पिङ्गला (दाहिने नाक के छिद्र) से छोडना चाहिये। इससे शरीर में विद्यमान समस्त कश्मलों का शोषण होता है।

दाहन—इस विधान से शरीर में शोषित (सुखाये गये) सभी कश्मलों का दहन हो जाता है।

पुनरग्निबीजेन षोषशबारं प्राणायामं विधाय पिङ्गलया वायुं विमुच्य पिङ्गलामुखे हृदिपषे च स्वस्तिकसहितं त्रिकोणं रक्तं अग्निमण्डलं तन्मध्ये रक्तं रं इति च ध्यात्वा, तद् बीजेन हात्रिंशद्वारं प्राणायामं कृत्वा पिङ्गलया तद् अग्निमण्डलेन सह वायुमापूर्य मण्डलद्वयं एकीकृतं ध्यात्वा, चतुःषष्टिवारं प्राणायामं कृत्वा परिकुम्भ्य एकीकृत अग्निमण्डलात् संजातेन अग्निना देहं दग्धं ध्यात्वा तद् वांयु इडया विमुञ्चेत्। *(अनुष्ठान पद्धति)*

इति दाहानं

पिर रं नामक अग्नि बीज मन्त्र को १६ बार जपते हुए पिङ्गला से (नाक के दाहिने छिद्र) साँस छोड़ते हुए प्राणायाम करें। नाक के दक्षिण छिद्र में एवं हृदय प.. में स्वस्तिक सहित त्रिकोणाकार रक्तवर्णीया अग्निमण्डल को एवं उसमें रक्त वर्णीय रं बीज मन्त्र का ध्यान रकें। उस बीज मन्त्र का ३२ बार जप करते हुए प्राणायाम करें। पिङ्गला से वायु को भरकर दोनों मण्डलों को एकीकृत मानकर (पिङ्गला मण्डल यानि दाहिने नाक के छिद्र का मण्डल एवं

हृदि पद्म यादि हृदय में स्थित मण्डल, फिर ६४ बार बीज मन्त्र को जपते हुए, कुम्भक (स्तम्भन) करते हुए, एकीकृत अग्निमण्डल से उत्पन्न अग्नि से देह जल गया है समझकर उस वायु को इडा नाक के बायें छिद्र से छोडना चाहिये। इससे शरीर में विद्यमान समस्त कल्मश जो पहले सूख गये थे अब जल गये है।

प्लावन—इस विधान में शरीर में दग्ध (जलायें गये सभी कल्मशों का) निराकरण हो गया है। साथ ही शरीर भी जल गया है। फिर से कश्मल रहित शरीर का निर्माण करने का विधान है।

वं इति अमृतबीजेन षोडशवारं प्राणायामं कृत्वा इडया वायुं विमुच्य इडामुखे द्वादशांतपद्मे च पद्म सहितं अधचन्द्रात्मकं सितं आप्यं मण्डलं तन्मध्ये शुभ्र वं इति च ध्यात्वा, तद् बीजेन द्वात्रिंशद्वारं प्राणायामं कृत्वा इडया तद् अमृतमण्डलेन सह वायुमापूर्य मण्डलद्वयं एकीकृतं ध्यात्वा, चतुःक्षष्टिवारं प्राणायामं कृत्वा परिकुम्भ्य एकीकृत अमृतमण्डलात् संजातेन अमृतेन देहं द्वादशांतपद्मात् गलितैः परचैतन्यामृतजलैः प्रपञ्चैकीकृतं आप्लावितं ध्यायेत्। *(अनुष्ठान पद्धति)*

वं नामक अमृत तत्व के बीज मन्त्र को १६ बार जपते हुए इडा से साँस छोडते हुए प्राणायाम करें। इडा में एवं द्रादशान्त पद्म (ब्रह्मरन्ध्र) में पद्म सहित अर्धचन्द्रकार शुक्ल (सफेद) रंग का अमृत मण्डल को, एवं उसके बीच में शुक्ल वर्ण के वं बीज मन्त्र का ध्यान रकें। फिर उस बीज से ३२ बार जपते हुए इडा एवं अमृत मण्डल से वायु को भरकर प्राणायाम करते हुए, दोनों मण्डलों को एकीकृत मानकर (इडा मण्डल एवं पद्म सहित अर्धचन्द्रकार अमृत मण्डल) फिर ६४ बार वं बीजाक्षर को जपते हुए कुम्भक (स्तम्भन) करें। एकीकृत अमृत मण्डल से उत्पन्न अमृत से देह को, द्वादशान्त (सहस्त्रार) पद्म से गिर रहे परमात्म वस्तु अमृत जल से आप्लावित शरीर अमृतमय हो गया है। इस प्रकार पहले कश्मलों का विनाश होकर फिर अमृतमय शरीर की प्रासि हो गयी।

यहाँ पर अमृतमय शरीर प्रास हुआ

आगे पञ्चभूतसृष्टि—लं इति पृथ्वी बीजेन बुद्बुदाभं ब्रह्माण्डं संकल्प्य हं इति सुरीकरणंकृत्वा सोहं इति द्वादशान्तपश्चात् जीवं स्वहृदये संयोज्य, हौं इति पञ्चविंशति संख्यं सकृत प्राणायामं कृत्वा, हौं नमः इति द्वादशान्तादि ताल्वन्तं व्याप्य आत्मनः आकाशं सृजामि, पुनः ह्यैं इति पञ्चविंशति संख्यं द्विवारं प्राणायामं कृत्वा ह्यैं नमः इति ताल्वादि कण्ठान्तं व्याप्य आकाशात् वायुं सृजामि, पुनः ॠं इति पञ्चविंशति संख्यं त्रिवारं प्राणायामं कृत्वा ॠं इति पञ्चविंशति संख्यं चतुर्वारं प्राणायामं कृत्वा ह्वीं नमः इति हृदयामि नाभ्यन्तं व्याप्य अग्नेः अपः सृजामि, पुनः ह्लां इति पञ्चविंशति संख्यं पञ्च प्राणायामान् कृत्वा ह्लां नम इति नाभ्यादि पादान्तं व्याप्य अद्भ्यः पृथिवीं सृजामि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

इस प्रक्रिया में नष्ट हुए शरीर की पञ्चभूत सृष्टि विधान है। लं नामक पृथ्वी बीज से बद्बुदाकार के ब्रह्माण्ड सृष्टि का चिन्तन करें। हं नामक आकाश बीज का स्मरण करते हुए उसमें आकाश का चिन्तन करें। मैं परमात्मा हूँ मानते हुए सहस्रार से (ब्रह्मरन्ध्र) जीव को हृदय पद्म में स्थपित करें। हौं आकाश बीज का २५ बार जप करते हुए एक प्राणायाम करें। हौं नमः कहकर ब्रह्मरन्ध्र से तालु पर्यन्त हाथ फेरते हुए परमात्मा से आकाश सृष्टि की कल्पना करें। फिर ह्यैं नमः वायु बीज का २५ बार जप करते हुए दो प्राणायाम करें। ह्यैं नमः कहकर तालू से कण्ठ तक हाथ फेरते हुए आकाश से वायु सृष्टि का चिन्तन करें। फिर ह्रूं अग्नि बीज का २५ बार जप करते हुए तीन प्राणायाम करें। ॠं नमः कहकर कण्ठ से हृदय तक हाथ फेरते हुए वायु से अग्नि सृष्टि का चिन्तन करें। फिर ह्वीं जल बीज का २५ बार जप करते हुए चार प्राणायाम करें। ह्वीं नमः कहकर हृदय से नाभितक हाथ फेरते हुए अग्नि से जल सृष्टि का चिन्तन करें। फिर ह्लां पृथ्वी बीज का २५ बार जप करते हुए पाञ्च प्राणायाम करें। ह्लां नमः कहकर नाभि से पॉव तक हाथ फेरते हुए जल से पृथ्वी सृष्टि का चिन्तन करें।

पुनः षष्टयुत्तर त्रिशत प्रणव प्राणायामं कृत्वा, संवत्सरोषितं संकल्प्य फडन्त प्रणवेन अण्ड भेदं कृत्वा तत् शकले

द्यावापृथिव्यौ ध्यात्वा तदन्तर्वर्तिनं जीवं विराड्रूपं ध्यात्वा पुनः लिपि प्राणायामं कृत्वा पीठन्यासं कृत्वा स्वहृदये लिपि आवाह्य तत्रैव सकलीकृत्य मानसपूजां विधय पुनः प्राणायामं कृत्वा लिप्या करन्यासं कृत्वा देहे व्याप्य लिपिन्यासं कृत्वा अङ्गन्यासं कृत्वा ऋपिछन्दोदेवताः न्यस्य यथाशक्ति लिपिं संजप्य व्याप्य लयाङ्गं कृत्वा गणानान्त्वेति गणपति मन्त्रं दुर्गा मन्त्रं च जप्त्वा पुनः मन्त्रोदयं कुर्यात्। *(अनुष्ठान पद्धति)*

३६० बार ॐकार का जप करते हुए प्राणायाम करें एक वर्ष बीता है समझकर (ब्रह्माण्ड सृष्टि का) ॐ फट् कहते हुए ब्रह्माण्ड भेदन की कल्पना कर उन दो टुकडो को भूमि एवं आकाश मानते हुए उसके बीच में स्थित जीव को विराट् स्वरूप मानते हुए **लिपि प्राणायाम** को करें। "अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लं लृं एं ऐं ओं औं अं अः। कं खं गं घं ङं। चं छं जं झं ञां। टं ठं डं ढं णं। तं थं दं धं नं। पं फं बं भं मं। यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं" यह लिपि प्राणायाम मन्त्र है। फिर पीठ न्यास करें। गुं गुरवे नमः—इति मूर्धनि (मस्तक में) गं गणपतये नमः-इति मूलाधार में (मूल में)

आधारशक्त्यै नमः। मूल प्रकृत्यै नमः। आदि कूर्माय नमः। अनन्ताय नमः। पृथिव्यै नमः। कहते हुए मूलाधार से नाभितक न्यास करें।

धर्माय नमः-दक्षिण ऊरु (दाहिना जाँघ), ज्ञानाय नमः-दक्षिण अंसे (दाहिनी भुजा), वैराग्याय नमः-वाग अंसे (बायें भुजा), ऐश्वर्याय नमः-वाम ऊरु (बायें जाँघ), अधर्माय मनः-नाभि मूले (नाभि के मूल में), अज्ञानाय नमः-दक्षिण पार्श्वे (दाहिने पार्श्व में), अवैराग्याय नमः-मुखे (मुख में), अनैश्वर्याय नमः-वाम पार्श्वे (बायें पार्श्व में), सं सत्वाय नमः-मध्ये सूत्ररूपेण (बीच में धागे के रूप में नाभि के पास), रं रजसे नमः-मध्ये सूत्ररूपेण (बीच में धागे के रूप में नाभि के पास), तं तमसे नमः-मध्ये सूत्ररूपेण (बीच में धागे के रूप में नाभि के पास), मां मायायै नमः-वितान रूपेण (छत के रूप मे सिर के ऊपर), विं विद्यायै नमः-वितान रूपेण (छत के रूप मे सिर के ऊपर), पं पद्माय नमः-हृदय (हृदय में), अं अर्कमण्डलाय नमः-हृदय (हृदय में), उं सोममण्डलाय नमः-हृदय (हृदय में), मं वह्निमण्डलाय नमः-हृदय (हृदय में), अं आत्मने नमः-(हृदय में), उं अन्तरात्मने नमः-(हृदय में), मं

परमात्मने नमः-(हृदय में), ॐवामायै नमः। हृदय पद्म के आठ दलों में, ॐज्येष्ठायै नमः। हृदय पद्म के आठ दलों में, ॐरौद्र्यै नमः। हृदय पद्म के आठ दलों में, ॐकाल्यै नमः। हृदय पद्म के आठ दलों में, ॐकलविकलिन्यै नमः। हृदय पद्म के आठ दलों में, ॐबल विकलिन्यै नमः। हृदय पद्म के आठ दलों में, ॐबल प्रमथिन्यै नमः। हृदय पद्म के आठ दलों में, ॐसर्व भूत दमन्यै नमः। हृदय पद्म के आठ दलों में, (हृदय पद्म के बीच में।, ॐमनोन्मन्यै नमः (हृदय पद्म कर्णिकायां), ॐनमो भगवते सकल गुणात्म शक्ति युक्ताय अनन्ताय येगपीठात्मने नमः। *(अनुष्ठान पद्धति)*

पीठ न्यास पूरा हुआ

अपने हृदय में अकारादि सभी लिपियों का आवाहन करें। वहीं पर सभी का मानस पूजा करें। उससे पूर्व **सकलीकरण न्यास** कर लें।

ॐहृदयाय नमः। ॐशिरसे स्वाहा। ॐशिखायै वषट्। ॐकवचाय हुम्। ॐनेत्रत्रयाय वौषट्। ॐअस्त्रायफट्। न्यास के बाद आत्मा का मानस पूजन करें। ॐलं पृथिव्यात्मना गन्धं कल्पयामि। ॐहं आकाशात्मना पुष्पं कल्पयामि। ॐयं वाय्वात्मना धूपं कल्पयामि। ॐरं अग्न्यात्मना दीपं कल्पयामि। ॐवं अबात्मना नैवेद्यं कल्पयामि। ॐमं परमात्मना सर्वोपचार पूजां कल्पयामि। फिर प्राणायाम करें। पिपि से करन्यास करें

ॐअं कं खं गं घं ङं आं-अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐइञ्चं छं जं झं ञं ई-तर्जनीभ्यां नमः। ॐउं टं ठं डं ढं णं ऊं- मध्यमाभ्यां नमः। ॐएं तं थं दं धं नं ऐं-अनामिकाभ्यां नमः। ॐओं पं फं बं भं मं औं - कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐअं यं रं लं वं शं षं हं ळं क्षं अः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः। फिर पिपि को देह में व्याप्य करें।

अंनमः आं नमः इं नमः ईं नमः उं नमः ऊं नमः करतलपृष्ठपार्श्वेषु न्यासं कुर्यात्। ऋं नमः-दाहिना अङ्गुष्ठा, ॠं नमः-दाहिना तर्जनी, लृं नमः- दाहिना मध्यमा, लॄं नमः- दाहिना अनामिका, एं नमः-दाहिना कनिष्ठिका *(अनुष्ठान पद्धति)*, ऐं नमः-वाम कनिष्ठिका, ओं नमः-वाम अनामिका, औं नमः-वाम

मध्यमा, अं नमः- वाम तर्जनी, आं नमः-वाम अङ्गुष्ठ, कं नः-दाहिने हाथ के तर्जनी मूल से अग्र तक (पर्व सन्धियों के अग्र में।), खं नमः-दाहिने हाथ के तर्जनी मूल से अग्र तक (पर्व सन्धियों के अग्र में।), गं नमः-दाहिने हाथ के तर्जनी मूल से अग्र तक (पर्व सन्धियों के अग्र में।), घं नमः-दाहिने हाथ के तर्जनी मूल से अग्र तक (पर्व सन्धियों के अग्र में।), ङं नमः-दाहिने हाथ के मध्यमा मूल से अग्र तक, चं नमः-दाहिने हाथ के मध्यमा मूल से अग्र तक, छं नमः-दाहिने हाथ के मध्यमा मूल से अग्र तक, जं नमः-दाहिने हाथ के मध्यमा मूल से अग्र तक, झं नमः-दाहिने हाथ के अनामिका के मूल से अग्र तक, ञां नमः-दाहिने हाथ के अनामिका के मूल से अग्र तक, टं नमः-दाहिने हाथ के अनामिका के मूल से अग्र तक, ठं नमः-दाहिने हाथ के अनामिका के मूल से अग्र तक, डं नमः-दाहिने हाथ के कनिष्ठिका मूल से अग्र तक, ढं नमः-दाहिने हाथ के कनिष्ठिका मूल से अग्र तक, णं नमः-दाहिने हाथ के कनिष्ठिका मूल से अग्र तक, तं नमः-दाहिने हाथ के कनिष्ठिका मूल से अग्र तक, थं नमः-बाये हाथ के कनिष्ठिका मूल से अग्र तक, दं नमः-बाये हाथ के कनिष्ठिका मूल से अग्र तक, धं नमः-बाये हाथ के कनिष्ठिका मूल से अग्र तक, नं नमः-बाये हाथ के कनिष्ठिका मूल से अग्र तक, पं नमः-बाये हाथ के अनामिका मूल से अग्र तक, फं नमः-बाये हाथ के अनामिका मूल से अग्र तक, बं नमः-बाये हाथ के अनामिका मूल से अग्र तक, भं नमः-बाये हाथ के अनामिका मूल से अग्र तक, मं नमः- बाये हाथ के मध्यमा के मूल से अग्र तक, यं नमः-बाये हाथ के मध्यमा के मूल से अग्र तक, रं नमः-बाये हाथ के मध्यमा के मूल से अग्र तक, लं नमः-बाये हाथ के मध्यमा के मूल से अग्र तक, वं नमः- बाये हाथ के तर्जनी के मूल से अग्र तक, शं नमः-बाये हाथ के तर्जनी के मूल से अग्र तक, षं नमः-बाये हाथ के तर्जनी के मूल से अग्र तक, सं नमः-बाये हाथ के तर्जनी के मूल से अग्र तक, हं नमः-अङ्गुष्ठ के मूल, (दोनों हाथ), ळं नमः-अङ्गुष्ठ के मध्य, (दोनों हाथ), क्षं नमः-अङ्गुष्ठ के अग्र, (दोनों हाथ)

अङ्गन्यास—ॐ अं कं खं गं घं ङं आं - हृदयाय नमः, ॐ इं चं छं जं झं ञां ईं-शिरसे स्वाहा, ॐ उं टं ठं डं ढं णां ऊं-शिखायै वषट्, ॐ ऐं तं थं दं धं नं ऐं-कवचाय हुम्, ॐ ओं पं फं बं भं मं औं -नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अः-अस्त्रायट्

ऋषि छन्द देवता न्यास—शब्द ब्रह्म ऋषिः गायत्री छन्दः मातृका सरस्वती देवता शिरसि ऋषिः, मुखे छन्दः, हृदये देवता का स्मरण कर लेवे। ऋषि देवता छन्द न्यास करने के बाद यथा शक्ति लिपि का पजकर उसे समस्त शरी में व्यासकर अङ्गन्यास का लयाङ्ग यानि उलटा करके न्यास करें।

ॐ अं यं रं लं वं षं षं सं हं ळं क्षं अः - अस्त्राय फुट्, ॐ ओं पं फं बं भं मं औं - नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ऐं तं थं दं धं नं ऐं - कवचाय हुम्, ॐ उं टं ठं डं ढं णां ऊं - शिखायै वषट् , ॐ इं चं छं जं झं ञां ईं - शिरसे स्वाहा, ॐ अं कं खं गं घं ङं आं-हृदयाय नमः *(अनुष्ठान पद्धति)*

ॐ इमा या ब्रंह्मणस्पते विषूंचीर्वात ईरंते। सध्रीचीरिन्द्र ताः कृत्वा मह्यं शिवतंमास्कृधि
स्वस्ति नों अस्त्वभंयं नो अस्तु नमोंऽहोरात्राभ्यांमस्तु॥ *(अथर्ववेद १९.८.६)*

इस मन्त्र से गणपति की प्रार्थना करें।

ॐ देवानां पत्नींरुशतीरंवन्तु नः प्रावंन्तु नस्तुजये वाजंसातये।
याः पार्थिवासो या अपामपिं व्रते ता नों देवीः सुहवाः शर्मं यच्छन्तु ॥ *(अथर्ववेद ७.४९.१)*

इस मन्त्र से दुर्गा देवी की प्रार्थना करें।

मन्त्रोदय विधान—ह ह ह इति प्रजप्य मूलाधारस्थं पीवंपरमात्मनि लाप्य तन्मंत्रात्मकं ध्यात्वा पुनः प्रणवसहित मूलमन्त्रं उक्त्वा हृदय प.. सुयोज्य मूल मंत्रेण पञ्चविशति संख्यं प्राणायाम त्रयं कृत्वा क्रमेण पर सूक्ष्म स्थूलात्मकं ध्यात्वा

तस्य विराड्रूपस्य आधारार्थं पीठन्यासं कृत्वा स्वहृदये मूर्ति संकल्प्य आवाह्य सकलीकृत्य मानस पूजां विधाय पूज्य पूजकयोः ऐक्यं संभाव्य मूलेन पञ्च विंशति संख्यं प्राणायामं कृत्वा तेजः कणां पिङ्गलया अंजलो निपात्य करन्यास कृतवा ताभ्यां हस्ताभ्यां मूलेन देहे त्रिवारं व्याप्य तत्वन्यासं कुर्यात्। *(अनुष्ठान पद्धति)*

ह ह ह इसका जप कर मूलाधार में स्थित जी को परमात्म में मिलाना चाहिये। अब जीव मन्त्रात्मक हो गया मानना चाहिये। फिर प्रणव सहित मूल मन्त्र का जप करें। ॐ नमो नारायणाय।'' देवता को हृदय में स्थापित करें। फिर २५ बार मूल मन्त्र का जप करते हुए तीन बार प्राणायाम करें। पहले प्राणायाम से परब्रह्म रूपी, दूसरे प्राणायाम से जीव सूक्ष्मरूप, एवं तीसरे प्राणायाम से जीव स्थूल रूप को प्राप्त करता है। उस विराट् स्वरूप के जीव के आधार के लिए पीठ न्यास करें पं पद्माय नमः कहकर पीठन्यास करें। अपने हृदय मे विष्णु मूर्ति का चिन्तन करें, आवाहन करें ''ॐनमो नारायणाय। विष्णुं आवाहयामि।'' सकलीकरण कर ॐहृदयाय नमः। ॐशिरसे स्वाहा। ॐशिखायै वषट् ॐकवचाय हुम् ॐनेत्रत्रयाय वौषट् ॐअस्त्राय फट्

मानस पूहां कृत्वा—ॐलं पृथिव्यात्मना गन्धं कल्पयामि। ॐआकाशात्मना पुष्पं कल्पयामि। ॐयं वाय्वात्मना धूपं कल्पयामि। ॐरं अग्न्यात्मना दीपं कल्पयामि। ॐवं अबात्मना नैवेद्यं कल्पयामि। ॐमं परमात्मना सर्वोपचार पूजां समर्पयामि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

पूजन करने वाला एवं पूजित देवता दोनों उपरोक्त क्रियाओं से एक हुए मानकर मूल मन्त्र ''ॐनमो नारायणाय।'' इसे २५ बार जपते हुए प्राणायाम करें। तेज कणों को पिङ्गला से (नाक के दाहिने छिद्र से) अंजली में भरकर विष्णु मूल मन्त्र से करन्यास करें।

ॐनमो नारायणाय अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐनमो नारायणाय तर्जनीभ्यां नमः। ॐनमो नारायणाय मध्यमाभ्यां नमः। ॐनमो नारायणाय अनामिकाभ्यां नमः। ॐनमो नारायणाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐनमो नारायणाय करतल करपृष्ठाभ्यां नमः। दोनों हाथों से तीन बार देह पर हाथ फिराये तत्वन्यास को करें।

तत्वन्यास-कलाध्वा—ॐहौं नमः पराय शान्त्यतीत कलात्मने नमः मूर्धनि। ॐहौं नमः पराय शान्तिकलात्मने नमः मुखे। ॐहौं नमः पराय विद्या

कलात्मने नमः हीदये। ॐ हौं नमः पराय प्रतिष्ठा कलात्मने नमः गुह्ये। ॐ ह्लां नमः पराय निवृत्ति कलात्मने नमः पादयोः कहकर कला न्यास करें।

ॐ मं नमः पराय जीवात्मने नमः सर्वाङ्गे, ॐ भं नमः पराय प्राणात्मने नमः हृदये, ॐ बं नमः पराय बुध्यात्मने नमः हृदये, ॐ फं नमः पराय अहंकारात्मने नमः हृदये, ॐ पं नमः पराय मन आत्मने नमः हृदये, ॐ नं नमः पराय शब्दतन्मात्रात्मने नमः मूर्धनि, ॐ धं नमः पराय स्पर्शतन्मात्रात्मने नमः मुखे, ॐ दं नमः पराय रूप तन्मात्रात्मने नमः हृदये, ॐ थं नमः पराय रस तन्मात्रात्मने नमः गुह्ये, ॐ तं नमः पराय गन्ध तन्मात्रात्मने नमः पादयोः, ॐ णं नमः पराय श्रोत्रात्मने नमः श्रोत्रयोः

ॐ ढं नमः पराय त्वगात्मने नमः त्वचि। ॐ डं नमः पराय चक्षुरात्मने नमः चक्षुषि। ॐ ठं नमः पराय जिह्वात्मने नमः जिह्वायां। ॐ टं नमः पराय ध्राणात्मने नमः नासिकायोः। ॐ ञां नमः पराय वागात्मने नमः वाचि। ॐ झं नमः पराय पाणयात्मने नमः हस्तयोः। ॐ जं नमः पराय पादात्मने नमः पादयोः। ॐ छं नमः पराय पाय्वात्मने नमः अपाने। ॐ चं नमः पराय उपस्थात्मने नमः गुह्ये। ॐ ङ. नमः पराय आकाशात्मने नमः मूर्धनि। ॐ घं नमः पराय वाय्वात्मने नमः मुखे। ॐ गं नमः पाया तेज आत्मने नमः हृदये। ॐ खं नमः पराय अबात्मने नमः हुह्ये। ॐ कं नमः पराय पृथिव्यात्मने नमः पादयोः। ॐ शं नमः पराय हृत्पुण्डरीकात्मने नमः हृदये। ॐ हं नमः पराय सूर्यमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः हृदये। ॐ सं नमः पराय सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः हृदये। ॐ रं नमः पराय वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः हृदये। ॐ हौं पराय शान्त्यतीतात्मने नमः मूर्धनि। ॐ ह्यैं नमः पराय शान्त्यात्मने नमः मुखे ॐ हृं नमः पराय विद्यात्मने नमः हृदये। ॐ ह्रीं नमः पराय प्रतिष्ठात्मने नमः गुह्ये। ॐ ह्लां नमः पराय निवृत्यात्मने नमः पादयोः *(अनुष्ठान पद्धति)*। इति तत्व न्यासः।

शंखपूरणम्—अग्रतः गोमय जलेन चतुरस्र मण्डलं कृत्वा प्रणवेन तत्र गन्धपुष्पाक्षतान् न्यस्य अस्त्रेण शंखं शंखपादमपि प्रक्षाल्य वह्नि मण्डलेन शंखपादं, सूर्य मण्डलेन शंखं च न्यस्य हृदय मन्त्रेण शंखे गन्धपुष्पाक्षतान् न्यस्य शिरोमन्त्रेण शुद्धजलैः शंखमापूर्य गन्धपुष्पं निक्षिप्य वह्नि मण्डलेन शंखपादं सूर्यमण्डलेन शंखं, सोम मण्डलेन जलं संपूज्य, शिखा

मन्त्रेण गालिनी मुद्रया जलस्य उत्पवनं कृत्वा आलोढ्य आपूर्य गुरुड मुद्रया निर्विषीकृत्य, सुरभिमुद्रया अमृतीकृत्य, नेत्र मन्त्रेण जल निरीक्ष्य कवचमन्त्रेण हस्ताभ्यां अच्छाद्य, अस्त्र मन्त्रेण संरक्ष्य, गङ्गे इत्यादिना तीर्थमावाह्य किंचित् पीठं संपूज्य मूलेन स्वहृदयात् देवमावाह्य सकलीकृत्य निवेद्य मुद्रा प्रदर्श्य वारं मूलमन्त्रं प्रजप्य वर्धन्यां किंचित् परिषिच्य शिष्टजलेन प्रणवेन पूजा द्रव्याणि आत्मानं च त्रिः प्रोक्षेत्। *(अनुष्ठान पद्धति)*

सामने गोमय जल से चतुरस्त्र मण्डल को बनाकर **ॐ कार** जपते हुए गन्ध पुष्प अक्षतों को डालकर **ॐ अस्त्राय फट्** रते हुए शंख को एवं खंख के आसन को धोवें। **ॐ रं वह्निमण्डलाय दश कलात्मने नमः** कहकर शंख पाद को मण्डल पर रखें। **ॐ हं सूर्यमण्डलाय द्वादश कलात्मने नमः** ''कहकर शंख को मण्डल पर रखें।

ॐ हृदयाय नमः कहते हुए शंख पर गन्ध पुष्प एवं अक्षत चडाये। **ॐ शिरसे स्वाहा** कहते हुए शुद्ध जल से शंख में जल भरें। उसमें गन्ध पुष्प डालें। **ॐ रं वह्निमण्डलाय नमः** कहकर शंखपाद का पूजन करें। **ॐ हं सूर्यमण्डलाय नमः** कहकर शंख का पूजन करें। **ॐ सं सोममण्डलाय नमः** कहकर जल का पूजन करें। **ॐ शिखायै वषट्** कहकर गालिनी मुद्रा से जल का उत्पवन (शुद्धीकरण करना) कर, हिलाकर, भरकर, गरुड मुद्रा से जल के विष का निवारण कर, सुरभिमुद्रा से अमृत बनाकर। **ॐ नेत्रायाय वौषट्** कहकर जल को देखें। **ॐ कवचाय हुम्** कहकर दोनों हाथों से उसे ढककर **ॐ अस्त्राय फट्** कहकर उसकी रक्षा की कल्पना करें। ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेस्मिन् सन्निधिं कुरु।

(अनुष्ठान पद्धति)

कहकर जल में तीर्थ का आवाहन करें। **पं पद्माय नमः** कहकर पीठ का पूजन करें।

शंख तीर्थ में अपने हृदय से विष्णु देवता का आवाहन कर ॐ हृदयाय नमः। ॐ शिरसे स्वाहा। ॐ शिखाये वषट्। ॐ कवचाय हुम्। ॐ नेत्रात्रयास वौषट्

ॐ अस्त्राय फट् **कहकर सकलीकरण कर** नैवेद्य मुद्रा को दिखाकर **ॐ नमो नारायणाय** इस मूल मन्त्र को ८ बार जपने हुए कलश जल में किंचित् शंख जल को डालें शेष जल से तीन बार पूजा सामग्रियों को एवं अपने को ॐकार कहते हुए प्रोक्षण करें।

कलश प्रसङ्गे आत्माराधनम्—हृदये पीठं संपूज्य प्रणवाक्षरैः मूलाधार हृदय द्वादशान्त स्थित तेजांसि संपूज्य प्रणवेद तानि हृदयपद्मे नियोज्य मूलेन प्राणायामं कृत्वा व्याप्य आसनमिदं स्वागतमिदं पाद्यमिद, अर्घ्यमिदं आचमनमिदं स्नानमिदं वस्त्रमिदं आभारणमिदं इत्यादि उपहारान् दत्वा जलगन्धाभ्यां आत्मानं संपूज्य सद्योजातादि पञ्च ब्रह्मभिः ललाट कराठ अंसद्वय हृदय उदरेषु अष्टगंधेन तिर्यग् पुराड्राणि विलिप्य स्थाणु मंत्रण मूर्ध्नि पञ्चवारं पुष्पांजलि विधाय अं अर्कद्वयं कल्पयामि, इति पादाग्रदिनाभ्यन्तं कंलल्प्य पुष्पाजलिं कुर्यात्। ॐ करवीर द्वयं कल्पयामि इति नाभ्यादि हृदयान्तं संकल्प्य पुष्पांजलिं कुर्यात्। ॐ षट् कुसुमानि कल्पयामि इतिशिरसि। शेष कुसुमानि कल्पयामि इति सर्वाङ्गे च पुष्पांजलिं कुर्यात्। धूपं मुद्रां दीप मुद्रां प्रदर्श्य नैवेद्य काले अर्ध्य दत्वा प्रसन्न पूजां विधाय पूजां समापयेत्। इति आत्मपूजा। *(अनुष्ठान पद्धति)*

हृदय में पी पूजा करें। **पं पद्माय नमः** इस मन्त्र से पीठ पूजा करें। प्रणवाक्षर अं उं मं इसी क्रम से मूलाधार हृदय एवं द्वादशान्त पत्र के तेज का पूजन करें। ॐकार से तीनों को मिलायें। ॐनमो नारायणाय इस मूल मन्त्र से प्राणायाम करके आसनं समर्पयामि। स्वागतं समर्पयामि। अर्ध्यं समर्पयामि। पाद्यं समर्पयामि। आचमनं समर्पयामि। स्नानं समर्पयामि। वस्त्रं समर्पयामि। आचमनं समर्पयामि। आभरणं समर्पयामि। गन्धं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि। पुष्पाणि समर्पयामि। धूपं समर्पयामि। दीपं दर्शयामि। इतना कहने के बाद जल एवं गन्ध से अपना पूजन करें।

ॐ स॒द्योजा॒तं प्र॑पद्या॒मि स॒द्योजा॒ताय॒ वै नमो॒ नमः। भ॒वेभ॑वे॒नाति॑ं भ॒वे भ॑वस्व॒ मां भ॒वोद्ध॑वाय॒ नमः। *(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषद्)*

कहकर ललाट में गन्ध धारण करें।

ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालायनमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः। *(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषद्)*

कहकर कण्ठ में तिर्यक् त्रिपुण्ड्र गन्ध धारण करें।

ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥ *(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषद्)*

कहकर दोनों भुजाओं पर गन्ध धारण करें।

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमाहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्। *(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषद्)*

कहकर हृदय में गन्ध धारण करें।

ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्व भूतानां ब्रह्माधिपति ब्रह्मणोधि पतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवों।

(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषद्)

कहकर उदर में अष्टगन्ध धारण करें। स्थाणु मन्त्र से **पाँच बार पुष्पांजलि सिर पर डाल लेवे।**

स्थाणुमन्त्र—नमोस्तु स्थाणु भूताय ज्योतिर्लिंगावृतात्मने चतुर्मूर्तिवपुच्छाया भासिताङ्गाय शंभवे॥ *(क्रियासार)*

ॐ अं अर्क द्वयं कल्पयामि कहकर पैरों के तले से नाभिपर्यन्त कल्पना कर सि पर पुष्पांजलि डाल लेवें। **ॐ उं करवीर द्वयं कल्पयामि** कहकर नाभि से हृदय पर्यन्त कल्पना करें सिर पर पुष्पांजलि डाल लेवें। **ॐ मं पद्मद्वयं कल्पयामि** कहकर हृदय से भ्रू मध्य तक कल्पना करें सिर पर पुष्पांजलि डाल लेवें। **ॐ षट् कुसुमानि कल्पयामि** कहकर पुष्पांजलि करें। **शेष कुसुमानि कल्पयामि** कहकर सिर पर एवं सभी अङ्गों पर पुष्पांजलि करें। **धूप**

मुद्रा-(अङ्गुष्ठाग्र एवं अनामिकाग्र मिलाने से दीप मुद्रा) इन्हें दिखाकर। नैवेद्य के बदले अर्घ्य देवें। **प्रसन्न पूजां समर्पयामि** कहकर आत्मापूजा को संपन्न करें। इसके बाद संकल्प करें (प्रमाण श्लोक)

फलभिसंधानबुद्धिस्थिरीकरणसिद्धये। संकल्पस्तु पुराकार्यः श्रोते स्मार्ते च कर्मणि॥ *(प्रयोगरत्नाकर:)*

श्रौत स्मार्त कर्म करने से पहलें फल सिद्धि की स्थिर भावना की प्राप्ति के लिए कर्म से पहले संकल्प करना चाहिये।

संकल्प्यैव च कर्तव्यं स्नानदान व्रतादिकम्। अन्यथा पुण्यकर्माणि निष्फलानि भवन्ति हि॥ *(प्रयोगरत्नाकर:)*

स्नान दान कर्मादियों को संकल्प लेकर ही करना चाहिये। नहीं तो पुण्यकर्म फल रहित हो जाते हैं। मास पक्ष तिथीनां च निमित्तानां च सर्वशः। उल्लेखन कुर्वाणो न तस्य फलभाग् भवेत्॥ सभी कर्मो में महिना,पक्ष,तिथि, एवं किस लिए कर रहे हैं (निमित) इसका जो उल्लेख नहीं करते हैं वे फल को प्राप्त नहीं करते हैं।

संकल्प—देशाकालौ संकीर्त्य विश्वशान्त्यर्थं सर्वाद्भत उत्पात जनित दोष परिहारार्थं आदित्यादि नवानां ग्रहाणां शुभ एकादश स्थान फलावाप्त्यर्थं कलशस्थापनं नवग्रहाराधनं यथाशक्ति कल्पोक्त षोडशोपचार पूजां करिष्ये।

गुरु पूजन—गुं गुरुभ्यो नमः। लं पृथिव्यात्मना गन्धं कल्पयामि। हं आकाशात्मना पुष्पं कल्पयामि। यं वाय्वात्मना धूपं कल्पयामि। रं अग्न्यात्मना दीपं कल्पयामि। वं अमृतात्मना नैवेद्यं कल्पयामि। पं परमात्मना सर्वोपचार पूजां समर्पयामि। गुं गुरवे नमः सुवर्ण दक्षिणां समर्पयामि।

गणेश पूजन—गं गणपतये नमः। ॐ लं पृथिव्यात्मना गन्धं कल्पयामि। ॐ हं आकाशात्मना पुष्पं कल्पयामि। ॐ यं वाय्वात्मना धूपं कल्पयामि। ॐ रं अग्न्यात्मना दीपं कल्पयामि। ॐ वं अमृतात्मना नैवेद्यं कल्पयामि। ॐ पं परमात्मना सर्वोपचार पूजा समर्पयामि। गं गंणपतये नमः सुवर्णपुष्पं समर्पयामि।

ॐ इ॒मा या ब्र॑ह्मणस्पते॒ विषू॑ची॒र्वात॒ ईर॑ते। स॒ध्रीची॑रिन्द्र॒ ताः कृ॒त्वा मह्यं॑ शि॒वत॑मास्कृधि

स्वस्ति नों अस्त्वभंयं नो अस्तु नमोंऽहोरात्राभ्यांमस्तु ॥ *(अथर्ववेद १९.८.६)*

वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्य समप्रभ। अविघ्नं करु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा। गं गणपतये नमः प्रार्थयामि। नमस्करोमि।

दीपाराधनम्—ॐ अग्निर्भूम्यामोषंधीष्वग्निमापों बिभ्रत्यग्निरश्मंसु। अग्निरन्तः पुरुंषेषु गोष्वश्वेंष्वग्नयंः। *(अथर्ववेद १२.१.१९)*

ॐ रं नमः इति दीपमाराध्यामि। कहकर पुष्प से दीप का पूजन करें।

पीठपूजनम्— ॐ आधार शक्त्यै नमः। ॐ अज्ञानाय नमः। ॐ मूल प्रकृत्यै नमः। ॐ अवैराग्याय नमः। ॐ आदिकूर्माय नमः। ॐ अनैश्वर्याय नमः। ॐ अनन्ताय नमः। ॐ सं सत्वाय नमः। ॐ पृथिव्यै नमः। ॐ रं रजसे नमः। ॐ धर्माय नमः। ॐ तं तमसे नमः। ॐ ज्ञानाय नमः। ॐ मं मायायै नमः। ॐ वैराग्याय नमः। ॐ विं विद्यायै नमः। ॐ ऐश्वर्याय नमः। ॐ पं पद्माय नमः। ॐ अधर्माय नमः। ॐ वामायै नमः। ॐ ज्येष्ठायै नमः। ॐ अं अर्कमण्डलाय नमः। ॐ रौद्र्यै नमः। ॐ उं सोमदलाय नमः। ॐ कालयै नमः। ॐ रं वह्निमण्डलाय नमः। ॐ बल विकलिन्यै नमः। ॐ अं आत्मने नमः। ॐ कलविकलिन्यै नमः। ॐ उं अन्तरात्मने नमः। ॐ बल प्रमथिन्यै नमः। ॐ मं परमात्मने नमः। ॐ सर्वभूतदमन्यै नमः। ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः। ॐ मनोन्मन्यै नमः।

ॐ नमो भगवते सकलगुणात्म शक्तियुक्ताय अन्तंताय योगपीठात्मने नमः। *(अनुष्ठान पद्धति)*

यहाँ पर कलश रखने वाला पीठ का पूजन पुष्पों से अक्षतों से करें।

भुवनेश्वरी पूजन (पीठ मध्ये)— ॐ ह्रां हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रूँ शिखायै वषट्। ॐ ह्रैं कवचाय हुम्। ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रः अस्त्राय फट्। ॐ लं पृथिव्यात्मना गन्धं कल्पयामि। ॐ हं आकाशात्मना पुष्पं कल्पयामि। ॐ यं वाय्वात्मना धूपं कल्पयामि। ॐ रं अग्न्यात्मना दीपं कल्पयामि। ॐ वं अमृतात्मना नैवेद्यं कल्पयामि। ॐ पं परमात्पना सर्वोपचार पूजां समर्पयामि। ॐ ह्रीं भुवनेश्वर्यै नमः सुवर्णपुष्पं समर्पयामि। ॐ ह्रीं भुवनेश्वर्यै नमः प्रसन्नार्ध्यं समर्पयामि। वरांकुशौ पाशमभीतिमुद्रां करैर्वहन्तीं कमलासनस्थां। बालार्क कोटिप्रतिमां त्रिनेत्रां भजेहमाद्यां जगदीश्वरीं तां॥ पुष्पांजलि

समर्पयामि। नमस्करोमि।

पद्ममुद्रां पदर्श्य, कलशं सङ्गृह्य, अस्त्रेण संक्षाल्य कवचेन त्रिगुणीकृत सूत्रेण वेष्टयित्वा मूलमन्त्रेण अष्टागन्धेन लेपयित्वा प्रणवेन धूपयित्वा मूलेन पीठे अधोमुखं न्यसेत्। *(अनुष्ठान पद्धति)*

पद्ममुद्रा (कमलाकार) को दिखाकर, प्रधान एवं शेष कलशों को हाथ में लेवें। **ॐ अस्त्राय फट्** कहते हुए तीन धागों वाले सूत्र से उसे लपेटना चाहिये। ॐनमो नारायणाय इस मूल मन्त्र से अष्टगंध से लेपन करें। ॐकहते हुए धूप दिखायें। ॐनमो नारायणाय कहते हुए उस कलश को पीठ पर उल्टा करके रखें।

शोषण दाहन प्लावन काठिन्य सुषरीकरणानि कृत्वा—यं बीजमन्त्र को षोडश बार जपकर शोषण की कल्पना करें। **रं** बीजमन्त्र से षोषश (१६) बार जपकर दाहन की कल्पना करें। **रं** बीजमन्त्र से षोडश बार जपकर प्लावन की कल्पना करें। **लं** बीजमन्त्र से षोडश बार जपकर काठिन्य की कल्पना करें। **हं** बीजमन्त्र से षौडश बार जपकर सुषरीकरण की कल्पना करें। (सुषरीकरण यानि ब्रह्माण्ड के बीज में जगह बनाना।) इन सभी क्रियाओं को कुशों से कलशों का छूकर करना चाहिये। **हौं नमः पराय शान्त्यतीतात्मने नमः।**

इति दर्भ विन्यासं

जहाँ प्रधान कलश रखना है वहाँ उपरोक्त मन्त्र कहकर दो कुशा बिछायें। अन्य **कलशों के पास भी कुश बिछायें। ह्यौं नमः पराय शान्त्यात्मने नमः।** इति अष्टगंध प्रोक्षणं कहकर कुशों पर अष्टगंध का प्रोक्षण करें। ह्रूं नमः पराय विद्यात्मने नमः इति अक्षतं विकीर्य कहकर कुशों पर अक्षात डालें। ॐनमो नारायणाय कहकर कलशों की पुष्पाक्षतों से पूजन करें। ॐह्रीं नमः पराय प्रतिष्ठात्मने नमः। कहकर कलशों को उठायें। **ॐ ह्लां नमः पराय निवृत्यात्मने नमः** ॐनमो नारायणाय कहकर कलशों को पीठ पर कुशों के ऊपर रखें। **प्रणवेन घट मुखं प्रोक्ष्य**

ॐकारसे कलशों के मुख को प्रोक्षण करें। **कुम्भस्य मूले दश वह्निकलाः न्यस्य ऋचा च व्यापयेत्।** ॐ ह्रीं यं धूम्रार्चिषे नमः। ॐ ह्रीं रं ऊष्मायै नमः। ॐ ह्रीं लं ज्वलिन्यै नमः। ॐ ह्रीं वं ज्वालिन्यै नमः। ॐ ह्रीं शं विष्फुलिंगिन्यै नमः। ॐ ह्रीं षं सुश्रियै नमः। ॐ ह्रीं सं सुरूपायै नमः। ॐ ह्रीं हं कपिलायै नमः। ॐ ह्रीं ळं हव्यवाहायै नमः। ॐ ह्रीं क्षं कव्यवाहायै नमः। इन्हे कहते हुए कुशों से कुभ के चारों ओर छूकर वह्निकलाओं की कलश के मूल में स्थापना की कल्पना करें।

ॐ देवानां पत्नींरुशतीरंवन्तु नः प्रावंन्तु नस्तुजये वाजंसातये।
याः पार्थिवासो या अपामपिं व्रते ता नों देवीः सुहवाः शर्मं यच्छन्तु ॥ *(अथर्ववेद ७.४९.१)*

कहते हुए कलश के मूल को कुशा से छूऐं। **ॐ मं वह्निमण्डलाय दश धर्मप्रद कलात्मने नमः।** कहकर समष्टि व्यापन यानि कुशों से कलश के चारों ओर छूना चाहिये। कुम्भस्य मध्ये द्वादशदफं पद्मं संकल्प्य प्रागादि दलेषु सूर्यकलाः न्यस्य तत् ऋचा समष्ट्या च व्यापयेत्।

कलश के बीच में द्वादशदल पद्म की कल्पना कर पूर्व दिशा से प्रारम्भकर द्वादश दलों में १२ सूर्य कलाओं को रखने की कल्पना करें। ॐ ह्रीं कं भं तपिन्यै नमः। ॐ ह्रीं खं बं तापिन्यै नमः। ॐ ह्रीं गं फं धूम्रायै नमः। ॐ ह्रीं घं पं मरीच्यै नमः। ॐ ह्रीं ङं नं ज्वालिन्यै नमः। ॐ ह्रीं चं धं रुच्यै नमः। ॐ ह्रीं छं दं सुषुम्नायै नमः। ॐ ह्रीं जं थं भोगदायै नमः। ॐ ह्रीं झं तं विश्वायै नमः। ॐ ह्रीं ञं णं बोधिन्यै नमः। ॐ ह्रीं टं ढं धरिण्यै नमः। ॐ ह्रीं ठं डं क्षमायै नमः।

ॐ तत्संवितुर्वरेण्यं भर्गोंदेवस्यं धीमहि। धियो यो नंः प्रचोदयांत्। *(ऋग्वेद ३.६२.१०)*

कहते हुए कलशों के मध्य में कुशा से छुऐं।

ॐ अं सूर्यमण्डलाय वसुप्रद कलात्मने नमः।

कहकर समष्टि व्यापन यानि कुशों से कलश के चारों ओर छूना चाहिये।

कुम्भस्य मुखे षोडशदलं पद्म संकल्प्य प्रागादि दलेषु षोडश सोमकलाः न्यस्य तत् ऋचा समष्ट्या व्यापयेत्। *(अनुष्ठान पद्धति)*

कुम्भो के मुख में षोडशदल पद्म की कल्पना करें पूर्वादि क्रम से दलों में सोलह सोमकलाओं को रखने की कल्पना करें। फिर ऋक् एवं समष्टि से व्याप्त करें। ॐ ह्रीं अं अमृतायै नमः। ॐ ह्रीं आं मानदायै न मः। ॐ ह्रीं इं पूषायै नमः। ॐ ह्रीं ईं तुष्टयै नमः। ॐ ह्रीं ऊँ रत्यै नमः। ॐ ह्रीं ऋं धृत्यै नमः। ॐ ह्रीं ॠं शशिन्यै नमः। ॐ ह्रीं लृं चन्द्रिकायै नमः। ॐ ह्रीं लृं कान्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ऐं ज्योत्स्नायै नमः। ॐ ह्रीं ऐं श्रियै नमः। ॐ ह्रीं ओं प्रीत्यै नमः। ॐ ह्रीं औं अङ्गदायै नमः। ॐ ह्रीं अं पूर्णायै नमः। ॐ ह्रीं अः पूर्णामृतायै नमः।

ॐ त्र्यँबकं यजामहे सुगन्धिं पुंष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिंव बन्धंनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतांत्॥ *(ऋग्वेद ७.५९.१२)*

कहते हुए कलशों के मुख में कुश से छूऐं। **ॐ उं सोममण्डलाय षोडश का मप्रद कलात्मने नमः।** कहकर समष्टि व्यापन यानि कुशों से कलश के चारों ओर छूना चाहिये। **ॐ ह्रीं हं सः इति मन्त्रेण कुम्भावाहनं कृत्वा।** इस मन्त्र से कुम्भा का आवाहन कर षडंग न्यास करें। ॐ ह्रां हृदयाय नमः ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रूं शिखायै वषट्। ॐ ह्रैं कवचाय हुम्। ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ह्रः अस्त्राय फट्। कहकर कलश को न्यास करें। **कुम्भस्य मुखे**—कुम्भ के मुख में पाञ्च कलाओं का आवाहन करें। ॐ ह्रीं शं पीतायै नमः। ॐ ह्रीं सं श्वेतायै नमः। ॐ ह्रीं हं अरुणायै नमः। ॐ ह्रीं ळं असितायै नमः। ॐ ह्रीं क्षं नन्तायै नमः।

ॐ तत्संवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्यं धीमहि। धियो यो नंः प्रचोदयांत्॥ *(ऋग्वेद ३.६२.१०)*

कलशों के मुख में कुशों से छूकर बोलें।

कुम्भमुद्रां प्रदर्श्य कुम्भं जगदण्डं ध्यात्वा पञ्चविंशति दर्भैः कुर्चं बध्वा तस्य शोषण, दाहन प्लावनानि कृत्वा अष्टगंधं विलिप्य अष्टवारं प्रणवं संजप्य कूर्च कुम्भे न्यस्य प्रणवेन संपूज्य नवरत्नादि द्रव्यं ॐ ह्रीं हं सः सोहं स्वाहा इति कुम्भे न्यस्य संपूज्य मानस पूरणं कुर्यात्। *(अनुष्ठान पद्धति)*

कुम्भमुद्रा (पद्मपुद्रा) को दिखाकर कुम्भ को ब्रह्माण्ड मानें। २५ कुशाग्रों से कूर्च बनायें।

उस कूर्च को— यं बीच मन्त्र को सोलह बार जप करते हुए शोषण की कल्पना करें। रं बीज मन्त्र से १६ बार जप करते हुए दाहन की कल्पना करें। वं बीज मन्त्र से १६ बार जपकर प्लावन की कल्पना करें। कूर्च को कुम्भ में डालें फिर ॐकार से पूजन करें। नवरत्नादियों को "ॐह्री हं सः सोहं स्वाहा" कहकर उन्हें कुम्भ में डालकर पूजा करें। फिर मानस पूरण करें। (मन में-कलश भरने की कल्पना करें।)

करे अमृत बीजं विलिख्य तेन करेण कुम्भ मुखमाच्छाद्य कूर्चमूलस्थित चैतन्यं द्वादशान्त पद्म स्थित परमात्मनि विलाप्य प्रणवं शिरोमन्त्रं च उक्त्वा द्वादशान्त पद्म स्थित परमात्मनः परचैतन्यरूपं अमृतजलं कुम्भे पातयेत्। *(अनुष्ठान पद्धति)*

दाहिने हाथ में वं बीज मन्त्र को लिखकर उसी दाहिने हाथ से कलशों के मुख को ढक देवें। कूर्च के मूल में स्थित चैतन्य को द्वादशान्त पद्म (ब्रह्मरन्ध्र) में स्थित पामात्मा में मिलाने की कल्पना करें। ॐशिरसे स्वाहा कहकर-(प्रणव-ॐशिरोमन्त्र-शिरसे स्वाहा) द्वादशान्तपद्मस्थित परमात्मा के परचैतन्य रूप अमृत जल को कुम्भ में गिराने की कल्पना करें।

यत् किंचित् पत्रेण कुम्भमुखमाच्छाद्य अन्यस्मिन् पात्रे स्वस्तिकोपरि गालितजलं उत्तरभगे न्यस्य जलस्य शोषण दाहन प्लावनानि कृत्वा पीठं संपूज्य तत्र वरुणामावाह्य संपूज्य मूलेन च आवाह्य सकलीकृत्य संपूज्य नैवेद्य काले अर्घ्यं दत्वा पुष्पांजलिं कृत्वा पञ्चवारुणां प्रजप्य तज्जलं शंखे आदाय अष्टगंधं विलिप्य पञ्चमूर्ति च संकल्प्य मूलेन स्वहृदयात् आवाह्य किंचित् संपूज्यतज्जलं कुम्भे निषिच्य शेष जलैः कुम्भं अर्धोत्तरं परिपूर्य लिपि पंकजं पूजयेत्। *(अनुष्ठान पद्धति)*

यज्ञीय वृक्ष के पत्ते से कलशों के मुख को ढकें ताकि कलश में विद्यमान अमृत बाहर न जा सकें। उत्तर दिशा में एक स्वस्तिक मण्डल बनायें। उस पर एक ताम्र पात्र रखें। उसका मुख वस्त्र से बांधें। उसमें तीर्थ जल भरें।

ताम्र पात्र मे स्थत जल का शोषरा दाहन प्लावन करें। यं बीजमन्त्र को १६ बार जपकर शोषरा की कल्पना करें। रं बीजमन्त्र को १६ बार जप कर दाहन की कल्पना करें। वं बीज मन्त्र को १६ बार जपकर प्लावन की कल्पना करें। पं पद्माय नमः कहकर ताम्रपात्र के पीठ का पूजन करें। ॐवं वरुणाय नमः कहकर वरुरा देव का ताम्रपात्र में आवाहन करें। ॐनमो नारायणाय कहकर प्रधान देवता विष्णु का मूल मन्त्र से आवाहन करें। सकली कररा कर ॐहृदयाय नमः। ॐशिरसे स्वाहा। ॐशिखायैं वषट्। ॐकवचाय हुम्। ॐनेत्रत्रयाय वौषट्। ॐअस्त्राय फट्। पूजन करें। लं पृथिव्यात्मना गंधं कल्पयामि। हं आकाशात्मना पुष्पं कल्पयामि। यं वाय्वात्मना धूपं कल्पयामि। रं अग्न्यात्मना दीपं कल्पयामि। वं अमृतात्मना नैवेद्य काले अर्ध्यं समर्पयामि। पं परमात्मना सर्वोपचार पूजां कल्पयामि। ॐवं वरुणाय नमः। ॐनमो नारायणाय पुष्पांजलिं समर्पयामि। कहकर पुष्पांजलि देवें। पात्र को छूकर मन्त्रों को (वारुरा) पढें।

ॐ अप्सु तें राजन् वरुरा गृहो हिंरणययों मिथः। ततों धृतव्रंतो राजा सर्वा धामांनि मुञ्चतु॥ *(अथर्ववेद ७.८३.१)*
ॐ प्रास्मत् पाशांन् वरुरा मुञ्च सर्वान् य उंत्तमा अंधमा वांरुणा ये।
दुष्वन्यं दुरितं नि ष्वास्मदथं गच्छेम सुकृतस्यं लोकम्॥ *(अथर्ववेद ७.८३.४)*

इमा आपः शिवाः सन्तु शुभाः शुद्धाश्च निर्मलाः। पावन नाः शीलताश्चैव पूताः सूर्यस्य रश्मिमिः। इससे पात्र जल शुद्ध हुआ। उस पात्र जल को शंख में भर लेवें। अष्टगंध डालें। पं पद्माय नमः। कहकर पद्मका पूजन करें। ॐनमो नारायणाय। कहकर विष्णु मूर्ति का पूजन करें। ॐनमो नारायणाय। कहकर अपने हृदय में स्थित प्रधान देवता को जल में स्थापित करें। ॐपं परमात्मने नमः। सर्वोपचार पूजां कल्पयामि। कहकर शंख जल को कलशों में भरें फिर कलशों में मन्त्रोंच्चार पूर्वक जल भरें।

ॐ आपो हि ष्ठा मंयोभुवस्ता नं ऊर्जे दंधातन। मुहे रणांय चक्षंसे॥ *(अथर्ववेद १.५.१)*

ॐ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः॥ (अथर्ववेद १.५.२)

ॐ तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः॥ (अथर्ववेद १.५.३)

ॐ इमा आपः प्र भरम्ययक्ष्मा यक्ष्मनाशनीः। गृहानुप प्र सीदाम्यमृतेन सहाग्निना॥ (अथर्ववेद ३.१२.६)

कलशों में जल भरने के बाद लिपि पंकज यानि अक्षरों से बने कमल की कल्पना कर कलश का पूजन करें। ॐक्षं नमः पराय मूर्त्यात्मने नमः। ॐळं नमः पराय शिफात्मने नमः। ॐहं नमः पराय नाळात्मने नमः। ॐसं नमः पराय सर आत्मने नमः। ॐषं नमः पराय कराटकात्मने नमः। ॐशं नमः पराय रंध्रात्मने नमः। ॐवं नमः पराय धर्माय आग्नेय ग्रन्थ्यात्मने नमः। ॐलं नमः पराय ज्ञानाय नैऋत्य ग्रन्थ्यात्मने नमः। ॐरं नमः पराय वैराग्याय वायव्य ग्रन्थ्यात्मने नमः। ॐयं नमः पराय ऐश्वर्याय ऐश ग्रन्थ्यात्मने नमः। ॐॠं नमः पराय अज्ञानाय दक्षिण ग्रन्थ्यात्मने नमः। ॐलृं नमः पराय अवैराग्याय वारुण ग्रन्थ्यात्मने नमः। ॐलॄं नमः पराय अनैश्वर्याय सौम्य ग्रन्थ्यात्मने नमः। ॐकं खं गं नमः पराय पूर्वपत्रात्मने नमः। ॐघं ङं च नमः पराय आग्नेय पत्रात्मने नमः। ॐछं जं झं नमः पराय याम्य पत्रात्मने नमः। ॐञां टं ठं नमः पराय वारुण पत्रात्मने नमः। ॐडं ढं णं नमः पराय वारुण पत्रात्मने नमः। ॐतं थं दं नमः पराय वायव्य पत्रात्मने नमः। ॐफं बं भं नमः पराय ऐश पत्रात्मने नमः। ॐमं नमः पराय कतिर्णकात्मने नमः। ॐअः आं नमः पराय पूर्वकेसरात्मने नमः। ॐइः ईं नमः पराय आग्नेय केसरात्मने नमः। ॐउः ऊं नमः पराय याम्य केसरात्मने नमः। ॐॠं नमः पराय नैऋतय केसरात्मने नमः। ॐलृः लृं नमः पराय वारुण केसरात्मने नमः। ॐऐः ऐं नमः पराय वायव्य केसरात्मने नमः। ॐओः औं नमः पराय सौम्य केसरात्मने नमः। ॐअः अं नमः पराय ऐश केसरात्मने नमः। ॐअं नमः पराय आत्मतत्वात्मने नमः। ॐउं नमः पराय विद्यातत्वात्मने नमः। ॐमं नमः पराय विद्यातत्वात्मने नमः। ॐसं नमः पराय बिन्द्वात्मने नमः। ॐहं नमः पराय नादात्मने नमः। ॐह्रींनमः पराय शक्त्यात्मने नमः। ॐनमः पराय शान्त्यात्मने नमः। (अनुष्ठान पद्धति)

इति लिपि पंकजम्

वैदिक परम्परा में पिपियों का अत्यधिक महत्व है। लिपियों में ही सभी मन्त्र एवं सभी वेद है। उनमें सभी देवता भी विद्यमान है। कलश में लिपि पद्म की कल्पना कर उसमें सभी मन्त्रों का, सभी वेदों का एवं सभी देवताओं का पूजन होता है। लिपि का अत्यधिक महत्व होने के कारण पिपिन्यास विस्तार से किया जाता है। बड़े यज्ञों में इनका करना अनिवार्य है। पहले दिन ये सभी करते हैं। दूसरे दिन से पूजन कुछ कम होता है। बड़े यज्ञों में कलश पूजन के लिए एक पंरिडत अलग रहते हैं। अतः शेष कार्य में विलम्ब नहीं होता है। अभ्याय हो जाने पर इन सभी को करने में अधिक समय नहीं लगता है।

कलशे प्रधान देवता आवाहन—ॐनमो नारायणाय। श्री विष्णु मूर्तये नमः। ॐभूः विष्णुमूर्तिमावाहयामि। ॐभुवः विष्णुमूर्तिमावाहयामि। ॐस्वः विष्णुमूर्तिमावाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः विष्णुमूर्तिमावाहयामि। आवाहितो भव। संस्थापितो भव। सन्निहितो भव। सन्निरुद्धो भव। अवगिठतो भव। अमृतीकृतो भव। व्याप्तो भव। सुप्रसन्नो भव। इतना कहकर विविभिन्न मुद्राओं से प्रधान देवता का आवाहन करें। **मूलाक्षराणि न्यस्य।** मूलक्षरों से न्यास करें। ॐऊं नमः। ॐमोनमः। ॐना नमः। ॐरा नमः। ॐय नमः। ॐणां नमः। ॐयं नमः। **ॐ नमो नारायणाय।** कहकर पुष्पों से पूजन करें। ॐनमो नारायणाय। इदं प्रसन्नार्घ्यं समर्पयामि। कहकर प्रसन्नार्घ्य जल छोडें। ॐनमो नारायणाय। पुष्पांजलिं समर्पयामि। कहकर पुष्पांजलि देवें।

कलशे पञ्चामृत क्षेपः—कलश में पञ्चामृत डाले।

ॐ सं सिंञ्चामि गवाँ क्षीरं समाज्येंन बलं रसंम्।
संसिक्ता अस्माकँ वीरा ध्रुवा गावो मयि गोपंतौ॥ *(अथर्ववेद २.२६.४)* कहकर कलशों में दूध डालें।

ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वंस्यवाजिनंः।
सुरभि नो मुखां करत्प्र ण आयूँषि तारिषत्॥ *(अथर्ववेद २०.१३७.३)* कहकर दहि डालें।

ॐ घृतं तें अग्ने दिव्ये सधस्थें घृतेन त्वां मनुरद्या समिंन्धे।

घृतं तें देवीर्नप्त्यं१ आ वंहन्तु घृतं तुभ्यं दुहतां गावों अग्ने ॥ (अथर्ववेद ७.८२.६) कहकर **घी** डालें।

ॐ मधुंमान् भवति मधुंमदस्याहार्यं भवति।
मधुंमतो लोकान् जंयति य एवं वेदं ॥ (अथर्ववेद ६.१.२३) कहकर **शहद** डालें।

ॐ स्वादोःस्वादीयः स्वादुना सृजा समदः सु मधु मधुनाभि योधीः ॥ (अथर्ववेद ५.२.३) कहकर **शक्कर** डालें।

कलशे पञ्चगव्य क्षेपण—

ॐ तत्संवितुर्व्वरेण्यम्भर्गोदेवस्य धीमहि। धियोयोनः प्रचोदयात्। (शुक्ल यजुर्वेद ३.३५) कहकर कलशों में **गोमूत्र** डालें।

ॐ गंधद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्) कहकर **गोमय** डालें।

ॐ सं सिंञ्चामि गवां क्षीरं समाज्येन बलं रसम्।
संसिक्ता अस्माकं वीरा ध्रुवा गावो मयि गोपतौ ॥ (अथर्ववेद २.२६.४) कहकर कलशों में **दूध** डालें।

ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्यवाजिनः।
सुरभि नो मुखा करत्प्र ण आयूंषि तारिषत्॥ (अथर्ववेद २०.१३७.३) कहकर **दहि** डालें।

ॐ घृतं तें अग्ने दिव्ये सधस्थे घृतेन त्वां मनुरद्या समिंन्धे।
घृतं तें देवीर्नप्त्यं१ आ वंहन्तु घृतं तुभ्यं दुहतां गावों अग्ने ॥ (अथर्ववेद ७.८२.६) कहकर **घी** डालें।

ॐ देवस्यं त्वा सवितुः प्रंसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् प्रसूत आ रंभे ॥ (अथर्ववेद १९.५१.२)

कहकर कुशोदक डालें।

कलशे ओषध क्षेपः—ॐ या बभ्रवो याश्च शुक्रा रोहिंणीरुत पृश्नयः।
असिंक्नीः कृष्णा ओषंधीः सर्वा अच्छावंदमसि ॥ (अथर्ववेद ८.७.१) कहकर – दूर्वा **तुलसी, बिल्वपत्र, आदि** डालें।
ॐ गंधद्वारां दुंराधर्षां नित्यपुंष्टां करीषिणींम्। ईश्वरीं सर्वंभूतानां तामिहोपंह्वये श्रियम् ॥ (पञ्चम परिशिष्टम्)
कहकर **पवित्र मृत्तिका** (मिट्टी) **गन्ध, इलायची**, लौंग, पच्चकर्पूर, केसर आदि सुगंध द्रव्य डालें।

कलशे कलावाहन—कलश में प्रधान देवता विष्णु कलावाहन करें। प्रधान देवता के ९६ कलायें हैं। इन कलाओं को शंख में आवाहन करना चाहिये।

शंख प्रक्षाल्य शंखे जलमापूर्य हृदय मन्त्रेण अष्टगंधं विलोड्य प्रणवाक्षरैः प्रणवेन च संपूज्य तत्र कलाः पृथक् आवाहयेत्। पहले शंख को धो लेवें, शंख में जल भरें, **ॐ हृदयाय नमः** कहकर अष्टगंध को जल में मिलाकर अं नमः। उं नमः। मं नमः। ॐनमः। कहकर शंख में स्थित जल का पूजन करें। फिर उस जल में कलाओं का अलग-अलग आवाहन करें।

ॐ ह्रीं अां अमृतायै कलाशक्त्यै नमः। अमृतकला आवाहयामि। ॐ ह्रीं आं मानदायै कलाशक्त्यै नमः। मानदा कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं इं पूषायै कलाशक्त्यै नमः। पूषा कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं ई तुष्ट्यै कलायै कलाशक्त्यै नमः। तुष्टिकला आवाहयामि। ॐ ह्रीं उं पुष्ट्यै कलाशक्त्यै नमः। पुष्टिकला आवाहयामि। ॐ ह्रीं ऊं रत्यै कलाशक्त्यै नमः। रतिकला आवाहयामि। ॐ ह्रीं ऋं धृत्यै कलाशक्त्यै नमः। धृतिकला आवाहयामि। ॐ ह्रीं ॠं शशिन्यै कलाशक्त्यै नमः। शशिनी कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं लृं चन्द्रिकायै कलाशक्त्यै नमः। चन्द्रिका कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं ॡं कान्त्यै कलाशक्त्यै नमः। कान्तिकला आवाहयामि। ॐ ह्रीं ऐं ज्योत्स्नायै कलाशक्त्यै नमः। ज्योतस्ना कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं ऐं श्रियै कलाशक्त्यै नमः। श्रीकला आवाहयामि। ॐ ह्रीं ओं प्रीत्यै

कलाशक्त्यै नमः। प्रीतिकला आवाहयामि। ॐ ह्रीं हौं अङ्गदायै कलाशक्त्यै नमः। अङ्गदा कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं अं पूर्णायै कलाशक्त्यै नमः पूर्णा कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं अः पूर्णामृतायै कलाशक्त्यै नमः पूर्णामृत कला आवाहयामि *(अनुष्ठान पद्धति)*। यहाँ तक सोमकलाओं का आवाहन हुआ।

ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥ *(ऋग्वेद ७.५९.१२)*

उं सोममण्डलाय षोडश कामप्रद कलात्मने नमः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हंसः सोम कलानां प्राण इह प्राणः। ॐ आं ह्रीं क्रों य ल व श ष स हों सं हंसः सोम कलानां जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं संः सोम कलानां सर्वेन्द्रियाणि अमनः चक्षुश्रोत्र घ्राणप्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। इति प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा।

यहाँ पर सोमकलाओं की प्राणप्रतिष्ठा हुई। ॐ ह्रीं कं भं तपिन्यै कलाशक्त्यै नमः। तपिनी कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं खं बं तापिन्यै कलाशक्त्यै नमः। तापिनी कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं गं फं धूम्रायै कलाशक्त्यैनमः। धूम्रा कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं घं पं मरीच्यै कलाशक्त्यै नमः। मरीचिकला आवाहयामि। ॐ ह्रीं ङ. नं ज्वालिन्यै कलाशक्त्यै नमः। ज्वालिनी कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं चं धं रुच्यै कलाशक्त्यै नमः। रुचि कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं छं दं सुषुम्नायै कलाशक्त्यै नमः। सुषुम्ना कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं जं थं भोगदायै कलाशक्त्यै नमः। भोगदा कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं झं तं विश्वायै कलाशक्त्यै नमः। विश्वा कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं ञं णं बोधिन्यै कलाशक्त्यै नमः बोधिनी कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं टं ढं धारिण्यै कलाशक्त्यै नमः। धारिणी कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं ठं डं क्षमायै कलाशक्त्यै नमः। क्षमा कला आवाहयामि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥ *(ऋग्वेद ३.६२.१०)*

ॐ अं **सूर्यमण्डलाय** द्वादश वसुप्रद कलात्मने नमः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स होसं हंसः सूर्य कलानां प्राण इह प्राणः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हो सं हं सः सूर्यकलानां जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हंसः सूर्यकलानां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुश्रोत्र घ्राणप्राणाः

इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा इति प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा यहाँ पर १२ सूर्य कलाओं का आवाहन प्राणप्रतिष्ठा संपन्न हुआ। ॐ ह्रीं यं धूम्रार्चिषे कलाशक्त्यै नमः। धूम्रर्चिः कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं रं ऊष्मायै कलाशक्त्यै नमः। ऊष्माकला आवाहयामि। ॐ ह्रीं लं ज्वलिन्यै कलाशक्त्यै नमः। ज्वलिनी कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं वं ज्वालिन्यै कलाशक्त्यै नमः। ज्वालिनी कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं शं विष्फुलिंगिन्यै कलाशक्त्यै नमः। विष्फुलिङ्गिनी कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं षं सुश्रियै कलाशक्त्यै नमः। सुश्रियै कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं सं सुरूपायै कलाशक्त्यै नमः सुरूपा कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं हं कपिलायै कलाशक्त्यै नमः। कपिला कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं ळं हव्यवाहायै कलाशक्त्यै नमः। कव्यावाह कला आवाहयामि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

ॐ देवानां पत्नीरुशतीरवन्तु नः प्रावन्तु नस्तुजये वाजसातये।
याः पार्थिवासो या अपामपि व्रते ता नो देवीः सुहवाः शर्म यच्छन्तु ॥ *(अथर्ववेद ७.४९.१)*

ॐ मं वह्निमण्डलाय दश धर्मप्रद कलात्मने नमः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हंसः वह्नि कलानां प्राणा इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः वह्नि कलानां जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों च र ल व श ष स हों सं हं सः वह्निकलानां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्म मनः चक्षुश्रोत्रध्राणप्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। इति प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा।

यहाँ पर १० वह्नि कलाओं का आवाहन प्राणप्रतिष्ठा संपन्न हुआ। ॐ ह्रीं अं निवृत्यै कलाशक्त्यै नमः। निवृत्ति कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं आं प्रतिष्ठायै कलाशक्त्यै नमः। प्रतिष्ठा कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं इं विद्यायै कलाशक्त्यै नमः। विद्या कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं ई शान्त्यै कलाशक्त्यै नमः। शन्ति कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं उं इन्धिकायै कलाशक्त्यै नमः। इं धिका कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं ऊं दीपिकायै कलाशक्त्यै नमः। दीपिका कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं ऋं रेचिकायै कलाशक्त्यै नमः। मोचिका कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं लृं परायै कलाशक्त्यै नमः। परा कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं लृं सूक्ष्मायै कलाशक्त्यै नमः। सूक्ष्मा कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं ऐं सूक्ष्मामृतायै कलाशक्त्यै नमः। सूक्ष्मामृता कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं ऐं ज्ञानमृतायै कलाशक्त्यै नमः। ज्ञानामृता कला

आवाहयामि। ॐ ह्रीं ओं आप्यायिन्यै कलाशक्त्यै नमः। आप्यायिनी कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं औं व्यापिन्यै कलाशक्त्यै नमः। व्यापिनी कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं अं व्योमरूपायै कलाशक्त्यै नमः। व्योमरूपा कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं अः अनन्तायै कलाशक्त्यै नमः। अनन्ता कला आवाहयामि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

ॐ विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा॑रूपाणि॑ पिंशतु। आसिं॑चतुप्र॒जाप॑तिर्धाता गर्भं॑ दधातु ते॥ *(अथर्ववेद ५.५.२५.५)*

ॐसदाशिवाय नमः। ॐआकाशात्मने नमः। ॐशब्द तन्मात्रात्मने नमः। ॐश्रोत्रात्मने नमः। ॐवाग् वचनात्मने नमः। ॐअनुग्रहात्मने नमः। ॐशान्त्यतीतात्मने नमः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः नादकलानां प्राण इह प्राणः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः नादकलानां जीव इह स्थितः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः नादकलानां सर्वेंद्रियाणि वाङ्मनः चक्षुश्रोत्रघ्राणप्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। इति प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा।

यहाँ पर १६ **नादकलाओं** का आवाहन प्राण प्रतिष्ठा (ॐकार की ध्वनि) संपन्न हुआ। ॐ ह्रीं षं पीतायै कलाशक्त्यै नमः।पीताकला आवाहयामि। ॐ ह्रीं सं श्वेतायै कलाशक्त्यै नमः। श्वेता कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं हं अरुणायै कलाशक्त्यै नमः। अरुणा कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं ळं असितायै कलाशक्त्यै नमः। असिता कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं क्षं अनन्तायै कलाशक्त्यै नमः। अनंता कला आवाहयामि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

ॐ तत्स॑वि॒तुर्वरे॑ण्यं॒ भर्गो॑ दे॒वस्य॑ धीमहि। धियो॒ यो नः॑ प्रचो॒दया॑त्॥ *(ऋग्वेद ३.६२.१०)*

ॐईश्वराय नमः। ॐवाय्वात्मने नमः। ॐस्पर्शतन्मात्रात्मने नमः। ॐत्वगात्मने नमः। ॐपाण्यादानात्मने नमः। ॐतिरोभवात्मने नमः। ॐशान्त्यात्मने नमः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हंस बिन्दुकलानां प्राणः इह प्राणः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हंसः बिन्दुकलानां जीव इह स्थितः। ॐआं ह्रीं क्रां च र ल व श ष स हों सं हं सः बिन्दु कलानां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुश्रोत्रघ्राणप्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। *(अनुष्ठान पद्धति)*

इति प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा

यहां पर ५ विन्दुकलाओं का आवाहन प्राणप्रतिष्ठा संपन्न हुआ। ये बिन्दुकलायें ॐकार के वर्ण (रंग) है। ॐ ह्रीं पं तीक्ष्णायै कलाशक्त्यै नमः। तीक्ष्णा कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं फं रौद्र्यै कलाशक्त्यै नमः। रौद्री कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं बं भयायै लाशक्त्यै नमः। भया कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं भं निद्रायै कलाशक्त्यै नमः। निद्रा कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं मं तन्द्रयै कलाशक्त्यै नमः। तन्द्री कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं यं क्षुधायै कलाशक्त्यै नमः। क्षुधा कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं रं क्रोधिन्यै कलाशक्त्यै नमः। क्रोधिनी कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं लं क्रियायै कलाशक्त्यै नमः। क्रिया कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं वं उत्कार्यै कलाशक्त्यै नमः। उत्कारी कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं शं मृत्युरूपायै कलाशक्त्यै नमः। मृत्युरूपा कला आवाहयामि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिं पुंष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतांत्॥ *(ऋग्वेद ७.५६.१२)*

ॐ रुद्राय नमः। ॐ अग्न्यात्मने नमः। ॐ रूप तन्मात्रात्मने नमः। ॐ चक्षुरात्मने नमः। ॐ पाद गमनात्मने नमः। ॐ संहारात्मने नमः। ॐ विद्यात्मने नमः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष सं हो सं हं सः मकार कलानां प्राणा इय प्राणाः। ॐ अ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हंसः मकार मलानां जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हंसः मकार कलानां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुश्रोत्रघ्राणप्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिन्तु स्वाहा।

कहकर रुद्र कलाओं (मकार कला) का आवाहन प्रतिष्ठा करें। ॐ ह्रीं टं जरायै कलाशक्त्यै नमः। जरा कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं ठं पालिन्यै कलाशक्त्यै नमः। पालिनी कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं डं शान्त्यै कलाशक्त्यै नमः। शांति कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं ढं ऐश्वर्यै कलाशक्त्यै नमः। ऐश्वरी कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं णं रत्यै कलाशक्त्यै नमः। रति कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं तं कामिकायै कलाशक्त्यै नमः। वरदाकला आवाहयामि। ॐ ह्रीं थं वरदायै कलाशक्त्यै नमः वरदाकला आवाहयामि। ॐ ह्रीं दं ह्लादिन्यै कलाशक्त्यै नमः। ह्लादिनी कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं धं प्रीत्यै कलाशक्त्यै नमः। प्रीतिकला आवाहयामि। ॐ ह्रीं नं दीर्घायै कलाशक्त्यै नमः। दीर्घाकला आवाहयामि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

ॐ प्र तद् विष्णुं स्तवते वीर्याणि मृगो न भीमः कुंचरो गिरिष्ठाः। परावत आ जंगम्यात् परस्याः॥ *(अथर्ववेद ७.२६.२)*

ॐ विष्णवे नमः। ॐ अबात्मने नमः। ॐ रसतन्मात्रात्मने नमः। ॐ जिह्वात्मने नमः। ॐ पायुविसर्गात्मने नमः। ॐ स्थित्यात्मने नमः। ॐ प्रतिष्ठात्मने नमः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हंसः उकार कलानां प्राण इह प्राणः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हंसः उकार कलानां जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हंसः उकार कलानां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुश्रोत्रघ्राण प्राणः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। कहकर विष्णु कला (उकार कला) का आवाहन प्रतिष्ठा करें। ॐ ह्रीं कं सृष्ट्यै कलाशक्त्यै नमः। सृष्टिकला आवाहयामि। ॐ ह्रीं खं ऋध्यै कलाशक्त्यै नमः। ऋद्धिकला आवाहयामि। ॐ ह्रीं गं स्मृत्यै कलाशक्त्यै नमः। स्मृतिकला आवाहयाम। ॐ ह्रीं घं मेधायै कलाशक्त्यै नमः। मेधाकला आवाहयामि। ॐ ह्रीं ङ कान्त्यै कलाशक्त्यै नमः। कान्ति कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं चं लक्ष्म्यै कलाशक्त्यै नमः। लक्ष्मीकला आवाहयामि। ॐ ह्रीं छं द्युत्यै कलाशक्त्यै नमः। द्युतिकला आवाहयामि। ॐ ह्रीं जं स्थिरायै कलाशक्त्यै नमः। स्थिराकला आवाहयामि। ॐ ह्रीं झं स्थित्यै कलाशक्त्यै नमः। स्थिति कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं ञं सिद्ध्यै कलाशक्त्यै नमः। सिद्धिकला आवाहयामि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

ॐ ब्रह्मं जज्ञानं प्रथमं पुरताद् वि सीमतः सुरुचों वेन आवः।
स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसंतश्च वि वः॥ *(अथर्ववेद ४.१.१)*

ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ पृथिव्यात्मने नमः। ॐ गंध तन्मात्रात्मने नमः। ॐ घ्राणात्मने नमः। ॐ उपस्थानन्दात्मने नमः। ॐ सृष्ट्यात्मने नमः। ॐ निवृत्यात्मने नमः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः अकार कलानां प्राण इह प्राणः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हो सं हं सः अकार कलानां जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः अकारकलानां सर्वेन्द्रियाणि वाड़मनः चक्षुःश्रोत्र घ्राण प्राणः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। कहकर ब्रह्म कला को (अकार कला) का आवाहन प्रतिष्ठा करें।

ॐ ह्रीं इच्छायै कलाशक्त्यै नमः। इच्छा कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं ज्ञानायै कलाशक्त्यै नमः। ज्ञान कला आवाहयामि। ॐ ह्रीं क्रियायै कलाशक्त्यै नमः। क्रिया

कला आवाहयामि। ॐशक्त्यात्मने नमः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः शक्ति कलानां जीव इह स्थितः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः शक्ति कलानां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुश्रोत्रघाण प्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा कहकर **शक्ति कलाओं** का अवाहन प्रतिष्ठा करें। ॐह्रीं चिदात्मने कलाशक्त्यै नमः। चित्कला आहयामि। ॐह्रीं सदात्मने कलाशक्त्यै नमः। सत् कला आवाहयामि। ॐह्रीं आनंदात्मने कलाशक्त्यै नमः। आनंद कला आवाहयामि। ॐशांत्यात्मने नमः। ॐआं ह्रीं क्रो य र ल व श ष स हों सं हं सः शान्ति कलानां जीव इह स्थितः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः शान्ति कलानां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुःश्रोत्र घ्राणप्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। कहकर **शान्ति कलाओं** का आवाहन प्रतिष्ठा करें। ॐनमो नारायणाय। महाविष्णुमावाहयामि। ॐलं पृथिव्यात्मना गन्धं कल्पयामि। ॐहं आकाशात्मना पुष्पं कल्पयामि। ॐयं वाय्वात्मना धूपं कल्पयामि। ॐरं अग्न्यात्मना दीपं कल्पयामि। ॐवं अमृतात्मना नैवेद्यं कल्पयामि। ॐपं परमात्मना सर्वोपचार पूजां समर्पयामि। **कहकर शंख जल का पूजन करें**। ॐनमो नारायणाय। कहते हुए शंख जल को प्रधान कलशा में डालें। यहाँ पर कला आवाहन संपन्न हुआ। *(अनुष्ठान पद्धति)*

प्रमाण—कलावाहन के तीन प्रकार है। १. सृष्टि क्रम। २. स्थिति क्रम। ३. संहार क्रम

सृष्टि क्रम—नूतन विग्रह प्रतिष्ठा में। इसमें क्रम से। १ सोम कला। २. सूर्य कला। ३. अग्निकला। ४. नाद कला। ५. बिंदु कला ६. मकार कला। ७. उकार कला। ८. अकार कला। ९. शक्ति कला। १०. शान्ति कला। इस क्रम से कलावाहन करें।

स्थिति क्रम—उत्सवादिकों में, कुम्भाभिषेक आदि निश्चत् कार्यक्रमों में (नित्य कार्यों में)। १. सूर्य कला। २. सोम कला। ३. अग्निकला। ४. बिंदु कला। ५. नाद कला। ६. मकार कला। ७. उकार कला। ८. अकार कला। ९. शक्ति कला। १०. शान्ति कला इस क्रम से कला वाहन करें।

संहार क्रम—प्रायश्चित्त, दोषपरिहारादिकों में, १. अग्निकला। २. सूर्य कला। ३. सोमकला। ४. अकार कला। ५. उकार कला। ६. मकार कला। ७. बिन्दु

कला। ८. नाद कला। ९. शक्ति कला। १०. शान्ति कला इस क्रम से कलावाहन करें।

तत्वकलावाहनम्—शंखं प्रक्षाल्य पूजितं जलं शंखे आदाय अष्ट गंधं विलोड्य किंचित् संपूज्य तत्र तत्व कलावाहनं कुर्यात्। शंख को धोकर ताम्र पात्र में स्थित जल से शंख को भरें, अष्टगंध मिलाएं फिर पुष्पाक्षत डालकर शंख में तत्वावाहन करें।

ॐमं नमः पराय पीवात्मने नमः। जीव तत्वमावहयामि। ॐभं नमः नमः पराय प्राणात्मने नमः। प्राणतत्वमावाहयामि। ॐबं नमः पराय बुध्यात्मने नमः। बुद्धितत्वमावाहयामि। ॐफं नमः पराय अहंकारात्मने नमः। अहंकार तत्वमावाहयामि। ॐपं नमः पराय शब्द तन्मात्रात्मने नमः। शब्दतन्मात्र तत्वं अवाहयामि। ॐधं नमः पराय स्पर्श तन्मात्रात्मने नमः। स्पर्श तन्मात्र तत्वमावाहयामि। ॐदं नमः पराय रूप तन्मात्रात्मने नमः। रूप तन्मात्र तत्वमावाहयामि। ॐथं नमः पराय रस तन्मात्रात्मने नमः। रस तन्मात्र तत्वमावाहयामि। ॐतं नमः पराय गंध तन्मात्रात्मने नमः। गंध तन्मात्र तत्वमावाहयामि। ॐणं नमः पराय श्रोत्रात्मने नमः। श्रोत्रतत्वमावाहयामि। ॐढं नमः पराय त्वगात्मने नमः। त्वक्तत्वमावाहयामि। ॐडं नमः पराय चक्षुरात्मने नमः चक्षतत्वमावाहयामि। ॐठं नमः पराय जिह्वात्मने नमः। जिह्वातत्वमावाहयामि। ॐटं नमः पराय घ्राणात्मने नमः। घ्राणतत्वमावाहयामि। ॐञं नमः पराय वागात्मने नमः। वाक् तत्व मावाहयामि। ॐझं नमः पराय पाण्यात्मने नमः। पाणि तत्वमावाहयामि। ॐजं नमः पराय पादात्मने नमः। पादतत्वमावाहयामि। ॐछं नमः पराय पाय्वात्मने नमः। पायुतत्वमावाहयामि। ॐचं नमः पराय उपस्थात्मने नमः। उपस्थतत्वमावाहयामि। ॐङं मः पराय आकाशात्मने नमः। आकाशतत्वमावाहयामि। ॐघं नमः पराय वाय्वात्मने नमः। वायु तत्व मावाहयामि। ॐगं नमः पराय तेज आत्मने नमः। तेजस्तत्वमावाहयामि। ॐखं नमः पराय अबात्मने नमः। अप्तत्वमावाहयामि। ॐकं नमः पराय पृथिव्यात्मने नमः। पृथिवी तत्वमावाहयामि। ॐहं नमः पराय सूर्यमण्डलाय द्वादश कलात्मने नमः। सूर्यमण्डलमावाहयामि। ॐसं नमः पराय सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः। सोममण्डलमावाहयामि। ॐरं नमः पराय वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः। वह्निमण्डलमावाहयामि। ॐहौं नमः पराय शान्त्यतीतात्मने नमः। शान्त्यतीततत्वमावाहयामि। ॐह्यौं नमः पराय शान्त्यात्मने नमः।

शान्तितत्वमावाहयामि। ॐ ऋूं नमः पराय विद्यात्मने नमः। विद्यातत्वमावाहयामि। ॐ ह्लीं नमः पराय प्रतिष्ठात्मने नमः। प्रतिष्ठा तत्वमावाहयामि। ॐ ह्लां नमः पराय निवृत्यात्मने नमः। निवृत्ति कलामावाहयामि।

इत्यावाह्य इतना कहकर शंख तें तत्वों का आवाहन करें। संक्षेप में पूजन करें। ॐ लं पृथिव्यात्मना गंधं कल्पयामि। ॐ हं आकाशात्मना पुष्पं कल्पयामि। ॐ यं वाय्वात्मना धूपं कल्पयामि। ॐ रं अग्न्यात्मना दीपं कल्पयामि। ॐ वं अबात्मना नैवेद्यं कल्पयामि। ॐ पं परमात्म्रा पञ्चोपचार पूजां समर्पयामि। शंखजलं कलशे निक्षिपेत्। ॐ नमो नारायणाय। कहकर शंख जल को कलश में डालें। यहाँ पर तत्वकलावाहन संपन्न हुआ। *(अनुष्ठान पद्धति)*

कलशेन्यास विधानम्

अग्नि कला न्यास विधान—मूलाधारे दशदल पद्मं संकल्प्य अग्न्यादि दलेषु आग्नेय कलाः न्यस्य तत् स्थाने जातवेदस इति ऋचा मं वह्निमण्डलाय नमः इति समष्टिमन्त्रेण ॐ आं ह्रीं क्रों इति प्राणप्रतिष्ठामन्त्रेण च व्याप्य ऊर्वोः संस्पृश्य, त्रिवारं प्रणवं संजप्य हृदि संस्पृश्य ॐ ह्रीं हं सः सो हं स्वाहा इति त्रिवारं जप्त्वा हृदिस्थाः देवताः **सर्वा हृदये नित्य संश्रिताः। हृदि सर्व समर्पयामि हृदि प्राणो प्रतिष्ठिताः॥** इति जपेत्। *(अनुष्ठान पद्धति)*

कलश के मूलाधार में दशदल पद्म का संकल्प कर आग्नेयादि दलों में आग्नेय कलाओं का न्यास करके उस स्थान पर "**जातवेदसे** ऋक् से" एवं **मं वह्निमण्डलाय नमः** इस समष्टि मन्त्र से ॐ आं ह्रीं क्रों प्राणप्रतिष्ठा मन्त्र से दोनों हाथों से व्यापन कर, कलश के निचले भाग को कुशाओं से छूकर, तीन बार प्रणव को जपकर **ॐ ह्रीं हं सः सो हं स्वाहा**, जपकर, **हृदिस्था** मन्त्र का जप करें।

अग्नि कला न्यास—ॐ ह्रीं यं धूम्रर्चिष कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं रं ऊष्मायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं लं ज्वलिन्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं वं ज्वालिन्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं शं विष्फुलिंगिन्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं षं सुश्रियै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं सं सुरूपायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं हं कपिलायै

कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ळं हव्यवाहायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं क्षं कव्यवाहायै कलाशक्त्यै नमः।

ॐ देवानां पत्नीरुशतीरवन्तु नः प्रावन्तु नस्तुजये वाजसातये।
याः पार्थिवासो या अपामपि व्रते ता नो देवीः सुहवाः शर्म यच्छन्तु ॥ *(अथर्ववेद ७.४९.१)*

ॐ मं वह्निमण्डलायदश धर्मप्रद कलात्मने नमः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः। ॐ मं वह्निकलानां प्राणा इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः वह्निकलानां जीव इह स्थितः।

ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः वह्निकलानां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुश्रोत्रघ्राण प्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। कुशों से कलश के निचले भाग को छूते हुए बोले फिर ॐ ॐ ॐ कहें। हृदय को छूकर (कलश के मध्य भाग को ॐ ह्रीं हं सः सोहं स्वाहा कहें।

हृदिस्था देवताः सर्वाः हृदये नित्य संश्रिताः। हृदि सर्व समर्पयामि हृदि प्राणो प्रतिष्ठिताः। *(अनुष्ठान पद्धति)*

कहकर हाथ जोडकर प्रार्थना करें।

सूर्यकला न्यास विधान—हृदये द्वादशदल पभं संकल्प्य पूर्वादि दलेषु सूर्यकलाः न्यस्य तत् स्थाने गायत्री ऋचा अं सूर्य मण्डलाय नमः इति समष्टिमन्त्रण ॐ आं ह्रींक्रों इति प्राणप्रतिष्ठा मन्त्रेण च व्याप्य ऊर्वोः संस्पृश्य त्रिवारं प्रणवं संजप्य हृदि संस्पृश्य ॐ ह्रीं हं सः सोहं स्वाहा इति त्रिवारं जप्त्वा "हृदिस्था देवताः सर्वा हृदये नित्य संश्रिताः। हृदि सर्व समर्पयामि हृदि प्राणो प्रतिष्ठिता ॥ *(अनुष्ठान पद्धति)* **इति जपेत्।**

कलश के मध्य (हृदय भाग) में द्वादश दल पद्म की संकल्प करें। पूर्वादि दलों से सूर्य कलाओं को न्यास करके, उस स्थान पर **गायत्री मन्त्र** से एवं अं सूर्यमण्डलाय नमः इस समष्टि मन्त्र से ॐ आं ह्रीं क्रों प्राणप्रतिष्ठामन्त्र से दोनों हाथों से व्यापन कर, कलश के निचले भाग को कुशाओं से छूकर तीन बार

ॐकार का जपकर। ॐ ह्रीं हं सः सो हं स्वाहा तीन बार जपकर हृदिस्था मन्त्र से प्रार्थना करें।

सूर्यकला न्यास—ॐ ह्रीं कं भं तपिन्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं खं बं तापिन्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं गं फं धूम्रायै कलाशत्क्यै नमः। ॐ ह्री घं पं मरीच्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ङ. नं ज्वालिन्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं चं धं रुच्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं छं दं सुषुम्नायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं जं थं भोगदायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं झं तं विश्वायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ञां णं बोधिन्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं टं ढं धरिरायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ठं डं क्षमायै कलाशक्त्यै नमः।

ॐ ह्रीं तत्स॑वि॒तुर्वरे॑ण्यं॒ भर्गो॑ दे॒वस्य॑ धीमहि। धियो॒ यो नः॑ प्रचो॒दया॑त्॥ *(ऋग्वेद ३.६२.१०)*

ॐअं सूर्यमण्डलाय द्वादश वसुप्रद कलात्मने नमः ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः सूर्यकलानां प्राण इह प्राणाः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः सूर्यकलानां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षु श्रोत्र घ्राणप्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। कुशों से कलश के निचल भाग को छूते हुए बोलें। फिर ॐ ॐ ॐ कहें। हृदय को छूकर (कलश के मध्य को) **ॐ ह्रीं हं सः सोहं स्वाहा तीन बार कहें।**

हृदिस्था देवताः सर्वाः हृदये नित्य संश्रिताः। हृदि सर्व समर्पयामि हृदि प्राणे प्रतिष्ठिताः॥ कहकर हाथ जोडकर प्रार्थना करें।

सोमकला न्यास विधान—द्वादशान्ते षोडश दल पद्मं संकल्प्य दलेषु सोमकलाः न्यस्य तत् स्थाने त्र्यंबक ऋचा व्याप्य उं सोममण्डलाय नमः इति समष्टि मन्त्रेण ॐ आं ह्रीं क्रों इति प्राणप्रतिष्ठामन्त्रेण च व्याप्य ऊर्वोः संम्पृश्य त्रिवारं प्रणवं संजप्य हृदि सम्पश्य ॐ ह्रीं हं सः सोहं स्वाहा इति त्रिवारं जप्त्वा

हृदिस्था देवताः सर्वाः हृदये नित्य संश्रिताः। हृदि सर्व समर्पयामि हृदि प्राणो प्रतिष्ठिताः॥ *(अनुष्ठान पद्धति) इति जपेत्।*

कलश के मुख (द्वादशान्त) में १६ दल के पद्म की संकल्प करें। उसमें सोमकलाओं का न्यास करके उस स्थान पर त्र्यंबकं यजामहे मन्त्र से एवं उं सोम

मण्डलाय नमः इस समष्टि मन्त्र से एवं ॐ आं ह्रीं क्रों प्राण प्रतिष्ठा मन्त्र से दोनों हाथों से व्यापन कर कलश के निचले भाग को कुशाग्रों से छूकर तीन बार **ॐ कार** का जप करें। ॐ ह्रीं हं सः सोहं स्वाहा तीन बार कहकर हृदिस्था मन्त्र से प्रार्थना करें।

ॐ ह्रीं अं अमृतायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं आं मानदायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं इं पूषायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ई तुष्टयै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं उं पुष्ट्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ऊं रत्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ऋं धृत्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ॠं शशिन्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं लृं चन्द्रिकायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ॡं कान्त्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ऐं ज्योत्स्नायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ऐं श्रियै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ओं प्रीत्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं औं अंगदाये कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं अं पूर्णायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं अः पूर्णामृतायै कलाशक्त्यै नमः।

ॐ त्र्यँबकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्यो मुँक्षीयमामृतात्। *(ऋग्वेद ७.५९.१२)*

ॐ सोममण्डलाय षोडश काम प्रद कलात्मने नमः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः सोमकलानां प्राण इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः सोमकलानां जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः सोमकलानां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुश्रोत्रघ्राणप्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा *(अनुष्ठान पद्धति)*। कुशों से कलश के निचले भाग को छूते हुए बोलें। फिर ॐ ॐ ॐ कहें। कलश के मध्य भाग को छूकर तीन बार '**ॐ ह्रीं हं सः सोहं स्वाहा**' कहें।

हृदिस्थ देवता सर्वाः हृदये नित्य संश्रिताः। हृदि सर्व समर्पयामि हृदि प्राणो प्रतिष्ठिताः॥ कहकर हाथ जोडकर प्रार्थना करें।

अकार कला न्यास—पादयोः संध्यग्रेषु अकार कलान्यस्य तत् स्थाने हंसः शुचिष इत्यादि ऋचा व्याप्य ॐ ब्रह्मणे नमः इत्यादि समष्टि मन्त्रेण ॐ आं ह्रींक्रों इति प्राण प्रतिष्ठा मन्त्रेण च व्याप्य ऊर्वोः संस्पृश्य त्रिवारं प्रणवं संजप्य हृदि संस्पृश्य ॐ ह्रीं हं सः सोहं स्वाहा इति त्रिवारं जप्त्वा 'हृदिस्था'' इति जपेत्। *(अनुष्ठान पद्धति)*

कलश के पाद में अकार कला का न्यास करें। उस स्थान पर हंसः शुचिष इति ऋक् से, ॐब्रह्मणे नमः इत्यादि समष्टि मन्त्रों से, एवं ॐआं ह्रींक्रों प्राणप्रतिष्ठा मन्त्र से दोनों हाथों से व्यापन कर कलश के निचले भाग को कुशाग्रों से छूकर तीन बार ॐकारं का जप करें। ॐह्रीं हं सः सोहं स्वाहा तीन बार कहकर हृदिस्था मन्त्र से प्रार्थना करें।

ॐह्रीं कं सृष्ट्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं खं ऋध्यै कलशशक्त्यै नमः। ॐह्रीं गं स्मृत्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं घं मेधायै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं ङ कान्त्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं चं लक्ष्म्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं छं धृत्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं जं स्थिरायै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं झं स्थित्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं ञं सिद्ध्यै कलाशक्त्यै नमः।

ॐ ब्रह्म॑ जज्ञा॒नं प्र॑थ॒मं पु॒रता॑द् वि सी॑म॒तः सु॒रुचो॑ वे॒न आ॑वः।
स बु॒ध्न्या॑ उप॒मा अ॑स्य वि॒ष्ठाः स॒तश्च॒ योनि॒मस॑तश्च॒ वि व॑ः॥ *(अथर्ववेद ४.१.१)*

ॐब्रह्मणे नमः। ॐपृथिव्यात्मने नमः। ॐगंधतन्मात्रात्मने नमः। ॐसृष्ट्यात्मने नमः। ॐनिवृत्यात्मने नमः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः अकार कलानां प्राण इह प्राणः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः अकार कलानां जीव इह स्थितः।

ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः अकार कलानां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुश्रोत्र घ्राणप्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। कुशों से कलश के निचले भाग को छूते हुए बोलें। फिर ॐ ॐ ॐ कहें। कलश के मध्य भाग को छूकर तीन बार **ॐ ह्रीं हं सः सोहं स्वाहा** कहें।

हृदिस्था देवता सर्वाः हृदये नित्य संश्रिताः। हृदि सर्व समर्पयामि हृदि प्राणे प्रतिष्ठिताः॥ कहकर हाथ जोडकर प्रार्थना करें।

अकार कला न्यास—हस्तयोः संध्यग्रेषु उकार कलाः न्यस्य तत् स्थाने ॐ प्रतद्विष्णु इति ऋचा व्याप्य ॐ विष्णवे नमः इत्यादि समष्टिमन्त्रेण ॐ आं ह्रीं क्रों इति प्राणप्रतिष्ठा मन्त्रेण च व्याप्य ऊर्वोः संस्पृश्य त्रिवारं प्रणवं संजप्य "ॐ ह्रीं हं

सः सोहं स्वाहा'' इति त्रिवारं जप्त्वा हृदिस्था''। *(अनुष्ठान पद्धति) इति जपेत्*

कलश के मूल में उकार कला का न्यास करें। उस स्थान पर प्रतद्विष्णु इस ऋक् से ॐ विष्णवे नमः इत्यादि समष्टि मन्त्रों से एवं ॐ आं ह्रीं क्रों आदि प्राणप्रतिष्ठा मन्त्रों से व्यापन करें। कलश के निचले भाग को कुशाग्रों से छूकर तीन बार ॐकार का जप करें। ॐ ह्रीं हं सः सोहं स्वाहा तीन बार कहकर हृदिस्था मन्त्र से प्रार्थना करें।

ॐ ह्रीं टं जरायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ठं पालिन्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं डं शान्त्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ढं ऐश्वर्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं णं रत्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं तं कामिकायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं थं वरदायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं दं ह्लादिन्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं धं प्रीत्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं नं दीर्घायै कलाशक्त्यै नमः।

ॐ प्र तद् विष्णुं स्तवते वीर्याणि मृगो न भीमः कुंचरो गिरिष्ठाः। परावत आ जंगम्यात् परस्याः ॥ (अथर्ववेद ७.२६.२)

ॐ विष्णवे नमः। ॐ आत्मने नमः। ॐ रसतन्मात्रात्मने नमः। ॐ जिह्वात्मने नमः। ॐ पायुविसर्गात्मने नमः। ॐ प्रतिष्ठात्मने नमः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः उकार कलानां प्राण इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः उकार कलानां जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः उकार कलानां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुश्रोत्र घ्राण प्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। कुशों से कलश के निचले भाग को छूते हुए **ॐ ह्रीं हं सः सोहं स्वाहा** तीन बार कहें।

हृदिस्था देवताः सर्वाः हृदये नित्य संश्रिताः। हृदि सर्व समर्पयामि हृदि प्राणे प्रतिष्ठिताः ॥ कहकर हाथ जोडकर प्रार्थना करें।

मकार कला न्यास—पायू वृषण अन्धुनाभि कुक्षि हृदय पार्श्वद्वय पृष्ठ ककुत्सु मकार कलाः न्यस्य तत् स्थाने त्र्यंबकं इति ऋचा ॐ रुद्राय नमः इत्यादि समष्टि मंत्रेण ॐ आं ह्रीं क्रां इति प्राणप्रतिष्ठा मन्त्रेण च व्याप्य ऊर्वोः संस्पृश्य त्रिवारं

प्रणवं संजप्य हृदि संस्पृश्य 'ॐ ह्रीं हं सः सोहं स्वाहा' इति त्रिवारं जप्त्वा हृदिस्था इति जपेत्। *(अनुष्ठान पद्धति)*

कलश के मध्य में मकार कला का न्यास करें। उस स्थान पर त्र्यंबकं इस ऋक् से ॐरुद्राय नमः इत्यादि समष्टि मंत्रों से एवं ॐआं ह्रीं क्रों इति प्राणप्रतिष्ठा मन्त्रों से व्यापन करें। कलश के मूल को छूकर तीन बार ॐ ॐ ॐ का जप करें। ॐह्रीं हं सः सोहं स्वाहा" इसे तीन बार जपकर। "हृदिस्था" कहकर प्रार्थना करें।

ॐह्रीं पं तीक्ष्णायै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं फं रौद्र्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं बं भयायै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं भं निद्रायै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं मं तन्द्र्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं यं क्षुधायै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं रं क्रोधिन्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं लं क्रियायै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं वं उत्कार्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं शं मृत्युरूपायै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥ ॐरुद्राय नमः। ॐह्रीं अग्न्यात्मने नमः। ॐरूप तन्मात्रात्मने नमः। ॐचक्षुरात्मने नमः। ॐपाद गमनात्मने नमः। ॐसंहारात्मने नमः। ॐविद्यात्मने नमः। *(अनुष्ठान पद्धति)*

ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः कुमार कलानां प्राणा इह प्राणाः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः मकार कलानां जीव इह स्थितः। ॐआं ह्रीं क्रां य र ल व श ष स हों सं हं सः मकार कलानां सर्वेन्द्रियाणि वड्मनः चक्षुश्रोत्र घ्राण प्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। कुशों से कलश के मध्य भाग को छूते हुए बोलें। फिर ॐ ॐ ॐ कहें। कलश के मध्य को छूकर "ॐह्रीं हं सः सोहं स्वाहा" तीन बार कहें।

हृदिस्था देवता सर्वाः हृदये नित्य संश्रिताः। हृदि सर्व समर्पयामि हृदि प्राणो प्रतिष्ठिताः॥ कहकर हाथ जोडकर प्रार्थना करें।

कण्ठास्य भ्रूद्वय मूर्धसु बिन्दुकलाः न्यस्य तत् स्थाने तत्सवितुरिति ऋचा ॐईश्वराय नमः इत्यादि समष्टि मंत्रेण ॐआं ह्रीं क्रों इति प्राणप्रतिष्ठामंत्रेण च व्याप्य ऊर्वोः संस्पृश्य त्रिवारं प्रणवं संजप्य हृदि संस्पृश्य ॐह्रीं हंसः सोहं स्वाहा इति त्रिवारं जप्त्वा हृदिस्था इति जपेत्।

कलश के मुख में बिंदु कला का न्यास करें। उस स्थान पर तत्सवितुः इस ऋक् से ॐईश्वराय नमः इत्यादि समष्टि मंत्र से ॐआं ह्रीं क्रों इति प्राणप्रतिष्ठा मंत्र से व्यापन करें। ॐह्रीं हं सं: सोहं स्वाहा इसे तीन बार जपकर ''हृदिस्था'' कहकर प्रार्थना करें। ॐह्रीं षं पीतायै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं सं श्वेतायै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं हं अरुणायै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं ळं असितायै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं क्षं अनंतायै कलाशक्त्यै नमः।

ॐ तत्स॑वि॒तुर्वरे॑ण्यं॒ भर्गो॑ दे॒वस्य॑ धीमहि। धियो॒ यो नः॑ प्रचो॒दया॑त्॥ (ऋग्वेद ३.६२.१०)

ॐईश्वराय नमः। ॐवाय्वात्मने नमः। ॐस्पर्शतन्मात्रात्मने नमः। ॐत्वगात्मने नमः। ॐपाण्यादानात्मने नमः। ॐतिरोभवात्मने नमः। ॐशान्त्यात्मने नमः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं स: बिन्दुकलानां प्राणा इह प्राणाः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं स: बिन्दुकलानां जीव इह स्थितः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं स: बिन्दुकलानां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुश्रोत्रघ्राण प्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। कुशों से कलश के मुख भाग को छूते हुए बोलें फिर ॐ ॐ ॐ कहें। कलश के मध्य को छूकर ''**ॐ ह्रीं हं स: सोहं स्वाहा**'' तीन बार कहें।

हृदिस्था देवता सर्वाः हृदये नित्य संश्रिताः। हृदि सर्व सपर्मयामि हृदि प्राणो प्रतिष्ठिताः॥ कहकर हाथ जोडकर प्रार्थना करें।

नाद कला न्यास—प्रतिलोम स्वरस्थानेषु नादकलान्यस्य तत् स्थाने विष्णुर्यो निमिति ऋचा ॐ ह्रीं सदाशिवाय नमः इत्यादि समष्टि मंत्रेण ॐ आं ह्रीं क्रों इति प्राणप्रतिष्ठा मंत्रेण च व्याप्य ऊर्वो: संस्पृश्य त्रिवारं प्रणवं संजप्य हृदि संस्पृश्य ''ॐ ह्रीं हं स: सोहं स्वाहा इति त्रिवारं जप्त्वा हृदिस्था इति जपेत्। (अनुष्ठान पद्धति)

संपूर्ण कलश को कुशाओं से छूते हुए नाद कलाओं का न्यास करें। उस स्थान पर विष्णुर्योनीति ऋक् से ॐसदाशिवाय नमः इत्यादि समष्टिमंत्रों से ॐआं ह्रीं क्रों इति प्राणप्रतिष्ठामंत्र से व्यापन करके कलश के मूल को छूकर ॐॐॐकहें। कलश के मध्य को छूकर ''ॐह्रीं हं स: सोहं स्वाहा'' इसे तीन बार जप करें। कलश के मध्य को छूकर हृदिस्था कहकर प्रार्थना करें। ॐह्रीं अं निवृत्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं आं प्रतिष्ठायै कलाशक्त्यै नमः। ॐह्रीं इं विद्यायै

कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ई शांत्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं उं इन्धिकायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ऊं दीपिकायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ॠं रेचिकायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ॠं मोचिकायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं लृं परायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं लृं सूक्ष्मायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ऐं सूक्ष्मामृतायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ऐं ज्ञानामृतायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ओं आप्यायिन्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं औं व्यापिन्यै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं अं व्योमरूपायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं अः अनन्तायै कलाशक्त्यै नमः।

ॐ रुद्रस्यैलबकारेभ्योऽसंसूक्तगिलेभ्यः। इदं महास्येभ्यः श्वभ्यो अकरं नमः॥ *(अथर्ववेद ११.२.३०)*

ॐ सदाशिवाय नमः। ॐ आकाशात्मने नमः। ॐ शब्दतन्मात्रात्मने नमः। ॐ श्रोत्रात्मने नमः। ॐ वाग् वचनात्मने नमः। ॐ अनुग्रहात्मने नमः। ॐ शान्त्यतीतात्मने नमः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हंसः नादकलानां प्राणा इह प्राणः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हंसः नादकलानां जीव इह स्थितः।

ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हंसः नादकलानां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुश्रोत्रघ्राणप्राणाः। इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वहा। *(अनुष्ठान पद्धति)*
कुशों से कलश के सर्वाङ्ग को छूकर बोलें। फिर ॐ ॐ ॐ कहें। कलश के मध्य को छूकर "ॐ ह्रीं हं सः सोहं स्वाहा" तीन बार कहें

हृदिस्था देवता सर्वाः हृदये नित्य संश्रिताः। हृदि सर्व समर्पयामि हृदि प्राणो प्रतिष्ठिताः॥ कहकर हाथ जोडकर प्रार्थना करें।

शक्ति कला न्यास—मूलाधार हृदय मूर्धसु शक्तिकला न्यस्य ॐ शक्त्यात्मने नमः इति समष्टि मन्त्रेण ॐ आं ह्रीं क्रों इति प्राण प्रतिष्ठामंत्रेण च व्याप्य ऊर्वोः संस्पृश्य त्रिवारं प्रणवं संजप्य हृदिसंस्पृश्य ॐ ह्रीं हं सः सोहं स्वाहा इति त्रिवारं जप्त्वा "हृदिस्था" इति जपेत्। कलश के सर्वाङ्ग को कुशों से छूकर न्यास करें। **ॐ शक्त्यात्मने नमः**। इस समष्टिमंत्र से ॐ आं ह्रीं क्रों इत्यादि प्राणप्रतिष्ठा मंत्र से व्यापन करें। कलश के मूल को कुशों से छूकर तीन बार ॐ ॐ ॐ का जप करें। ॐ ह्रीं हं सः सोहं स्वाहा" इसे तीन बार जपकर

हृदिस्था देवता सर्वाः हृदये नित्य संश्रिता। हृदि सर्वं समर्पयामि हृदि प्राणो प्रतिष्ठिताः॥
कहकर हाथ जोडकर प्रार्थना करें। ॐ ह्रीं इच्छायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं ज्ञानायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं क्रियायै कलाशक्त्यै नमः। ॐ शक्त्यात्मने नमः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः शक्ति कलानां प्राण इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः शक्ति कलानां जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः शक्ति कलानां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुश्रोत्रघ्राण प्राणाः। *(अनुष्ठान पद्धति)* इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा कुशों से कलश के सर्वाङ्ग को छूकर बोलें। फिर ॐ ॐ ॐ कहे। कलश के मूल को छूकर "**ॐ ह्रीं हं सः सोहं**" स्वाहा तीन बार कहें॥

हृदिस्था देवता सर्वाः हृदये नित्य संश्रिताः। हृदि सर्व समर्पयामि हृदि प्राणो प्रतिष्ठिताः॥ कहकर हाथ जोडकर प्रार्थना करें।

शान्ति कला न्यास—हृदये शान्तकलाः न्यस्य ॐ शान्त्यात्मने नमः समष्टि मन्त्रेण ॐ आं ह्रीं क्रों इति प्राणप्रतिष्ठामंत्रेण च व्याप्य ऊर्वोः संस्पृश्य त्रिवारं प्रणवं संजप्य हृदि संस्पृश्य ॐ ह्रीं हं सः सोहं स्वाहा इति त्रिवारं जप्त्वा हृदिस्था इति जपेत्। *(अनुष्ठान पद्धति)*

कलश के मध्य में कुशों से छूकर न्यास करें। "ॐ शान्त्यात्मने नमः" समष्टि मंत्र से ॐ ह्रीं क्रों इत्यादि प्राणप्रतिष्ठा मन्त्र से व्यापन करें। कलश के मूल को कुशों से छूकर तीन बार ॐ ॐ ॐ का जप करें। "**ॐ ह्रीं हं सः सोहं स्वाहा**" इसे तीन बार कहकर हृदिस्था इससे प्रार्थना करें।
ॐ ह्रीं चिदात्मने कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं सदात्मने कलाशक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं आनंदात्मने कलाशक्त्यै नमः। ॐ शांत्यात्मने नमः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः शान्ति कलानां प्राण इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः शांति कलानां जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः शान्ति कलानां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षु श्रोत घ्राणप्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा। कुशों से कलश के सर्वाङ्ग को छूकर

बोलें। फिर ॐ ॐ ॐ कहें। कलश के मूल को छूकर "**ॐ ह्रीं हं सः सोहं**" स्वाहा तीन बार कहें।

हृदिस्था देवताः सर्वाः हृदये नित्य संश्रिताः। हृदि सर्व समर्प्यादि हृदि प्राणोः प्रतिष्ठिताः॥ *(अनुष्ठान पद्धति)*

कहकर हाथ जोडकर प्रार्थना करें।

कलशे तिपि न्यासः—ॐअं नमः। ॐआं नमः। ॐइं नमः। ॐईं नमः। ॐउं नमः। ॐऊं नमः। ॐऋं नमः। ॐॠं नमः। ॐलृं नमः। ॐपं नमः। ॐपें नमः। ॐओं नमः। ॐऔं नमः। ॐअं नमः। ॐअः नमः। ॐकं नमः। ॐखं नमः। ॐगं नमः। ॐघं नमः। ॐङं नमः। ॐचं नमः। ॐछं नमः। ॐजं नमः। ॐझं नमः। ॐञं नमः। ॐटं नमः। ॐठं नमः। ॐडं नमः। ॐढं नमः। ॐणं नमः। ॐतं नमः। ॐथं नमः। ॐदं नमः। ॐधं नमः। ॐनं नमः। ॐपं नमः। ॐफं नमः। ॐबं नमः। ॐभं नमः। ॐमं नमः। ॐयं नमः। ॐरं नमः। ॐलं नमः। ॐवं नमः। ॐशं नमः। ॐषं नमः। ॐसं नमः। ॐहं नमः। ॐळं नमः। ॐक्षं नमः। कलश को कुशों से छूकर न्यास करें। *(अनुष्ठान पद्धति)*

कलशे तत्व न्यासः—ॐमं नमः पराय जीवात्मने नमः। ॐभं नमः पराय प्राणात्मने नमः। ॐबं नमः पराय बुध्यात्मने नमः। ॐफं नमः पराय अहंकारात्मने नमः। ॐपं नमः पराय मन आत्मने नमः। ॐनं नमः पराय शब्द तन्मात्रात्मने नमः। ॐघं नमः पराय स्पर्श तन्मात्रात्मने नमः। ॐदं नमः पराय रूप तन्मात्रात्मने नमः। ॐथं नमः पराय रस तन्मात्रात्मने नमः। ॐतं नमः पराय गंध तन्मात्रात्मने नमः। ॐणं नमः पराय श्रोत्रात्मने नमः। ॐढं नमः पराय त्वगात्मने नमः। ॐडं नमः पराय चक्षुरात्मने नमः। ॐठं नमः पराय जिह्वात्मने नमः। ॐटं नमः पराय घ्राणात्मने नमः। ॐञं नमः परय वागात्मने नमः। ॐझं नमः पराय पाणयात्मने नमः। ॐजं नमः पराय पादात्मने नमः। ॐछं नमः पराय पाय्वात्मने नमः। ॐचं नमः पराय उपस्थात्मने नमः। ॐङंनमः पराय आकाशात्मने नमः। ॐघं नमः पराय वाय्वात्मने नमः। ॐगं नमः पराय तेज आत्मने नमः। ॐखं नमः पराय अपात्मने नमः। ॐकं नमः पराय पृथिव्यात्मने नमः। ॐशं नमः पराय हृत्पुण्डरीकात्मने नमः। ॐहं नमः पराय सूर्यमण्डलाय द्वादश कलात्मने नमः। ॐसं नमः पराय सोममण्डलाय षोडश कलात्मने

नमः। ॐ रं नमः पराय वह्निमण्डलाय दशकालात्मने नमः। ॐ हौं नमः परात्र शान्त्यतीतात्मने नमः। ॐ ह्रौं नमः पराय शान्त्यात्मने नमः। ॐ ह्रूं नमः पराय विद्यात्मने नमः। ॐ ह्रीं नमः पराय प्रतिष्ठात्मने नमः। ॐ ह्लां नमः पराय निवृत्यात्मने नमः। *(अनुष्ठान पद्धति)* कहकर कुशों से कलश को छूकर न्यास करें।

ॐ नमो नारायणाय। विष्णुमूर्तिमावाहयामि। आवाहितो भव। संस्थापितो भव। सन्निहितो भव। सन्निरुद्धो भव। अवगुण्ठितो भव। अमृतीकृतो भव। व्याप्तो भव। सुप्रसन्नो भव। कहकर मुद्राओं का प्रदर्शन करें।

ॐ पूर्णादर्वे परा पत सुपूर्णा पुनरा पंत। सर्वान् यज्ञान्त्संभुञ्जतीष्मूर्जं न आ भंर॥ *(अथर्ववेद ३.१०.७)*

अनेन कलशे शेषं संपूर्य। (उपरोक्त मन्त्र को कहकर कलश में जल भरें। ॐ अस्त्राय फट् इति।)

ॐ घृतेन सीता मधुंना समंक्ता विश्वैर्देवैरनुंमता मरुद्भिः।
सा नंः सीते पयंसाभ्यावंवृत्स्वोर्जस्वती घृतवत् पिन्वंमाना॥ *(अथर्ववेद ३.१७.६)*

इति पल्लवादिकं न्यस्य (कहकर कलश में पल्लव आम, पीपल, पलाश के पते रखें।) पूर्णपात्रे शुक्लतण्डुलान् प्रयूर्य कलशे स्थाप्य (पूर्णपात्र में) (बड़ी कटोरी) में सफेद चावलों को भरकर कलश के ऊपर रखें।

प्रतिमा शुद्धि विधान

(ब्रह्मकर्म समुच्चय) इसमें पूजन में रखने वाला प्रतिमा का शुद्धीकरण होता है।

देशकालौ संकीर्त्य अस्याः प्रतिमायाः अंग प्रत्यंग संधि समुत्पन्न वास्यग्नि कुद्दालाग्नि टंकाग्न्यातप निरासार्थे अग्न्युत्तारणं करिष्ये इति संकल्प्य

देशकालों का स्मरण कर इस प्रतिमा के अंग प्रत्यंगों के जोड में बनाते समय लगे विभिन्न उपकरणों के चोट से एवं बनाते समय तपाने से एवं धूप में सूखाने से उत्पन्न सभी दोषों के निवारण के लिए शुद्धि करने का संकल्प लेवें।

ऐसे १०८ आवर्तन या २८ आवर्तन करें आगे मन्त्र लिखा है वह आवर्तन का है। अग्न्युत्तारणे विनियोगः।

ॐ ऊर्ध्वा अस्य समिधों भवन्त्यूर्ध्वा शुक्रा शोचींष्यग्नेः।
द्युमत्तमा सुप्रतीकः ससंनुस्तनूनपादसुरो भूरिपाणिः।
देवो देवेषु देवः पथो अनक्ति मध्वां घृतेन।
मध्वां यज्ञं नक्षति प्रैणानो नराशंसो अग्निः सुकृद् देवः संविता विश्ववारः।
अच्छायमेति शवसा घृता चिदीडानो वह्निर्नमसा।
अग्निः स्रुचो अध्वरेषु प्रयक्षु स यक्षदस्य महिमानमग्नेः।
तरी मन्द्रासु प्रयक्षु वसवश्चातिष्ठन् वसुधातरश्च।
द्वारो देवीरन्वस्य विश्वे व्रतं रक्षन्ति विश्वहा।
उरुव्यचसाऽग्नेर्धाम्ना पत्यमाने। *(अथर्ववेद ५.२७.१-७)*

इन अग्न्युत्तारण सूक्तों से प्रतिमा पर सतत जल धारा करने से प्रतिमा की शुद्धि होती है। उस प्रतिमा को चावल से भरे पूर्ण पात्र में रखें।

ॐ पुष्पवतीः प्रसूमतीः फलिनीरफला उत। संमातर इव दुह्रामस्मा अरिष्टतातये॥ *(अथर्ववेद ८.७.२७)*

कहकर चावल से भरे पात्र में प्रतिमा के ऊपर नारियल रखें। ॐ अस्त्राय फट्। ॐ कवचाय हुम्।

ॐ परि धत्त धत्त नो वर्चसेमं जरामृत्युं कृणुत दीर्घमायुः।
बृहस्पतिः प्रायच्छद् वास एतत् सोमाय राज्ञे परिधातवा उ॥ *(अथर्ववेद २.१३.२)*

कहकर दो वस्त्रों से लपेटें सभी कलशों को वस्त्र लपेटें।

ॐ गंधद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

गंधं समर्पयामि। कहकर चन्दन चढायें।

ॐ अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत। अर्चन्तु पुत्रका उत पुरं न धृष्ण्वर्चत॥ *(अथर्ववेद २०.९२.५)*

अक्षतान् समर्पयामि। कहकर अक्षत से पूजन करें।

ॐ पुष्पवतीः प्रसूमतीः फलिनीरफला उत। संमातर इव दुह्रामस्मा अरिष्टतातये॥ *(अथर्ववेद ८.७.२७)*

पुष्पाणि समर्पयामि। **कहकर फूल चढायें।**

ॐ सुतासो मधुमत्तमाः सोमा इन्द्राय मन्दिनः। पवित्रवन्तो अक्षरन्देवान्गच्छन्तु वो मदाः॥ *(अथर्ववेद २०.१३७.४)*

पवित्रं समर्पयामि। **कहकर दो कुशा को बाँधकर रखें।** ॐनमो नारायणाय। **महाविष्णुमूर्तिमावाहयामि।** आवाहितो भव संस्थापितो भव। सन्निहितो भव। सन्निरुद्धो भव। अवगुंठितो भव। अमृतीकृतो भव। व्याप्तो भव। सुप्रसन्नो भव।

ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि। तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्॥

साध्यानारायणऋषिः। देवीगायत्री छन्दः। विष्णुर्देवता। न्यासे विनियोगः। ॐहृदयाय नमः। ॐशिरसे स्वाहा। ॐशिखायै वषट्। ॐकवचाय हुम्। ॐनेत्रत्रयाय वौषट्। ॐअस्त्राय फट्। ॐभूर्भुवः स्वरोमिति दिग्बन्धः। **कहकर न्यास करें। आगे ध्यान—**

विष्णुं जिष्णुं महाविष्णुं प्रभविष्णुं महेश्वरम्। अनेकोत्पात शमनं नमामि पुरुषोत्तमम्॥

ॐनमो नारायणाय।। इस मूल मंत्र को आठ बार जप करें। ॐलं पृथिव्यात्मने गंधं कल्पयामि। अंगुष्ठाग्र कनिष्ठिका मूल। ॐहं आकाशात्मने पुष्पं

कल्पयामि। अंगुष्ठ अग्र तर्जनी मूल मध्यमा। ॐ रं अग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि। अंगुष्ठा अग्र मध्यमा ॐ वं अबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि। अंगुष्ठ अग्र अनामिका मूल ॐ पं परमात्मने पञ्चोपचार पूजां समर्पयामि। (जहाँ भी पञ्चोपचार पूजन आता है वहाँ इसी क्रम से अङ्गुलियों को मिलाकर दिखायें।)

प्रथमावरण पूजनम्—पूर्वादिक्रमेण ॐ विमलायै नमः १। ॐ उत्कर्षिण्यै नमः २। ॐ ज्ञानायै नमः ३। ॐ क्रियायै नमः ४। ॐ योगायै नमः ५। ॐ प्रह्वयै नमः ६। ॐ सत्यायै नमः ७। ॐ ईशानायै नमः ८। मध्ये ॐ अनुग्रहायै नमः ९।

द्वितीयावरण पूजनम्—ॐ ब्राह्मयै नमः। पूर्वे ॐ माहेश्वर्यै नमः। आग्नेय दिशि। ॐ कौमार्यै नमः। दक्षिण दिशि। ॐ वैष्णव्यै नमः। नैऋत्यां दिशि। ॐ वाराह्यै नमः पश्चिम दिशि। ॐ इन्द्राण्यै नमः। वायव्यां दिशि। ॐ चामुण्डायै नमः। उत्तरस्यां दिशि। ॐ गिरिजायै नमः ऐशान्यां दिशि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

तृतीयावरण पूजनम्—ॐ इन्द्राय सुराधिपतये पीतवर्णाय वज्रहस्ताय ऐरावत वाहनाय सशक्ति काय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवारायश्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐ अग्नये तेजोधिपतये पिंगलवर्णाय शक्ति हस्ताय मेष वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय स वाहनाय स परिवाराय श्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐ यमाय प्रेताधिपतये कृष्णवर्णाय दण्ड हस्ताय महिष वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐ निषतये रक्षोधिपतये रक्तवर्णाय खड्ग हस्ताय नरवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐ वरुणाय जलाधितये कुंदवर्णाय पाशहस्ताय मकरवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐ वायवे प्राणाधिपतये धूम्रवर्णाय अंकुश हस्ताय हरिणवाहनाय सशक्ति काय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐ सोमाय नक्षत्राधिपतये शुक्लवर्णाय गदा हस्ताय अश्व वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐ ईशानाय विद्याधिपतये स्फटिकवर्णाय त्रिशूल हस्ताय वृषभ वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री महाविष्णुमूर्तिपार्षदाय नमः। ॐ अनंताय नागाधिपतये क्षीरवर्णाय चक्रहस्ताय गरुड वाहनाय स शक्तिाकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय

श्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। नैर्ऋत्यं एवं पश्चिम दिशा के बीच में अनन्त का पूजन करें। ॐ ब्रह्मणे लोकाधिपतये कंजवर्णाय पषहस्ताय हंसवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। पूर्व एवं ईशान दिशा के बीच में ब्रह्मा जी का पूजन करें। *(अनुष्ठान पद्धति)*

चतुर्थावरणपूजनम्—ॐ वज्राय नमः। (पूर्व में) ॐ शक्त्यै नमः। (आग्नेय में) ॐ दण्डाय नमः। (दक्षिण में) ॐ खड्गाय नमः। (नैऋत्य) ॐ पाशाय नमः। (पश्चिम में) ॐ अंकुशाय नमः। (वायव्य में) ॐ गदायै नमः। (उत्तर में) ॐ त्रिशूलाय नमः। (ईशान में) ॐ चक्राय न मः। (पश्चिम नैऋत्य के बीच में) ॐ पद्माय नमः। (पूर्व ईशान के बीच में) *(अनुष्ठान पद्धति)*

कलशे महाविष्णु आवाहनम्— ॐ इ॒दं विष्णु॒र्वि च॑क्रमे त्रे॒धा नि द॑धे प॒दा। समू॑ढमस्य पांसु॒रे। *(अथर्ववेद ७.२६.४)*

ॐ भूः महाविष्णुमूर्तिमावाहयामि। ॐ भुवः महाविष्णुमूर्तिमावाहयामि। ॐ स्वः महाविष्णुमूर्तिमावाहयामि। ॐ भुर्भुवः स्वः महाविष्णुमूर्तिमावाहयामि। (वेद मंत्र से आवाहन) ॐ नमो नारायणाय । ॐ भूः महाविष्णुमूर्तिमावाहयामि। ॐ भुवः महाविष्णुमूर्तिमावाहयामि। ॐ स्वः महाविष्णुमूर्तिमावाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः महाविष्णुमूर्तिमावाहयामि। (नाम मंत्र से आवाहन) ॐ सर्वभूतपतये नमः। ॐ भूः सर्वभूतपतिमावाहयामि। ॐ भुवः सर्वभूतपतिमावाहयामि। ॐ भू र्भुवः स्वः सर्वभूतपतिमावाहयामि। ॐ विष्णवे नमः। ॐ भूः विष्णुमावाहयामि। ॐ भुवः विष्णुमावाहयामि। ॐ स्वः विष्णुमावाहयामि। ॐ भू र्भुवः स्वः विष्णुमावाहयामि। ॐ ईश्वराय नमः। ॐ भूः ईश्वरमावाहयामि। ॐ भुवः ईश्वरमावाहयामि। ॐ स्वः ईवरमावाहयामि। ॐ भू र्भुवः स्वः ईश्वरमावाहयामि। ॐ सर्वोत्पातशमनाय नमः। ॐ भूः सर्वोत्पातशमनं आवाहयामि। ॐ भुवः सर्वोत्पातशमनमावाहयामि। ॐ स्वः सर्वोत्पातशमनमावाहयामि। ॐ भूमर्वः स्वः सर्वोत्पापशमनमावाहयामि। **अथ कल्पोक्त षोडशोपचार पूजां करिष्ये** (यहाँ से मण्डल में एवं कलश में आवाहित देवताओं का पूजन प्रारंभ।)

नवशक्ति पूजन

ॐ विमलायै नमः १। ॐ उत्कर्षिण्यै नमः २। ॐ ज्ञानायै नमः ३। ॐ क्रियायै नमः ४। ॐ योगायै नमः ५। ॐ प्रह्व्यै नमः ६। ॐ सत्यायै नमः ७। ॐ ईशानायै नमः ८। मध्ये ॐ अनुग्रहायै नमः ९।

ॐ भगवते सकल गुणात्मशक्तियुक्ताय अनंताय योग पीठात्मने नमः।

स्वात्मसंस्थमजं शुद्धं त्वामद्य परमेश्वर। अरण्यामिव हव्याशं कुम्भे आवाहयाम्यहम्॥ ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः महाविष्णोः प्राणाः इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः महाविष्णोः सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुश्रोत्र घ्राण प्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा। *(अनुष्ठान पद्धति)*

ॐ वाङ्म आसन् नसोः प्राणश्चक्षुरक्ष्णोः श्रोत्रं कर्णयोः।
अपलिताः केशा अशोणा दन्ता बहु बाह्वोर्बलम्॥ *(अथर्ववेद १९.६०.१)*

सशक्ति सांग सायुध सवाहन सपरिवार श्री महा विष्णु भगवन् अत्रैवागच्छागच्छ आवाहयिष्ये। आवाहितो भव। संस्थापितो भव। सन्निहितो भव। सन्निरुद्धो भव। अवगुण्ठितो भवः। अमृतीकृतो भव। व्याप्तो भव। सुप्रसन्नो भव।

ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि। तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्॥

साध्यानारायणऋषिः। देवीगायत्री छन्दः। विष्णुर्देवता। न्यासे विनियोगः। ॐ हृदयाय नमः। ॐ शिरसे स्वाहा। ॐ शिखायै वषट्। ॐ कवचाय हुम्। ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ अस्त्राय फट्। ॐ भूर्भुवः स्वरोमिति दिग्बन्धः।

षोडशोपचार पूजनम्

ध्यानम्—(पुष्प हाथ में लेकर ध्यान करें)

विष्णुं जिष्णुं महाविष्णुं प्रभविष्णुं महेश्वरम्। अनेकोत्पात शमनं नमामि पुरूषोत्तमम्॥

ॐनमो नारायणाय।। इस मूल मंत्र को आठ बार जप करें। ॐलं पृथिव्यात्मने गंधं कल्पयामि। अंगुष्ठाग्र कनिष्ठिका मूल। ॐहं आकाशात्मने पुष्पं कल्पयामि। अंगुष्ठ अग्र तर्जनी मूल मध्यमा। ॐरं अग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि। अंगुष्ठा अग्र मध्यमा ॐवं अबात्मने नैवेद्यं कल्पयामि। अंगुष्ठ अग्र अनामिका मूल ॐपं परमात्मने पञ्चोपचार पूजां समर्पयामि। मण्डल में एवं कलशों में आवाहित देवताओं का कल्पोक्त षोड़शोपचार पूजन आवाहन

ॐ सहस्रबाहुः पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिं विश्वतों वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥ *(अथर्ववेद १९.६.१)*

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजत स्रजाम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

सपरिवार श्रीमहाविष्णवे नमः। आवाहयमि। **आवाहनं** समर्पयामि।

आसनम्—ॐ त्रिभिः पद्भिर्द्यामरोहत्पादस्येहाभवत्पुनः। तथा व्यक्रामद्विष्वङ्शनानशने अनु॥ *(अथर्ववेद १९.६.२)*

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐसपरिवाराय श्रीमहाविष्णवे नमः। आसनं समर्पयामि।

पाद्यम्— ॐ तावन्तो अस्य महिमानस्ततो ज्यायांश्च पूरुषः। पादोस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥ *(अथर्ववेद १९.६.३)*

ॐ अश्वपूर्वा रथमध्यां हस्तिनाद प्रमोदिनीम्। श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णवे ममः। पादारविंदयोः पाद्यं पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यं— ॐ पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्येश्वरो यदन्येनाभवत्सह ॥ (अथर्ववेद १९.६.४)

ॐ कां सोस्मितां हिरण्य प्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।

पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहो पह्वये श्रियम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णवे नमः हस्तयोः अर्घ्यमर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनम्—ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्य किं बाहू किमूरू पादा उच्येते ॥ (अथर्ववेद १९.६.५)

ॐ चंद्रां प्रभासां यशसा ज्वलंतीं श्रियं लोके देवजुष्टा मुदाराम्।

तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मेनश्यतां त्वां वृणे ॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवाराय श्रीमहाविष्णवे नमः। मुखे आचमनीयं समर्पयामि।

पञ्चामृत स्नानम् (दूध)— ॐ सं सिंञ्चामि गवां क्षीरं समाज्येन बलं रसम्।

संसिक्ता अस्माकं वीरा ध्रुवा गावो मयि गोपतौ ॥ (अथर्ववेद २.२६.४)

ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णवे नमः। पयः स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः।

भवे भवेनाति भवे भवस्वमाम् भवोद्भवाय नमः ॥ (यजुर्वेद-महानारायणोपनिपत् आरण्यक)

ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णवे नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि

दहि—ॐ दुधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्यवाजिनः। सुरभि नो मुखा करत्प्र ण आयूंषि तारिषत्॥ *(अथर्ववेद २०.१३७.३)*

ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णवे नमः। दधि स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमश्श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमःकालविकरणाय
नमोबलाय नमो बलप्रमथनाय नमस्सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः। *(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)*

ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णवे नमः। शुद्धोदक स्नानं सपर्मयामि।

घी— ॐ घृतं ते अग्ने दिव्ये सधस्थे घृतेन त्वां मनुरद्या समिन्धे।
घृतं ते देवीर्नप्त्य१ आ वहन्तु घृतं तुभ्यं दुह्रतां गावो अग्ने॥ *(अथर्ववेद ७.८२.६)*

ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णवे नमः। घृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोर तरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥

(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)

ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णवे नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

मधु (शहद)—ॐ मधुमान् भवति मधुमदस्याहार्यं भवति। मधुमतो लोकान् जयति य एवं वेद॥ *(अथर्ववेद ९.१.२३)*

ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णवे नमः। मधु स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥ *(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)*

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णवे नमः। शुद्धोदक स्नानं सपर्पयामि।

शर्करा (शक्कर)—ॐ स्वादोःस्वादीयः स्वादुना सृजा समदः सु मधु मधुनाभि योधीः॥ *(अथर्ववेद ५.२.३)*

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णवे नमः। शर्करा स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ ईशानस्सर्वं विद्यानामीश्वरस्सर्वं भूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणो अधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्॥ *(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)*

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णवे नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

फल— ॐ पुष्पवतीः प्रसूमतीः फलिनीरफला उत। संमातरं इव दुह्रामस्मा अरिष्टतातये॥ *(अथर्ववेद ८.७.२७)*

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णवे नमः। फल स्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदक—ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे॥ *(अथर्ववेद १.५.१)*

ॐ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः॥ *(अथर्ववेद १.५.२)*

ॐ तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः॥ *(अथर्ववेद १.५.३)*

ॐ ब्राह्मणो स्य मुखमासीद्बाहू राजन्यो भवत्। मध्यं तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत॥ *(अथर्ववेद १९.६.६)*

ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः। तस्य फलानि तपसा नुदंतु मायांतरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः। *(ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णवे नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

वस्त्र— ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत। मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायत॥ (अथर्ववेद १९.६.७)

ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥

(ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णवे नमः। वस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतं— ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्रयं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥

ॐ विराडग्रे समभवद्विराजो अधि पूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः॥ (अथर्ववेद १९.६.९)

ॐ क्षुत् पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वान्निर्णुद मे गृहात्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णवे नमः। यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

आभरण— ॐ यद्धिरण्यं सूर्येण सुवर्णं प्रजावन्तो मनवः पूर्व ईषिरे।

तत् त्वा चन्द्रं वर्चसा सं सृजत्यायुष्मान् भवति यो बिभर्ति॥ (अथर्ववेद १९.२६.२)

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णवे नमः। आभरणं समर्पयामि।

गन्ध— ॐ गंधद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।

पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन्॥ (अथर्ववेद १९.६.८)

ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णवे नमः। गन्धं समर्पयामि।

अक्षत—ॐ अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत। अर्चन्तु पुत्रका उत पुरं न धृष्ण्वर्चत॥ (अथर्ववेद २०.९२.५)

ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णवे नमः। अक्षान् समर्पयामि।

पुष्पाणि—ॐ विराडग्रे समभवद्विराजो अधि पूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः॥ (अथर्ववेद १९.६.९)

ॐ पुष्पवतीः प्रसूमतीः फलिनीरफला उत। संमातर इव दुह्रामस्मा अरिष्टतातये॥ (अथर्ववेद ८.७.२७)

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥ (ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णवे नमः। पुष्पाणि समर्पयामि।

प्रथमावरण पूजनम्—पूर्वादिक्रमेण ॐविमलायै नमः १। ॐ उत्कर्षिण्यै नमः २। ॐ ज्ञानायै नमः ३। ॐ क्रियायै नमः ४। ॐ योगायै नमः ५। ॐ प्रह्व्यै नमः ६। ॐ सत्यायै नमः ७। ॐ ईशानायै नमः ८। मध्ये ॐ अनुग्रहायै नमः ९।

द्वितीयावरण पूजनम्—ॐब्राह्म्यै नमः। पूर्वे ॐमाहेश्वर्यै नमः। आग्नेय दिशि। ॐकौमार्यै नमः। दक्षिण दिशि। ॐवैष्णव्यै नमः। नैर्ऋत्यां दिशि। ॐवाराह्यै नमः पश्चिम दिशि। ॐइन्द्राण्यै नमः। वायव्यां दिशि। ॐचामुण्डायै नमः। उत्तरस्यां दिशि। ॐगिरिजायै नमः ऐशान्यां दिशि। (अनुष्ठान पद्धति)

तृतीयावरण पूजनम्—ॐइन्द्राय सुराधिपतये पीतवर्णाय वज्रहस्ताय ऐरावत वाहनाय सशक्ति काय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवारायश्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐअग्नये तेजोधिपतये पिंगलवर्णाय शक्ति हस्ताय मेष वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय स वाहनाय स परिवाराय श्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐयमाय प्रेताधिपतये कृष्णवर्णाय दण्ड हस्ताय महिष वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐनिषतये रक्षोधिपतये रक्तवर्णाय खड्ग हस्ताय नरवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय

श्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐवरुणाय जलाधितये कुंदवर्णाय पाशहस्ताय मकरवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐवायवे प्राणाधिपतये धूम्रवर्णाय अंकुश हस्ताय हरिणवाहनाय सशक्ति काय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐसोमाय नक्षत्राधिपतये शुक्लवर्णाय गदा हस्ताय अश्व वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐईशानाय विद्याधिपतये स्फटिकवर्णाय त्रिशूल हस्ताय वृषभ वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री महाविष्णुमूर्तिपार्षदाय नमः। ॐअनंताय नागाधिपतये क्षीरवर्णाय चक्रहस्ताय गरुड वाहनाय स शक्तिाकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। नैर्ऋत्यं एवं पश्चिम दिशा के बीच में अनन्त का पूजन करें। ॐब्रह्मणे लोकाधिपतये कंजवर्णाय पषहस्ताय हंसवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। पूर्व एवं ईशान दिशा के बीच में ब्रह्मा जी का पूजन करें। *(अनुष्ठान पद्धति)*

चतुर्थावरणपूजनम्—ॐवज्राय नमः। (पूर्व में) ॐशक्त्यै नमः। (आग्नेय में) ॐदण्डाय नमः। (दक्षिण में) ॐखड्गाय नमः। (नैऋत्य) ॐपाशाय नमः। (पश्चिम में) ॐअंकुशाय नमः। (वायव्य में) ॐगदायै नमः। (उत्तर में) ॐत्रिशूलाय नमः। (ईशान में) ॐचक्राय न मः। (पश्चिम नैऋत्य के बीच में) ॐपद्माय नमः। (पूर्व ईशान के बीच में) *(अनुष्ठान पद्धति)*

अष्टोत्तर शतनाम पूजा

ॐविष्णवे नमः। ॐलक्ष्मीपतये नमः। ॐ कृष्णाय नमः। ॐ वैकुण्ठाय नमः। ॐ गरुडध्वजाय नमः। ॐ जगन्नाथाय नमः। ॐपरब्रह्मणे नमः।ॐवासुदेवाय नमः। ॐत्रिविक्रमाय नमः। ॐ दैत्यान्तकाय नमः। ॐ मधुरिपवे नमः। ॐ ताक्ष्र्यवाहनाय नमः। ॐसनातनाय नमः। ॐनारायणाय नमः। ॐपद्मनाभाय

नमः। ॐहृषीकेशाय नमः। ॐसुधाप्रदाय नमः। ॐ माधवाय नमः। ॐ पुण्डरीकाक्षाय नमः। ॐ स्थितिकर्त्रे नमः। ॐपरात्पराय नमः। ॐवनकालिने नमः। ॐयज्ञ रूपाय नमः। ॐचक्र पाणये नमः। ॐगदाधराय नमः। ॐउपेन्द्राय नमः। ॐकेशवाय नमः। ॐ हंसाय नमः। ॐ समुद्रमथनाय नमः। ॐ हरये नमः। ॐगोविन्दाय नमः। ॐ ब्रह्मजनकाय नमः ॐ कैटभासुरमर्दनाय नमः। ॐ श्रीधराय नमः। ॐ कामजनकाय नमः ॐ शेषाायिने नमः। ॐ चतुर्भजाय नमः। ॐ पाञ्चजन्यधराय नमः। ॐ श्रीमते नमः। ॐ शार्ङ्गपाणये नमः। ॐ जनार्दनाय नमः। ॐ पीताम्बरधराय नमः। ॐ देवाय नमः। ॐ सूर्यचन्द्रविलोचनाय नमः। ॐ मत्स्यरूपाय नमः। ॐ कूर्मतनवे नमः। ॐ क्रोडरूपाय नमः। ॐ नृकेसरिणे नमः। ॐ वामनाय नमः। ॐभार्गवाय नमः। ॐ रामाय नमः। ॐ बलिने नमः। ॐ कल्किने नमः। ॐ हयाननाय नमः। ॐ विश्वम्भराय नमः। ॐ शिशुमाराय नमः। ॐश्रीकराय नमः। ॐ कपिलाय नमः। ॐ ध्रुवाय नमः। ॐ दत्तात्रेयाय नमः। ॐ अच्युत्ताय नमः। ॐअनन्ताय नमः। ॐ मुकुन्दाय नमः। ॐ दधिवामनाय नमः। ॐ धन्वन्तरये नमः। ॐ श्रीनिवासाय नमः। ॐप्रद्युम्नाय नमः। ॐ पुरुषोत्तमाय नमः। ॐ श्रीवत्सकौस्तुभधराय नमः। ॐ मुरारातये नमः। ॐ अधोक्षजाय नमः। ॐ ऋषभाय नमः। ॐ मोहिनी रुप धारिणे नमः। ॐ सङ्कर्षणाय नमः। ॐ पृथवे नमः। ॐ क्षीराब्धिशायिने नमः। ॐ भूतात्मने नमः। ॐ अनिरुद्धाय नमः। ॐ भक्तवत्सलाय नमः। ॐनराय नमः। ॐ गजेन्द्रवरदाय नमः। ॐ त्रिधाम्ने नमः। ॐ भूतभावनाय नमः। ॐ श्वेतद्वीपसुवास्तव्याय नमः। ॐ सनकादिमुनिध्येयाय नमः। ॐ भगवते नमः। ॐ शङ्करप्रियाय नमः। ॐ नीलकान्ताय नमः। ॐ धराकान्ताय नमः। ॐवेदात्मने नमः। ॐ बादरायणाय नमः। ॐ भागीरथीजन्मभूमि पादपद्माय नमः। ॐ सतांप्रभवे नमः। ॐस्वभुवे नमः। ॐ विभवे नमः। ॐ घनश्यामाय नमः। ॐ जगत्कारणाय नमः। ॐ अव्ययाय नमः। ॐ बुद्धावताराय नमः। ॐ शान्तात्मने नमः। ॐ लीलामानुष विग्रहाय नमः। ॐ दामोदराय नमः। ॐ विराड्रूपाय नमः। ॐ भूतभव्यभवत्प्रभवे नमः। ॐ आदिदेवाय नमः। ॐ प्रह्लादपरिपालकाय नमः। ॐ श्रीमहाविष्णवे नमः। अष्टोत्तर शतनाम पूजां समर्पयामि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

धूपम्—ॐ वनस्पति रसोत्पन्नो गंधाढ्यः सुमनोहरः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तो अस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥ (अथर्ववेद १९.६.१०)

ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि संभव कर्दम। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥ (ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ सपरिवाराय श्री महा विष्णवे नमः। धूपं आघ्रापयामि।

दीपम्— आज्य त्रिवर्ति संयुक्तं वह्निना योजितं मया। गृहाण मंगलं दीपं त्रैलोक्य तिमिरापह॥ (स्मृति संग्रह)

ॐ तं यज्ञं प्रावृषा प्रौक्षन्पुरुषं जातमग्रशः। तेन देवा अयजन्त साध्या वसवश्च ये॥ (अथर्ववेद १९.६.११)

ॐ आपः सृजंतु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे। नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥ (ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ सपरिवाराय श्रीमहा विष्णवे नमः। दीपं दर्शयामि। धूप दीपानंतरं आचमनीयं समर्पयामि।

नैवेद्यम्—देवस्याग्रे स्थलं संशोध्य गोमयेन मण्डलं कृत्वा तत्र शुद्धं पात्रं न्यस्य अभिघार्य निर्मलं हवि तदुपरि न्यस्य आज्येन द्रवीभूतं कृत्वा "ॐ भू र्भुवः स्वः इति गायत्र्या च प्रोक्ष्य वायु बीजं जप्त्वा निवेद्यान्नं संशोध्य दक्षिणहस्ते अग्निबीजं विलिख्य तेन हस्तेन संदह्यवामहस्ते अमृतबीजं विलिख्य तेत हस्तेन हविराप्लाव्य मूलमंत्रमष्टवारं संजप्य मंत्रामृतमयं संकल्प्य सुरभिमुद्रां बध्वा अमृतमयं भावयित्वा मल धातु रसांशं विभज्य देवस्य निवेद्य ग्रहणेच्छां कुर्यात्।

(अनुष्ठान पद्धति)

"सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि" इत्यनेन

परिषिच्य हस्ताभ्यां पुष्पैः "देवस्य जिह्वार्चीरुचि निवेद्ये निपात्य निवेदयामि भवते जुषाणेदं हविर्विभो" इति वामहस्तेन ग्रासमुद्रा प्रदर्श्य दक्षिण हस्तेन प्राणादि मुद्राः प्रदर्शयेत्। अन्नात् मलांशं धात्वंशं च परित्यज्य रसांशं देवस्य वदनार्चिषि समर्पयेत्। वं अबात्मना इति नैवेद्य मुद्रां प्रदर्शयेत्।

नैवेद्य सारं रससमर्पणात् जातं सुधांशं देवे समर्प्य अंललिमुद्रां बध्वा नैवेद्यसार रससमर्पित जातामृतमय सुधांशुना पुनः पुनः वर्धितं देवं हृन्मूर्ति देवं ध्यायन् स्व स्व मूलमन्त्रं यथा शक्ति जप्त्वा।

कलश के आगे स्थल शुद्धिकर गोमय से शुद्धिकर चतुरस्र मराडल को बनाकर उस पर शुद्ध पात्र को रखें। पात्र में थोडा सा घी डालें। उस पात्र में निर्मल हविस् (नैवेद्य पदार्थ को) को घी पर रखें उस हविस् को घी से भिगोयें। गायत्री मंत्र से नैवेद्य का प्रोक्षरा करें। यंयं यं" इस वायु बीज को जपकर हविस् को शुद्ध करें। दाहिने हाथ में (रं) अग्नि बीज को लिखकर उस अग्नि से हविस् में विद्यमान कश्मलों को लजायें। (कल्पना करें) बायें हाथ में अमृत बीज (वं) को लिखकर उस हाथ से हविस् को शुद्ध करें। धोने की कल्पना करें। ॐ नमो नारायराय। इस मन्त्र का आठ बार जप करें। हविस् को मत्रमय एवं अमृतमय होने की कल्पना करें। सुरभि मुद्रा से अमृतमय हुआ है मानकर मलांश, धातु अंश एवं रसांश को अलग-अलग करने की कल्पना करें।

देवता को नैवेद्य ग्रहरा करने की इच्छा उत्पन्न करनी चाहिये। "सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि" इससे परिषिञ्चन करें। दोनों हाथों में पुष्प लेकर देवता का जीभ नैवेद्य तक पहुँचने का चिन्तन करें। "निवेदयामि भवते जुषारा हविर्विभो" कहकर नैवेद्य स्वीकार करने की प्रार्थना करते हुए बायें हाथ से ग्रास मुद्रा (जैसे बछडे को घास देते हैं) को दिखाकर दाहिने हाथ से—

प्राराय स्वाहा-अङ्गुष्ठ कनिष्ठिका मिलाकर, अपानाय स्वाहा-अङ्गुष्ठ एवं तर्जनी मिलाकर, व्यानाय स्वहा-अङ्गुष्ठ एवं मध्यमा मिलाकर, उदानाय स्वाहा-अङ्गुष्ठ एवं अनामिका मिलाकर, समानाय स्वाहा। सभी अङ्गुलियों को लिाकर। अन्न से मलांश एवं धातु के अंश को अलग कर केवल रसांश को अर्पित करने की कल्पना करें।

"वं अबात्मना नैवेद्यं कल्पयामि" कहकर नैवेद्य मुद्रा का प्रदर्शन करें। अंगुष्ट एवं अनामिका मिलाने से नैवेद्य मुद्रा। नैवेद्य का सार जो रसांश था उसका भी सार अमृत का जो अंश है उसे देवता को समर्पित कर, हाथ जोडकर, नैवेद्य के सार अमृत से भगवान् को बढते हुए मानकर उसे हृदय में स्थित

मानकर यथाशक्ति ॐनमो नारायणाय'' इस मूल मंत्र का जप करें।

ॐ स्वादोःस्वादीयः स्वादुनां सृजा समदः सु मधु मधुनाभि योधीः ॥ *(अथर्ववेद ५.२.३)*

ॐ तस्मादश्वा अजायन्त ये च के चोभयादतः। गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः ॥ *(अथर्ववेद १९.६.१२)*

ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥

चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥ *(ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

यथा संभव नैवेद्यं निवेदयामि। **अमृतापिधानमसि** कहकर उत्तरापोशन देवें। हस्ताप्रक्षालनार्थे जलं समर्पयामि। गण्डूषार्थे जलं समर्पयामि। शुद्धाचमनार्थे जलं समर्पयामि। करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि।

ताम्बूल—पूगीफल समायुक्तं नागवल्या दलैर्युतं। चूर्ण कर्पूर संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥ *(स्मृति संग्रह-देवपूजा)*

ॐसपरिवार श्री महा विष्णवे नमः। क्रमुक तांबूलं समर्पयामि।

नीराजन (आरति)—ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दो ह जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥ *(अथर्ववेद १९.६.१३)*

ॐ एह यांतु वरुणः सोमो अग्निर्बृहस्पतिर्वसुभिरेह यांतु।

अस्य श्रियमुपसंयात सर्व उग्रस्य चेत्तुः संमनसः सजाताः ॥ *(अथर्ववेद ६.७३.१)*

ॐसपरिवाराय श्री महा विष्णवे नमः। मंगल नीराजनंसमर्पयामि।

मंत्रपुष्प—ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्। पशूँस्तांश्चक्रे वायव्यां नारण्या ग्राम्याश्च ये ॥ *(अथर्ववेद १९.६.१४)*

ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां युवर्णां हेममालिनीम्। सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदा। समूढमस्य पांसुरे। *(अथर्ववेद ७.२६.४)*

ॐसपरिवाराय श्री महा विष्णावे नमः। मंत्रपुष्पं समर्पयामि।

प्रदक्षिणा नमस्कार—यानि कानि च पापानि जन्मांतर कृतानि च। तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे पदे॥ *(देवपूजा-स्मृति संग्रह)*

ॐ सप्तास्यांसन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन्पुरुषं पशुम्॥ *(अथर्ववेद १९.६.१५)*

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।

यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावोदास्योऽश्वान् विंदेयं पुरुषानहम्॥ *(ऋग्वेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐसपरिवाराय श्री महा विष्णावे नमः। प्रदक्षिणा नमस्कारान् समर्पयामि।

प्रसन्नार्घ्य—ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि। तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्॥

इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यम् (कहकर तीन बार पुष्पमिश्रित जल छोडें।)

सर्वोपचार पूजनम्—ॐ छत्रं समर्पयामि। चामरेण वीजयामि। गीतं गायामि। नाट्यं नटामि। आंदोळिकामारोहयामि। अश्वमारोहयामि। गजमारोहयामि। समस्य राजोपचार देवोपचार पूजां समर्पयामि।

ॐ मूर्ध्नो देवस्य बृहतो अंशवः सप्त सप्ततीः। राज्ञः सोमस्याजायन्त जातस्य पुरुषादधि॥ *(अथर्ववेद १९.६.१६)*

ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहयादाज्यमन्वहम्। सूक्तं पंचदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्॥ *(ऋग्वेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐसपरिवाराय श्री महा विष्णावे नमः। सवोपचार पूजां समर्पयामि।

प्रार्थना—विष्णुं जिष्णुं महाविष्णुं प्रभविष्णुं महेश्वरम्। अनेकोत्पात शमनं नमामि पुरुषोत्तमम्॥

ॐ कायेन वाचा मनसे न्द्रियैर्वा बुध्यात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि॥ *(पौराणिकम्)*
ॐ ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविः ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्। ब्रह्मैव तेन गंतव्यं बंह्मकर्म समाधिना॥ *(श्री भगवद्गीते)*

ॐ सपरिवाराय श्री महा विष्णवे नमः। अनेन पूजनेन सपरिवारः श्री महा विष्णुः प्रीयताम्।

पीठ पर नवग्रह पूजन

प्रमाण— वर्तुलं चतुरस्त्रं च त्रिकोणं बाण एव च। सुदीर्घ चतुरस्त्रं च पञ्चकोणं धनुस्तथा।
शूर्पाकारं ध्वजाकारं भान्वादीनां तु मण्डलम्। मध्ये तु भास्करं विद्यात् शशिनं पर्व दक्षिणे॥
दक्षिणे लोहितं विद्यात् बुद्यां पूर्वोत्तरेण तु। उत्तरेण गुरं विद्यात् पूर्वेणैव तु भार्गवम्॥
पख्यिमे तु शनिं विद्यात् राहुं दक्षिण पश्चिमे। पश्चिमोत्तरतः केतुः स्थापनीयाः प्रयत्नतः॥ *(स्कान्दंमूलं प्रयोगरत्नाकर)*

नवग्रह मण्डल वर्तुलाकार पष के जैसे रहता है। उसके आठ दल होते हैं। मध्य भग कर्णिका कहताला है। मध्य कर्णिका वर्तुलाकार मण्डल में सूर्य को मानना चाहिये। आग्नेय दिशा में चतुरस्त्र मण्डल में चन्द्र देवता को मानें। दक्षिण पषदल के त्रिकोणमण्डल में अंगारक को मानें। ऐशान्य दिशा में बाण की चिह्न में बुध को मानें। उत्तर दिशा में दीर्घ चतुरस्त्र मण्डल में गुरु को मानें। पूर्व दिशा में पञ्चकोण मण्डल में शुक्र को मानें। पश्चिम दल में धनुष आकार मण्डल में शनि को मानें। नैऋत्य दिशा में शूर्पाकार मण्डल में राहु को माने। वायव्य दिशा में ध्वजाकार मण्डल में केतु को मानें। एवं ग्रहों की इसी क्रम

सें स्थापना करें।

सूर्यः सोमो महीपुत्रः सोमपुत्रो बृहस्पतिः। शुक्रः शनैश्चरो राहुः केतुश्चेति ग्रहा स्मृताः॥ उपरोक्त नौ ग्रह कहलाते हैं।

ताम्रेण कारयेद् भानुं रजतेन निशाकरम्। कुजज्ञ जीवरूपाणि सुवर्णा प्रकल्पयेत्॥

रजतेन ततः शुक्रं कृष्णालोहेने सूर्यजम्। सीसेन कारयेत् राहुं केतुं कांस्येन कारयेत्॥ *(ग्रहमख पद्धति)*

सूर्य की प्रतिमा ताम्र से, चाँदी से चन्द्र की प्रतिमा को, कुज, बुध एवं गुरु की प्रतिमा को सेने से, शुक्र की प्रतिमा चाँदी से, शनि की प्रतिमा काले लोहे से, राहु की प्रतिमा सीस से एवं केतु की प्रतिमा काञ्च से बनाना चाहिये।

स्वांगुलेनोच्छ्रितास्सर्वे ग्रहाः कार्या विधानतः। अथवा स्वर्णमात्रेण कारयेत् प्रतिमाः सुधीः॥

सर्वे किरीटिनः कार्या ग्रहा लोकहितावहाः॥ *(ग्रहमख पद्धति)*

सभी ग्रहों को एक अंगुल (लगभग एक इञ्च) से कम ऊँचे न बनाये। उन लोहों से या साने से शास्त्र विधि के अनुसार बनायें। सभी को किरीट अवश्य रहना चाहिये।

आदित्यांगाराकौ रक्तौ बुध जीवौ च पीतकौ। सोमशुक्रौ विदुः श्वेतौ कृष्णौ राहु शरीश्वरौ॥

धूम्रः के तुगणाश्चैषां वस्त्राण्याभरणानि च। ग्रहवर्णानि गृह्णींयात् गंधं पुष्पं तथैव च॥ *(ग्रहमख पद्धति)*

सूर्य एवं अंगारक लाल रंग के है। बुध एवं गुरु दोनों पीले रंग के हैं। चन्द्र एवं शुक्र सफेद रंग के हैं। राहु एवं शनी काले रंग के हैं। केतु गणों का रंगा धूम्र है। इनके वस्त्र एवं आभारण, गंध एवं पुष्प भी उनके रंग के समान होने चाहिये।

गोधूमास्तण्डुलाश्चैव ह्याढकाः कुद्गकास्तथा। चणकाश्चैव निष्पावाः तिलमाष कुळित्थकाः॥

ग्रहाणां धान्य जातानि कीर्तितानि मनीषिभिः। *(स्मृति संग्रह)*

सूर्य के लिए गेंहु, चन्द्र के लिए चावल, कुज के लिए अरहर दाल, बुध के लिए साबूत मूँग, गुरु के लिए चना, शुक्र के लिए सफेद राजमा, शनि के लिए तिल, राहु के लिए उडद दाल, केतु के लिए कुळित्थ धान्य।

अर्कः पलाशखदिरावंपामार्गोऽथ पिप्लः। उदुंबरः शमी दूर्वा कुशाश्च समिधः स्मृताः॥ *(प्रयोगरत्नाकर)*

सूर्य के लिए अर्क समित्, चन्द्र के लिए पलाश समित्, कुज के लिए खदिर समित्, बुध के लिए अपामार्ग समित्, गृरु के लिए पीपल का समित्, शुक्र के लिए ऊदुम्बर समित्, शनि के लिए शमी समित्, राहु के लिए दूर्वा समित्, केतु के लिए कुशा समित् हैं।

गुडोदनं पायसान्नं संयावं क्षीरपिकम्। दध्योदनं घृतान्नं च कृसरं मांसचित्रितम्॥ *(स्मृति संग्रह)*

सूर्य के लिए गूड का चावल, चन्द्र के लिए खीर, सेवई खीर कुज के लिए, बुध के लिए पेढा, गुरु के लिए दही चावल, शुक्र के लिए घी चावल, शनि के लिए दही चावल, राहु के लिए उडद का चावल, केतु के लिए चित्रा (खिचडी) नैन्नद्य है। धेनुः शंखस्तथाऽनड्वान् हेम वासो हयः क्रकात्। कृष्णागौ रायससीसः एतावै दक्षिणाः क्रमात्॥ सूर्य के लिए गोदान, चन्द्र के लिए शख दान, कुज के लिए बैल, बुध के लिए सोना, गुरु के लिए पीला वस्त्र, शुक्र के लिए घोडा, शनि के लिए कायीगाय, राहु के लिए लोहा एवं केतु के लिए सीसा का दान करें।

संकल्प—देशकालौ संकीर्त्य सर्वेषां महाजनानां जन्मनक्षत्रे जन्मादि द्वादश भावेषु ये ग्रहाः अरिष्टस्थान स्थिताः तेषा ग्रहाणां एकादशफलावाप्त्यर्थ दुःस्थान स्थित ग्रहात् सुस्थान फलावाप्त्यर्थ, सुस्थान स्थित ग्रहात् अतिशय शुभफलावाप्त्यर्थ, महादशा अन्तर्दशा अन्तरन्तरर्दशा सूक्ष्मदशा प्राणदशासु तत्रागत अप मृत्यु व्याळमृत्यु घोरमृत्यु क्षुद्र मृत्यु पैशाच मृत्यु समस्त मृत्यु पीडा परिहारार्थ परैः कृत कारयिष्यमाण मन्त्र तन्त्र विषचूर्णादि अभिचार कृत्रिमादि सर्वोपद्रव शान्त्यर्थ

सर्वाद्भुत शान्तियागाङ्गत्वेन आदित्यादि नवग्रहाराधनं करिष्ये। *(प्रयोगरत्नकार)*

त्दंगत्वेन कलश पूजां करिष्ये। जल पूरित कलश को बायें ओर रख लोवें। कलश को गंध पुष्पादिकों से पूजन करें।

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः। मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥
कुक्षौ तु सागराः सर्वो सप्तद्वीपा वसुंधरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः॥
अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समश्रिताः। अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा॥
आयान्तु कर्म सिद्धयर्थ दुरितक्षयकारकाः। सर्वे समुद्रा सरितः तीर्थानि जलदा नदाः॥
गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिंधु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥
कलशोदकं गृहीत्वा देवताः प्रोक्ष्य, पूजा द्रव्याणि प्रोक्ष्य, आत्मनं प्रोक्षयेत्। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-देवपूजा प्रकरण)*

उस कलश जल से देवताओं को प्रोक्षण करें। पूजा द्रव्यों का एवं अपना भी प्रोक्षण करें।

ईशान्यं शुक्लतण्डुलैः सकर्णिकं अष्टदलं अंबुजं उल्लिख्य कर्णिकायां दलेषु च वर्तुलादि तत् तत् ग्रहपीठानि कुर्यात् यथा मध्ये रक्ताक्षतैः वर्तुलं आदित्याय, आग्नेय दले शुक्लाक्षतैः चतुरस्त्रंसोमाय, दक्षिणदले रक्ताक्षतैः त्रिकोणं मंगलाय ईशान दले हरिताक्षतैः बाणाकारं बुधाय, उत्तरदले पीताक्षतैः दीर्घ उचुरस्त्रं गुरवे, पूर्व दले शुक्लक्षतैः पञ्चकोणं शुक्राय, पश्चिमदलेकृष्णाक्षतैः चापाकारंशनैश्चराय, नैऋत्यदलेकृष्णाक्ष तैः शूर्पाकारं राहवे, वायव्यदले चित्राक्षतैः ध्वजाकारं केतवे इति विलिख्यततः उदीचं रंगवल्लीपक्षे धान्येन कुंभ योग्यं पीठं प्रकल्प्य तत्र नवं औरणं तेजसं मृण्मयं वा अनुलिप्तं अक्षतपुष्पमालाद्यलंकृतं शुभ अभिषेक कुंभं स्थापयेत्। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

ईशान्य दिशा में सफेद चावलों से कर्णिका युक्त अष्टदलपद्य को लिखें। उसके कर्णिका (बीच वाला भाग) एवं दलों में उन उन ग्रहों का पीठ बनायें। जैसे कि लाल क्षतों से बीच में सूर्य का पीठ, आग्नेय दल में सफेद चावलों से चौकाकार पीठ चन्द्र के लिए, दक्षिणदल में लाल अक्षतों से मंगल के त्रिकोणाकार पीठ, ईशान्य ल में हरे अक्षतों से बाणाकार पीठ बुध के लिए, उत्तर दल में पीले चावलों से दीर्घ चौकाकार पीठ गुरु के लिए, पूर्वदल में सफेद अक्षताओं से पञ्च कोण पीठ शुक्र के लिए, पश्चिम दल में काले अक्षतों से धनुष के आकार वाला पीठ शनैश्चर के लिए, नैऋत्य दल में काले अक्षतों से शूर्पाकार पीठ राहु के लिए, वायव्य दल में रंगबिरंगे अक्षतों से ध्वजाकार पीठ केतु के लिए बनायें। इस मण्डल के उत्तर दिशा में रंगोली से बनाये प... के ऊपर धान्य से कलश रखने योग्य पीठ बनाकर, उस पर नया, शुद्ध, मिट्टी का या धातुओं से निर्मित बिना छिद्र के कलश को गंध पुष्पा-क्षतों से अलंकृत कर उस पवित्र अभिषेक कलश को रखें।

पीठ पूजन

ॐगुं गुरुभ्यो नमः। ॐगं गणपतये नमः। ॐआधार शक्त्यै नमः। ॐमूल प्रकृत्यै नमः। ॐआदि कूर्माय नमः। ॐअनंताय नमः। ॐपृथिव्यै नमः। ॐधर्माय नमः। ॐज्ञानाय नमः। ॐवैराग्याय नमः। ॐऐश्वर्याय नमः। ॐअधर्माय नमः। ॐअज्ञानाय नमः। ॐअवैराग्याय नमः। ॐअनैश्वर्याय नमः। ॐसं सत्वाय नमः। ॐरं रजसे नमः। ॐतं तमसे नमः। ॐमं मायायै नमः। ॐविं विद्यायै नमः। ॐपं पद्मायै नमः। ॐअं कर्ममण्डलाय नमः। ॐउं सोममण्डलाय नमः। ॐमं वह्निमण्डलाय नमः। ॐअं आत्मने नमः। ॐउं अंतरात्मने नमः। ॐमं परमात्मने नमः। अं ह्रींज्ञानात्मने नमः। कहकर पीठ का पूजन करें।

ॐ भूमे मातर्नि धेहि मा भद्रया सुप्रतिष्ठितम्। संविदाना दिवा कवे श्रियां मां धेहि भूत्याम् ॥ *(अथर्ववेद १२.१.६३)*

कहकर भूमि की प्रार्थना करें।

ॐ अक्षितास्त उपसदोऽक्षिताः सन्तु राशयः। पृणन्तो अक्षिताः सन्त्वत्तारः सन्त्वक्षिताः ॥ *(अथर्ववेद ६.१४२.३)*

कहकर वस्त्र बिछाकर उस पर धान की राशि फैलाएं।

ॐ एमां कुमारस्तरुण आ वत्सो जगता सह। एमां परिस्रुतः कुम्भ आ दध्नः कलशैरगुः॥ (अथर्ववेद ३.१२.७)

कहकर धान्य राशि पर कलश को रखें।

ॐ अप्सु ते राजन् वरुण गृहो हिरण्ययो मिथः। ततो धृतव्रतो राजा सर्वा धामानि मुञ्चतु॥ (अथर्ववेद ७.८३.१)

कहकर कलश को तीर्थजल से भरें।

पञ्चगव्य क्षेप—

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। (ऋग्वेद ३.६२.१०) कहकर कलश में गोमूत्र डालें।

ॐ गंधद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ (ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

कहकर कलश में गोमय डालें।

ॐ सं सिञ्चामि गवां क्षीरं समाज्येन बलं रसम्। संसिक्ता अस्माकं वीरा ध्रुवा गावो मयि गोपतौ॥ (अथर्ववेद २.२६.४)

कहकर कलश में गाय का दूध डालें।

ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभि नो मुखा करत्प्र ण आयूंषि तारिषत्॥ (अथर्ववेद २०.१३७.३)

कहकर कलश में दहि डालें।

ॐ घृतं ते अग्ने दिव्ये सधस्थे घृतेन त्वां मनुरद्या समिन्धे।

घृतं ते देवीर्नप्त्य१ आ वहन्तु घृतं तुभ्यं दुह्रतां गावो अग्ने ॥ (अथर्ववेद ७.८२.६)

कहकर कलश में घी डालें।

कलश में पञ्चामृत निक्षेप—ॐ सं सिञ्चामि गवां क्षीरं समाज्येन बलं रसम्।
संसिक्ता अस्माकं वीरा ध्रुवा गावो मयि गोपतौ ॥ (अथर्ववेद २.२६.४)

कहकर कलश में दूध डाले।

ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभि नो मुखा करत्प्र ण आयूंषि तारिषत् ॥ (अथर्ववेद २०.१३७.३)

कहकर कलश में दहि डालें।

ॐ घृतं ते अग्ने दिव्ये सधस्थे घृतेन त्वां मनुरद्या समिन्धे।
घृतं ते देवीर्नप्त्य१ आ वहन्तु घृतं तुभ्यं दुह्रतां गावो अग्ने ॥ (अथर्ववेद ७.८२.६)

कहकर कलश में घी डालें।

ॐ मधुमान् भवति मधुमदस्याहार्यं भवति। मधुमतो लोकान् जयति य एवं वेद ॥ (अथर्ववेद ९.१.२३)

कहकर कलश में शहद डालें।

ॐ स्वादोःस्वादीयः स्वादुना सृजा समदः सु मधु मधुनाभि योधीः ॥ (अथर्ववेद ५.२.३)

कहकर कलश में शक्कर डालें। हय, गज, वल्मीक, ह्रद, गोष्ठ, राजद्वार, चतुष्पद, मृदः। (घोडा, हाथी, बल्मीक, खड्डा, गोशला, राजद्वार, चौराहे की मिट्टी)।

ॐ स्योनास्मै भव पृथिव्यनृक्षरा निवेशनी। यच्छास्मै शर्म सप्रथाः॥ (अथर्ववेद १८.२.१९)

कहकर कलश में मिट्टी डालें।

ॐ पर्णोऽसि तनूपानः सयोनिर्वीरो वीरेण मया। संवत्सरस्य तेजसा तेन बध्नामि त्वा मणे॥ (अथर्ववेद ३.५.८)

कहकर वट, पीपल, पलाश, जामून एवं आम के वृक्षों का त्वक् (छिलका) कलश में डालें।

ॐ पुष्पवतीः प्रसूमतीः फलिनीरफला उत। संमातर इव दुह्रामस्मा अरिष्टतातये॥ (अथर्ववेद ८.७.२७)

कहकर कलश में पुष्प फल डालें।

ॐ यद्धिरण्यं सूर्येण सुवर्णं प्रजावन्तो मनवः पूर्व ईषिरे।
तत् त्वा चन्द्रं वर्चसा सं सृजत्यायुष्मान् भवति यो बिभर्ति॥ (अथर्ववेद १९.२६.२)

कहकर कलश में रत्न डालें।

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीमुत द्यां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ (अथर्ववेद ४.२.७)

कहकर कलश में हिरण्य (सिक्का) डालें।

ॐ या बभ्रवो याश्च शुक्रा रोहिणीरुत पृश्नयः। असिक्नीः कृष्णा ओषधीः सर्वा अच्छावदामसि॥ (अथर्ववेद ८.७.१)

कहकर कलश में औषधि डालें।

ॐ गंधद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टांकरीषिणीं। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियं॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

कहकर कलश में चन्दन डालें।

ॐ आयने ते परायणे दूर्वा रोहंतु पुष्पिणीः। उत्सो वा तत्र जायतां ह्रदो वा पुण्डरीकवान्॥ (अथर्ववेद ६.१०६.१)

कहकर कलश में दर्वा डालें।

ॐ पर्णोऽसि तनूपानः सयोनिर्वीरो वीरेण मया। संवत्सरस्य तेजसा तेन बध्नामि त्वा मणे॥ (अथर्ववेद ३.५.८)

कहकर वट, वश्वत्थ, पलाश, जामून एवं आम के वृक्षों के पत्तें से कलश का मुख ढकें। उस पर फल सहित पूर्ण पात्र रखें।

ॐ परि धत्त धत्त नो वर्चसेमं जरामृत्युं कृणुत दीर्घमायुः।
बृहस्पतिः प्रायच्छद् वास एतत् सोमाय राज्ञे परिधातवा उ॥ (अथर्ववेद २.१३.२) कहकर कलश को वस्त्रों से लपेटें।

सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदानदाः। आयांतु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥
गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिंधु कावेरि जलेस्मिन्सन्निधिं कुरु॥ (ब्रह्मकर्म समुच्चय-देवपूजा प्रकरण)

ॐ अप्सु ते राजन् वरुण गृहो हिरण्ययो मिथः। ततो धृतव्रतो राजा सर्वा धामानि मुञ्चतु॥ (अथर्ववेद ७.८३.१)

कहकर कलश में तीर्थों का आवाहन करें। कलश को कुशाओं से छूकर मन्त्र पाठ करें। आपोहिष्ठेति तिसृणामांबरीषः सिंधुद्वीप आपो गायत्री। जपे विनियोगः।

ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे॥ (अथर्ववेद १.५.१)

ॐ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः॥ (अथर्ववेद १.५.२)

ॐ तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः॥ (अथर्ववेद १.५.३)

इन मंत्रों से कलश का अभिमंत्रण करें। अभिमंत्रण मन्त्रों का अर्थ मनन करते हुए देवता को छूकर सान्निध्य की कल्पना करने की क्रिया है। ध्यायामि। ध्यानं समर्पयामि। आवाहयामि। आसनं समर्पयामि। स्वागतम्। पादारविंदयोः पाद्यं पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोः अर्ध्यमर्ध्यं समर्पयामि। पञ्चामृत स्नानं समर्पयामि। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि। वस्त्रं समर्पयामि। आभरणं समर्पयामि। गंधं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि। पुष्पाणि समर्पयामि। धूपमाघ्रापयामि। दीपं दर्शयामि। कदलीफलं निवेदयामि। क्रमुक ताम्बूलं समर्पयामि। मंगल नीराजनं समर्पयामि। मंत्रपुष्पं समर्पयामि। प्रदक्षिणा नकस्कारन् समर्पयामि।। सर्वोपचार पूजां समर्पयामि। अनेन कलशस्थापनेन आदित्यादि नवग्रहाः प्रीयंताम्।

पीठ पर नवग्रहों की स्थापना—गुं गुरुभ्यो नमः। गं गणपतये नमः। आधारशक्त्यै नमः मूल प्रकृत्यै नमः। आदि कूर्माय नमः। अनन्ताय नमः। पृथिव्यै नमः। धर्माय नमः। ज्ञानाय नमः। वैराग्याय नमः। ऐश्वर्याय अधर्माय नमः। अज्ञानाय नमः। अवैराग्याय नमः। अनैश्वर्याय नमः। सं सत्वाय नमः। रं रजसे नमः। तं तमसे नमः।। मं मायायै नमः। विं विद्यायै नमः। पं पद्माय नमः। अं अर्कमण्डलाय नमः। उं सोममण्डलाय नमः। मं वह्निमण्डलाय नमः। अं आत्मने नमः। उं अंतरात्मने नमः। मं परमात्मने नमः।। ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः। पीठपूजां समर्पयामि। (अनुष्ठान पद्धति)

नवग्रह प्रतिमाओं का अग्न्युत्तारण—अग्न्युत्तारणे विनियोगः।

ऊर्ध्वा अस्य समिधो भवन्त्यूर्ध्वा शुक्रा शोचींष्यग्नेः। द्युमत्तमा सुप्रतीकः ससंनुस्तनूनपादसुरो भूरिपाणिः।
देवो देवेषु देवः पथो अनक्ति मध्वा घृतेन।
मध्वा यज्ञं नक्षति प्रैणानो नराशंसो अग्निः सुकृद् देवः सविता विश्ववारः।

अच्छायमेति शवसा घृता चिदीडानो वह्निर्नमसा। अग्निः स्रुचो अध्वरेषु प्रयक्षु स यक्षदस्य महिमानमग्नेः।
तरी मन्द्रासु प्रयक्षु वसवश्चातिष्ठन् वसुधातरश्च। द्वारो देवीरन्वस्य विश्वे व्रतं रक्षन्ति विश्वहा।
उरुव्यचसाऽग्नेर्धाम्ना पत्यमाने। *(अथर्ववेद ५.२७.१-७)*

इन अग्न्युत्तारण सूक्तों से प्रतिमा पर सतत जल धारा करने से प्रतिमा की शुद्धि होती है। पूर्वनिर्मित पीठेषु यथास्थान मुखैः ग्रहप्रतिमाः स्थापयित्वा पहले बनाये गये ग्रहपीठों में स्थान एवं मुख की दिशा को ध्यान में रखकर प्रतिमाओं की स्थापना करें।

तद्दक्षिणवामपार्श्वयोः अधिदेवता प्रत्यधिदेवता प्रतिमे तदभिमुख्यौ स्थापयेत्। प्रतिमानां असंभवे पुष्पाक्षतादिषु देवता आवाहयेत्। ग्रह देवताओं के दायें बायें ग्रहों की ओर देखते हुए अधिदेवता प्रत्यधिदेवता मूर्तियों की स्थापना करें। प्रतिमाओं के अभाव में पुष्प अक्षतों में उनका आवाहन कर पूजन करें। प्रत्येक ग्रह के आवाहन में उस प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित करें। प्रणवस्य परब्रह्म परमात्मा गायत्री व्यस्त समस्त व्यातीनां अत्रि भृगु भरद्वाजप्रजापतयः अग्नि वायु सूर्य प्रजापतयो गाय=युष्णिम् अनुष्टुप् बृहत्यः ग्रहावाहने विनियोगः।

सूर्य देवता आवाहन—कर्णिकायां वर्तुल पीठस्थ गोधूम धान्यस्थ आदित्य प्रतिमायाञ्चादित्यावाहनंकुर्यात्। ॐ पं पद्माय नमः। पीठं संपूज्य।

ॐ उच्चा पतन्तमरुणं सुपर्णं मध्ये दिवस्तरणिं भ्राजमानम्।
पश्याम त्वा सवितारं यमाहुरजस्त्रं ज्योतिर्यदविन्दुदत्रिः॥ *(अथर्ववेद १३.२.३६)*

ॐभूः आदित्यग्रहमावाहयामि। ॐभुवः आदित्यग्रहमावाहयामि। ॐस्वः आदित्य ग्रहमावाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः आदित्यग्रहमावाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि।

भगवन्नादित्य ग्रहाधिपते काश्यपगोत्रकलिंगदेशेश्वर जपापुष्पोपमांगद्युते द्विभुज पद्माभयहस्त सिंदूरवर्णांबरमाल्यानुलेपन ज्वलन्माणिक्यखचित सर्वा गाभ

भास्करतेजोनिधे त्रिलोकप्रकाशकत्रिदेवतामयमूर्ते नमस्ते सन्नद्धारुण ध्वजपताकोप शोभितेन सप्ताश्वरथवाहनेन मेरुं प्रदक्षिणीकुर्वन् आगच्छ अग्निरुद्राभ्यां सह पद्म कर्णिकायां ताम्र प्रतिमां प्राड़मुखीं वर्तुलपीठेऽधितिष्ठपूजार्थं त्वामावा हयामि। कहकर मध्य के कर्णिका में सूर्य देवता का आवाहन करें।

सूर्य के आगे दाहिने ओर अग्नि का आवाहन करें। आदित्य अधिदेवता अगन्यावाहने विनियोगः। ॐभूः अधिदेवता अग्निं आवाहयामि। ॐभुवः अधिदेवता अग्निं आवाहयामि। ॐस्वः अधिदेवता अग्निं आवाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः अधिदेवता अग्निं आवाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि। पिंगश्मश्रुकेशं पिंगाक्षित्रितयं अरुणावर्णागं छागस्थं साक्षसुत्रं सप्तार्चिषं शक्तिधरवरदहस्तद्वयं आदित्याधिदेवतं अग्निं आवाहयामि। सूर्य के आगे बायें ओर रुद्र का आवाहन करें।

ॐभूरादित्यप्रत्यधिदेवं रुद्रमावाहयामि। ॐभुवदादित्यप्रत्यधिदेवं रुद्रमावाहयामि। ॐस्वरादित्यप्रत्यधिदेवं रुद्रमावाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वरादित्यप्रत्यधिदेवं रुद्रमावाहयामि। स्थापयामि। पूजायामि। त्रिलोचनोपेतं पञ्चवक्त्रं वृषारूढं कपालशूल खट्वांगधारिणं चन्द्रमौलिं सदाशिवं आदित्यप्रत्यधिदेवं रुद्रमावाहयामि।

नवशक्ति पूजा—ॐदीप्तायै नमः। ॐसूक्ष्मायै नमः। ॐजयायै नमः।। ॐभद्रायै नमः। ॐविभूत्यै नमः। ॐविमलायै नमः। ॐअमोघायै नमः। ॐविद्युतायै नमः। ॐसर्वतोमुख्यै नमः। ॐनमो भगवते सकलगुणात्मशक्तियुक्ताय अनंताययोगपीठात्मने नमः। सुवर्ण पीठं कल्पयामि। स्वात्मसंस्थमजंशुद्धं त्वामद्य ग्रहनायक। अरणयामिव हव्याशं बिम्बेस्मिन् सन्निधिं कुरु॥ *(अनुष्ठान पद्धति)*

ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः दिवाकरण प्राणा इह प्राणाः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः दिवाकर जीव इह स्थितः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः दिवाकरस्य सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुः श्रोत्र घ्राण प्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा।

वाङ्म॑ आ॒सन् न॒सोः प्रा॒णश्च॒क्षु॑र॒क्ष्णोः श्रोत्रं॒ कर्ण॑योः।
अप॑लिता॒ः केशा॒ अशो॑णा॒ दन्ता॑ ब॒हु बा॒ह्वोर्बल॑म्
ऊ॒र्वोरोजो॒ जङ्घ॑योर्ज॒वः पाद॑योः। प्र॒ति॒ष्ठा अरि॑ष्टानि मे॒ सर्वा॒त्मानि॑भृष्टः॥ *(अथर्ववेद १९.६०.१-२)*

सशक्ति सांगसायुधसवाहन सपरिवार श्री भास्कर भगवन् अत्रैवागच्छागच्छ। आवाहयिष्ये। आवाहितो भव। संस्थापितो भव। सन्निहितो भव। सन्निरुद्धो भव। अवगुण्ठितो भव। अमृतीकृतो भव। व्याप्तो भव। सुप्रसन्नो भव। क्षमस्व। ॐ प्रभाकराय विद्महे दिवाकराय धीमिहि। तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्॥ इसका तीन बार जप करते हुए अर्ध्य देवें।

वेदगर्भ ऋषिः। सविता देवता। गायत्री छन्दः।

ध्यानम्— कालिंगं ग्रहमध्य भागनिलयं प्राचीमुखं वर्तुलं,। रक्तं रक्तविभूषणाध्वजरथच्छत्रश्रियाशेभितम्॥
सप्ताश्वं कमलद्वयान्वितकरं पद्मासनं काश्यपं। मेरोर्दिव्य गिरेः प्रदक्षिणाकरं सेवामहे भास्करम्॥

"ॐ घृणिः सूर्यआदित्यः" इस मूल मंत्र का आठ बार जप करें। ॐ लं पृथिव्यात्मना गंधं कल्पयामि। ॐ हं आकाशत्मना पुष्पं कल्पयामि। ॐ यं वाय्वात्मना धूपं कल्पयामि। ॐ रं अग्न्यात्मना दीपं कल्पयामि। ॐ वं अबात्मना नैवेद्यं कल्पयामि। ॐ पं परमात्मना पञ्चोपचार पूजां समर्पयामि।

प्रार्थना— दिवाकरं दीप्तसहस्त्ररश्मिं तेजोमयं जगतः कर्मसाक्षिं। अंशु भानुं सूर्यमाद्यं ग्रहाणां रविंसदा शरणमहं प्रपद्ये॥

(नवग्रह पूजाविधान-सूर्य पूजा प्रकरणम्)

पद्मासनः पद्मकरः पद्मगर्भ समद्युतिः। सप्ताश्वः सप्तरज्जुश्च द्विभुजः 'स्यात् सदा रविः॥ *(स्मृति संग्रह)*
जपा कुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिं। ध्वांतारिं सर्वपापघ्नं प्रणतोस्मि दिवाकरम्॥

ॐ आदित्याय नमः। ॐ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित आदित्य पूजां समर्पयामि।

चन्द्र देवता आवाहन—आग्नेय दले चतुरस्रपीठस्य तण्डुलधान्योपरि चन्द्र प्रतिमायां चन्द्र देवता आवाहनं कुर्यात्। पं पद्माय नमः। पीठं संपूज्य।

ॐ सुतासो मधुमत्तमाः सोमा इन्द्राय मन्दिनः। पवित्रवन्तो अक्षरन्देवानाच्छन्तु वो मदाः॥ *(अथर्ववेद २०.१३७.४)*

ॐभूः चन्द्राग्रहमावाहयामि। ॐभुवः चन्द्राग्रहमावाहयामि। ॐस्वः चन्द्रग्रहमावाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः चन्द्र ग्रहमावाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि। भगवान् सोम द्विजाधिपते सुधामयशरीर अत्रिगोत्र यामुनदेशेश्वर गोक्षीरधवलांगकांते द्विभुजगदावरदानांकिंतकर शुक्लांबर माल्यानुलेपनसर्वाग मुक्तौमौकिकाभरण रमणीय समस्तलोकाप्यायनक देवतास्वाद्यमूर्ते नमस्ते सन्नद्धधवलध्वज पताकोपशोभितेन दशश्वेताश्वरथवाहनेन मेरुं प्रदक्षिणी कुर्वन्नागच्छाद्भिरुमया च सहपश्चाग्नेय दल मध्ये स्फाटिक प्रतिमां प्रत्यङ्मुखीं चतुरस्त्रपीठेऽधितिष्ठ पूजार्थं त्वामावाहयामि। चन्द्र के आगे दाहिने ओर अपः का आवाहन करें।

ॐभूः सोमाधिदेवता अपः आवाहयामि। ॐभुवः सोमाधिदेवता अपः आवाहयामि। ॐस्वः सोमाधिदेवता अपः आवाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः सोमाधिदेवता अपः आवाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि। स्त्रीरूपधारिणीः श्वेतवर्णामकरवाहनाः पाशकलश धरिणीर्कुक्ताभरण भूषिताः सोमाधिदेवता अपः अवाहयामि। चन्द्र देवता के आगे बायें ओर गौरी का आवाहन करें।

ॐभूः सोमप्रत्यधिदेवतां गौरीं आवाहयामि। ॐभुवः सोमप्रत्यधिदेवतां गौरीं आवाहयामि। ॐस्वः सोमप्रत्यधिदेवतां गौरीं अवाहयामि। ॐभू र्भुवः स्वः सोमप्रत्यधिदेवतां गौरीं आवाहयामि। स्थापयामि। पूजायामि। अक्षसूत्र कमल दर्पण कमण्डलुधारिणीं त्रिदशपूजितां सोमप्रत्यधि देवतां गौरीं आवाहयामि।

नव शक्ति पूजा

ॐराकायै नमः। ॐकुमुद्वत्यै नमः। ॐनंदायै नमः। ॐसंध्यायै नमः। ॐसंजीविन्यै नमः। ॐक्षमायै नमः। ॐज्योत्स्नायै नमः। ॐनित्यायै नमः। ॐप्रभायै नमः। ॐनमो भगवते सकलगुणात्म शक्तियुक्ताय अनंत योग पीठात्मे नमः। सुवर्ण पीठ कल्पयामि। स्वत्मसंस्थमजं शुद्धं त्वामद्य कुमुदाधिप अरण्यामिव हव्याशं बिम्बेस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः चन्द्र प्राण इह प्राणः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः चन्द्र जीव इह स्थितः। ॐआं ह्रीं क्रों

य र ल व श ष स हों सं हं सः चन्द्रस्य सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुः श्रोत्रघ्राणप्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा।

वाङ्म आसन् नसोः प्राणश्चक्षुरक्ष्णोः श्रोत्रं कर्णयोः।
अपलिताः केशा अशोणा दन्ता बहु बाह्वोर्बलम्
ऊर्वोरोजो जङ्घयोर्जवः पादयोः। प्रतिष्ठा अरिष्टानि मे सर्वात्मानिभृष्टः॥ (अथर्ववेद १९.६०.१-२)

सशक्ति सांगसायुधसवाहन सपरिवार श्री चन्द्र भगवान् अत्रैवागच्छागच्छ आवाहयिष्ये। आवाहितो भव संस्थापितो भव। सन्निहितो भव। सन्निरुद्धो भव। अवगुण्डितो भव। अमृतीकृतो भ। व्याप्तो भव। सुप्रसन्नो भव। क्षमस्व। ॐ **अत्रिपुत्राय विद्महे अमृतोद्भवाय धीमहि। तन्नः सोमः प्रचोदयात्**। इसका तीन बार जप करते हुए अर्घ्य देवें।

ध्यानं— **आत्रेयं यमुनाप्रभुं ग्रहगणस्याग्नेय भागस्थितं। श्वेतं श्वेतसुगंधमाल्यवसनं श्वेतांबुजोद्यत् करं।**
श्वेतच्छत्रविभूषणं ध्वजरथच्छत्रश्रिया शोभितं। मेरोर्दिव्यगिरेः प्रदक्षिणाकरं सेवामहे शीतलम्म्।

(नवग्रह पूजाविधान-चन्द्रपूजा प्रकरणम्)

ॐ चं चंद्राय नमः "इति मूल मंत्र का आठ बार जप करें। ॐ लं पृथिव्यात्मना गंध कल्पयामि। ॐ हं आकाशत्मना पुष्पं कल्पयामि। ॐ यं वाय्वात्मना धूपं कल्पयामि। ॐ रं गग्न्यात्मना दीपं कल्पयामि। ॐ वं अबात्मना नैवेद्यं कल्पयामि। ॐ पं परमात्मना पञ्चोपचार पूजां समर्पयामि।

प्रार्थना— **यः कालहेतोः क्षयवृद्धिमेति यंदेवताः पितरः संपिबन्ति। तं वै वरेण्यं सुरसंघवंद्यं सोमं सदा शरणमहं प्रपद्ये।**
श्वेतः श्वेताम्बरधरो दशश्वः श्वेतभूषणः। गदापाणिर्द्विबाहुश्च स्मर्तव्यो वरदः शशी॥

श्वेतं श्वेतांबरधरं दशाश्वं श्वेतभूषणम्। द्विभंजं साभ्यगद मात्रेयं सामृतं विभुम्॥
दिव्यशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसंभवम्। नमामि शशिनं भक्त्या शंभोर्मुकुटभूषणम्॥
ॐ सोमाय नमः। अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित चन्द्र पूजां समर्पयामि। *(नवग्रह पूजाविधान-चन्द्रपूजा प्रकरणम्)*

अंगारक देवता आवाहन—दक्षिणदले त्रिकोणपीठोपरि आढक राशौ रक्त चन्दन प्रतिमायां अंगारकावाहनं कुर्यात् ॐपं पद्माय नमः। पीठं संपूज्य।

ॐ अग्निर्वासाः पृथिव्यं सितज्ञूस्त्विषीमन्तं संशितं मा कृण्णोतु॥ *(अथर्ववेद १२.१.२१)*

ॐभूः अंगारक ग्रहमावाहयामि। ॐभुवः अंगारक ग्रहमावाहयामि। ॐस्वः अंगारक ग्रहमावाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः अंगारकग्रहमावाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि।

भगवन्नंगारक अग्न्याकृते भारद्वाजगोत्र अवंति देशेश्वर ज्वालापुंजोपमांगद्युते चतुर्भुज शक्तिशूलगदाखड्गधारिन् रक्तांबर माल्यानुलेपोपमांगद्युते रक्तांबर माल्यानुलेपनप्रवालभूषिताभरण सर्वागदुर्धरालोकदीप्तेनमस्ते सन्नद्धरक्त घ्वज पताकोपशोभितेन रक्तमेषरथवाहनेन मेरुं प्रदक्षिणी कुर्वन्नागच्छ भूमिस्कंदाभ्यां सहपद्मदक्षिणदलमध्ये रक्तचंदन प्रतिमां दक्षिणामुखीं त्रिकोणपीठेऽधितिष्ठ पूजार्थं त्वां आवाहयामि। अंगारक के आगे दाहिने ओर भूमि का आवाहन करें।

ॐभूरंगारकाधिदेवतांभूमिमावाहामि। ॐभुवोंगारकाधिदेवतां भूमिमावाहयामि। ॐस्वरंगारकाधिदेवतां भूमिमावाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वरंगारकाधिदेवतां भूमिमावाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि। शुक्लवर्णां दिव्याभरणभूषितां चतुर्भुजां सौम्य वपुषं चण्डांशुसदृशां बरां रत्नात्र सस्यपात्रौषधिपात्रपद्मोपेत करां चतुर्दिग्भागपृष्टगतां अंगारकाधिदेवतां भूमिमावाहयामि। अंगारक के आगे बायें ओर स्कन्द का आवाहन करें।

ॐभूरंगारकप्रत्यधिदेवतां स्कंदमावाहयामि। ॐभुवोऽगारक प्रत्यधिदेवतां स्कंदमावाहयमि। ॐस्वरंगारक प्रत्यधिदेवतां स्कंदमावाहयामि। भू भुर्वः स्वरंगारक

प्रत्यधिदेवतां स्कंदमावाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि। षष्मुखं शिखरण्डक विभूषणं रक्तांबरधरं मयूरयान कुक्कुट घंटा पताका शक्त्युपेतं चक्षुर्भुजं अंगारक प्रत्यधिदेवं स्कंद मावाहयामि।

नवशक्ति पूजा—ॐ रोहितायै नमः। ॐ ज्वालिन्यै नमः। ॐ रौद्रयै नमः। ॐ तीक्ष्णायै नमः। ॐ सूक्ष्मायै नमः। ॐ जयायै नमः। ॐ क्षुधायै नमः। ॐ सारायै नमः। ॐ निर्मलायै नमः। ॐ नमो भगवते सकलगुणात्मशक्तियुक्ताय अनन्ताय योग पीठात्मने नमः। सुवर्ण पीठं कल्पयामि। स्वात्मसंस्थमजं शुद्धं त्वामद्य भूमिनन्दन। अरण्यामिव हव्याशं बिम्बेस्मिन् सन्निधिं कुरु॥ ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः अंगारक प्राणा इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः अंगारक जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः अंगारकस्य सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुश्रोत्रघ्राणप्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा।

वाङ्म॑ आ॒सन् न॒सोः प्रा॒णश्च॒क्षु॑र॒क्ष्णोः श्रोत्रं॒ कर्ण॑योः।
अप॑लिता॒ः केशा॒ अशो॑णा॒ दन्ता॒ ब॒हु बा॒ह्वोर्बलम्
ऊ॒र्वोरोजो॒ जङ्घ॑योर्ज॒वः पाद॑योः। प्र॒ति॒ष्ठा अरि॑ष्टानि मे॒ सर्वा॒त्मानि॑भृष्टः॥ *(अथर्ववेद १९.६०.१-२)*

स शक्ति सांग सयुध सवाहन सपरिवार श्री अंगारक भगवन् अत्रैवागच्छागच्छ। आवाहयिष्ये। आवाहितो भव। संस्थापितो भव। अमृतीकृतो भव। सन्निरुद्धो भव। अवगुण्ठितो भव। अमृतीकृतो भव। व्याप्तो भव। सुप्रसन्नो भव। क्षमस्व। **ॐ भूमि॒पुत्राय॑ वि॒द्महे॑ भारद्वाजाय॑ धीमहि। तन्नः कुजः प्रचो॒दयात्।** इसको तीन बार जपते हुए अर्घ्य देवें।

ध्यानम्— विंध्येशं ग्रहदक्षिणाप्रतिमुखं रक्तं त्रिकोणाकृतिं। दोर्भिः स्वीकृत शक्तिशूल सुगदं चारूढमेषाधिपं॥
भारद्वाजमुपेत रक्तवसनं छत्रश्रियाशोभितं।

मेरोर्दिव्यगिरेः प्रदक्षिणाकरं सेवामहे तं कुजम् ॥ *(नवग्रह पूजाविधान-अंगारक पूजा प्रकरणम्)*

ॐ अं अंगारकाय नमः। इस मूल मंत्र का आठ बार जप करें। ॐ लं पृथिव्यात्मना गंधं कल्पयामि। ॐ हं आकाशात्मना पुष्पं कल्पयामि। ॐ यं वाय्वात्मना धूपं कल्पयामि। ॐ रं अग्न्यात्मना दीपं कल्पयामि। ॐ वं अबात्मना नैवेद्यं कल्पयामि। ॐ पं परमात्मना सर्वोपचार पूजां समर्पयामि।

प्रार्थना—महेश्वरस्यानन स्वेदबिन्दोर्भूमौ जातं रक्तमाल्ल्याम्बराड्यं।

सुरश्मिनं लोहिताङ्ग कुमारं अंगारकं सदा शरणमहं प्रपद्ये ॥

रक्त माल्यांबरधरः शक्तिशूल गदाधरः। चतर्भुजो मेषगमो भारद्वाजो धरासुतः ॥

रक्तस्त्रगंबरालेपं गदाशक्त्यसिशूलिनं। चतुर्भजं मेषगमं भारद्वाजं धरासुतम् ॥

धरणीगर्भसंभूतं विद्युत्काञ्चनसन्निभम्। कुमारं शक्तिहस्तं च मंगलं प्रणमाम्यहम् ॥

ॐ अंगारकाय नमः। अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित अंगारक पूजां समर्पयामि।

बुध देवता आवाहनम्—ईशान्यदले बाणाकार पीठे मुद्गधान्ये बुध प्रतिमायां बुधावाहनं कुर्यात्। ॐ पं पद्माय नमः। पीठं संपूज्य।

ॐ कपृन्नरः कपृथमुद्दधातन चोदयंत खुदत वाजंसातये।

निष्टिग्र्यः पुत्रमा च्यांवयोतय इन्द्रं सबाधं इह सोमंपतये ॥ *(अथर्ववेद २०.१३७.२)*

ॐ भूः बुध ग्रहमावाहयामि। ॐ भुवः बुध ग्रहमावाहयामि। ॐ स्वः बुध ग्रहमावाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः बुध ग्रहमावाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि। भगवन्सौम्यसौम्याकृते सर्वज्ञानमय अत्रिगोत्र मगधदेशेश्वर कुंकुमवर्णोपमांगद्युते चतुर्भुज खङ्गखेटकगदावरदानांकित पीतांबरमाल्यानुलेपन मरकताभरणालंकृत सर्वाङ्गविबुधपते नमस्ते सन्नद्ध पीतध्वजपताकोपशोभितेन चतुः सिहस्थवाहनेन मेरुं प्रदक्षिणी कुर्वन्नागच्छ विष्णुपुरुषाभ्यां सहैशान दलमध्ये सुवर्णप्रतिमां

उदङ्मुखीं बाणाकार पीठेधितिष्ठ पूजार्थ त्वां आवाहयामि। बुध के आगे दाहिने ओर अधिदेवता विष्णु का आवाहन करें।

ॐभूः बुध अधिदेवतां विष्णुं आवाहयामि। ॐभुवः बुध अधिदेवतां विष्णुं आवाहयामि। ॐस्वः बुध अधिदेवतां विष्णुं आवाहयामि। ॐभूभुवः स्वः बुध अधिदेवतां विष्णुं आवाहयामि। स्थापयामि पूजयामि। कौमोदकी पद्मशंख चक्रोपेतं चतुर्भुजं सौम्याधिदेवं विष्णुमावाहयामि। बुध के आगे बायें ओर पुरुष का आवाहन करें।

ॐभूर्बुधप्रत्यधिदेवं पुरुषमावाहयामि। ॐभुवर्बुधप्रत्यधिदेवं पुरुषमावाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वर्बुधप्रत्यधिदेवं पुरुष्मावाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि। कौमोद कीपद्मशंखचक्रोपेतं चतुर्भुजं सौम्यप्रत्यधि देवं पुरुषमावाहयामि।

नवशक्ति पूजा— ॐचंद्रिकायै नमः। ॐकौमुद्यै नमः। ॐज्योत्स्नयै नमः। ॐसंध्यायै नमः। ॐविद्यायै नमः। ॐसरस्वत्यै नमः। ॐमेधायै नमः। ॐप्रज्ञायै नमः। ॐप्रभायै नमः। ॐनमो भगवते सकलगुणात्मशक्तियुक्ताय अनंताययोगपीठात्मने नमः। सुवर्णपीठं कल्पयामि। स्वात्मसंस्थमजं शुद्धं त्वामद्येन्दुसुत्तोत्तम। अरण्यामिव हव्याशं बिम्बेस्मिन् सन्निधिं कुरु॥ ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः बुध प्राण इह प्राणाः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः बुध जीव इह स्थितः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः बुधस्य सर्वेन्द्रियाणि बाङ्मनः चक्षुः श्रोत्र घ्राणप्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

वाङ्म॑ आ॒सन् न॒सोः प्रा॒णश्चक्षु॑र॒क्ष्णोः श्रोत्रं॒ कर्णयोः।
अप॑लिता॒: केशा॒ अशो॑णा॒ दन्ता॑ ब॒हु बा॒ह्वोर्बलम्
ऊ॒र्वोरोजो॒ जङ्घ॑योर्ज॒वः पाद॑योः। प्र॒तिष्ठा अरि॑ष्टानि मे॒ सर्वा॒त्मानि॑भृष्टः॥ *(अथर्ववेद १९.६०.१-२)*

स शक्ति सांग सायुध सवाहनसपरिवार श्री बुध भगवान् अत्रैवागच्छागच्छ। आवाहयिष्ये। आवाहितो भव। संस्थापितो भव। सन्निहितो भव। सन्निरुद्धो

भव। अवगुण्डितो भव। अमृतीकृतो भव। व्याप्तो भव। सुप्रसन्नो भव। ॐ **तारासुताय विद्महे। सोमपुत्राय धीमहि। तन्नो बुधः प्रचोदयात्।** इसका तीन बार जप करते हुए अर्घ्य देवें।

ध्यानम्— आत्रेयं मगधाधिपं ग्रहगणस्येशानभागस्थितं बाणाकारमुदङ्मुखं कर लसत् तोणीर बाणासनम्।
पीतस्त्रग्वसन द्वयध्वजरथ छत्रश्रिया शोभितं मेरोर्दिव्यगिरेः प्रदक्षिणाकरं सेवामहे तं बुधम्॥

ॐ बुं बुधाय नमः। इस मन्त्र का आठ बार जप करें। ॐ लं पृथिव्यात्मना गंधं कल्पयामि। ॐ अं आकाशात्मना पुष्पं कल्पयामि। ॐ यं वाय्वात्मना धूपं कल्पयामि। ॐ रं अग्न्यात्मना दीपं कल्पयामि। ॐ वं अबात्मना नैवेद्यं कल्पयामि। ॐ पं परमात्मना पञ्चोपचार पूजां समर्पयामि।

प्रार्थना— विशुद्धबुद्धिं श्रुतिकालबोधं सत्यावाचं सोमवंशप्रदीपम्। सुवर्चसं छन्दसो विश्वरूपं बुधं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥
पीतमाल्यांबरधरः कर्णिकार समुद्युतिः। खड्गचर्म गदापाणिः सिंहस्थो वरदो बुधः॥
पीतमाल्यांबरधरं कर्णिकार समद्युतिम्। खड्गचर्मगदापाणिमात्रेयं सिंहगं बुधम्॥
प्रियंगुकलिकाभासं रूपेणाप्रतिमं बुधम्। सौम्यं सौम्युणोपेतं नमानि शशिनन्दनम्॥ *(नवग्रह पूजाविधान-बुध पूजा प्रकरणम्)*

ॐ बुधाय नमः। अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित बुध पूजां समर्पयामि।

बृहस्पति देवता आवाहन—उत्तरदले दीर्घ चतुरस्रपीठे चणकराशिस्थ बृहस्पति प्रतिमायां बृहस्पत्यावाहनं कुर्यात्। ॐ पं पद्माय नमः। पीठं संपूज्य।

ॐ बृहस्पतिर्नः परि पातु पश्चादुतोत्तरस्मादधरादघायोः।
इन्द्रः पुरस्तादुत मध्यतो नः सखा सखिभ्यो वरीयः कृणोतु॥ *(अथर्ववेद ७.५१.१)*

ॐभूः बृहस्पति ग्रहमावाहयामि। ॐभुवः बृहस्पति ग्रहमावाहयामि। ॐस्वः बृहस्पति ग्रहमावाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः बृहस्पति ग्रहमावाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि।

भगवन् बृहस्पे समस्तदेवताचार्य आंगिरस गोत्र सिंधुदेशेश्वर तप्तसुवर्णसदृशांगदीप्ते चतुर्भुज दण्ड कमण्डल्वक्षसूत्र वरदानांकित पीतांबर माल्यानुलेपन पुष्परागमयाभरणरमणीय सर्वविद्याधिपते नमस्ते सन्द्धपीत ध्वजपताकोपशोभितेन पीताश्वरथवाहनेन मेरुं प्रदक्षिणीकुर्वन्नागच्छेन्द्र ब्रह्मभ्यां सह पद्मोत्तर दलमध्ये सुवर्णप्रतिमामुदङ्मुखीं दीर्घ चतुरस्त्र पीठेऽधितिष्ठ पूजार्थं त्वामावाहयामि। बृहस्पति के आगे दाहिने ओर इन्द्र का आवाहन करें।

ॐभूः बृहस्पति अधिदेवतां इन्द्रमावाहयामि। ॐभुवः बृहस्पति अधिदेवतां इन्द्रमावाहयामि। ॐस्वः बृहस्पति अधिदेवतां इन्द्रमावाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः बृहस्पति अधिदेवतां इन्द्रं आवाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि। चतुर्दन्तं गजारूढं बज्रांकुशधरं शचीपतिं नानाभ्रणभूषितं बृहस्पत्यधि देवं इन्दं आवाहयामि। बृहस्पति के आगे बायें ओर ब्रह्मा का आवाहन करें।

ॐभूः बृहस्पति प्रत्यधिदेवतां ब्रह्माणमावाहयामि। ॐभुवः बृहस्पति प्रत्यधिदेवतां ब्रह्माणमावाहयामि। ॐस्वः बृहस्पति प्रत्यधिदेवतां ब्रह्माणमावाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः बृहस्पति प्रत्यधिदेवतां ब्रह्माणमावाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि। पद्मासनस्थं जटिलं चतुर्मुखं अक्षमाला स्रुव पुस्तक कमण्डलु धारिणं कृष्णाजिन वाससं पार्श्वस्थित हंसं बृहस्पति प्रत्यधिदेवं ब्रह्माणं आवाहयामि।

नव शक्ति पूजा—ॐधृत्यै नमः। ॐकांत्यै नमः। ॐदयायै नमः। ॐमेधयै नमः। ॐप्रज्ञायै नमः। ॐविद्यायै नमः। ॐयशस्विन्यै नमः। ॐस्थिरायै नमः। ॐसुप्रभायै नमः। ॐनमो भगवते सकलगुणात्मशक्तियुक्ताय अनंताय योग पीठात्मने नमः। सुवर्ण पीठं कल्पयामि।

स्वात्मसंस्थमजं शुद्धं त्वामद्य सुरपूजित। अरण्यामिव हव्याशं बिम्बेस्मिन् सन्निधिं कुरू॥

ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः बृहस्पति प्राणा इह प्राणाः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः बृहस्पति जीव इह स्थितः। ॐआं

ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः बृहस्पतेः सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुः श्रोत्रघ्राण प्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा।

वाङ्मं आसन् नसोः प्राणश्चक्षुरक्ष्णोः श्रोत्रं कर्णयोः।
अपलिताः केशा अशोणा दन्ता बहु बाह्वोर्बलम्
ऊर्वोरोजो जङ्घयोर्जवः पादयोः। प्रतिष्ठा अरिष्टानि मे सर्वात्मानिभृष्टः॥ *(अथर्ववेद १६.६०.१-२)*

सशक्ति साङ्गं सायुधसवाहन सपरिवार श्री बृहस्पति भगवान् अत्रैवागच्छागच्छ। आवाहयिष्ये। आवाहितो भव। संस्थापितो भव। सन्निहितो भव। सन्निरुद्धो भव। अवगुण्ठितो भव। अमृतीकृतो भव। व्याप्तो भव। सुप्रसन्नो भव। ॐ **देवाचार्याय विद्महे। वाचस्पत्याय धीमहि। तन्नो गुरुः प्रचोदयात्।** इसका तीन बार जप करते हुए अर्घ्य देवें।

ध्यानम्—सिंधूनामधिपं ग्रहोत्तरगतं दीर्घं चतुष्कोणगम्, प्राप्तं मण्डलमङ्गिरान्वयभुवं दण्डं दधानं करे।
सौवर्णं ध्वजवस्त्र भूषणरथछत्र श्रिया शोभितं, मेरोर्दिव्यगिरेः प्रदक्षिणाकरं सेवामहे वाक्पतिम्॥

ॐ बृं बृहस्पतये नमः। इस मूल मंत्र का आठ बार जप करें। ॐ लं पृथिव्यात्मना गंधं कल्पयामि। ॐ हं आकाशात्मना पुष्पं कल्पयामि। ॐ यं वाय्वात्मना धूपं कल्पयामि। ॐ रं अग्न्यात्मना दीपं कल्पयामि। ॐ वं अबात्मना नैवेद्यं कल्पयामि। ॐ पं परमात्मना पञ्चोपचार पूजां समर्पयामि।

प्रार्थना— बुध्यासमो यस्य न कश्चिदन्यो मतिं देवा उपजीवन्ति यस्य। प्रजापतेरात्मजं धर्मनित्यं गुरुं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥
देवदैत्य गुरुश्चैव पीतः साक्षात् चतुर्भुजः। दण्डी च वरदश्चैव साक्षसूत्रकमण्डलुः॥
आङ्गिरसं देवगुरुं पीतस्त्रग्गन्धवस्त्रकम्। दण्डिनं वरदं पीतं साक्षसूत्रकमण्डलुम्॥
देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चनसन्निभम्। वन्ध्यं च त्रिषु लोकेषु प्रणमामि बृहस्पतिम्॥ *(नवग्रह पूजा विधान-बृहस्पति पूजा प्रकरणम्)*

ॐ बृहस्पतये नमः। अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित बृहस्पति पूजां समर्पयामि।

शुक्र देवता आवाहन—पूर्वदले पञ्चकोण पीठस्थ निष्पावधान्यस्थ शुक्र प्रतिमायां शुक्रावाहनं कुर्यात्। ॐ पं. पद्माय नमः। पीठं संपूज्य।

ॐ द्यौश्चं म इदं पृंथिवी च प्रचेंतसौ शुक्रो बृहन् दक्षिंणाया पिपर्तु।
अनुं स्वधा चिंकितां सोमों अग्निर्वायुर्नः पातु सविता भगंश्च॥ (अथर्ववेद ६.५३.१)

ॐ भूः शुक्रग्रहमावाहयामि। ॐ भुवः शुक्रग्रहमावाहयामि। ॐ स्वः शुक्रग्रहमावाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः शुक्रग्रहमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। भगवन् भार्गव समस्य दैत्यगुरो भार्गव गोत्र भोजकट देशेश्वर रजतोज्वलाङ्गकांते चतुर्भुज दण्ड कमण्डल्वक्ष सूत्र वरदानांकित शुक्लांबरमाल्यानुलेपन वज्राभरण भूषित सर्वाङ्गसमस्त नीतिशास्त्र निपुणमते नमस्ते सन्नद्धशुक्लध्वज पताकोपशोभितेन शुक्लाश्व सहितेन रथेन मेरुं प्रदक्षिणीकुर्वन्नागच्छेन्द्राणींद्राभ्यां सह पूर्वदलमध्ये रजतप्रतिमां प्राङ्मुखीं पञ्चकोणपीठेऽधितिष्ठ पूजार्थं त्वां आवाहयामि। कहकर शुक्र का आवाहन करें। शुक्र के आगे दाहिने ओर इंद्राणी का आवाहन करें।

ॐ भूः शुक्राधिदेवतां इंद्राणीमावाहयामि। ॐ भुवः शुक्राधिदेवतां इंद्राणीमावाहयामि। ॐ स्वः शुक्रधिदेवतां इंद्राणीमावाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः शुक्राधिदेवतां इंद्राणीमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। ॐ संतानमंजरीवरदानधर द्विभुजांशुक्राधिदेवतां इंद्राणीं आवाहयामि। शुक्र के आगे बायें ओर इन्द्र का आवाहन करें।

ॐ भूः शुक्र प्रत्यधिदेवतां इन्द्रं आवाहयामि। ॐ भुवः शुक्र प्रत्यधिदेवतां इन्द्रं आवाहयामि। ॐ स्वः शुक्र प्रत्यधिदेवतां इन्द्रं आवाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः शुक्र प्रत्यधिदेवतां इन्द्रं आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। चतुर्दन्तगजारूढं वज्रांकुशधरं शचीपतिं नानाभरणभूषितं भार्गव प्रत्यधिदेवं इन्द्रं आवाहयामि।

नव शक्ति पूजा—ॐ शान्तायै नमः। ॐ नन्दायै नमः। ॐ स्मृत्यै नमः। ॐ कांत्यै नमः। ॐ लक्ष्म्यै नमः। ॐ प्रीत्यै नमः। ॐ कलायै नमः। ॐ अमलायै

नमः। ॐसर्वसंपत्कार्यै नमः। ॐनमो भगवते सकलगुणात्मशक्तियुक्ताय अनंतायोगपीठात्मने नमः। सुवर्णपीठं कल्पयामि। स्वात्मसंस्थमजं शुद्धं त्वामद्यासुरपूजित। अरण्यामिव हव्याशं बिम्बेस्मिन् सन्निधिं कुरु॥ ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः शुक्र प्राण इह प्राणः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः शुक्र जीव इह स्थितः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः शुक्रस्य सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुश्रोत्रघ्राणप्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा।

वाङ्म॑ आ॒सन् न॒सोः प्रा॒णश्चक्षु॑र॒क्ष्णोः श्रोत्रं॒ कर्ण॑योः।

अप॑लिताः केशा॒ अशो॑णा॒ दन्ता॑ ब॒हु बा॒ह्वोर्बल॑म्

ऊ॒र्वोरोजो॒ जङ्घ॑योर्ज॒वः पाद॑योः। प्रति॒ष्ठा अरि॑ष्टानि मे॒ सर्वा॒त्मानि॑भृष्टः॥ *(अथर्ववेद १९.६०.१-२)*

सशक्ति साङ्ग सायुध सवाहन सपरिवार श्री शुक्र भगवान् अत्रैवागच्छागच्छ। आवाहयिष्ये। आवाहितो भव। संस्थापितो भव। सन्निहितो भव। सन्निरुद्धो भव। अवगुण्ठितो भव। अमृतीकृतो भव। व्याप्तो भव। सुप्रसन्नो भव। क्षस्व। **ॐ दै॒त्या॒चा॒र्याय॑ वि॒द्महे॑ विद्यारू॒पाय॑ धीमहि। तन्नः शुक्रः प्रचो॒दया॑त्॥**
इसका तीन बार जप कर अर्घ्य देवें।

ध्यानम्—भोजेशं भृगुगोत्रजं ग्रहगणप्राचीन भागस्थितं, पञ्चश्रोज्वलमण्डलं करयुगे दण्डं च सत्कुंडिकाम्॥
बिभ्राणं सितवस्त्रभूषणरथच्छत्रश्रिया शोभितं, मेरोर्दिव्यगिरेः प्रदक्षिणाकरं सेवामहे भार्गवम्॥

(नवग्रह पूजा विधान-शुक्र पूजा प्रकरणम्)

ॐ शुं शुक्राय नमः। इस मूलमंत्र का आठ बार जप करें। ॐलं पृथिव्यात्मना गंधं कल्पयामि। ॐहं आकाशात्मना पुष्पं कल्पयामि। ॐआकाशात्मना

पुष्पं कल्पयामि। ॐयं वाय्वात्मना धूपं कल्पयामि। ॐरं अग्न्यात्मना दीपं कल्पयामि। ॐवं अबात्मना नैवेद्यं कल्पयामि। ॐपं परमात्मना पञ्चोपचारपूजां समर्पयामि।

प्रार्थना—वर्षप्रदं चिंतितार्थानुकूलं मौनाद्विशिष्टं विनयोपपन्नम्। तं भार्गवं योग विशुद्धसत्वं शुक्रं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥
शुक्रं शुक्रतनुं श्वेत वस्त्राढ्यं दैत्यमंत्रिणम्। भार्गवं दण्डवरदं कमण्डल्वक्षसूत्रिणम्॥
हिमकुन्द मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्। सर्वशास्त्र प्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्॥

ॐशुक्राय नमः अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित शुक्रपूजां समर्पयामि।

शनैश्चर देवता आवाहन—मण्डलस्य पश्चिम दले धनुराकारपीठे तिलधान्यस्थ शनैश्चर प्रतिमायां शनैश्चरावाहनं कुर्यात्। ॐपं पद्माय नमः। पीठं संपूज्य।

ॐ शं नो॒ वातो॑ वातु॒ शं न॑स्तपतु॒ सूर्यः॑। अहा॑नि॒ शं भ॑वन्तु न॒ः शं रात्री॒ प्रति॑ धीयतां॒ शमु॒षा नो॒ व्यु॑च्छतु॒॥ (अथर्ववेद ७.६९.१)

ॐभूः शनैश्चर ग्रहमावाहयामि। ॐभुवः शनैश्चर ग्रहमावाहयामि। ॐस्वः शनैश्चर ग्रहमावाहयामि। ॐभू भुर्वः स्वः शनैश्चर ग्रहमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

भगवन् शनैश्चर भास्कर तनय काश्यप गोत्र सौराष्ट्र देशेश्वर कज्जल समानाङ्ग कांते चतुर्भुज चाप-तूणीर-कृपाणाभ्यांकित नीलांबर माल्यानुलेपन नीलरत्न भूषणालंकृतसर्वांग समस्त भुवन भीषणामर्षमूर्ते नमस्ते सन्नद्ध नीलध्वजपताकोपशोभितेन नील गृध्ररथवाहनेन मेरुं प्रदक्षिणी कुर्वन्नागच्छ प्रजापति यमाभ्यां सह पश्चिम दलामध्ये कालायस प्रतिमां प्रत्यङ्मुखीं चापाकर पीठेऽधितिष्ठ पूजार्थ त्वां आवाहयामि। शनैश्चर के आगे दाहिने ओर प्रजापति का आवाहन करें।

ॐभूः शनैश्चराधिदेवतां प्रजापतिं आवाहयामि। ॐभुवः शनैश्चराधिदेवतां प्रजापतिं आवाहयामि। ॐस्वः शनैश्चराधिदेवतां प्रजापतिं आवाहयामि। ॐभू भुर्वः स्वः शनैश्चराधिदेवतां प्रजापतिं आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। यज्ञोपवीतिनं हंसस्थं एकवक्त्रं अक्षमालास्रुव पुस्तक कमण्डलु सहितं चतुर्भजं शनैश्चराधिदेवं प्रजापतिमावाहयामि। शनैश्चर के आगे बायें ओर यम का आवाहन करें।

ॐभूः शनैश्चर प्रत्यधिदेवतां यमं आवाहयामि। ॐभुवः शनैश्चर प्रत्यधिदेवतां यमं आवाहयामि। ॐस्वः शनैश्चर प्रत्यधिदेवतां यमं आवाहयामि। ॐशनैश्चर प्रत्यधिदेवतां यमं आवाहयामि। ॐभू भुर्वः स्वः शनैश्चर प्रत्यधिदेवतां यमं आवाहयमि, स्थापयामि, पूजयामि। ईशत्पीनं दण्डहस्तं रक्त सदृश पाशधरं कृष्णावर्ण महिषारूढं सर्वा भरण भूषितं शनैश्चर प्रत्यधिदेवतां यमं आवाहयामि।

नव शक्तिपूजा—ॐभद्रायै नमः। ॐतंद्रायै नमः। ॐक्षुधायै नमः। ॐमृत्यवे नमः। ॐजरायै नमः। ॐमायायै नमः। ॐमनोमयै नमः। ॐकामुकायै नमः। ॐवरदायै नमः। ॐनमो भगवते सकलगुणात्मशक्तियुक्ताय अनंत योगपीठात्मने नमः। सुवर्णपीठं कल्पयामि। स्वात्मसंस्थमजं शुद्धं त्वामद्य रविनन्दन। अरण्यामिव हव्याशं बिम्बेस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः शनैश्चर प्राण इह प्राणाः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः शनैश्चर जीव इह स्थितः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हो सं हं सः शनैश्चरस्य सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुः श्रोत्र घ्राणप्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा।

वाङ्म आसन् नसोः प्राणश्चक्षुरक्ष्णोः श्रोत्रं कर्णयोः।
अपलिताः केशा अशोणा दन्ता बहु बाह्वोर्बलम्
ऊर्वोरोजो जङ्घयोर्जवः पादयोः। प्रतिष्ठा अरिष्टानि मे सर्वात्मानिभृष्टः॥ (अथर्ववेद १९.६०.१-२)

स शक्ति साङ्ग सायुधसवाहन सपरिवार री शनैश्चर भगवन् अत्रैवागच्छागच्छ आवाहयिष्ये। आवाहितो भव। संस्थापितो भव। सन्निहितो भव। सन्निरूद्धो

भव। अवगुण्ठितो भव। अमृतीकृतो भव। व्याप्तो भव। सुप्रसन्नो भव। क्षमस्व। ॐ सूर्यपुत्राय विद्महे शनैश्चराय धीमहि। तन्नो मंदः प्रचोदयात्॥ इसका तीन बार जप करते हुए अर्घ्य देवें।

ध्यानम्—आन्ध्रेशं ग्रहपश्चिमं करलसत्तूणीर बाणासनं, कोदण्डाकृतिमण्डलं घननिभं गृध्रासनं काश्यपिम्॥
नीलच्छत्रविभूषणं ध्वजरथछत्रश्रिया शोभितं। मेरोर्दिव्यगिरेः प्रदक्षिण करं सेवामहे भानुजम्॥

ॐ शं शनैश्चराय नमः। इस मूल मन्त्र का आठ बार जप करें। ॐ लं पृथिव्यात्मना गंधं कल्पयामि। ॐ हं आकाशात्मना पुष्पं कल्पयामि। ॐ यं वाय्वात्मना धूपं कल्पयामि। ॐ रं अग्न्यात्मना दीपं कल्पयामि। ॐ वं अबात्मना नैवेद्यं कल्पयामि। ॐ पं परमात्मना पञ्चोपचार पूजां समर्पयामि।

प्रार्थना— शनैश्चरो राशितो राशिमेति शनैर्भोगो गमनं चेष्टितं च। सूर्यात्मजं क्रोधनं सुप्रसन्नं मंदं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥
इंद्रनीलद्युतिः शूली सरथो गृध्रवाहनः। बाणबाणासनधरः स्मर्तव्योऽर्कसुतः सदा॥
इंद्रनीलनिभं मन्दं काश्यपिं चित्रभूषणम्। चापबाणधरं चर्मशूलिनं गृध्रवाहनम्॥
नीलांजन समाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्। छायामार्तण्ड संभूतं तं नमामि शनैश्चरम्॥ *(स्मृति सङ्ग्रह)*

ॐ शनैश्चराय नमः, अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित शनैश्चर पूजां समर्पयामि।

राहु देवता आवाहनम्—मण्डलस्य नैर्ऋत्यदले शूर्पाकार मण्डले माष धान्यस्थ राहुप्रतिमायां राहु आवाहनं कुर्यात्। पं पद्माय नमः पीठं संपूज्य।

ॐ कयानश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥ *(अथर्ववेद २०.१२४.१)*

ॐ भूः राहुग्रहमावाहयामि। ॐ भुवः राहुग्रहमावाहयामि। ॐ स्वः राहुग्रहमावाहयामि। ॐ भू र्भुवः स्वः राहुग्रहमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। भगवान् राहोरविसोम मर्दन सिंहिकानंदन पैठीनसगोत्र बर्बर देशेश्वर कालमेघद्युते व्याघ्रवदन चतुर्भुज खड्गचर्म शूल वरदानांकित कृष्णांबर माल्यानुलेपन

गोमेदकाभरण भूषित सर्वाङ्गशौर्यनिधे नमस्ते सन्नद्ध कृष्णाध्वजपताकोप शोभितेन कृष्णासिंहरथवाहनेन मेरुं प्रदक्षिणीकुर्वन् आगच्छ सर्पकालाभ्यां सह नैर्ऋतदलमध्ये सीसक प्रतिमां दक्षिणामुखीं शूर्पाकार पीठेधितिष्ठ पूजार्थ त्वां आवाहयामि। राहु के आगे दाहिने ओर सर्वो का आवाहन करें।

ॐभूः राहु आधिदेवतां सर्पान् आवाहयामि। ॐभुवः राहु अधिदेवतां सर्पान् आवाहयामि। ॐस्वः राहु अधिदेवतां सर्पान् आवाहयामि। ॐभू भुर्वः स्वः राहु अधिदेवान् सर्पान् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। अक्षसूत्र घटान् कुंडलाकार पुच्छयुक्तानेक भोगां स्त्रिभोगान्भीषणान् राह्वधिदेवताम् सर्पान् आवाहयामि। राहु के आगे बायें ओर मृत्यु का आवाहन करें।

ॐभूः राहु प्रत्यधिदेवतां मृत्युं आवाहयामि। ॐभुवः राहु प्रत्यधिदेवतां मृत्युं आवाहयामि। ॐस्वः राहु प्रत्यधिदेवतां मृत्युं आवाहयामि। ॐभू र्भुवः स्वः राहुप्रत्यधिदेवतां मृत्युं आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। करालवदनं नीलाङ्गं भीषणं पाशदण्डधरं सर्पवृश्चिक रोमाणं राहु प्रत्यधिदेवतां मृत्युमावाहयामि।

नवशक्ति पूजा—ॐउग्रायै नमः। ॐयमदूत्यै नमः। ॐकराल्यै नमः। ॐविकरालिकायै नमः। ॐधूम्रायै नमः। तीव्रायै नमः। ॐअजितायै नमः। ॐशक्त्यै नमः। ॐक्रूरायै नमः। ॐनमो भगवते सकलगुणात्मशक्ति युक्ताय अनंताय योगपीठात्मने नमः। सुवर्णपीठं कल्पयामि। स्वात्मसंस्थमजं शुद्धं त्वामद्य सिंहिकासुत। अरण्यामिव हव्याशं बिम्बेस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः राहु प्राण इह प्राणाः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः राहु जीव इह स्थितः। ॐआं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः राह्वोः सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुः श्रोत्र घ्राण प्राणाः इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा।

वाङ्‌म॑ आ॒सन् न॒सोः प्रा॒णश्च॒क्षु॑र॒क्ष्णोः श्रोत्रं॒ कर्णयोः।
अप॑लिता॒ः केशा॒ अशो॑णा॒ दन्ता॒ ब॒हु बा॒ह्वोर्बलम्

ऊर्वोरोजो जङ्घयोर्जवः पादयोः। प्रतिष्ठा अरिष्टानि मे सर्वात्मानिंभृष्टः॥ (अथर्ववेद १९.६०.१-२)

स शक्ति साङ्ग सायुध सवाहन सपरिवार श्री राहु भगवान् अत्रैवागच्छागच्छ आवाहयिष्ये। आवाहितो भव। संस्थापितो भव। सन्निहितो भव। सन्निरुद्धो भव। अवगुण्ठितो भव। अमृतीकृतो भव। व्याप्तो भव। सुप्रसन्नो भव। क्षमस्व। ॐ सैंहिकेयाय विद्महे। तमो मयाय धीमहि। तन्नो राहुः प्रचोदयात्॥

इसका तीन बार जप करते हुए अर्घ्य देवें।

ध्यानम्— राहुं मध्यमदेशजं च निर्ऋतिस्थाने स्थितं पैठिनं गोत्रं खड्गधरं च शूर्प सदृशं शार्दूलरत्नासनम्।
नीलच्छत्रविभूषणध्वजरथच्छत्रश्रिया शोभितं मेरोर्दिव्यगिरेः प्रदक्षिणाकरं सेवामहे तामसम्॥ (स्मृति सङ्ग्रह)

ॐ रां राहवे नमः। इस मूल मंत्र का आठ बार जप करें। ॐ लं पृथिव्यात्मना गंधं कल्पयामि। ॐ हं आकाशात्मना पुष्पं कल्पयामि। ॐ यं वाय्वात्मना धूपं कल्पयामि। ॐ रं अग्न्यात्मना दीपं कल्पयामि। ॐ वं अबात्मना नैवेद्यं कल्पयामि। ॐ पं परमात्मना पञ्चोपचार पूजां समर्पयामि।

प्रार्थना— यो विष्णुनैवामृतं पीयमानः छित्वाशिरो ग्रहभावे नियुक्तः। यश्चन्द्रसूर्याग्रसते पर्वकाले राहुं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥
करालवदनः खड्गचर्मशूली वरप्रदः। नीलसिंहासनस्थश्च ग्रहरत्नं प्रशस्यते॥
सैंहिकेयं करालास्यं कोरिडनेयं तमोमयम्। खड्गचर्मधरं भोमं नील सिंहासने स्थितम्॥
अर्धकायं महावीर्य चन्द्रादित्यविमर्दनम्। सिंहिकागर्भसंभूतं राहु च प्रणामाम्यहम्॥
ॐ राहवे नमः, अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित राहु पूजां समर्पयामि। (ऋग्वेद स्मृति सङ्ग्रह)

केतु देवता आवाहनम्— मण्डलस्य वायव्यदले ध्वजाकार मण्डले कुलित्थराशौ केतु प्रतिमायां केत्वावाहनं कुर्यात्।
ॐ केतुं कृण्वन्नंकेतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः॥ (अथर्ववेद २०.२६.६)

ॐ भूः केतु ग्रहमावाहयामि। ॐ भुवः केतु ग्रहमावाहयामि। ॐ स्वः केतु ग्रहमावाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः केतु ग्रहमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

भगवन् केतो कामरूप जैमिनि गोत्र मध्यदेशेश्वर धूम्रवर्णाध्वजाकृते द्विभुजगदावरदानांकित चित्रांबरमाल्यानुलेपन वैडूर्यमयाभरणभूषित सर्वाङ्गचित्रशक्ते नमस्ते सन्नद्ध चित्रध्वजपताकोपशोभितेन चित्रकपोतरथवाहनेन मेरुं प्रदक्षिणीकुर्वन्नागच्छ ब्रह्मचित्रगुप्ताभ्यां सह वायव्यदलमध्ये कांस्यप्रतिमां दक्षिणामुखीं ध्वजाकार पद्मे धितिष्ठपूजार्थं त्वां आवाहयामि। केतु के आगे दाहिने ओर ब्रह्मा जी का आवाहन करें।

ॐ भूः केत्वधिदेवतां ब्रह्माणमावाहयामि। ॐ भुवः केत्वधिदेवतां ब्रह्माणमावाहयामि। ॐ स्वः केत्वधिदेवतां ब्रह्माणमावाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः केत्वधिदेवतां ब्रह्माणमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। पद्मासनस्थं जटिलं चतुर्मुखं अक्षमालास्रुवपुस्तक कमण्डलुधरं कृष्णाजिनवाससं पार्श्वस्थितहंसं केत्वधिदेवतां ब्रह्माणमावाहयामि। केतु के आगे बायें ओर चित्रगुप्त का आवाहन करें।

ॐ भूः केतु प्रत्यधिदेवतां चित्रगुप्तमावाहयामि। ॐ भुवः केतु प्रत्यधिदेवतां चित्रगुप्तमावाहयामि। ॐ स्वः केतु प्रत्यधिदेवतां चित्रगुप्तमावाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः केतु प्रत्यधिदेवतां चित्रगुप्तमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। उदीच्यवेषधरं सौम्यदर्शनं लेखनीपत्रोपेतद्विभुजं केतु प्रत्यधिदेवं चित्रगुप्तं आवाहयामि।

नवशक्ति पूजा—ॐ निम्नायै नमः। ॐ अभयायै नमः। ॐ प्रकीर्णायै नमः। ॐ लीनायै नमः। ॐ भेदायै नमॐः ॐ नटायै नमः। ॐ आज्ञयै नमः। ॐ प्रतिज्ञायै नमः। ॐ मेधायै नमः।

ॐ नमो भगवते सकलगुणात्मशक्तियुक्ताय अनंताय योगपीठात्मने नमः, सुवर्णपीठं कल्पयामि। स्वात्मसंस्थमजं शुद्धं त्वामद्य विकृतानन। अरण्यामिव हव्याशं बिम्बेस्मिन् सन्निधिं कुरु। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः केतु प्राण इह प्राणः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः केतु जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों य र ल व श ष स हों सं हं सः केत्वोः सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः चक्षुः श्रोत्रघ्राणप्राणाः। इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा।

वाङ्म॑ आ॒सन् न॒सोः प्रा॒णश्चक्षु॑र॒क्ष्णोः श्रोत्र॑ं कर्णा॑योः।

अपलिताः केशा अशोणा दन्ता बहु बाह्वोर्बलम्

ऊर्वोरोजो जङ्घयोर्जवः पादयोः। प्रतिष्ठा अरिष्टानि मे सर्वात्मानिभृष्टः॥ (अथर्ववेद १९.६०.१-२)

सशक्ति साङ्गसायुधसवाहनसपरिवार श्री केतु भगवन् अत्रैवागच्छागच्छ, आवाहयिष्ये, आवाहितो भव। अवगुण्ठितो भव। अमृतीकृतो भव। व्याप्तो भव। सुप्रसन्नो भव। क्षमस्व। ॐ ब्रह्मपुत्राय विद्महे विकृतास्याय धीमहि। तन्नः केतुः प्रचोदयात्॥

इसका तीन बार जप करते हुए अर्घ्य देवें।

ध्यानम्—केतुं बर्बरदेशजं ध्वजसमाकारं विचित्रायुधं। चित्रं जैमिनिगोत्रजं ग्रहभुवो वायव्यभागस्थितम्।

चित्र स्यंदन भूषणाध्वजरथच्छत्रश्रिया शोभितं। मेरोर्दिव्यगिरेः प्रदक्षिणाकरं सेवामहे तं ध्वजम्।

ॐकें केतवे नमः। इस मूल मंत्र का आठ बार जप करें। ॐलं पृथिव्यात्मना गंधं कल्पयामि। ॐहं आकाशात्मना पुष्पं कल्पयामि। ॐयं वाय्वात्मना धूपं कल्पयामि। ॐरं अग्न्यात्मना दीपं कल्पयामि। ॐवं अबात्मना नैवेद्यं कल्पयामि। ॐपं परमात्मना पञ्चोपचारपूजां समर्पयामि।

प्रार्थना— ये ब्रह्मपुत्रा ब्रह्मसमानवक्त्रा ब्रह्मोद्भवाः ब्रह्मसमाः कुमाराः।

ब्रह्मोत्तमा वरदा जामदग्न्याः केतून् सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

धूम्राद्विबाहवः सर्वे गदिनो विकृताननाः। गृध्रासनगताः नित्यं केतवः स्युर्वरप्रदाः॥

धूम्रान् द्विबाहून् गदिनो विकृतास्यान् शतात्मकान्। गृध्रासनगतान् केतून् वरदान् ब्रह्मणः सुतान्।

पालाश धूम्रसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्। रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्॥ (स्मृति सङ्ग्रह)

ॐकेतवे नमः। अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित केतु पूजां समर्पयामि।

कर्म साद्गुण्य देवता आवाहन

कर्म के सभी गुणों को यजमान को देने वाले देवता। ये कर्म के लोपों को दूरकर पूर्ण फल दिलाते हैं। ये छः है।

शनैवायु प्रदेशे कर्म साद्गुण्य देवतां विनायकं आवाहयेत्।

नवग्रह मण्डल के वायव्य दिशा में विनायक का आवाहन करें। सभी देवतावाहन मण्डल के पश्चिम में करें।

ॐ यस्यं कृण्मो हविर्गृहे तमंग्ने वर्धया त्वम्। तस्मै सोमो अधिं ब्रवदुयंच ब्रह्मंणस्पतिः॥ (अथर्ववेद ६.५.३)

ॐभूः क्रतु साद्गुण्यदेवतां विनायकं आवाहयामि। ॐभुवः क्रतु साद्गुण्यदेवतां विनायकं आवाहयामि। ॐस्वः क्रतु साद्गुण्यदेवतां विनायकं आवाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः क्रतु साद्गुण्यदेवतां विनायकं आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। उनके (विनायक के) दाहिने ओर दुर्गा जी का आवाहन करें। जातवेद से कश्यपो दुर्गात्रिष्टुप् क्रतुसाद्गुण्य देवतां दुर्गामावाहयामि।

ॐ देवानां पत्नींरुशतीरंवन्तु नः प्रावंन्तु नस्तुजये वाजंसातये।
याः पार्थिवासो या अपामपिं व्रते ता नों देवीः सुहवाः शर्मं यच्छन्तु ॥ (अथर्ववेद ७.४९.१)

ॐभूः क्रतु साद्गुण्यदेवतां दुर्गामावाहयामि। ॐभुवः क्रतु साद्गुण्यदेवतां दुर्गामावाहयामि। ॐस्वः क्रतु साद्गुण्यदेवतां दुर्गामावाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः क्रतु साद्गुण्यदेवतां दुर्गामावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। शक्तिबाणशूलखड्गचक्र चन्द्रबिम्बखेटकपालपरशु टंकोपेतां दशभुजां सिंहारूढां दुर्गाख्यदैत्यासुहारिणीं दुर्गामावाहयामि। दुर्गा जी के दाहिने ओर क्षेत्रपाल का आवाहन करें। क्षेत्रस्य पतिना वामदेवः क्षेत्रपालोनुष्टुप् क्रतुसाद्गुण्य देवता क्षेत्रपालावाहने विनियोगः।

ॐ मधुंमतीरोषंधीर्द्याव आपो मधुंमन्नो भवत्वन्तरिंक्षम्।

क्षेत्रस्य पतिर्मधुमान्नो अस्त्वरिष्यन्तो अन्वेनं चरेम ॥ *(अथर्ववेद २०.१४३.८)*

ॐ भू क्रतु साद्गुरय देवतां क्षेत्रपालमावाहयामि। ॐ भुवः क्रतु साद्गुरयदेवतां क्षेत्रपालमावाहयामि। ॐ स्वः क्रतु साद्गुरयदेवतां क्षेत्रपालमावाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः क्रतु साद्गुरयदेवतां क्षेत्रपालमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। श्यामवर्णं त्रिलोचनं ऊर्ध्वकेशं सुदंष्ट्रं भ्रुकुटि कुटिलाननां नूपुरालंकृतांघ्रिं सर्पमेखलयायुतं सर्पाङ्गमतिक्रुद्धं क्षुद्रघटाबद्ध गुल्फावलंबिनि नृकरोटीमाला धारिणं उरगकौपीनं चंद्रमौलिं दक्षिणहस्तैः शूलवेतालखड्गदुंदुभिन्दधानं वामहस्तैः कपाल घंटाचर्म चापान्दधानं भीमं दिग्वाससं अमित द्युतिं क्षेत्रपालमावाहयामि। क्षेत्रपाल के दाहिने ओर वायु का आवाहन करें।

ॐ वायोः पूतः पवित्रेण प्रत्यङ् सोमो अति द्रुतः। इन्द्रस्य युज्यः सखा ॥ *(अथर्ववेद ६.५१.१)*

ॐ भूः क्रतु साद्गुरयदेवतां वायुमावाहयामि। ॐ भुवः क्रतु साद्गुरयदेवतां वायुमावाहयामि। ॐ स्वः क्रतु साद्गुरयदेवतां वायुमावाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः क्रतु साद्गुरयदेवतां वायुमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। धवद्धरिणपृष्ठगतं ध्वजवरदानधारिणं धूम्रवर्णं वायुं आवाहयामि। वायु के दाहिने ओर आकाश का आवाहन करें।

ॐ आशानामाशापालेभ्यश्चतुर्भ्यो अमृतेभ्यः। इदं भूतस्याध्यक्षेभ्यो विधेम हविषा वयम् ॥ *(अथर्ववेद १.३१.१)*

ॐ भूः क्रतु सादगुरयदेवतां आकाशं आवाहयामि। ॐ भुवः क्रतु साद्गुरयदेवतां आकाशं आवाहयामि। ॐ स्वः क्रतु साद्गुरयदेतवां आकाशं आवाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः क्रतु साद्गुरयदेवतां आकाशं आवाहयामि। स्थापयामि। पूजयामि। नीलोत्पलाभं नीलांबरधारिणं चंद्रार्कोपेतं द्विभुजंषंढं आकाशमावाहयामि।

ॐ यदन्तरिक्षे यद्दिवि यत्पञ्च मानुषाँ अनु। नृम्णं तद्धत्तमश्विना ॥ *(अथर्ववेद २०.१३९.२)*

ॐ भूः क्रतु साद्गुरय देवतां अश्विनौ आवाहयामि। ॐ भुवः क्रतु साद्गुरय देवतां अश्विनौ आवाहयामि। ॐ स्वः क्रतु साद्गुरय देवतां अश्विनौ आवाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः क्रतु साद्गुरय देवतां अश्विनौ आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। प्रत्येकमौषधिपूस्तकोपेत दक्षिणवामहस्तावन्योन्यसंसक्तदेहो एकस्य

दक्षिणपार्श्वे अपरस्य वामपार्श्वे रत्नभाण्डवर शुक्लांबरधारि नारीयुग्मोपेतो देवभिषजो अश्विनौ आवाहयामि।

क्रतु संरक्षक देवता—क्रतु संरक्षक देवता आठ हैं। ये यज्ञ का संरक्षण करते हैं। आठ दिशाओं के अधिपति अष्टदिक्पालक क्रतु संरक्षक देवता कहलाते हैं। **प्राग्दलाग्रे** नवग्रह मण्डल के पूर्व दल के अग्र भाग में इन्द्र का आवाहन करें।

ॐ इन्द्रं त्वा वृष॒भं व॒यं सु॒ते सोमे॑ हवामहे। स पा॑हि मध्वो॒ अन्ध॑सः॥ *(अथर्ववेद २०.१.१)*

ॐभूः क्रतु संरक्षकदेवतां इन्द्रमावाहयामि। ॐभुवः क्रतु संरक्षकदेवतां इन्द्रमावाहयामि। ॐस्वः क्रतु संरक्षकदेवतां इन्द्रमावाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः क्रतु संरक्षकदेवतां इन्द्रमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। स्वर्णवर्णं सहस्राक्षं ऐरावतवाहनं वज्रपाणिं शचीप्रियं इन्द्रमावाहयामि।

आग्नेय दलाग्रे—नवग्रह मण्डल के आग्नेय दल के अग्र भाग में अग्नि का आवाहन करें।

ॐ अ॒ग्निं दू॒तं वृ॑णीमहे होता॑रं वि॒श्ववे॑दसम्। अ॒स्य य॒ज्ञस्य॑ सु॒क्रतु॑म्॥ *(अथर्ववेद २०.१०१.१)*

ॐभूः क्रतु संरक्षकदेवतां अग्निं आवाहयामि। ॐभुवः क्रतु संरक्षकदेवतां अग्निं आवाहयामि। ॐस्वः क्रतु संरक्षकदेवतां अग्निं आवाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः क्रतु संरक्षकदेवतां अग्निं आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। रक्तवर्णं साक्षसूत्रं सप्तार्चिषं शक्त्यन्नस्रुक्स्रुवतोमरव्यजन घृतपात्राणि दधानं स्वाहाप्रियं मेषवाहनं अग्निं आवाहयामि।

याम्यदलाग्रे—नवग्रह मण्डल के दक्षिण दल के अग्र भाग में यम का आवाहन करें।

ॐ य॒माय॒ सोमः॑ पवते य॒माय॑ क्रियते ह॒विः। य॒मं ह॑ य॒ज्ञो ग॑च्छत्य॒ग्निदू॑तो॒ अरं॑कृतः॥ *(अथर्ववेद १८.२.१)*

ॐभूः क्रतु संरक्षकदेवतां यमं आवाहयामि। ॐभुवः क्रतु संरक्षकदेतवतां यमं आवाहयामि। ॐस्वः क्रतु संरक्षकदेवतां यमं आवाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः क्रतु संरक्षकदेवतां यमं आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। रक्तवर्णं दण्डधरं महिषवाहनं इळाप्रियं यमं आवाहयामि।

नैर्ऋत्यदलाग्रे—नवग्रह मराडल के नैऋत्य दल के अग्र भाग में निर्ऋति का आवाहन करें।

ॐ यत् ते देवी निर्ऋतिराबबन्ध दाम ग्रीवास्वविमोक्यं यत्।
तत् ते वि ष्याम्यायुषे वर्चसे बलायादोमदमन्नमद्धि प्रसूतः॥ (अथर्ववेद ६.६३.१)

ॐ भूः क्रतु संरक्षकदेवतां निर्ऋतिं आवाहयामि। ॐ भूवः क्रतु संरक्षकदेवतां निर्ऋतिं आवाहयामि। ॐ स्वः क्रतु संरक्षकदेवतां निर्ऋतिं आवाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः क्रतु संरक्षकदेवतां निर्ऋतिं आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। नीलवर्णां खड्गचर्मधरं ऊर्ध्वकेशं नरवाहनंकालिकाप्रियं निर्ऋतिमावाहयामि।

पश्चिमदलाग्रे—नवग्रह मराडल के पश्चिम दल के अग्र भाग में वरुरा का आवाहन करें।

ॐ अप्सु ते राजन् वरुण गृहो हिरण्ययो मिथः। ततो धृतव्रतो राजा सर्वा धामानि मुञ्चतु॥ (अथर्ववेद ७.८३.१)

ॐ भूः क्रतु संरक्षकदेवतां वरुणं आवाहयामि। ॐ भूवः क्रतु संरक्षकदेवतां वरुणं आवाहयामि। ॐ स्वः क्रतु संरक्षकदेवतां निर्ऋतिं आवाहयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः क्रतु संरक्षक देवतां वरुणं आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। रक्तवर्णां नागपाशधरं मकरवाहनं पद्मिनीप्रियं सुवर्ण भूषणं वरुणं आवाहयामि।

वायव्यदलाग्रे—नवग्रह मराडल के वायव्य दलके अग्र भाग में वायु का आवाहन करें।

ॐ गोसनिं वाचमुदेयं वर्चसा माभ्युदिहि। आ रुन्धां सर्वतो वायुस्त्वष्टा पोषं दधातु मे॥ (अथर्ववेद ४.२०.१०)

ॐ भूः क्रतु संरक्षकदेवतां वायुं आवाहयामि। ॐ भुवः क्रतु संरक्षकदेवतां वायुं आवाहयामि। ॐ स्वः क्रतु संरक्षकदेवतां वायुं आवाहयामि। ॐ भू र्भुवः स्वः क्रतु संरक्षकदेवतां वायुं आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। श्यामवर्णा हेमदराडधरं कृष्णामृगवाहनं जगत्प्राणरूपं मोहिनी प्रियं वायुमावाहयामि।

उत्तर दलाग्रे—नवग्रह मराडल के उत्तर दल के अग्र भाग में कुबेर को आवाहन करें।

ॐ अभि त्यं देवं सवितारमोण्योः कविक्रतुम्। अर्चामि सत्यसवं रत्नधामभि प्रियं मतिम्॥ (अथर्ववेद ७.१४.१)

ॐभूः क्रतु संरक्षक देवतां कुबेरं आवाहयामि। ॐभुवः क्रतु संरक्षक देवतां कुबेरं आवाहयामि। ॐस्वः क्रतु संरक्षक देवतां कुबेरं आवाहयामि। ॐभूर्भुवः स्वः क्रतु संरक्षक देवतां कुबेरं आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि। स्वर्णवर्ण निधीश्वरं कुंतपाणिं आश्ववाहनं वित्रिणीप्रियं कुबेरं आवाहयामि।

ऐशान दलाग्रे—नवग्रह मण्डल के ईशत्य दल के अग्र भाग में ईशान का आवाहन करें।

ॐ मा नो॒ मर्ता॑ अ॒भि द्रु॑हन् त॒नूना॑मिन्द्र गिर्वणः। ईशा॑नो यवया व॒धम्॥ *(अथर्ववेद २०.६९.८)*

ॐभूः क्रतु संरक्षक देवतां ईशानमावाहयामि। ॐभुवः क्रतु संरक्षक देवतां ईशानमावाहयामि। ॐस्वः क्रतु संरक्षक देवतां ईशानमावाहयामि। ॐभू र्भुवः स्वः क्रतु संरक्षकदेवतां ईशानमावाहयामि। शुद्धस्फटिकवर्ण वरदाभ्य शूलाक्षसूत्रधरं वृषभवाहनं गौरीप्रियं ईशानं आवाहयामि। एवं एकपंचत्वारिंशत् देवता आवाह्य।

इस प्रकार नवग्रह मण्डल में ४१ देवताओं का आवाहन किया गया ग्रह ९+अधिदेवता ९+प्रत्यधिदेवता ९+क्रतु साद्गुण्यदेवता ६+क्रतु संरक्षक देवता ८ = कुल ४१ देवता। आवाहित नवग्रह मण्डलस्थ एकचत्वारिंशत् देवताभ्यः यथाशक्ति कल्पोक्त षोडशोपचार पूजां करिष्ये।

षोडशोपचार पूजन प्रारम्भ

ध्यायामि। ध्यानं समर्पयामि।

ॐ स॒हस्र॑बाहुः पुरु॑षः सहस्रा॒क्षः स॒हस्र॑पात्। स भूमिं॑ वि॒श्वतो॑ वृ॒त्वात्य॑तिष्ठद्दशाङ्गु॒लम्॥ *(अथर्ववेद १९.६.१)*

ॐ हिर॑ण्य वर्णा॒ं हरि॑णीं सुवर्ण॑रज॒तस्र॑जाम्। च॒न्द्रां हि॒रण्म॑यीं ल॒क्ष्मीं जा॒तवे॑दो म॒ आ व॑ह॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐनवग्रहमण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, **आवाहनं समर्पयामि।**

ॐ त्रिभिः पद्भिर्द्यामरोहत्पादस्येहाभवत्पुनः। तथा व्यक्रामद्विष्वङशनानशने अनु ॥ (अथर्ववेद १९.६.२)

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रहमण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, आसनं समर्पयामि।

ॐ तावन्तो अस्य महिमानस्ततो ज्यायांश्च पूरुषः। पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥ (अथर्ववेद १९.६.३)

ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद प्रमोदिनीम्। श्रियं देवी मुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, पादारविंदयोः पाद्यं पाद्यं समर्पयामि।

ॐ पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्येश्वरो यदन्येनाभवत्सह ॥ (अथर्ववेद १९.६.४)

ॐ कां सोस्मितां हिरण्य प्राकारामार्द्रा ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।

पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्। (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहितदेवताभ्यो नमः, हस्तयोः अर्घ्यमर्घ्यं समर्पयामि।

ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्य किं बाहू किमूरू पादा उच्येते ॥ (अथर्ववेद १९.६.५)

ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्ती श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।

तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे ॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः। मुखे आचमनीयं समर्पयामि।

पञ्चामृत स्नानम् पयः (दूध)—ॐ सं सिञ्चामि गवां क्षीरं समाज्येन बलं रसम्।
संसिक्ता अस्माकं वीरा ध्रुवा गावो मयि गोपतौ॥ *(अथर्ववेद २.२६.४)*

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, पयः स्नानं समर्पयामि। दूध से स्नान के बाद शुद्धोदक स्नान

ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे॥ *(अथर्ववेद १.५.१)*

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः। पयः स्नानांते शूद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

दधि (दहि)—ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभि नो मुखा करत्प्र ण आयूंषि तारिषत्॥ *(अथर्ववेद २०.१३७.३)*

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, दधि स्नानं समर्पयामि। दहि स्नान के बाद शुद्धोदक स्नान

ॐ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः॥ *(अथर्ववेद १.५.२)*

ॐ नवग्रह मंडलस्थ आवाहितदेवताभ्यो नमः, दधि स्नानांते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

घृत (घी)—ॐ घृतं ते अग्ने दिव्ये सधस्थे घृतेन त्वां मनुरद्या समिन्धे।
घृतं ते देवीर्नप्त्य१ आ वहन्तु घृतं तुभ्यं दुह्रतां गावो अग्ने॥ *(अथर्ववेद ७.८२.६)*

ॐ नवग्रह मंडलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, घृत स्नानं समर्पयामि। घी स्नान के बाद शुद्धोदक स्नान

ॐ तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः॥ *(अथर्ववेद १.५.३)*

ॐ नवग्रह मंडलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, घृतस्नानांते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

मधु (शहद)—ॐ मधुमान् भवति मधुमदस्याहार्यं भवति। मधुमतो लोकान् जयति य एवं वेद॥ *(अथर्ववेद ९.१.२३)*

ॐ नवग्रहमण्डलस्थ आवाहितदेवताभ्यो नमः, मधु स्नानं समर्पयामि।

ॐ ईशाना वार्याणां क्षयन्तीश्चर्षणीनम्। अपो याचामि भेषजम्॥ *(अथर्ववेद १.५.४)*

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहितदेवताभ्यो नमः, मधु स्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

शर्करा (शक्कर)—ॐ स्वादोःस्वादीयः स्वादुना सृजा समदः सु मधु मधुनाभि योधीः॥ *(अथर्ववेद ५.२.३)*

ॐ नवग्रह मंडलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, शर्करास्नानं समर्पयामि।

ॐ अप्सु मे सोमो अब्रवीदन्तर्विश्वानि भेषजा। अग्निं च विश्वशंभुवम्॥ *(अथर्ववेद १.६.२)*

ॐ नवग्रहमण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, शर्करास्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

ॐ पुष्पवतीः प्रसूमतीः फलिनीरफला उत। संमातर इव दुह्रामस्मा अरिष्टतातये॥ *(अथर्ववेद ८.७.२७)*

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, फलस्नानं समर्पयामि।

ॐ उच्चा पतन्तमरुणं सुपर्णं मध्ये दिवस्तरणिं भ्राजमानम्।
पश्याम त्वा सवितारं यमाहुरजस्रं ज्योतिर्यदविन्दुदत्त्रिः॥ *(अथर्ववेद १३.२.३६)*

ॐ सुतासो मधुमत्तमाः सोमा इन्द्राय मन्दिनः। पवित्रवन्तो अक्षरन्देवान्गच्छन्तु वो मदाः॥ *(अथर्ववेद २०.१३७.४)*

ॐ अग्निवासाः पृथिव्यं सितज्ञूस्त्विषीमन्तं संशितं मा कृणोतु॥ *(अथर्ववेद १२.१.२१)*

ॐ कपृन्नरः कपृथमुद्दधातन चोदयत खुदत वाजसातये।

निष्टिग्र्यः पुत्रमा च्यावयोतय इन्द्रं सबाधं इह सोमंपतये ॥ *(अथर्ववेद २०.१३७.२)*

ॐ बृहस्पतिर्नः परि पातु पश्चादुतोत्तरस्मादधरादघायोः ।
इन्द्रः पुरस्तादुत मध्यतो नः सखा सखिभ्यो वरीयः कृणोतु ॥ *(अथर्ववेद ७.५१.१)*

ॐ द्यौश्च म इदं पृथिवी च प्रचेतसौ शुक्रो बृहन् दक्षिणाया पिपर्तु ।
अनु स्वधा चिकितां सोमो अग्निर्वायुर्नः पातु सविता भगश्च ॥ *(अथर्ववेद ६.५३.१)*

ॐ शं नो वातो वातु शं नस्तपतु सूर्यः ।
अहानि शं भवन्तु नः शं रात्री प्रति धीयतां शमुषा नो व्युच्छतु ॥ *(अथर्ववेद ७.६९.१)*

ॐ कयानश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा । कया शचिष्ठया वृता ॥ *(अथर्ववेद २०.१२४.१)*

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे । समुषद्भिरजायथाः ॥ *(अथर्ववेद २०.२६.६)*

ॐ ब्राह्मणो स्य मुखमासीद्बाहू राजन्यो भवत् । मध्यं तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत ॥ *(अथर्ववेद १९.६.६)*

ॐ आदित्यवर्णो तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः ।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, शुद्धोदकस्नानं सपर्मयामि। शुद्धोदक स्नान मंत्रों के तीन प्रकार प्रचलित है।

प्रथम क्रम में—९ ग्रह- ९ अधिदेवता-९ प्रत्यधिदेवता ६ कर्म साद्गुण्य देवता, ८ क्रतु संरक्षक देवता कुल मिलाकर ४१ देवताओं का मंत्र पठन करके

शुद्धोदक स्नान करना चाहिये। सभी मंत्र आवाहन में है। नवग्रह यागादियों में इसका प्रयोग होता है। जहाँ कलश पूजन के लिए ही एक पण्डित नियुक्त हो वहाँ भी इसे कर सकते हैं।

द्वितीय क्रम में—९ ग्रह+९ अधिदेवता+९ प्रत्यधिदेवता कुलमिलाकर २७ देवताओं का मंत्र पठन करके शुद्धोदक स्नान कराना चाहिये।

तृतीय क्रम में—९ ग्रहों का मंत्र पठन करके शुद्धोदक स्नान कराना चाहिये।

वस्त्रम्— ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत। मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायत॥ *(अथर्ववेद १९.६.७)*

ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, वस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतम्—ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥

ॐ विराडग्रे समभवद्विराजो अधि पूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः॥ *(अथर्ववेद १९.६.९)*

ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि, आचमनं समर्पयामि।

आभरणम्—ॐ यद्धिरण्यं सूर्येण सुवर्णं प्रजावन्तो मनवः पूर्व ईषिरे।

तत् त्वा चन्द्रं वर्चसा सं सृजत्यायुष्मान् भवति यो बिभर्ति॥ *(अथर्ववेद १९.२६.२)*

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, आभरणं समर्पयामि।

गन्धम्— ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन्॥ (अथर्ववेद १९.६.८)

ॐ नवग्रहमण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, गन्धं समर्पयामि।

अक्षतम्—ॐ अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत। अर्चन्तु पुत्रका उत पुरं न धृष्ण्वर्चत॥ (अथर्ववेद २०.९२.५)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पाणि—ॐ विराडग्रे समभवद्विराजो अधि पूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः॥ (अथर्ववेद १९.६.९)

ॐ पुष्पवतीः प्रसूमतीः फलिनीरफला उत। संमातर इव दुह्राम् अस्मा अरिष्टतातये॥ (अथर्ववेद ८.७.२७)

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥ (ऋग्वेद - पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, पुष्पाणि समर्पयामि।

नाम पूजा

ॐसहस्रकिरणाय नमः। ॐसूर्याय नमः। ॐतपनाय नमः। ॐसवित्रे नमः। ॐरवये नमः। ॐविकर्तनाय नमः। ॐजगच्चक्षुषे नमः। ॐद्युमणाये नमः। ॐतिग्मदीधितये नमः। ॐत्रयीमूर्तये नमः। ॐद्वादशात्मने नमः। ॐब्रह्माविष्णुशिवात्मकाय नमः। ॐआदित्याय नमः। ॐअग्नये नमः। ॐरुद्राय नमः। ॐचन्द्रमसे नमः। ॐअद्भ्यो नमः। ॐगौर्यै नमः। ॐअङ्गारकाय नमः। ॐभूम्यै नमः। ॐस्कन्दाय नमः। ॐबुधाय नमः। ॐविष्णवे नमः। ॐपुरुषाय नमः। ॐबृहस्पतये नमः। ॐइंद्राय नमः। ॐब्रह्मणे नमः। ॐशुक्राय नमः। ॐइंद्राण्यै नमः। ॐइंद्राय नमः। ॐशनैश्चराय नमः। ॐप्रजापतये नमः। ॐयमाय नमः। ॐराहवे नमः। ॐसर्पेभ्यो नमः। ॐमृत्यवे नमः। ॐकेतवे नमः। ॐब्रह्मणे नमः। ॐचित्रगुप्ताय नमः। ॐविनायकाय नमः। ॐदुर्गायै नमः। ॐक्षेत्रपालाय नमः। ॐवायवे नमः। ॐआकाशाय नमः। ॐअश्विभ्यां नमः। ॐइन्द्राय नमः। ॐअग्नये नमः। ॐयमाय नमः। ॐनिर्ऋतये नमः। ॐवरुणाय नमः। ॐवायवे नमः। ॐसोमाय नमः। ॐईशानाय नमः। ॐनवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, नाम पूजां समर्पयामि।

धूपः— **वनस्पति रसोत्पन्नो गन्धाढ्यः सुमनोहरः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥**
ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तो अस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥ *(अथर्ववेद १९.६.१०)*
ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥ *(ऋग्वेद – पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐनवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, धूपं आघ्रापयामि।

दीपं— **साज्यं त्रिवर्ति संयुक्तं वह्निना योजितं मया। गृहाण मङ्गलं दीपं त्रैलोक्यतिमिरापह॥**
ॐ तं यज्ञं प्रावृषा प्रौक्षन्पुरुषं जातमग्रशः। तेन देवा अयजन्त साध्या वसवश्च ये॥ *(अथर्ववेद १९.६.११)*

ॐ आपः स्त्रजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत व स मे गृहे। नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥ *(ऋग्वेद – पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, दीपं दर्शयामि। धूपदीपानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि।

नैवेद्यं—नैवेद्य रखने के स्थल पर मण्डल बनायें (चतुरस्त्र) नैवेद्य को मण्डल पर रखने के बाद मंत्र पढ़ें। विश्वामित्र ऋषिः देवी गायत्री छन्दः, सविता देवता निवेदने विनियोगः। एक बार नैवेद्य पर गायत्री मंत्र से प्रोक्षण करें। सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि इस मंत्र से दिन में एवं **ऋतं त्वा सत्येन परिषिञ्चामि**। इस मंत्र से रात्रि में परिषिञ्चन करें।

यथा संभव नैवेद्यं निरीक्षस्व कहकर प्रार्थना कर **अमृतोपस्तरणमसि** मन्त्र से जल छोड़ें। बायें हाथ से ग्रास मुद्रा (जैसे बछड़े को घास खिलाते हैं) एवं दाहिने हाथ से निम्न मुद्राओं से देवताओं को नैवेद्य अर्पण करें। मन में कल्पना करें कि भगवान को खिला रहे हैं। प्राणाय स्वाहा। अपानाय स्वाहा। व्यानाय स्वाहा। उदानाय स्वाहा। समानाय स्वाहा। ॐ घृणिः सूर्य आदित्यः–इस मूल मंत्र को आठ बार जप करें।

ॐ स्वादोःस्वादीयः स्वादुना सृजा समदः सु मधु मधुनाभि योधीः॥ *(अथर्ववेद ५.२.३)*

ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥ *(ऋग्वेद – पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

यथा सम्भवं नैवेद्यं निवेदयामि। अमृतापिधानमसि। कहकर उत्तरापोशण जल दें। उत्तरापोशनार्थं जलं समर्पयामि। हस्तप्रक्षालनार्थे जलं समर्पयामि। गण्डूषार्थे जलं समर्पयामि। शुद्धाचमनार्थे जलं समर्पयामि। करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि।

ताम्बूलम्—पूगीफलसमायुक्तं नागवल्ल्यादलैर्युतम्। चूर्ण कर्पूर संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ तस्मादश्वा अजायन्त ये च के चोभयादतः। गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः॥ *(अथर्ववेद १९.६.१२)*

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, अमुक ताम्बूलं समर्पयामि। ताम्बूल के पश्चात् नीराजन करें।

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दो ह जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत॥ *(अथर्ववेद १९.६.१३)*

ॐ एह यांतु वरुणः सोमो अग्निर्बृहस्पतिर्वसुभिरेह यांतु।
अस्य श्रियमुपसंयात सर्व उग्रस्य चेत्तुः संमनसः सजाताः॥ *(अथर्ववेद ६.७३.१)*

ॐ नवग्रह मडलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, मङ्गल नीराजनं दर्शयामि।

मन्त्र पुष्पः—ॐ उच्चा पतंन्तमरुणं सुपर्णं मध्ये दिवस्तरणिं भ्राजमानम्।
पश्याम त्वा सवितारं यमाहुरजस्रं ज्योतिर्यदविन्दुदत्त्रिः॥ *(अथर्ववेद १३.२.३६)*

ॐ सुतासो मधुमत्तमाः सोमा इन्द्राय मन्दिनः। पवित्रवन्तो अक्षरन्देवान्गच्छन्तु वो मदाः॥ *(अथर्ववेद २०.१३७.४)*

ॐ अग्निवासाः पृथिव्यं सितज्ञूस्त्विषीमन्तं संशितं मा कृणोतु॥ *(अथर्ववेद १२.१.२१)*

ॐ कपृन्नरः कपृथमुद्दधातन चोदयंत खुदत वाजसातये।
निष्टिग्र्यः पुत्रमा च्यावयोतय इन्द्रं सबाधं इह सोमपतये॥ *(अथर्ववेद २०.१३७.२)*

ॐ बृहस्पतिर्नः परि पातु पश्चादुतोत्तरस्मादधरादघायोः।
इन्द्रः पुरस्तादुत मध्यतो नः सखा सखिभ्यो वरीयः कृणोतु॥ *(अथर्ववेद ७.५१.१)*

ॐ द्यौश्च म इदं पृथिवी च प्रचेतसौ शुक्रो बृहन् दक्षिणया पितर्तु।
अनु स्वधा चिकितां सोमो अग्निर्वायुर्नः पातु सविता भगश्च॥ *(अथर्ववेद ६.५३.१)*

ॐ शं नो वातो वातु शं नस्तपतु सूर्यः।

अहानि शं भवन्तु नः शं रात्री प्रति धीयतां शमुषा नो व्युच्छतु॥ *(अथर्ववेद ७.६९.१)*

ॐ कयानश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥ *(अथर्ववेद २०.१२४.१)*

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः॥ *(अथर्ववेद २०.२६.६)*

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्। पशूँस्ताश्चक्रे वायव्यां नारण्या ग्राम्याश्च ये॥ *(अथर्ववेद १९.६.१४)*

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, मंत्रपुष्पं समर्पयामि।

प्रदक्षिणा नमस्कारः—यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च। तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे पदे॥

ॐ सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन्पुरुषं पशुम्॥ *(अथर्ववेद १९.६.१५)*

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्या हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्।

(ऋग्वेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रहमण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, प्रदक्षिणा नमस्कारान् समर्पयामि।

प्रसन्नार्घ्यः— ॐ प्रभाकराय विद्महे दिवाकराय धीमहि। तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्॥

ॐ अत्रिपुत्राय विद्महे अमृतोद्भवाय धीमहि। तन्नः सोमः प्रचोदयात्॥

ॐ भूमिपुत्राय विद्महे भारद्वाजाय धीमहि। तन्नः कुजः प्रचोदयात्॥

ॐ तारापुत्राय विद्महे सोमपुत्राय धीमहि। तन्नो बुधः प्रचोदयात्॥
ॐ देवाचार्याय विद्महे वाचस्पतये धीमहि। तन्नो गुरुः प्रचोदयात्॥
ॐ दैत्याचार्याय विद्महे विद्यारूपाय धीमहि। तन्नः शुक्रः प्रचोदयात्॥
ॐ सूर्यपुत्राय विद्महे शनैश्चराय धीमहि। तन्नो मंदः प्रचोदयात्॥
ॐ सैंहिकेयाय विद्महे तमोमयाय धीमहि। तन्नो राहुः प्रचोदयात्॥
ॐ ब्रह्मपुत्राय विद्महे विकृतास्याय धीमहि। तन्नः केतुः प्रचोदयात्॥
ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यं, प्रसन्नार्घ्यं समर्पयामि।

सर्वोपचार पूजनम्—ॐ छत्रं समर्पयामि। चामरेण वीजयामि। गीतं गायामि। नाट्यं नटामि। आन्दोळिकामारोहयामि। अश्वमारोहयामि। गजमारोहयामि। समस्त राजोपचार देवोपचारपूजां समर्पयामि।

ॐ मूर्ध्नो देवस्यं बृहतो अंशवः सप्त संप्ततीः। राज्ञः सोमस्याजायन्त जातस्य पुरुषादधि॥ *(अथर्ववेद १९.६.१६)*
ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्। सूक्तं पंचदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्॥ *(ऋग्वेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, सर्वोपचारपूजां समर्पयामि।

प्रार्थना— ग्रहाणामादिरादित्यो लोकरक्षणकारकः। विषमस्थानसंभूतां पीडां हरतु ते रविः॥
रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रः सुधाशनः। विषमस्थानसंभूतां पीडां हरतु ते विधुः॥
भूमिपुत्रो महातेजा जगतां भयकृत्सदा। वृष्टिकृद्वृष्टिहर्ता च पीडां हरतु ते कुजः॥

उत्पातरूपो जगतां चन्द्रपुत्रो महाद्युतिः। सूर्य प्रियकरो विद्वान् पीडां हरतु ते बुधः॥
देवमन्त्री विशालाक्षः सदालोकहितेरतः। अनेक शिष्य संपूर्णः पीडां हरतु ते गुरुः॥
दैत्यमन्त्री गुरुस्तेषां प्राणदश्च महामतिः। प्रभुस्ताराग्रहाणां च पीडां हरतु ते भृगुः॥
सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः। मंदचारः प्रसन्नात्म पीडां हरतु ते शनिः॥
महाशिरा महावक्त्रौ दीर्घदंष्ट्रो महाबलः। अतनुश्चोर्ध्व केशश्च पीडां हरतु ते तमः॥
अनेक रूपवर्णैश्च शतशोथ सहस्त्रशः। उत्पातरूपो जगतः पीडां हरतु ते शिखी॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*
आरोग्यं पद्मबन्धुर्वितरतु विपुलां संपदं शीतरश्मिः, भूलाभं भूमिपुत्रः सकलगुणयुतां वाग्विभूतिं च सौम्यः।
सौभाग्यं देवमन्त्री रिपुभयशमनं भार्गवः शौर्यमार्किः, दीर्घायुस्सैंहिकेयो विपुलतरयशः केतुराचन्द्रतारम्॥

शान्तिरस्तु शिवं ते अस्तु ग्रहाः कुर्वन्तु मङ्गलम्। अरिष्टानि प्रणश्यन्तु दुरितानि भयानि च। ॐनवग्रहमण्डलस्थ देवताभ्यो नमः, प्रार्थनां समर्पयामि।

यहाँ पर नवग्रह पूजन समाप्त हुआ। मण्डप में कलशों का पूजन भी संपूर्ण हुआ।

अग्निमुख प्रकरण

सृष्टि के आरम्भ में ब्रह्मा जी के मुख से ब्राह्मण एवं अग्नि का प्रादुर्भाव हुआ। इसलिए ब्राह्मणों के लिए अग्नि प्रधान देवता है। अग्नि में देने वाले हविर्भाग समस्त देवताओं को प्राप्त होते हैं। अतः अग्नि मुख से द्रव्यों का देवताओं को अर्पण कर अपने वांच्छित वस्तुओं को अपने लिए एवं राष्ट्र के लिए प्राप्त करते थे। इसलिए अग्नि सिद्धि प्राप्त करते थे। इसके लिए सूर्यकान्त मणि से अग्नि को प्रज्वलित करते थे। जिनके पास यह नहीं था वे अरणी मन्थन विधान से

पीपल का नीचे वाला आधार, एवं खदिर की मथनी से मथ कर अग्नि प्रज्वलित करते थे।

दोनों न होने पर आस-पास के श्रोत्रियों के घर से अग्नि लाकर होम में प्रयुक्त करते थे लौकिक अग्नि का उपयोग प्रयोग में नहीं था श्रोत्रीय अग्नि या सूर्यकान्त मणि का अग्नि या अरणी मन्थन की अग्नि से भी षोडश संस्कार करना चाहिये। बड़े यज्ञों में यही विधान अनिवार्य है। यज्ञों के प्रधान देवता के अनुसार वैष्णवाग्नि, शैवाग्नि, गाणपत्याग्नि, दुर्गाग्नि, हरिहराग्नि, शास्ताग्नि, स्कन्दाग्नि, नामक सात अग्नियों में अपने कर्म के लिए आवश्यक अग्नि को सृष्टिकर उसमें यागादि करने से यज्ञ का संपूर्ण फल प्राप्त होता है। अन्यथा अत्यल्प फल मिलता है।

अग्नौ प्रास्ताहुतिः सम्यक् आदित्यं उपतिष्ठते। आदित्याज्जायते वृष्टिः वृष्टेरन्नं ततः प्रजाः॥ *(मनुस्मृति)*

विधि पूर्वक किया गया अग्नि की आहुतियाँ सूर्य को प्राप्त होते हैं। सूर्य से बारिश होती है। बारिश से अन्न (धान्य) एवं उससे प्रजा होते हैं। अर्थात् विधिपूर्वक किये गये यज्ञों से समृद्धि होती है। इस विधान में पूर्वाङ्ग अर्थात् प्रधान होम से पहले करने वाला कर्म एवं उत्तराङ्ग अर्थात् प्रधान होम के बाद करने वाले कर्म को पूर्णतया बताने वाला विधान अग्निमुख कहलाता है।

प्रत्येक वेद का अलग-अलग विधान है। ऋग्वेद में बाष्कल शाकल दो शाखायें हैं। अधिकतर शाकल शाख के विधान का अनुसरण करते हैं। उसी क्रम से आगे अग्निमुख प्रयोग है। अग्निमुख शुद्ध होने पर ही यज्ञ का फल प्राप्त होता है। लौकिकाग्नि में किये गये हव्य देवताओं को नहीं प्राप्त होते हैं। अतः इसे सावधानी से करना चाहिये।

ऋग्वेद के २१ शाखाओ में २ शाखायें शेष है। यजुर्वेद के १०१ शाखओं में ५ शाखायें उपलब्ध हैं।
सामवेद के १०० शाखओं में ३ शाखयें उपलब्ध हैं। अथर्ववेद मे ९ शाखओं में १ शाखा उपलब्ध है।

लौकिके पावको ह्यग्निः प्रथमः परिकीर्तितः।

लौकिक कार्यों में पावकाग्नि कहलाता है। अग्निस्तु मारुतोनाम गर्भाधाने प्रकीर्तितः। गर्भाधान में मारुत नामक अग्नि कि प्रतिष्ठा होती है।

पुंसवे पवमानस्तु शोभनः शुभकर्मसु।

पुंसवन में पवमान नामक अग्नि एवं शुभकार्यों में शोभन नामक अग्नि की प्रतिष्ठा होती है।

सीमान्ते मंगलोनाम प्रबलो जातकर्मणि। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

सीमान्त संस्कार में मंगल नामक अग्नि एवं जात कर्म संस्कार में प्रबल नामक अग्नि की प्रतिष्ठा होती है।

पार्थिवो नामकरणे प्राशनेन्नस्यवैशुचिः। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

नामकरण संस्कार में पार्थिव अग्नि एवं अन्न प्राशन में शुचि नामक अग्नि कि प्रतिष्ठा होती है।

सभ्यनामातु चूडायां व्रतादेशे समुद्भवः। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

चूडाकर्म संस्कार में सभ्यनाम अग्नि उपनयन व्रत में समुद्भव नामक अग्नि कि प्रतिष्ठा होती है।

गोदाने सूर्यनामास्यद्विवाहे योजकः स्मृतः। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

गोदान में सूर्य नामक अग्नि एवं विवाह में योजन नामक अग्नि की प्रतिष्ठा होती है।

आवसथ्ये द्विजो ज्ञेयो वैश्वदेवेतु रुक्मकः। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

अतिथि सत्कारादि में प्रयुक्त आवसथ्य में द्विज नामक अग्नि एवं वैश्वदेव पाँच महायज्ञों में एक में रुक्मक नामक अग्नि की प्रतिष्ठा होती है।

प्रायश्चित्ते विटश्चैव पाकयज्ञेषु पावकः। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

प्रायश्चिताङ्ग होम में विट नामक अग्नि एवं पाकसंस्थ यज्ञों में अ्सप्त सोमसंस्था, (सप्त हविः संस्था, सप्त पाकसंस्था) इन २१ यज्ञों में पावक नामक अग्नि

की प्रतिष्ठा होती है।

देवानां हव्यवाहश्चपितृणां कव्यवाहनः। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

सामान्य देवे कार्यो में हव्यवाहन नामक अग्नि एवं पितृयज्ञों में कव्यवाहन नामक अग्नि की प्रतिष्ठा होती है।

शान्तिके वरदः प्रोक्तः पौष्टिके बलवर्धनः। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

समस्त शान्तिकर्मो में वरद नामक अग्नि एवं समस्त पौष्टिक कर्मो में बलवर्धन नामक अग्नि की प्रतिष्ठा होती हैं।

पूर्णाहुत्यां मृडोनाम क्रोधोग्निश्चाभिचारिके। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

पूर्णाहुति में मृडनाम अग्नि एवं अभिचार (शत्रु नाशादि) कर्मो में क्रोध नामक अग्निकि प्रतिष्ठा होती हैं।

वश्यार्थे कामदो नाम वनदाहे तु दूषकः। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

वशीकरण कर्म में कामद नामक अग्नि एवं वनदाह कर्म में (उदाहरण—खाण्डव दहन) दूषक नामक अग्नि की प्रतिष्ठा होती है।

कुक्षौ तु जाठरो ज्ञेयः क्रव्यादोमृतदाहने। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

पेठ में जाठर नामक अग्नि एवं मरे हुए को जलाने में क्रव्याद नामक अग्नि की प्रतिष्ठा होती है।

वह्निनामालक्षहोमे कोटिहोमे हुताशनः। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

जहाँ लक्ष संख्याक होम होता है वहाँ वह्नि नामक अग्नि, कोटिहोम में हुताशन नामक अग्नि की प्रतिष्ठा होती है।

वृषोत्सर्गेऽध्वरो नाम शुचये ब्राह्मणः स्मृतः। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

अपर संस्कार में ग्यारवें दिन करने वाला कर्म में, अथवा अपुत्र व्यक्ति स्वतः जीवित रहते इस कर्म को करते समय अध्वर नामक अग्नि, एवं शुद्धि के लिए करने वाले कर्म में ब्राह्मण नामक अग्नि की प्रतिष्ठा होती है।

समुद्रे वाडवोह्यग्निः क्षये संवर्तकस्तथा। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

समुद्र में वाडव नामक अग्नि एवं प्रलय काल में संवर्तक नामक अग्नि की प्रतिष्ठा होती है।

ब्रह्मावैगार्हयत्पश्च ईश्वरो दक्षिणास्तथा। विष्णुराहवनीयः स्यादग्निहोत्रेत्रयोग्नयः॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

अग्निहोत्र में प्रयुक्त तीन अग्नियों में गार्हपत्य अग्नि में ब्रह्मा नामक अग्नि, दक्षिणाग्नि में ईश्वर नामक अग्नि, आहवनीय अग्नि में विष्णु नामक अग्नि की प्रतिष्ठा होती है।

ज्ञात्वैवमग्निनामानि गृह्यकर्म समारभेत्। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

इन अग्नियों के नामों को जानकर ही कर्म करना चाहिये।

इमानिसर्वसंस्कारशांतिकपौष्टिकाद्यनुष्ठानोपयुक्तानि तत्र तत्र योज्यान्यग्निनामानि।

ऊपर लिखे अग्नि नामों को जानकर उन्हें प्रयोगकर सभी संस्कार, शान्तिक, पौष्टिक आदि अनुष्ठान करने चाहिये।

वैदिक प्रक्रिया से अग्नि जननम्-तत्र यजमानः कृतनित्यक्रियः शुचिः परिहित धौतवासाः पीठोपविष्टः प्राङ्मुखः वाग्यतो द्विराचम्य दर्भपाणिः प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य ममोपात्त दुरितक्षयद्वारा परमेश्वर प्रीत्यर्थं अमुक कर्म करिष्ये।

सामान्य संस्कारों में ऋत्विग्वरण के बाद एवं विशिष्ट यज्ञों में मधुपर्क के बाद पूर्वाभिमुख बैठकर दो बार आचमन करें, हाथ में कुश लेकर—

अप्रच्छिन्नाग्रौ अनन्तर्गर्भे प्रादेशमात्रौ कुशौ पवित्रम्।

कुश लगभग १२ अंगुल लम्बे हो जिनका अग्र टूटा न हो, एवं दूसरे कुश किले न हो ऐसे दो कुशों से बनाना चाहिये।

ग्रन्थीकृत पवित्रेण न भुञ्जीयात् न चाचमेत्। न पिबेत् यदि कृत्वैतान्तदातच्छेणितं भवेत्॥

तस्मादग्रथितेनाम्बु पिबेत् भुञ्जीतचाचमेत्। *(अश्वलायन स्मृति)*

ग्रन्थि (गाँठ) युक्त पवित्र पहनकर न खाना चाहिये आचमन भी नहीं करना चाहिये। यदि उसे पहनकर खाने से आचमन करने से वह भेजन एवं जल रक्त समान हो जाता है। इसलिए बिना गाँठ बाँधे हुए कुश से भोजन एवं आचमन करना चाहिये।

हैमेन सर्वदा सर्वान् कुर्यादेवाविचायन्। *(अश्वलायन स्मृति)*

सोने के पवित्र बनाकर सभी कर्म कर सकने हैं। कारण यह पवित्र कभी अपवित्र नहीं होता है। अतः संभव हो तो पवित्र उपयोग में ला सकते हैं। कुशों को हाथ में लेकर प्राणायाम करें प्राणायाम के बाद संकल्प लेवें।

तदंगहोमं कर्तुं स्थंडिलादि करिष्ये।

उस उद्देश्य (संकल्प) के अंगभूत होम करने के लिए स्थंडिलादि कर्मो को करुँगा। इनका विवरण आगे है।

स्थंडिलनिर्माण विधान—इति संकल्प्य गोमयादि लिप्तेशुद्धदेशे शुद्धमृदा ऐशान्यारंभमुदक्संस्थं चतुरंगुलोन्तं अंगुलो न्नतं वा चतुर्दिक्षुमिलित्वा द्विसप्तत्यंगुल परिधिकं फलितमष्टादशांगुल विस्तृतं होमानुसारेण तदधिकं वा न तु ततो न्यूनं मध्योन्नतं स्थंडिलं कुर्यात्। गोमय से लेपित शुद्ध भूमि पर, पवित्र मिट्टी से लेपन करना चाहिये या रेत डालना चाहिये।

ईशान्य से प्रारम्भकर उत्तर में समाप्त हो ऐसे चार अंगुल ऊँचा या एक अंगुल ऊँचा चबूतरा पवित्र मिट्टी से या रेत से बनाना चाहिये। उस चबूतरे का संपूर्ण विस्तार ७२ अंगुल एवं एक-एक दिशा में १८ अंगुल होना चाहिये। इससे कम कभी नहीं करना चाहिये। बड़े यागों के अनुसार बड़ा सकते हैं। सामान्य

होमों में स्थण्डिल का प्रयोग करते हैं। बड़े होमों में हवन कुण्ड बनाते हैं।

स्थण्डिल के बीच वाला भाग ऊँचा रहना चाहिये।

ऊँचाई १ अंगुल या चार अंगुल, लम्बाई एवं चौढ़ाई

(बाण प्रमाण हस्त प्रमाण या १८ अंगुल)

लिख्यन्तेऽसुरनिर्हत्यै सिकताः सर्वकर्मसु। चतुरस्त्र चतुर्दिक्षु बाणमात्रं द्विरावृतम्॥
भूमौ भूपुर मुख्यस्य दिक्ष्वश्वथ्थ दलाकृतैः। नेच्छन्ति मध्यमावेष्टु मसुरा यज्ञहारिणः॥ *(अश्वलायन स्मृति)*

सभी कर्मो में असुरनिवारण के लिए चौक वाले चार दिशाओं में बाण के समान लम्बे (१८'') स्थण्डिल में रेत का प्रयोग करें। उसके बाहर सफेद रंगोली से दो चौक लिखें। चार दिशाओं में अश्वत्थ पत्र लिखें। एवं चार उपदिशाओं में अष्टदल पत्र का निर्माण रंगोली से करें। एवं रंग भरें। इसका चित्र अगले पन्ने में है। यज्ञ को अपहरण करने वाले असुर मण्डल एवं स्थण्डिल के अन्दर प्रवेश करने में समर्थ नहीं होते हैं। अन्यथा वे अन्दर आकर देवभाग का अपहरण करते हैं।

कुण्ड का विवरण अग्निमुख के अन्त में होगा।—

स्थण्डिल शुद्धिः— तद् गोमयेन प्रदक्षिणमुपलिप्य दक्षिणे उदीच्यां द्वे, प्रतीच्यां चतुः, प्राच्यामर्ध इत्यंगुलानित्यक्त्वा दक्षिणोपक्रमां उदक्संस्थां प्रादेशमात्रां एकां लेखां तस्या दक्षिणोत्तरयोः प्रागायते पूर्वरेखया असंसृष्टे प्रादेशसंमिते द्वे लेखे लिखित्वा तयोर्मध्ये परस्परं असंसृष्टाः उदक्संस्थाः प्रागायताः प्रादेश संमिताः तिस्त्रः इति षड्लेखाः यज्ञीय

शकलमूलेन दक्षिण हस्तेन उल्लिख्य लेखासु तच्छकलं उदगग्रं निधाय स्तंडिलं अद्भिः अभ्युक्ष्य शकलं भंक्त्वा आग्नेय्यां निरस्य पाणिं प्रक्षाल्य वाग्यतः भवेत्।

स्थण्डिल को पहले गोमय से लेपना चाहिये। स्थण्डिल (वेदी) में दक्षिण में आठ अंगुल, उत्तर में दो अंगुल, पश्चिम में चार अंगुल, पूर्व में आधा अंगुल छोड़कर दक्षिण से प्रारम्भकर उत्तर में समाप्त हो ऐसे १२ अंगुल चौक बनाना चाहिये। फिर बीच में दक्षिण से उत्तर एक रेखा खींचना चाहिये। १२ अंगुल फिर दक्षिण से प्रारम्भ कर एक दक्षिण में एवं एक उत्तर में दो रेखायें पश्चिम से पूर्व की ओर खीचें १२ अंगुल बी फिर दक्षिण से प्रारम्भकर दक्षिण में समाप्त होने वाले पश्चिम से पूर्व में समाप्त होने वाले तीन रेखायें। (१२ अंगुल) खीचें। (प्रादेश प्रमाण-लगभग १२ अंगुल) (ब) इसे यज्ञ में प्रयुक्त अश्वत्थादि समित् के अग्रभाग से इन लकीरों को खीचना चाहिये। दाहिने हाथ से लिखें। (रेत पर) खीचने वाले समित् को उसके ऊपर उत्तर उत्तराभिमुख रखें। फिर स्थण्डिल (stage) को जल से अभ्युक्षण करना चाहिये। (अभ्युक्षण मतलब मुष्टि में जल लेकर सिञ्चन करना चाहिये।) फिर उस समित् को (लकीर खीचें) तोडकर आग्नेय दिशा में फेंककर हाथ धो लेना चाहिये।

इन रेखाओं के देवता, उद्देश्य—तन्मध्ये सिकताकीर्णे लिख्यन्ते यज्ञसिद्धये। यज्ञीय शकलेनैव रेखाः षट् द्वादशांगुलाः॥ *(अश्वलायन स्मृति)*

रेंत से व्याप्त होम वेदी पर यज्ञ सिद्धि के लिए यज्ञ के लिए योग्य समित् से बारह अंगुल प्रमाण वाले ६ रेखायें खींचना चाहिये।

पूर्वा प्रजापते रूपा लिख्यते चोदगायता। दक्षिणा ताररूपा स्यात् सावित्र्याश्चोत्तरा स्मृता॥
मध्ये तिस्त्रः त्रिवेदानां रूपाः प्रागायता मताः। स्मर्तव्या इति तारेखा वैदिकं कर्म कर्तृभिः॥
प्रजापतेः समुत्पन्ना स्ताराद्याः श्रुतयोखिलाः। तेषां तु कर्मनानात्वात् नानात्वमिह संस्मृतम्॥
ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च उमालक्ष्मीसरस्वती। षड्रेखा देवताः प्रोक्ता अक्षतांस्तासु निक्षिपेत्॥ *(अश्वलायन स्मृति)*

सबसे पहले दक्षिण से उत्तर की ओर एक १२ अंगुल की रेखा खीचे। यह प्रजापति का रूप है (अ)। दक्षिण भाग में पश्चिम से पूर्व की ओर जाने वाले एक १२ अंगुल प्रमाण का रेखा खीचे। यह प्रणव स्वरूप है (ब)। उत्तर दिशा में पश्चिम से पूर्व की ओर जाने वाला एक १२ अङ्गुल प्रमाण का रेखा खीचें। यह सावित्री रूप है (ब)।

इन दोनों के बीच में तीन रेखायें पश्चिम से पूर्व की ओर खीचें। ये भी १२ अङ्गुल प्रमाण के हों। यह तीन वेदो के स्वरुप है। वैदिक कर्म करने वाले इन तीन रेखाओं को खीचते समय तीन वेदो का स्मरण करना चाहिये। प्रजापति ब्रह्मा से उत्पन्न प्रणवादि सभी श्रुतियाँ अनेक रूप में हैं। अतः ये रेखयें भी अलग-अलग रहना चाहिये। इनका मिलन नहीं होना चाहिये।

पहले खीचें दक्षिण से उत्तर की ओर की रेखा में ब्रह्मा जी को (अ) ॐ ब्रह्मणे नमः। **दूसरी बार** खीचें दक्षिण में स्थित पश्चिम से पूर्व की ओर खीचें रेखा में विष्णु जी को (ब) ॐ विष्णवे नमः। **तीसरी बार** खींचे उत्तर में स्थित पश्चिम से पूर्व की ओर खींचे रेखा में रुद्र जी को (ब) ॐ रुद्राय नमः एवं बीच के तीन रेखाओं में दक्षिण से उत्तर की ओर क्रम से उमा, लक्ष्मी, सरस्वती जी का आवाहन कर पञ्चोपचार या षोडशोपचार से पूजन करना चाहिये।

ॐ उमायै नमः। ॐ लक्ष्म्यै नमः। ॐ सरस्वतत्यै नमः। ॐ ब्रह्मणे नमः। ब्रह्माणं आवाहयामि। ॐ विष्णवे नमः। विष्णुं आवाहयामि। ॐ रुद्राय नमः। रुद्रं आवाहयामि। ॐ उमायै नमः। उमां आवाहयामि। ॐ लक्ष्म्यै नमः। लक्ष्मीं आवाहयामि। ॐ सरस्वत्यै नमः। सरस्वतीं आवाहयामि। ॐ आवाहित देवताभ्यो नमः। ॐ लं पृथिव्यात्मना गन्धं कल्पयामि। ॐ हं आकाशात्मना पुष्पं कल्पयामि। ॐ यं वाय्वात्मना धूपं कल्पयामि। ॐ रं अगन्यात्मना दीपं कल्पयामि। ॐ वं अबात्मना नैवेद्यं कल्पयामि। ॐ पं परमात्मना पञ्चोपचारपूजां समर्पयामि। अनेन पूजनेन आवाहित देवताः प्रीयन्ताम्।

त्वं भूमित्येष्योजसा त्वं वेद्यां सीदसि चारुरध्वरे। त्वां पवित्रमृषयो भरन्तस्त्वं पुनीहि दुरितान्यस्म॥

दिति पवित्रे अन्तर्धाय हविर्निर्वपति (इस वाक्य से चरुपात्र में दो कुशा डालें फिर अक्षत की कटोरी हाथ में लें उसमें से प्रत्येक देवता के नाम से दो-दो

दाना चरु पात्र में डालते जायें —मुट्ठी-मुट्ठी भर प्रत्येक देताओं के नाम से निकालना चाहिए ये नियम है।) देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यामग्रये जुष्टं निर्वपामीति (आदित्याय जुष्टम निर्वपामि, चन्द्राय अङ्गारकाय, बुधाय, बृहस्पतये, शुक्राय, शनिश्चराय, राहवे, केतवे, विनाकाय, दुर्गायै, क्षेत्रपालाय, वायवे, आकाशाय, अश्विनभ्यां, इन्द्राय, अग्नेयै, यमाय, नैर्ऋतये, वरुणाय, वायवे, सोमाय, इशानाय, विष्णवे जुष्टं निर्वपामि एवं जुष्टं प्रोक्षामि कुशा लेकर के जल पात्र से चरुपात्र में प्रोक्षण करें)

परित्वाग्ने पुरं वयमिति त्रिः पर्यग्नि करोति। (इस मन्त्र से ३ बार अग्नि कुण्ड की पूर्व दिशा से जल घुमाकर पूर्व दिशा तक ही प्रदक्षिणा करें)

परिं त्वाग्ने पुरं वयं विप्रं सहस्य धीमहि। धृषद् वर्णं दिवेदिवे हन्तारं भङ्गुरावतः॥ त्रिः पर्यग्नि करोति।

अग्निं अर्चयेत—अग्नेर्मन्वे प्रथमस्य प्रचेतसः पाञ्चजन्यस्य बहुधा यमिन्धते।
विशोविशः प्रविशिवांसमीमहे स नो मुञ्चत्वंहसः॥
यथा हव्यं वहसि जातवेदो यथा यज्ञं कल्पयसि प्रजानन्। एवा देवेभ्यः सुमतिं न आ वह स नो मुञ्चत्वंहसः॥
यामन्यामन्नुपयुक्तं वहिष्ठं कर्मन्कर्मन्नाभगम्। अग्निमीडे रक्षोहणं यज्ञवृधं घृताहुतं स नो मुञ्चत्वंहसः॥
सुजातं जातवेदसमग्निं वैश्वानरं विभुम। हव्यवाहं हवामहे स नो मुञ्चत्वंहसः॥
येन ऋषयो बलमद्योतयन् युजा येनासुराणामयुवन्त मायाः। येनाग्निना पणीनिन्द्रो जिगाय स नो मुञ्चत्वंहसः॥
येन देवा अमृतमन्वविन्दन् येनौषधीर्मधुमतीरकृण्वन्। येन देवाः स्व१राभरन्त्स नो मुञ्चत्वंहसः॥
यस्येदं प्रदिशि यद् विरोचते यज्जातं जनितव्यं च केवलम्। स्तौम्यग्निं नाथितो जोहवीमि स नो मुञ्चत्वंहसः॥

(अथर्ववेद .४.२३.१-७)

इन मंत्रों को बोल करके अग्नि देवता का ध्यान एवं पञ्चोपचार पूजन करना चाहिए।

अग्निमूर्तिध्यान—ॐ चत्वारि शृङ्गास्त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य।
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महोदेवो मर्त्यां आविवेश॥ (गोपथ ब्राह्मण १.१६)
सप्तहस्तश्चतुः शृंगः सप्तजिह्वो द्विशीर्षकः। त्रिपात्प्रसन्नवदनः सुखासीनः सुचिस्मितः॥
स्वाहांतुदक्षिणेपार्श्वे देवीं वामेस्वधां तथा। बिभ्रद्दक्षिण हस्तैस्तु शक्तिमन्नंस्त्रुचं स्त्रुवं॥
तोमरंव्यजनंवामैर्घृतपात्रं च धारयन्। मेषारूढो जटाबद्ध गौरवर्णो महौजसः।
धूम्रध्वजो लोहिताक्षः सप्तार्चिः सर्वकामदः॥ आत्माभिमुखमासीन एवं रूपो हुताशनः। (ब्रह्मकर्म समुच्चय-अग्निमुख प्रकरण)

हे अग्ने शाण्डिल्यगोत्र मेषारूढ वैश्वानर प्राङ्मुखः सन् ममाभिमुखो वरदस्सुप्रसन्नो भव। अष्टदिशी अग्निं अर्च्येत्। ॐ पूर्वे अग्नये नमः ॐ आग्नेयां अग्नये नमः ॐ दक्षिणे अग्नये नमः ॐ नैर्ऋत्यां अग्नये नमः ॐ पश्चिमे अग्नये नमः ॐ वायव्ये अग्नये नमः ॐ उत्तरे अग्नये नमः ॐ ऐशान्ये अग्नये नमः ॐ मध्ये यज्ञ पुरुषाय नमः॥ उत्तरतोऽग्नेरुपसादयतीध्मम्। (इस वाक्य से १५ लकड़ी के गाठ को इध्मा कहते हैं कुण्ड के उत्तर दिशा में नीचे कुशा का आसन विछाकर उसके ऊपर इध्मा रख दें एवं उसी के उत्तर में बर्हिः मुठ्ठी भर कुशा को बर्हिः कहते हैं) उत्तर बर्हिः। अग्नये त्वा जुष्टं प्रोक्षामीतीध्मम्। (इस वाक्य से इध्मा को प्रोक्षण करें एवं बर्हिः को भी प्रोक्षण करें) पृथिव्या प्रोक्षामि इति बर्हिः। (इस वाक्य को बोल करके मुठ्ठी भर कुशाग्रों को जहां घी का पात्र रखा जाता है वहां पर दक्षिण से लेकर उत्तर तक विछाना है) दर्भमुष्टिमभ्युक्ष्य पश्चादग्नेः प्रागग्रं निदधात्यूर्णाम्रदं प्रथस्व स्वासस्थं देवभ्य इति। दर्भाणामपादाय (बड़ा वाला कुशा लेकर करके ब्रह्मा के आसन को स्पर्श करें नियम ये है कि ब्रह्मा जी का आसन अग्नि कुण्ड के दक्षिण दिशा में देना चाहिए ऋषीणां इस मन्त्र को बोले) ऋषीणां प्रस्तरोऽसीति दक्षिणातो ऽग्नेर्ब्रह्मासनं निदधाति।

ऋषीणां प्रस्तरोऽसि नमोऽस्तु दैवाय प्रस्तराय।

पुरस्तादग्ररास्तार्य तेषां मूलान्यपरेषां प्रान्तैरवछादयन्परिसर्पति दक्षिणोनाग्रिमा पश्चार्धात्। परि स्तृणीहीति संप्रेष्यति।

(यहां पर जो आगे वाक्य लिखा है उस वाक्य को बोलते हुए इस्तीर्ण वशिष्ठ कुशा लेकर के पहले पूर्व दिशा में डाले जिसका मूल भाग दक्षिण दिशा की ओर होना चाहिए एवं अग्र भाग उत्तर दिशा की ओर होना चाहिए इसी तरह से पश्चिम दिशा में डाले फिर मूल भाग पश्चिम दिशा को एवं अग्र भाग पूर्व दिशा की ओर होना चाहिए इसी तरह उत्तर दिशा में भी डालें **नोट**—अग्र भाग पूर्व एवं उत्तर की ओर होना चाहिए एवं मूल भाग दक्षिण एवं पश्चिम की ओर होना चाहिए) पुरस्तादग्रेरास्तीर्य तेषां मूलान्यपरेषां प्रान्तैरवछादयन्परिसर्पति (इन वाक्यों से स्तीर्य को स्पर्श करें) दक्षिणोनाग्रिमा पश्चार्धात् । परि स्तृणीहीति संप्रेष्यति।

परिस्तृणीहिपरि धेहि वेदिंमा जामिं मोषीरमुया शयानाम्। होतृषदनं हरितं हिरण्ययं निष्का एते यजमानस्य लोके॥

(देवस्यत्वा इस मंन्त्र से स्तीर्ण को प्रोक्षण करें)

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यांप्रसूतः प्रशिषा परिस्तृणामीति।

स्तीर्णां प्रोक्षति (हवि को प्रोक्षण करें) हविषां त्वा जुष्टं प्रोक्षामीति। (दो कुशा लेकर के अग्नि में जलाकर घी पात्र के अन्दर ३ परिक्रमा करें उसके बाद कुशा को अग्नि कुण्ड के अन्दर डाल दें।) विलीनपूतमाज्यं गृहीत्वाधिश्रृत्य पर्यग्नि कृत्वो (इस वाक्य से उत्तर की ओर घी पात्र को किंचित खिंचना है।) दगुद्वास्य पश्चाद्ग्रेरुपसाद्योदगग्राभ्यांपवित्राभ्यामुत्पुनाति। (दो कुशा को लेकर अनामिका एवं अंगुष्ठ के बीच में दबा कर घी पात्र के अन्दर ४ बार चलायें यह प्रक्रिया पूरी होने के बाद अग्नि कुण्ड में कुशा को डाल दें।)

विष्णोर्मनसा पूतमसि। देवस्त्वा सवितोत्पुनातु। अच्छिद्रेण त्वा पवित्रेण शतधारेण सहस्त्रधारेण सुप्वोत्पुनामीति

तृतीयम्। तूष्णीं चतुर्थम्। (इस वाक्य को पढ़कर श्रुवा से दो बार घी चरु पात्र में डालें।) शृतं हविरभिघारयति मध्वा समञ्जन्घृतवत्कराथेति।

अभिघार्योदञ्चमुद्वासयत्युद्वासयाग्रे: (इस वाक्य को पढ़कर चरु पात्र को उत्तर दिशा की ओर खिचें।)

अदारसृद् भवतु देव सोमास्मिन् यज्ञे मरुतो मृडता नः। मा नो विददभिभा मो अशस्तिर्मा नो विदद् वृजिना द्वेष्या या॥

(इस मन्त्र से घी पात्र के दायें एवं बायें हाथ फैला करके घी को देखें) शृतमर्क हव्यमा सीद पृष्ठममृतस्य धामेति। पश्चादाज्यस्य निधायालंकृत्य समानेनोत्पुनाति। अदारसृदित्यवेक्षते। उत्तिष्ठतेत्यैन्द्रम्। (३ समीधा हाथ में लेकर के अग्नि को दिखाकर के घी पात्र के बायीं तरफ रख दें।)

अग्निर्भूम्यामोषधीष्वग्निमापो बिभ्रत्यग्निरश्मसु। अग्निरन्तः पुरुषेषु गोष्वश्वेष्वग्नयः॥

अग्निर्भूम्यामिति तिसृभिरुपसमादधात्यस्मै क्षत्राणयेतमिध्ममिति वा।

युनज्मि त्वा ब्रह्मणा दैव्येन हव्यायास्मै वोढवे जातवेदः। इन्धानास्त्वा सुप्रजसः सुवीर ज्योग्जीवेम बलिहृतो वयं त

इति। (इस वाक्य को पढ़कर के कुणड के नैर्ऋत्य एवं दक्षिण के मध्य में खाली जल पात्र को स्पर्श करके अभी मन्त्रीत करें।) दक्षिणतो जाङ्मायनमुदपात्रमुपसाद्याभिमन्त्रयते तथोदपात्रं धारय यथाग्रे ब्रह्मणस्पतिः। सत्यधर्मां अदीधरद्देवस्य सवितुः सव इति।

अथोदकमासिञ्चति—(नीचे लिखे हुए मन्त्र को पढ़कर के जल पात्र में जलधारा डालें।)

इहेत देवीरमृतं वसाना हिरणयवर्णा अनवद्यरूपाः। आपः समुद्रो वरुणश्च राजा संपातभागान्हविषो जुषन्ताम्। इन्द्रप्रशिष्टा वरुणप्रसूता अपः समुद्राद्दिवमुद्वहन्तु। इन्द्रप्रशिष्टा वरुणप्रसूता दिवस्पृथिव्याः श्रियमा वहन्त्विति।

(इस वाक्य को पढ़कर के हवि आज्यादि पर एवं सामाग्रीयों पर प्रोक्षण करें) ऋतं त्वा सत्येन परिषिञ्चामि जातवेद इति सह हविर्भिः पर्युक्ष्य (मंत्र को पढ़कर के ४ बार आचमन करें मन्त्र आगे है)

जी॒वा स्थ॑ जी॒व्यासं॒ सर्व॒मायु॑र्जीव्यासम्। उ॒प॒जी॒वा स्थोप॑ जीव्यासं॒ सर्व॒मायु॑र्जीव्यासम्।
सं॒जीवा स्थ॒ सं जी॑व्यासं॒ सर्व॒मायु॑र्जीव्यासम्। जी॒व॒ला स्थ॑ जी॒व्यासं॒ सर्व॒मायु॑र्जीव्यासम्।

जीवाभिराचम्योपोत्थाय (आगे दिये गये वाक्य से वेद भगवान एवं यज्ञ पुरुष को प्रणाम करें) वेद प्रपद्धिः प्रपद्यत

ॐ प्रपद्ये भूः प्रपद्ये भुवः प्रपद्ये स्वः प्रपद्ये जनत्प्रपद्य इति।

प्रपद्य (आगे वाक्य को पढ़कर यजमान अपने आसन के नीचे दो कुशा डालें) पश्चात्स्तीर्णस्य दर्भानास्तीर्याहि दैधिषव्योदतस्तिष्ठा (आगे वाक्य को पढ़कर के ब्रह्मासन को देखना चाहिए एवं बड़े कुशा से ब्रह्मा जी को स्पर्श करें) न्यस्य सदने सीद यो ऽस्मत्पाकतर इति ब्रह्मासनमन्वीक्षते। (आगे वाक्य को पढ़कर के बह्माजी के आसन के नीचे कुशा का आसन है उसमें से दक्षिण कुशा निकाल करके नैर्ऋत्य दिशा की ओर फेंक दें) निरस्तः पराग्वसुः सह पाप्मना निरस्तः सो ऽस्तु यो ऽस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्म इति दक्षिणा तृणं निरस्यति। (इस वाक्य को पढ़कर के एवं आगे मन्त्र दिया गया है विमृग्वरी इस मन्त्र को पढ़ते हुए ब्रह्मासन कुशा से स्पर्श करें) तदन्वालभ्य जपतीदमहमर्वाग्वसोः सदने सीदाम्यृतस्य सदने सीदामि सत्यस्य सदने सीदामीष्टस्य सदने सीदामि पूर्तस्य सदने सीदामि मामृषदेव बर्हिः स्वासस्थं त्वाध्यासदेयमूर्णम्रदमनभिशोकम्।

वि॒मृग्व॑रीं पृथि॒वीमा व॑दामि क्ष॒मां भूमिं॒ ब्रह्म॑णा वावृधा॒नाम्। ऊर्जं॑ पुष्टं॑ बिभ्र॑तीमन्नभा॒गं घृ॒तं त्वा॒भि नि षी॑देम भूमे॥

मित्युपविश्यासनीयं ब्रह्मजपं जपति (आगे इस वाक्य को पढ़कर के अपने आसन को पकडकर अभिमन्त्रित करें) बृहस्पतिर्ब्रह्मा ब्रहमसदन आसिष्ये बृहस्पते यज्ञं गोपाय यदुदुद्वत उन्निवतः शकेयमिति। (आगे लिखे हुए वाक्य से यजमान अपने दक्षिण हाथ में दो कुशा लेकर के अंगुली में लपेट लें एवं बायें हाथ में श्रुवा लें मूल भाग से लेकर अग्र भाग होते हुए मूल भाग तक ३ बार परिक्रमा करने के उपरान्त कुशा एवं श्रुवा सहित अग्नि में तपायें फिर हाथ में लिपटा हुआ कुशा अग्नि कुण्ड में डाल दें) दर्भैः स्रुवं निर्मृज्य निष्टप्तं रक्षो निष्टप्ता अरातयः प्रत्युष्टं रक्षः प्रत्युष्टा अरातय इति प्रतप्य।

मूले स्त्रुवं गृहीत्वा जपति विष्णोर्हस्तो ऽसि दक्षिणः पूष्णा दत्तो बृहस्पतेः तं त्वाहं स्त्रुवमाददे देवानां हव्यवाहनम्। अयं स्त्रुवो वि दधाति होमाञ्छताक्षरछन्दसा जागतेन। (मूल भाग में श्रुवा को पकड़े इसके उपरान्त वाक्य रुपी मंत्र को बोलते हुये श्रुवा को चार बार स्थानांतरण करें)

सर्वा यज्ञस्य समनक्ति विष्ठा बार्हस्पत्येष्टिः शर्मणा दैव्येनेति। ओं भूः शं भूत्यै त्वा गृह्णे भूतय इति प्रथमं ग्रहं गृह्णाति। ओं भुवः शं पुष्ट्यै त्वा गृह्णे पुष्टय इति द्वितीयम्। ओं स्वः शं त्वा गृह्णे सहस्रपोषायेति तृतीयम्। ओं जनच्छं त्वा गृह्णे ऽपरिमितपोषायेति चतुर्थम्। राजकर्माभिचारिकेष्वमुष्य त्वा प्राणाय गृह्णे ऽपानाय व्यानाय समानायोदानायेति पञ्चमम्। अग्नावग्निर्हदा पूतं पुरस्ताद्युक्तो यज्ञस्य चक्षुरिति जुहोति। (इन चार मंत्रो को पढ़ते हुये श्रुवा से चार बार घी की आहूति दें यज्ञ कुण्ड के मध्य में दें।)

ॐ अग्नावग्निश्चरति प्रविष्ट ऋषीणां पुत्रो अभिशस्तिपा उं।
नमस्कारेण नमसा ते जुहोमि मा देवानां मिथुया कर्म भागम् स्वाहा
हृदा पूतं मनसा जातवेदो विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
सप्तास्यानि तव जातवेदस्तेभ्यो जुहोमि स जुषस्व हव्यम् स्वाहा
पुरस्ताद् युक्तो वह जातवेदोऽग्ने विद्धि क्रियमाणं यथेदम्।
त्वं भिषग् भेषजस्यासि कर्ता त्वया गामश्वं पुरुषं सनेम स्वाहा
यज्ञस्य चक्षुः प्रभृतिर्मुखं च वाचा श्रोत्रेण मनसा जुहोमि।
इमं यज्ञं विततं विश्वकर्मणा देवा यन्तु सुमनस्यमानाः स्वाहा।

पश्चादग्नेर्मध्यदेशे समानत्र पुरस्ताद्धोमान्। दक्षिणेनाग्निमुदपात्र आज्याहुतीनां संपातानानयति। पुरस्ताद्धोम आज्यभागः संस्थितहोमः समृद्धिः शान्तानामिति

। एतावाज्यभागौ ।

वृष्णो बृहते स्वर्विदे अग्नये शुल्कं हरामि त्विषीमते। स न स्थिरान्बलवतः कृणोतु ज्योक्क नो जीवातवे दधात्वग्नये स्वाहे त्युत्तरपूर्वार्ध आग्नेयमाज्यभागं जुहोति। (इस वाक्य रुपी मंत्र को पढ़कर के पूर्व एवं उत्तर के मध्य ईशान दिशा के बीचो बीच में घी की आहूति दें) दक्षिणपूर्वार्ध सोमाय– त्वं सोम दिव्यो नृचक्षाः सुगाँ अस्मभ्यं पथो अनु ख्यः। अभि नो गोत्रं विदुष इव नेषो ऽछा नो वाचमुशंती जिगासि सोमाय स्वाहेति। (दक्षिण पूर्व के बीचो बीच अग्नेय कोण में घी की आहूति दें यह भी ध्यान दें कि ये आहूतियां यज्ञ की नेत्र मानी जाती है ये समझ कर आहूतियां दें) मध्ये हविः। उपस्तीर्याज्यं संहताभ्यामङ्गुलिभ्यां द्विर्हविषो ऽवद्यति मध्यात्पूर्वार्धाच्च। अवत्तमभिघार्य द्विर्हविः प्रत्यभिघारयति। (इस वाक्य को पढ़कर के श्रुवा से घी लेकर के दो बार श्रुक में डालें इसके उपरान्त चरु पात्र के अन्दर से चरु निकालना हैं मध्य एवं पूर्वाध से ये चरु श्रुक में रखे फिर श्रुवा से दो बार जहां से चरु निकाला गया है उसी स्थान पर घी डालें फिर श्रुवा से दोबारा दो बार श्रुक में घी डालें) यतोयतो ऽवद्यति तदनुपूर्वम्। एवं सर्वाण्यवदानानि । अन्यत्र सौविष्टकृतात्।

ॐ उदेनमुत्तरं नयाग्ने घृतेनाहुत। समेनं वर्चसा सृज प्रजया च बहुं कृधि स्वाहा

उदेनमुत्तरं नयेति पुरस्तादधोमसंहतां पूर्वाम्। एवं पूर्वांपूर्वां संहतां जुहोति। स्वाहान्ताभिः प्रत्यृचं होमाः। (इस मंत्र को बोल करके यजमान श्रुक वाली आहूति हवन कुण्ड के मध्य में छोड़ दे फिर सभी पंडित मिलकर के नवग्रह क्रतु साद्गूण्य क्रतु संरक्षक एवं प्रधान देवता श्री विष्णु का हवन करें)

नवग्रह होमः

प्रधान देवता सूर्य होमः—प्रधान देवता आदित्य प्रीत्यर्थे अर्कसमित्, आज्य, चरु होमे विनियोगः।

ॐ उच्चा पतन्तमरुणं सुपर्णं मध्ये दिवस्तरणिं भ्राजमानम्।
पश्याम त्वा सवितारं यमाहुरजस्त्रं ज्योतिर्यदविन्दुदत्त्रिः स्वाहा॥

आदित्यायेदं न मम। २८ बार इस मंत्र से अर्क सहित घी एवं चरु से होम यह संख्या ८ या २८ या १०८ बार कर सकते हैं।

दिवाकरं दीप्त सहस्त्ररश्मिं तेजोमयं जगतः कर्मसाक्षिम्। अंशुं भानुं सूर्यमादिं ग्रहाणां दिवाकरं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

आदित्याय नमः।

प्रधान देवता सोम होमः—प्रधान देवता चन्द्रप्रीत्यर्थे पलाश समित्, आज्य, चरु होम विनियोगः।

ॐ सुतासो मधुमत्तमाः सोमा इन्द्राय मन्दिनः। पवित्रवन्तो अक्षरन्देवान्गच्छन्तु वो मदाः स्वाहा॥

सोमाय इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से पलाश सहित घी एवं चरु से होम करें।

प्रार्थना— यः कालहेतोः क्षयवृद्धिमेति यं देवताः पितरश्चापिबन्ति तं वै वरेण्यं ब्रह्मेन्द्रवन्द्यं चन्द्रं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

चन्द्राय नमः।

प्रधान देवता अङ्गारक होमः—प्रधान देवता अङ्गारक प्रीत्यर्थे खदिरसमित आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ अग्निर्वासाः पृथिव्यं सितज्ञूस्त्विषीमन्तं संशितं मा कृणोतु स्वाहा।

अङ्गारकाय इदं न मम। २८ बार इस मंत्र में खदिर समित्, घी एवं चरु से होम करें।

प्रार्थना— महेश्वरस्याननस्वेदबिन्दोर्भूमौ जातं रक्तमालांबराढ्यं। सुरश्मिणं लोहिताङ्गं कुमारमङ्गारकं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

अङ्गारकाय नमः।

प्रधान देवता बुध होमः—प्रधान देवता बुध प्रीत्यर्थे अपामार्ग समित्, आज्य, चरु होमे विनियोगः।

ॐ कपृंन्नरः कपृथमुद्दंधातन चोदयंत खुदत वाजंसातये।

निष्टिग्र्यः पुत्रमा च्यावयोतय इन्द्रं सबाध इह सोमंपीतये स्वाहा।

बुधाय इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से अपामार्ग समित्, घी एवं चरु से होम करें।

प्रार्थना— उत्पातरूपो जगतां चन्द्रपुत्रौ महाद्युतिः। सूर्य प्रियकरो विद्वान् पीडां दहतु मे बुधः॥ ॐ बुधाय नमः।

प्रधान देवता बृहस्पति होमः—प्रधान देवता बृहस्पति प्रीत्यर्थे पिप्ल समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ बृहस्पतिर्नः परि पातु पश्चादुतोत्तरस्मादधरदघायोः।

इन्द्रः पुरस्तादुत मध्यतो नः सखा सखिभ्यो वरीयः कृणोतु स्वाहा॥ *(ऋग्वेद २.२३.१५)*

बृहस्पतये इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से पिप्ल समित्, घी एवं चरु से होम करें।

प्रार्थना— बुध्यात्मनो यस्य न कश्चिदन्यो मतिं देवा उपजीवंति यस्य। प्रजापते रात्मजं धर्मनिष्ठं गुरुं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

ॐ गुरुवे नमः।

प्रधान देवता शुक्र होमः—प्रधान देवता शुक्रक्रह प्रीत्यर्थे औदुम्बर समित्, आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ द्यौश्चं म इदं पृथिवी च प्रचेतसौ शुक्रो बृहन् दक्षिणाया पितर्तु।

अनु स्वधा चिकितां सोमो अग्निर्वायुर्नः पातु सविता भगश्च स्वाहा।

शुक्राय इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से औदुम्बर समित्, घी एवं चरु से हाम करें।

प्रार्थना— वर्षप्रदं चिन्तितार्थानुकूलं मौनाद्विशिष्टं सुनयोमपन्नम्। तं भार्गवं योगविशुद्धसत्वं शुक्रं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

ॐ शुक्राय नमः।

प्रधान देवता शनैश्चर होमः—प्रधान देवता शनैश्चर प्रीत्यर्थे शमी समित्, आज्य, चरु होमे विनियोगः।

ॐ शं नो वातो वातु शं नस्तपतु सूर्यः।

अहानि शं भवन्तु नः शं रात्री प्रति धीयतां शमुषा नो व्युच्छत स्वाहा।

शनैश्चराय इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से शमी समित्, घी एवं चरु से होम करें।

प्रार्थना— शनैश्चरो राशितो राशिमेति शनैर्भोगो गमनं चेष्टितं च। सूर्यात्मजं क्रोधनं सुप्रसन्नं शनैश्चरं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

ॐ शनैश्चराय नमः।

प्रधान देवता राहु होम—प्रधान देवता राहु प्रीत्यर्थे दूर्वासमित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ कयानश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता स्वाहा॥ *(अथर्ववेद २०.१२४.१)*

राहवे इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से दूर्वा समित्, घी एवं चरु से होम करें।

प्रार्थना— यो विष्णुनैवामृतं भोक्ष्यमाणः छित्वाशिरो ग्रहभावे नियुक्तः। यश्चन्द्रसूर्यौ ग्रसते पर्व काले राहुं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

ॐ राहवे नमः।

प्रधान देवता केतु होमः—प्रधान देवता केतु प्रीत्यर्थे कुश समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः स्वाहा॥

केतवे इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से कुश समित्, घी एवं चरु से होम करें।

प्रार्थना—हे ब्रह्मपुत्रा ब्रह्मसमानवक्त्राः ब्रह्मोद्भवाः ब्रह्मसमाः कुमाराः।
ब्रह्मोत्तमा वरदा जामदग्न्याः केतून् सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

ॐ केतवे नमः। यहाँ पर नवग्रह होम संपन्न हुआ। आगे छः कर्म साद्गुण्य देवता होम होगा।

कर्म साद्गुण्य देवता विनायक होमः-१— क्रतु साद्गुण्यदेवता विनायक प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ यस्य कृण्मो हविर्गृहे तमग्ने वर्धया त्वम्। तस्मै सोमो अधि ब्रवदयं ब्रह्मणस्पतिः स्वाहा।

कर्म सादगुण्यदेवतायै विनायकाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

कर्म साद्गुण्यदेवता दुर्गा होमः-२—क्रतुसाद्गुण्यदेवता दुर्गा प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ देवानां पत्नीरुशतीरवन्तु नः प्रावन्तु नस्तुजये वाजसातये।
याः पार्थिवासो या अपामपि व्रते ता नो देवीः सुहवाः शर्म यच्छन्तु स्वाहा॥

क्रतु साद्गुण्य देवतायै दुर्गायै इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

कर्म साद्गुण्यदेवता क्षेत्रपाल होमः-३—चरु होमे विनियोगः।

ॐ मधुमतीरोषधीर्द्याव आपो मधुमन्नो भवत्वन्तरिक्षम्।
क्षेत्रस्य पतिर्मधुमान्नो अस्त्वरिष्यन्तो अन्वेनं चरेम स्वाहा।

क्रतु साद्गुण्य देवतायै क्षेत्रपालाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

कर्म साद्गुण्य देवता वायु होमः-४—क्रतु साद्गुण्य देवता वायु प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ वायोः पूतः पवित्रेण प्रत्यङ्सोमो अति द्रुतः। इन्द्रस्य युज्यः सखा स्वाहा॥

क्रतु साद्गुण्य देवतायै वायवे इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

कर्म साद्गुण्य देवता आकाश होमः-५—क्रतु साद्गुण्य देवता आकाश प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ आशानामाशापालेभ्यश्चतुर्भ्यो अमृतेभ्यः। इदं भूतस्याध्यक्षेभ्यो विधेम हविषा वयम् स्वाहा॥

क्रतु साद्गुण्यदेवतायै आकाशाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

कर्म साद्गुण्य देवता अश्विनी देवता होमः-६—अश्वि प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ यदुन्तरिक्षे यद्दिवि यत्पञ्च मानुषाँ अनु। नृम्णं तद्धत्तमश्विना स्वाहा॥

क्रतु साद्गुण्य देवतायै अश्विभ्यां इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता इन्द्र होमः—क्रतु संरक्षक देवता इन्द्र प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ इन्द्रं त्वा वृषभं वयं सुते सोमे हवामहे। स पाहि मध्वो अन्धसः स्वाहा॥

क्रतु संरक्षक देवतायै इन्द्राय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता अग्नि होमः—क्रतु संरक्षक देवता अग्नि प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम्। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् स्वाहा॥

क्रतु संरक्षक देवतौ अग्नय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता यम होमः—क्रतु संरक्षक देवता यम प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ यमाय सोमः पवते यमाय क्रियते हविः। यमं ह यज्ञो गच्छत्यग्निदूतो अरंकृतः स्वाहा॥

क्रतु संरक्षक देवतायै यमाय इदं न मम। इस मंत्र को दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता निर्ऋति होमः—क्रतु संरक्षक देवता निर्ऋति प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ यत् ते देवी निर्ऋतिराबबन्ध दाम ग्रीवास्वविमोक्यं यत्।
तत् ते वि ष्याम्यायुषे वर्चसे बलायादोमदमन्नमद्धि प्रसूतः स्वाहा॥

क्रतु संरक्षक देवतायै निर्ऋतये इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता वरुण होमः—क्रतु संरक्षक देवता वरुण प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ अप्सु ते राजन् वरुण गृहो हिरण्ययो मिथः। ततो धृतव्रतो राजा सर्वा धामानि मुञ्चतु स्वाहा॥

क्रतु संरक्षक देवतायै वरुणाय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता वायु होमः—क्रतु संरक्षक देवता वायु प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ गोसनिं वाचमुदेयं वर्चसा माभ्युदिंहि। आ रुन्धां सर्वतो वायुस्त्वष्टा पोषं दधातु मे स्वाहा॥

क्रतु संरक्षक देवतायै वायवे इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता सोम होम—क्रतु संरक्षक देवता सोम प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ अभि त्यं देवं संवितारमोण्योः कविक्रतुम्। अर्चामि सत्यसवं रत्नधामभि प्रियं मतिम् स्वाहा॥

क्रतु संरक्षक देवतायै सोमाय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता ईशान होमः—क्रतु संरक्षक देवता ईशान प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ मा नो मर्ता अभि द्रुहन् तनूनामिन्द्र गिर्वणः। ईशानो यवया वधम् स्वाहा॥

क्रतु संरक्षक देवतायै ईशानाय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें। यहाँ पर क्रतु संरक्षक देवता होम संपन्न हुआ।

व्याहृति होमः—व्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापतिः बृहती व्याहृति होमे विनियोगः। ॐभूः स्वाहा, अग्नये इदं न मम। ॐभुवः स्वाहा,वायवे इदं न मम। ॐस्वः स्वाहा, सूर्याय इदं न मम। ॐभूर्भुवः स्वः स्वाहा, प्रजापतये इदं न मम। इन मत्रों से एक बार होम करें।

प्रधान देवता विष्णु होमः—विष्णु प्रीत्यर्थे चरु होमे विनियोगः।

ॐ इदं विष्णुर्वि चंक्रमे त्रेधा नि दंधे पदा। समूंढमस्य पांसुरे स्वाहा। *(अथर्ववेद ७.२६.४)*

विष्णव इदं न मम। इस मंत्र से १०८ बार, २१६ बार, ३१४ बार होम कर सकते हैं। ॐविष्णवे स्वाहा, विष्णव इदं न मम। ॐसर्वभूतपतये स्वाहा, सर्वभूतपतय इदं न मम। ॐचक्रपाणये स्वाहा, चक्रपाणये इदं न मम। ॐईश्वराय स्वाहा, ईश्वराय इदं न मम। ॐसर्वोत्पातशमनाय स्वाहा, सवोत्पातशमनाय

इदं न मम। प्रधान देवता के होम के बाद इन पाँच मंत्रों से घी की आहूति एक-एक बार देवें।

प्रायश्चित आहूतिया— प्रधान यजमान घृत की आहूति करें।

आकूत्यै त्वा स्वाहा। कामाय त्वा स्वाहा। समृधे त्वा स्वाहा। आकूत्यै त्वा कामाय त्वा समृधे त्वा स्वाहा। ऋचा स्तोमं समर्धय गायत्रेण रथंतरम्। बृहद्गायत्रवर्तनि स्वाहा। (इन मंत्रों को बोल करके प्रत्येक देवताओं के नाम से आहूति छोड़ते जाये फिर आगे दश मंत्रो को पढ़कर के आहूतियां डालें।)

पृथिव्यामग्नये समनमन्निति संनतिभिश्च। प्रजापते न त्वदेतान्यन्य इति च।

ॐ पृथिव्यामग्नये समनमन्त्स आर्घ्नोत्। यथा पृथिव्यामग्नये समनमन्नेवा मह्यं संनमः सं नमन्तु स्वाहा

पृथिवी धेनुस्तस्या अग्निर्वत्सः। सा मेऽग्निना वत्सेनेषमूर्जं कामं दुहाम्। आयुः पथमं प्रजां पोषं रयिं स्वाहा

अन्तरिक्षे वायवे समनमन्त्स आर्घ्नोत्। यथान्तरिक्षे वायवे समनमन्नेवा मह्यं संनमः सं नमन्तु स्वाहा

अन्तरिक्षे धेनुस्तस्या वायुर्वत्सः। सा मे वायुना वत्सेनेषमूर्जं कामं दुहाम्। आयुः प्रथमं प्रजां पोषं रयिं स्वाहा

दिव्या दित्याय समनमन्त्स आर्घ्नोत्। यथा दिव्या दित्याय समनमन्नेवा मह्यं संनमः स नमन्तु स्वाहा

द्यौर्धेनुस्तस्या आदित्यो वत्सः। सा म आदित्येन वत्सेनेषमूर्जं कामं दुहाम्। अयुः प्रथमं प्रजां पोषं रयिं स्वाहा

दिक्षु चन्द्राय समनमन्त्स आर्घ्नोत्। यथा दिक्षु चन्द्राय समनमन्नेवा मह्यं संनमः सं नमन्तु स्वासा

दिशो धेनवस्तासां चन्द्रो वत्सः। ता मे चन्द्रेण वत्सेनेषमूर्जं कामं दुहाम्। आयुः प्रथमं प्रजां पोषं रयिं स्वाहा

अग्रावग्निश्चरति प्रविष्ट ऋषीणां पुत्रो अभिशस्तिपा उ।

नमस्कारेण नमसा ते जुहोमि मा देवानां मिथुया कर्म भागम् स्वाहा

हृदा पूतं मनसा जातवेदो विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
सप्तास्यानि तव जातवेदस्तेभ्यो जुहोमि स जुषस्व हव्यम् स्वाहा
प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परिभूर्जजान।
यत् कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् स्वाहा

उपस्तीर्याज्यं सर्वेषामुत्तरतः सकृत्सकृदवदाय द्विरवत्तमभिघारयति। न हवीं षि॥ (इस वाक्य से यजमान दो बार घी श्रुक में डालें फिर चरु पात्र में जितना चरु बचा हो वो दो बार में श्रुक में डालें फिर पुनः दो बार घी श्रुक में डालें चरु पात्र में घी नहीं डालना है)

आ देवानामपि पन्थामगन्म यच्छक्रवाम तदनुप्रवोढुम्। अग्निर्विद्वान्स यज्ञात्स इद्धोता सो ऽध्वरान्स ऋतून्कल्पयात्यग्नये स्विष्टकृते स्वाहेत्युत्तरपूर्वार्धे (इस वाक्य को बोलकर के श्रुक वाली आहूति कुण्ड में डालें) ऽवयुतं हुत्वा सर्व प्रायश्चित्तीयन्होमाञ्जुहोति। स्वाहेष्टेभ्यः स्वाहा। वषडनिष्टेभ्यः स्वाहा। भेषजं स्विष्ट्यै स्वाहा। निष्कृतिर्दरिष्ट्यै स्वाहा। दैवीभ्यस्तनूभ्यः स्वाहा।

अयाश्चाग्ने ऽस्यनभिशस्तिश्च सत्यमित्त्वमया असि। अयासा मनसा कृतो ऽयास्यं हव्यमूहिषे। अया नो धेहि भेषजं स्वाहेत्यों स्वाहा भूः स्वाहा भुवः स्वाहा स्वः स्वाहों भूर्भुवः स्वः स्वाहेति।

यन्मे स्कन्नं मनसो जातवेदो यद्वास्कन्दद्धविषो यत्रयत्र। उत्प्रुषो विप्रुषः सं जुहोमि सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः स्वाहेति।

यन्मे स्कन्नं यदस्मृतीति च स्कन्नास्मृतिहोमौ।

ॐ यदस्मृति चकृम किं चिदग्न उपारिम चरणे जातवेदः।
ततः पाहि त्वं नः प्रचेतः शुभे सखिभ्यो अमृतत्वमस्तु नः स्वाहा

यदद्य त्वा प्रयतीति संस्थितहोमाः।

ॐ यदद्य त्वा प्रयति प्रयति यज्ञे अस्मिन् होतश्चिकित्वन्नवृणीमहीह।
ध्रुवमयो ध्रुवमुता शविष्ठ प्रविद्वान् यज्ञमुप याहि सोमम् स्वाहा॥ मनसस्पत इत्युत्तमं चतुर्गृहीतेन।
मनसस्पत इमं नो दिवि देवषु यज्ञम्।
स्वाहा दिवि स्वाहा पृथिव्यां स्वाहान्तरिक्षे स्वाहा वाते धां स्वाहा॥

(इस मंत्र को पढ़ते हुए यजमान श्रुवा से चार बार घी श्रुक में डालें फिर खड़े होकर श्रुक की आहूति दें) बर्हिराज्यशेषे ऽनक्ति पृथिव्यै त्वेति मूलमन्तरिक्षाय त्वेति मध्यं दिवे त्वेत्यग्रम्। एवं त्रिः। (इस वाक्य से बर्हि को वायें हाथ में पकड़े एवं श्रुवा दाहिने हाथ में पकड़कर घी बर्हि में मूलभाग एवं मध्य भाग एवं अग्र भाग में डालें यह प्रक्रिया तीन बार होनी चाहिये आगे वाला मंत्र बोलकर बर्हि को स्वाहा कर दें) सं बर्हिरक्तमित्यनुप्रहरति यथादेवतम्।

ॐ सं बर्हिरक्तं हविषा घृतेन समिन्द्रेण वसुना सं मरुद्भिः। सं देवैर्विश्वदेवेभिरक्तमिन्द्रं गच्छतु हविः स्वाहा॥

स्रुवमग्रौ धारयति। (इस वाक्य को पढ़कर यजमान वायें हाथ में घी पात्र दाहिने हाथ में श्रुवा लेकर खड़े होकर धारा प्रवाह रुपी आहूति डालें) यदाज्यधान्यां तत्संस्रावयति संस्रावभागास्तविषा बृहन्तः प्रस्तरेष्ठा बर्हिषदश्च देवाः। इमं यज्ञमभि विश्वे गृणन्तः स्वाहा देवा अमृता मादयन्तामिति। स्रुवो ऽसि घृतादनिशितः। सपत्नक्षयणो दिवि षीद। अन्तरिक्षे सीद पृथिव्यां सीदोत्तरो ऽहं भूयासमधरे मत्सपत्ना (इस वाक्य को पढ़कर श्रुवा को उल्टा करके यज्ञ कुण्ड से टीका कर रखदें) इति स्रुवं प्राग्दण्डं निदधाति।

(इस वाक्य एवं मंत्र से ३ समिधाओं को हाथ में लेकर के एक एक करके आगे दिये गये वाक्य एवं मंत्र से आहुति दें) वि मुञ्चामि ब्रह्मणा जातवेदसमग्निं होतारमजरं रथस्पृतम्। सर्वा देवानां जनिमानि विद्वान्यथाभागं वहतु हव्यमग्निरग्रये स्वाहेति इति प्रथमा।

ॐ एधोऽस्येधिषीय स्वाहा इति द्वितीया **समिदसि समेधिषीय स्वाहा।** एधो ऽसीति द्वितीयां समिदसीति तृतीयाम्।

करौ प्रक्षाल्यः अग्नि प्रत्यप **ॐ तेजोऽसि तेजो मयि धेहि।** (इस मंत्र से पहले हाथ धुल करके हाथ को अग्नि से सेंके फिर उसके उपरान्त हाथ से अपने मुख को मलें)

तेजो ऽसीति मुखं विमार्ष्टि। (इसके बाद पूर्णाहुति के दिन यहां से बलिदान करें उसके उपरान्त आगे तीन पग चलने का मंत्र एवं कार्य आगे बढ़ाये)

दक्षिणेनाग्निं त्रन्विष्णुक्रमान्क्रमते।

ॐ विष्णोः क्रमोऽसिसपत्नहा पृथिवीसंशितोऽग्नितेजाः।
पृथिवीमनु वि क्रमेऽहं पृथिव्यास्तं निर्भजामो यो३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः॥
स मा जीवीत् तं प्राणो जहातु।
विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहान्तरिक्षसंशितो वायुतेजाः।
अन्तरिक्षमनु वि क्रमेऽहमन्तरिक्षात् तं निर्भजामो यो३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः।
स मा जीवीत् तं प्राणो जहातु।
विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहा द्यौसंशितः सूर्यतेजाः।
दिवमनु वि क्रमेऽहं दिवस्तं निर्भजामो यो३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः॥
स मा जीवीत् तं प्राणो जहातु।

विष्णोः क्रमो ऽसीति दक्षिणेन पादेनानुसंहरति सव्यम्। (इसके उपरान्त कुण्ड की परिक्रमा करते हुए यजमान को यज्ञशाला के बाहर जाकर सूर्य भगवान

को देखें एवं नमस्कार करें)

ॐ सूर्यस्यावृतमन्वावर्ते दक्षिणामन्वावृतम्। सा मे द्रविणं यच्छतु सा मे ब्राह्मणवर्चसम्॥

दिशो ज्योतिष्मतीरभ्यावर्ते। ता मे द्रविणं यच्छन्तु ता मे ब्राह्मणवर्चसम्॥

सूर्यस्यावृतमित्यभिदक्षिणामावर्तते।

ॐ अगन्म स्व१ः स्व रगन्म सं सूर्यस्य ज्योतिषागन्म॥

अगन्म स्वरित्यादित्यमीक्षते। (इसके बाद यजमान अपने आसन में बैठ जाये फिर दक्षिण दिशा में जो उदपात्र है उसको अपने हाथों से उठा करके किसी ब्राह्मण के हाथ में दें साथ में कुशा भी दें फिर ब्राह्मण आपो हि ष्ठा से मंत्र से मार्जन करें)

इन्द्रस्य वचसा वयं मित्रस्य वरुणस्य च। ब्रह्मणा स्थापितं पात्रं पुनरुत्थापयामसी त्यपरेणाग्निमुदपात्रं परिहृत्योत्तरणाग्निं।

ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे॥ *(अथर्ववेद १.५.१)*

ॐ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः॥ *(अथर्ववेद १.५.२)*

ॐ तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः॥ *(अथर्ववेद १.५.३)*

ॐ ईशाना वार्याणां क्षयन्तीश्चर्षणीनाम्। अपो याचामि भेषजम्॥

मापो हि ष्ठा मयोभुव इति मार्जयित्वा बर्हिषि पत्न्याञ्जलौ निनयति समुद्रं वः प्र हिणोमीतीदं जनास इति वा। वीरपत्न्यहं भूयासमिति मुखं विमार्ष्टि। व्रतानि व्रतपतय इति समिधमादधाति। सत्यं त्वर्तेनति परिषिच्योदञ्चि हविरुच्छिष्टान्युद्वासयति। पूर्ण पात्रं दक्षिणा।

करौ प्रक्षाल्यः हस्ते पुष्पाणी गृहित्वा अग्निं अर्चयेत ॐ पूर्वे अग्नये नमः ॐ आग्नेयां अग्नये नमः ॐ दक्षिणे अग्नये नमः ॐ नैर्ऋत्यां अग्नये नमः ॐ पश्चिमे

अग्नये नमः ॐ वायव्ये अग्नये नमः ॐ उत्तरे अग्नये नमः ॐ ऐशान्ये अग्नये नमः ॐ मध्ये यज्ञ पुरुषाय नमः॥ आचमनं ॐ ऋग्वेदाय स्वाहा। ॐ यजुर्वेदाय स्वाहा। ॐ सामवेदाय स्वाहा। करौ प्रक्षाल्यः। हस्ते जलाक्षत पुष्पाणी गृहित्वा संकल्प वाक्यान स्मैरेयुः स्वस्ति पूर्वोच्चारित ग्रह, गुण, गण, विशेषण, विशिष्टायाम, शुभ पुण्य तिथौ, अमुख गोत्रा, अमुख नाम शर्मामः षड दिवस साद्य अद्य.................दिने।

षोडशोपचार पूजन

आवाहनम्—ॐ सहस्रंबाहुः पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रंपात्। स भूमिं विश्वतों वृत्वात्यंतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥ *(अथर्ववेद १९.६.१)*

ॐ हिरंण्यवर्णां हरिंणीं सुवर्णरजतस्रंजाम्। चन्द्रां हिरण्यमंयी लक्ष्मीं जांतवेदो म आवंह॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

सपरिवार श्री महाविष्णावे नमः, आवाहयामि आवाहनं समर्पयामि।

आसनम्—ॐ त्रिभिः पुद्भिर्द्यामंरोहत्पादंस्येहाभंवत्पुनंः। तथा व्यंक्रामद्विष्वंङश्नानशने अनुं॥ *(अथर्ववेद १९.६.२)*

ॐ तां म आवंह जातवेदो लक्ष्मीमनंपगामिनीम्। यस्यां हिरंण्यं विंन्देयं गामश्वं पुरुंषानहम्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः,। आसनं समर्पयामि।

पाद्यम्— ॐ तावंन्तो अस्य महिमानस्ततो ज्यायाँश्च पूरुंषः। पादोंस्य विश्वां भूतानिं त्रिपादंस्यामृतं दिवि॥ *(अथर्ववेद १९.६.३)*

ॐ अश्वपूर्वां रंथमध्यां हस्तिनाद प्रमोदिनीम्। श्रियं देवीमुपंह्वये श्रीर्मा देवी जुंषताम्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः,। पादारविंदयोः पाद्यं पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यं— ॐ पुरुंष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्चं भाव्यम्। उतामृतत्वस्येश्वरो यदन्येनाभंवत्सह॥ *(अथर्ववेद १९.६.४)*

ॐ कां सोस्मितां हिरंणय प्राकारांमार्द्रां ज्वलंन्तीं तृप्तां तर्पयंन्तीम्।
पद्मेस्थितां पद्मवंर्णां तामिहो पंह्वये श्रियम्॥ *(पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)* ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, हस्तयोः अर्घ्यमर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनम्—ॐ यत्पुरुंषं व्यदंधुः कतिधा व्यंकल्पयन्। मुखं किमंस्य किं बाहू किमूरू पादां उच्येते॥ *(अथर्ववेद १९.६.५)*
ॐ चंद्रां प्रंभासां यशसा ज्वलंतीं श्रियं लोके देवजुंष्टा मुदाराम्।
तां पद्मिनींमीं शरंणामहं प्रपंद्येऽलक्ष्मीर्मेंनश्यतां त्वां वृंणे॥ *(पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)*

सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः,। मुखे आचमनीयं समर्पयामि।

पञ्चामृत स्नानम् (दूध)— ॐ सं सिंञ्चामि गवां क्षीरं समाज्येंन बलं रसंम्।
संसिंक्ता अस्माकं वीरा ध्रुवा गावो मयि गोपंतौ॥ *(अथर्ववेद २.२६.४)*

ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः,। पयः स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ सद्योजातं प्रंपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमंः।
भवे भंवेनातिं भवे भवस्वमाम् भवोद्भंवाय नमंः॥ *(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत् आरण्यक)*

ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः,। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि

दहि— ॐ दधिक्राव्णों अकारिषं जिष्णोरश्वंस्यवाजिनंः। सुरभि नो मुखां करत्प्र ण आयूंषि तारिषत्॥ *(अथर्ववेद २०.१३७.३)*

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः,। दधि स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ वा॒म॒दे॒वाय॒ नमो॒ ज्ये॒ष्ठाय॒ नमः॑श्रे॒ष्ठाय॒ नमो॑ रु॒द्राय॒ नम॒ः काला॑य॒ नम॒ःकाल॑विकरणाय॒
नमो॒बला॑य नमो॒ बल॑प्रमथनाय॒ नम॒स्स॑र्वभूतदमनाय॒ नमो॑ म॒नोन्म॑नाय॒ नम॑ः। *(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)*

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः,। शुद्धोदक स्नानं सपर्मयामि।

घी— ॐ घृ॒तं ते॑ अग्ने दि॒व्ये स॒धस्थे॑ घृ॒तेन॒ त्वां मनु॑र॒द्या समि॑न्धे।
घृ॒तं ते॑ दे॒वीर्न॒प्त्य॑१ आ व॑हन्तु घृ॒तं तुभ्यं॑ दुह्र॒तां गावो॑ अग्ने॥ *(अथर्ववेद ७.८२.६)*

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः,। घृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ अ॒घोरे॑भ्योऽथ॒ घोरे॑भ्यो॒ घोर॒घोर॑ तरेभ्यः।
सर्वे॑भ्य॒ः सर्व॒शर्वे॑भ्यो॒ नम॑स्ते अस्तु रु॒द्ररू॑पेभ्यः॥ *(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)*

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः,। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

मधु (शहद)—ॐ मधु॑मान् भवति॒ मधु॑मदस्याहा॒र्यं॑ भवति। मधु॑मतो लो॒कान् ज॑यति॒ य ए॒वं वेद॑॥ *(अथर्ववेद ९.१.२३)*

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः,। मधु स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ तत्पुरु॑षाय वि॒द्महे॑ महादे॒वाय॑ धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचो॒दया॑त्॥ *(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)*

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः,। शुद्धोदक स्नानं सपर्पयामि।

शर्करा (शक्कर)—ॐ स्वादोःस्वादीयः स्वादुना सृजा समदः सु मधु मधुनाभि योधीः ।। (अथर्ववेद ५.२.३)

ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, । शर्करा स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जन—ॐ ईशानस्सर्वं विद्यानामीश्वरस्सर्वं भूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणो
अधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम् ।। (यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)

ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, । शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

फल— ॐ पुष्पवतीः प्रसूमतीः फलिनीरफला उत। संमातरं इव दुह्रामस्मा अरिष्टतातये ।। (अथर्ववेद ८.७.२७)

ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, । फल स्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदक—ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे ।। (अथर्ववेद १.५.१)
ॐ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः ।। (अथर्ववेद १.५.२)
ॐ तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः ।। (अथर्ववेद १.५.३)
ॐ ब्राह्मणो स्य मुखमासीद्बाहू राजन्यो भवत्। मध्यं तदस्य यद्वैश्यः पद्भयां शूद्रो अजायत ।। (अथर्ववेद १९.६.६)
ॐ आदित्यवर्णो तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदंतु मायांतरा याश्च ब्राह्या अलक्ष्मीः। (ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, । शुद्धदक स्नानं समर्पयामि।

वस्त्र— ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत। मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायत॥ (अथर्ववेद १९.६.७)

ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।

प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥ (ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णवे नमः, । वस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतं—ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्रयं प्रतिमुञ्चशुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥

ॐ विराडग्रे समभवद्विराजो अधि पूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः॥ (अथर्ववेद १९.६.९)

ॐ क्षुत् पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वान्निर्णुद मे गृहात्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णवे नमः, । यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

आभरण—ॐ यद्धिरण्यं सूर्येण सुवर्णं प्रजावन्तो मनवः पूर्व ईषिरे।

तत् त्वा चन्द्रं वर्चसा सं सृजत्यायुष्मान् भवति यो बिभर्ति॥ (अथर्ववेद १९.२६.२)

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णवे नमः, । आभरणं समर्पयामि।

गन्ध— ॐ गंधं द्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।

पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन्॥ (अथर्ववेद १९.६.८)

ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः,। गन्धं समर्पयामि।

अक्षत—ॐ अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत। अर्चन्तु पुत्रका उत पुरं न धृष्णवर्चत॥ (अथर्ववेद २०.९२.५)

ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः,। अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पाणि—ॐ विराडग्रे समभवद्विराजो अधि पूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः॥ (अथर्ववेद १९.६.९)

ॐ पुष्पवतीः प्रसूमतीः फलिनीरफला उत। संमातर इव दुह्रामस्मा अरिष्टतातये॥ (अथर्ववेद ८.७.२७)

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥ (ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः,। पुष्पाणि समर्पयामि।

प्रथमावरण पूजनम्—पूर्वादिक्रमेण ॐविमलायै नमः १। ॐ उत्कर्षिण्यै नमः २। ॐ ज्ञानायै नमः ३। ॐ क्रियायै नमः ४। ॐ योगायै नमः ५। ॐ प्रह्व्यै नमः ६। ॐ सत्यायै नमः ७। ॐ ईशानायै नमः ८। मध्ये ॐ अनुग्रहायै नमः ९।

द्वितीयावरण पूजनम्—ॐब्राह्मयै नमः। पूर्वे ॐमाहेश्वर्यै नमः। आग्नेय दिशि। ॐकौमार्यै नमः। दक्षिण दिशि। ॐवैष्णव्यै नमः। नैऋत्यां दिशि। ॐवाराह्यै नमः पश्चिम दिशि। ॐइन्द्राण्यै नमः। वायव्यां दिशि। ॐचामुण्डायै नमः। उत्तरस्यां दिशि। ॐगिरिजायै नमः ऐशान्यां दिशि। (अनुष्ठान पद्धति)

तृतीयावरण पूजनम्—ॐइन्द्राय सुराधिपतये पीतवर्णाय वज्रहस्ताय ऐरावत वाहनाय सशक्ति काय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवारायश्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐअग्नये तेजोधिपतये पिंगलवर्णाय शक्ति हस्ताय मेष वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय स वाहनाय स परिवाराय श्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐयमाय प्रेताधिपतये कृष्णवर्णाय दण्ड हस्ताय महिष वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐनिषतये रक्षोधिपतये रक्तवर्णाय खड्ग हस्ताय नरवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐनिषतये रक्षोधिपतये रक्तवर्णाय खड्ग हस्ताय नरवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय

श्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐवरुणाय जलाधितये कुंदवर्णाय पाशहस्ताय मकरवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐवायवे प्राणाधिपतये धूम्रवर्णाय अंकुश हस्ताय हरिणवाहनाय सशक्ति काय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐसोमाय नक्षत्राधिपतये शुक्लवर्णाय गदा हस्ताय अश्व वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐईशानाय विद्याधिपतये स्फटिकवर्णाय त्रिशूल हस्ताय वृषभ वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री महाविष्णुमूर्तिपार्षदाय नमः। ॐअनंताय नागाधिपतये क्षीरवर्णाय चक्रहस्ताय गरुड वाहनाय स शक्तिाकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। नैर्ऋत्यं एवं पश्चिम दिशा के बीच में अनन्त का पूजन करें। ॐब्रह्मणे लोकाधिपतये कंजवर्णाय पषहस्ताय हंसवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। पूर्व एवं ईशान दिशा के बीच में ब्रह्मा जी का पूजन करें। *(अनुष्ठान पद्धति)*

चतुर्थावरणपूजनम्—ॐवज्राय नमः। (पूर्व में) ॐशक्त्यै नमः। (आग्रेय में) ॐदण्डाय नमः। (दक्षिण में) ॐखड्गाय नमः। (नैऋत्य) ॐपाशाय नमः। (पश्चिम में) ॐअंकुशाय नमः। (वायव्य में) ॐगदायै नमः। (उत्तर में) ॐत्रिशूलाय नमः। (ईशान में) ॐचक्राय न मः। (पश्चिम नैऋत्य के बीच में) ॐपद्माय नमः। (पूर्व ईशान के बीच में) *(अनुष्ठान पद्धति)*

अष्टोत्तर शतनाम पूजा

ॐविष्णवे नमः। ॐलक्ष्मीपतये नमः। ॐ कृष्णाय नमः। ॐ वैकुण्ठाय नमः। ॐ गरुडध्वजाय नमः। ॐ जगन्नाथाय नमः। ॐपरब्रह्मणे नमः।ॐवासुदेवाय नमः। ॐत्रिविक्रमाय नमः। ॐ दैत्यान्तकाय नमः। ॐ मधुरिपवे नमः। ॐ तार्क्ष्यवाहनाय नमः। ॐसनातनाय नमः। ॐनारायणाय नमः। ॐपद्मनाभाय

नमः। ॐहृषीकेशाय नमः। ॐसुधाप्रदाय नमः। ॐ माधवाय नमः। ॐ पुराडरीकाक्षाय नमः। ॐ स्थितिकर्त्रे नमः। ॐपरात्पराय नमः। ॐवनकालिने नमः। ॐयज्ञ रूपाय नमः। ॐचक्र पाणाये नमः। ॐगदाधराय नमः। ॐउपेन्द्राय नमः। ॐकेशवाय नमः। ॐ हंसाय नमः। ॐ समुद्रमथनाय नमः। ॐ हरये नमः। ॐगोविन्दाय नमः। ॐ ब्रह्मजनकाय नमः ॐ कैटभासुरमर्दनाय नमः। ॐ श्रीधराय नमः। ॐ कामजनकाय नमः ॐ शेषाायिने नमः। ॐ चतुर्भजाय नमः। ॐ पाञ्चजन्यधराय नमः। ॐ श्रीमते नमः। ॐ शार्ङ्गपाणाये नमः। ॐ जनार्दनाय नमः। ॐ पीताम्बरधराय नमः। ॐ देवाय नमः। ॐ सूर्यचन्द्रविलोचनाय नमः। ॐ मत्स्यरूपाय नमः। ॐ कूर्मतनवे नमः। ॐ क्रोडरूपाय नमः। ॐ नृकेसरिणे नमः। ॐ वामनाय नमः। ॐभार्गवाय नमः। ॐ रामाय नमः। ॐ बलिने नमः। ॐ कल्किने नमः। ॐ हयाननाय नमः। ॐ विश्वम्भराय नमः। ॐ शिशुमाराय नमः। ॐश्रीकराय नमः। ॐ कपिलाय नमः। ॐ ध्रुवाय नमः। ॐ दत्तात्रेयाय नमः। ॐ अच्युताय नमः। ॐअनन्ताय नमः। ॐ मुकुन्दाय नमः। ॐ दधिवामनाय नमः। ॐ धन्वन्तरये नमः। ॐ श्रीनिवासाय नमः। ॐप्रद्युम्नाय नमः। ॐ पुरुषोत्तमाय नमः। ॐ श्रीवत्सकौस्तुभधराय नमः। ॐ मुरारातये नमः। ॐ अधोक्षजाय नमः। ॐ ऋषभाय नमः। ॐ मोहिनी रुप धारिणे नमः। ॐ सङ्कर्षणाय नमः। ॐ पृथवे नमः। ॐ क्षीराब्धिशायिने नमः। ॐ भूतात्मने नमः। ॐ अनिरुद्धाय नमः। ॐ भक्तवत्सलाय नमः। ॐनराय नमः। ॐ गजेन्द्रवरदाय नमः। ॐ त्रिधाम्ने नमः। ॐ भूतभावनाय नमः। ॐ श्वेतद्वीपसुवास्तव्याय नमः। ॐ सनकादिमुनिध्येयाय नमः। ॐ भगवते नमः। ॐ शङ्करप्रियाय नमः। ॐ नीलकान्ताय नमः। ॐ धराकान्ताय नमः। ॐवेदात्मने नमः। ॐ बादरायणाय नमः। ॐ भागीरथीजन्मभूमि पादपद्माय नमः। ॐ सतांप्रभवे नमः। ॐस्वभुवे नमः। ॐ विभवे नमः। ॐ घनश्यामाय नमः। ॐ जगत्कारणाय नमः। ॐ अव्ययाय नमः। ॐ बुद्धावताराय नमः। ॐ शान्तात्मने नमः। ॐ लीलामानुष विग्रहाय नमः। ॐ दामोदराय नमः। ॐ विराड्रूपाय नमः। ॐ भूतभव्यभवत्प्रभवे नमः। ॐ आदिदेवाय नमः। ॐ प्रह्लादपरिपालकाय नमः। ॐ श्रीमहाविष्णवे नमः। अष्टोत्तर शतनाम पूजां समर्पयामि।

धूप— **ॐ वनस्पति रसोत्पन्नो गंधाढ्यः सुमनोहरः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम्॥**

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तो अस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥ *(अथर्ववेद १९.६.१०)*

ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि संभव कर्दम। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णवे नमः, धूपं आघ्रापयामि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

दीपम्—आज्यं त्रिवर्ति संयुक्तं वह्निना योजितं मया। गृहाण मङ्गलं दीपं त्रैलोक्य तिमिरापह॥

ॐ तं यज्ञं प्रावृषा प्रौक्षन्पुरुषं जातमग्रशः। तेन देवा अयजन्त साध्या वसवश्च ये॥ *(अथर्ववेद १९.६.११)*

ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे। निच देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णवे नमः दीपं दर्शयामि। धूपदीपानंतरं आचमनीयं समर्पयामि।

नैवेद्यम्—देवस्याग्रे स्थलं संशोध्य गोमयेन मण्डलं कृत्वा तत्र शुद्धं पात्रं न्यस्य अभिघार्य निर्मलं हविः तदुपरि न्यस्य आज्येन द्रवीभूतं कृत्वा "ॐ भूर्भुवः स्वः इति गायत्र्या प्रोक्ष्य वायु बीजं जप्त्वा निवेद्यान्नं संशोध्य दक्षिणहस्ते अग्निबीजं विलिख्य तेन हस्तेन संदह्य वामहस्ते अमृत बीजं विलिख्य तेन हस्तेन हविराप्लाव्य सुरभिमुद्रां बध्वा अमृतमयं भावयित्वा मल धातु रसांशं विभाज्य देवस्य निवेद्य ग्रहणेच्छां कुर्यात्। **"सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि"** इत्यनेन परिषिच्य हस्तभ्यां पुष्पैः देवस्य जिह्वार्चीरुचिं निवेद्ये निपात्य निवेदयामि भवते जुषाणेदं हविर्विभो इति वामहस्तेन ग्रासमुद्रां प्रदर्श्य दक्षिणहस्तेन प्राणादि मुद्राः प्रदर्शयेत्। अन्नात् मलांशं धात्वंशं च परित्यज्य रसांशं देवस्य वदनार्चिषि समर्पयेत्। वं अबात्मना इति नैवेद्य मुद्रां प्रदर्शयेत्। नैवेद्य सारं रससमर्पणात् जातं सुधांशं देवे समर्प्य अंजलिमुद्रा बध्वा नैवेद्यसारसमर्पित जातामृतमय सुधांशुना पुनः पुनः वर्धितं देवं हृन्मूर्ति देवं ध्यायन् स्व स्व मूलमंत्र यथा शक्ति जप्त्वा।

कलश के आगे स्थल शुद्धि कर गोमय से शुद्धि कर चतुरस्त्र मण्डल को बनाकर उस पर शुद्ध पात्र को रखें। पात्र में थोडा सा घी डालें। उस पात्र में

निर्मलहविस् (नैवेद्य पदार्थ को) को घी पर रखें। उस हविस् को घीं से भिगोयें।

गायत्री मंत्र से नैवेद्य का प्रोक्षण करें—''यं यं यं'' इस वायुबीज को जपकर हविस् को शुद्ध करें। दाहिने हाथ में (रं) अग्नि बीज को लिखकर उस अग्नि से हविस् में विद्यमान कश्मलों को जलाऐं (कल्पना करें)। बायें हाथ में अमृत बीज (वं) को लिखकर उस हाथ से हविस् को शुद्ध करें (घोने की कल्पना करें) ॐनमो नारायणाय। इस मन्त्र का आठ बार जप करें। हविस् को मंत्रमय एवं अमृतमय छोने की कल्पना करें। सुरभि मुद्रा से अमृतमय हुआ है मानकर मलांश, धातु का अंश एवं रसांश को अलग अलग करने की कल्पना करें। देवता को नैवेद्य ग्रहण करने की इच्छा उत्पन्न करती चाहिये।

''सत्यं त्वेन परिषिचामि'' इससे परिषिञ्चन करें। दोनों हाथों में पुष्प लेकर देवता का जीभ नैवेद्य तक पहुँचने का चिन्तन करें।

''निवेदयामि भवते जुषाणेदं हविर्विभो'' कहकर नैवेद्य स्वीकार करने की प्रार्थना करते हुए। बायें हाथ से ग्रास मुद्रा (जैसे बछडे को घास देते है) को दिखाकर दाहिने हाथ से प्राणाय स्वाहा-अङ्गुष्ठ कनिष्ठिका मिलाकर अपानाय स्वाहा-अङ्गुष्ठ एवं तर्जनी मिलाकर व्यानाय स्वाहा-अङ्गुष्ठ एवं अनामिका मिलाकर उदानाय स्वाहा-अङ्गुष्ठ एवं अनामिका मिलाकर समानाय स्वाहा। सभी अङ्गुलियों को मिलाकर। अन्त से मलांश एवं धातु के अंध को अलग कर केवल रसांश को अर्पित करने की कल्पना करें।

''वं अबात्मना नैवेद्यं कल्पयामि'' कहकर नैवेद्य मुद्रा का प्रदर्शन करें (अङ्गुष्ठ एवं अनामिका मिलाने से नैवेद्य मुद्रा)। नैवेद्य का सार जो रसांश था उसका भी सार अमृत का जो अंश है उसे देवता को समर्पित कर, हाथ जोडकर, नैवेद्य के सार अमृत से भगवान् को बढते हुए मानकर उसे हृदय में स्थित मानकर यथाशक्ति ''ॐनमो नारायणाय''—इस मूल मंत्र का जप करें।

ॐ स्वा॒दोःस्वादी॑यः स्वा॒दुना॑ सृजा॒ सम॒दः सु मधु॒ मधु॑नाभि यो॑धीः ॥ (अथर्ववेद ५.२.३)

ॐ आ॒र्द्रां पुष्क॒रिणीं पुष्टिं॑ पि॒ङ्गलां॑ पद्म॒मालि॑नम्। च॒न्द्रां हि॒रण्मयीं॑ ल॒क्ष्मीं जात॑वेदो म॒ आव॑ह ॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

यथा संभव नैवेद्यं निवेदयामि। अमृतापिधानमसि कहकर उत्तरापोशन देवें। हस्तप्रक्षालनार्थे जलं समर्पयामि। गण्डूषार्थे जलं समर्पयामि। शुद्धाचमनार्थे जलं समर्पयामि। करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि।

ताम्बूल—ॐ तस्मादश्वा अजायन्त ये च के चोभयादतः। गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः॥ *(अथर्ववेद १९.६.१२)*

पूगीफल समायुक्तं नागवल्या दलैर्युतं। चूर्ण कर्पूर संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥ ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः। क्रमुक तांबूलं समर्पयामि।

नीराजन (आरति)—ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दो ह जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत॥ *(अथर्ववेद १९.६.१३)*
ॐ एह यातु वरुणः सोमो अग्निर्बृहस्पतिर्वसुभिरेह यातु।
अस्य श्रियमुपसंयात सर्व उग्रस्य चेत्तुः संमनसः सजाताः॥ *(अथर्ववेद ६.७३.१)*

ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः। मङ्गल नीराजनं समर्पयामि।

मंत्रपुष्प—ॐ सहस्रबाहुः पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥ *(अथर्ववेद १९.६.१)*
ॐ मूर्ध्नो देवस्य बृहतो अंशवः सप्त सप्ततीः। राज्ञः सोमस्याजायन्त जातस्य पुरुषादधि॥ *(अथर्ववेद १९.६.१६)*
ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्। पशूँस्ताश्चक्रे वायव्यां नारण्या ग्राम्याश्च ये॥ *(अथर्ववेद १९.६.१४)*
ॐ आद्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्। सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः। मंत्रपुष्पं समर्पयामि।

प्रदक्षिणा नमस्कार—यानि कानि च पापानि जन्मांतर कृतानि च। तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे पदे॥ *(देवपूजा-स्मृति संग्रह)*
ॐ स॒प्तास्यांसन्परि॒धय॒स्त्रिः स॒प्त स॒मिधः॑ कृ॒ताः। दे॒वा यद्य॒ज्ञं त॑न्वा॒ना अ॒बध्न॒न्पुरु॑षं प॒शुम्॥ *(अथर्ववेद १६.६.१५)* **ॐ तां म॒ आव॑ह जातवेदो ल॒क्ष्मीमन॑पगा॒मिनी॑म्। यस्यां॒ हिर॑ण्यं॒ प्रभू॑तं॒ गावो॑ दा॒स्योऽश्वा॑न् वि॒न्देयं॒ पुरु॑षान॒हम्॥**

(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णवे नमः। प्रदक्षिणा नमस्कारान् समर्पयामि।

प्रसन्नार्घ्य—ॐ ना॒रा॒य॒णाय॑ वि॒द्महे॑ वासुदे॒वाय॑ धीमहि। तन्नो॑ विष्णुः प्रचो॒दया॑त्॥

इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यम्। (कहकर तीन बार पुष्पमिश्रित जल छोड़ें।)

सर्वोपचार पूजनम्— ॐछत्रं समर्पयामि। चामरेण वीजयामि। गीतं गायामि। नाट्यं नटामि। आंदोळिकामारोहयामि। अश्वमारोहयामि। गजमारोहयामि। समस्त राजोपचार देवोपचार पूजां समर्पयामि।

ॐ मू॒र्ध्नो दे॒वस्य॑ बृह॒तो अं॒शवः॑ स॒प्त स॒प्त॒तीः। राज्ञः॒ सोम॑स्याजायन्त जा॒तस्य॒ पुरु॑षा॒दधि॑॥ *(अथर्ववेद १६.६.१६)*

ॐ यः शुचि॒ः प्रय॑तोभूत्वा जु॒हुया॑दाज्य॒मन्व॑हम्। सूक्तं॑ प॒ंचद॑शर्चं॒ च॒ श्री॒काम॑ः सत॒तं ज॑पेत्॥ *(ऋग्वेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णवे नमः। सर्वोपचार पूजां समर्पयामि।

प्रार्थना—विष्णुं जिष्णुं महाविष्णुं प्रभविष्णुं महेश्वरम्। अनेकोत्पात शमनं नमामि पुरुषोत्तमम्॥

ॐ कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुध्यात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि॥ *(पौराणिकम्)*

ॐ ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविः ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्। ब्रह्मैव तेन गंतव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना ॥ *(श्री भगवद्गीते)* ॐ सपरिवाराय श्री महा विष्णवे नमः। अनेन पूजनेन सपरिवारः श्री महा विष्णुः प्रीयताम्। षोडशोपचार पूजनं संपूर्णम्।

पूर्णाहुति—प्रतिदिन संक्षेप में पूर्णाहुति करनी चाहिये अन्तिम दिन विशेष रूप से करनी चाहिये।

प्रतिदिन वाला पूर्णाहुति—स्रुचि स्रुवेण द्वादशवारं आज्यं गृहीत्वा तस्यां स्रुवं ऊर्ध्वबिलं निधाय पुनरधो बिलं निक्षिप्य स्रुवाग्रे कुसुमाक्षतान् निधाय सव्य पाणिना स्रुक्स्रुवमूले धृत्वा दक्षिणपाणिना स्रुक्स्रुवं शंखमुद्रया गृहीत्वातिष्ठन् समपाद ऋजुकायः स्रुवाग्रे न्यास्त दृष्टिः प्रसन्नात्मना। स्रुवा से स्रुक में १२ बार घी डाले। स्रुक् के ऊपर स्रुवा को ऊपर मुख करके रखें, फिर उसे उल्टा करके स्रुक् के ऊपर रखें। स्रुवा के अग्रभाग में पुष्प एवं अक्षतों से पूजन करें। बायें हाथ से स्रुक् एवं स्रुवा के मूल को पकडकर, दाहिने हाथ से शंखमुद्रा से स्रुक एवं स्रुवा को पकडकर, सीधे खडे रहकर स्रुवा के अग्रभाग को देखते हुए प्रसन्न मन से पूर्णाहुति होम करें। धामं ते वामदेव आपो जगती पूर्णाहुति होमेविनियोगः।

ॐ सं सं स्रवन्तु सिन्धवः सं वाताः सं पतत्रिणः। इमं यज्ञं प्रदिवो मे जुषन्तां संस्राव्येण हविषा जुहोमि ॥

इहैव हवमा यात म इह संस्रावणा उतेमं वर्धयता गिरः। इहैतु सर्वो यः पशुरस्मिन् तिष्ठतु या रयिः ॥

ये नदीनां संस्रवन्त्युत्सासः सदमक्षिताः। तेभिर्मे सर्वैः संस्रावैर्धनं सं स्रावयामसि ॥

ये सर्पिषः संस्रवन्ति क्षीरस्य चोदकस्य च। तेभिर्मे सर्वैः संस्रावैर्धनं सं स्रावयामसि ॥ *(अथर्ववेद १.१५.१-४)*

इतना कहकर स्रुक् में शेष घी का होम करें। अग्नये इदं न मम। कहकर हाथ जोडें। विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा। विश्वेभ्यः देवेभ्य इदं न मम। स्रुक् स्रुवा में शेष बचे घी का भी होम करें। यह संस्राव कहलता है। अथावभृथस्थानीयं पूर्णपात्रजलेन मार्जनं कुर्यात्। अवभृथस्नान के जगह (बदले) पूर्णपात्र जल से

मार्जन करें। पूर्वसादितं पूर्णपात्रं आस्तीर्णे बर्हिषि दक्षिणपाणिना निधाय तत्र गङ्गादि पुण्यनदीः स्मरन् दक्षिण पाणिना स्पृशन्। उत्तर में स्थापित प्रणीतापात्र के जल से अवभृथस्नान के बदले में आगे बिछाये बर्हिषि (कुशाओं) के ऊपर रखकर दाहिने हाथ से उसे छूते हुए गङ्गादि पुण्यनदियों का स्मरण करते हुए मंत्र पाठ करें।

यदाज्यधान्यां तत्संस्रावयति संस्रावभागास्तविषा बृहन्तः प्रस्तरेष्ठा बर्हिषदश्च देवाः।
इमं यज्ञमभि विश्वे गृणान्तः स्वाहा देवा अमृता मादयन्तामिति।

स्रुक् स्रुवा में शेष बचे घी का भी होम करें। यह संस्राव कहलता है। अथावभृथस्थानीयं पूर्णपात्रजलेन मार्जनं कुर्यात्। अवभृथस्नान के जगह (बदले) पूर्णपात्र जल से मार्जन करें। पूर्वसादितं पूर्णपात्रं आस्तीर्णे बर्हिषि दक्षिणपाणिना निधाय तत्र गङ्गादि पुण्यनदीः स्मरन् दक्षिण पाणिना स्पृशन्। उत्तर में स्थापित प्रणीतापात्र के जल से अवभृथस्नान के बदले में आगे बिछाये बर्हिषि (कुशाओं) के ऊपर रखकर दाहिने हाथ से उसे छूते हुए गङ्गादि पुण्यनदियों का स्मरण करते हुए मंत्र पाठ करें।

स्रुवो ऽसि घृतादनिशितः। सपत्नक्षयणो दिवि षीद। अन्तरिक्षे सीद पृथिव्यां सीदोत्तरो ऽहं भूयासमधरे मत्सपत्ना इति स्रुवं प्राग्दण्डं निदधाति। वि मुञ्चामि ब्रह्मणा जातवेदसमग्निं होतारमजरं रथस्पृतम्। सर्वा देवानां जनिमानि विद्वान्यथाभागं वहतु हव्यमग्निरग्रये स्वाहेति समिधमादधाति। एधो ऽसीति द्वितीयां समिदसीति तृतीयाम्। तेजो ऽसीति मुखं विमार्ष्टि।

दक्षिणेनाग्निं त्रन्विष्णुक्रमान्क्रमते विष्णोः क्रमो ऽसीति दक्षिणेन पादेनानुसंहरति सव्यम्। सूर्यस्यावृतमित्यभिदक्षिणमावर्तते। अगन्म स्वरित्यादित्यमीक्षते। व्रतानि व्रतपतय इति समिधमादधाति। सत्यं त्वर्तेनति परिषिच्योदञ्चि हविरुच्छिष्टान्युद्वासयति। पूर्णा पात्रं दक्षिणा।

इन्द्रस्य वचसा वयं मित्रस्य वरुणस्य च। ब्रह्मणा स्थापितं पात्रं पुनरुत्थापयामसी त्यपरेणाग्निमुदपात्रं परिहृत्योत्तरणाग्निमापो हि ष्ठा मयोभुव इति मार्जयित्वा

बर्हिषि पत्न्याञ्जलौ निनयति समुद्रं वः प्र हिणोमीतीदं जनास इति वा। वीरपत्न्यहं भूयासमिति मुखं विमार्ष्टि। ततः कर्ता अग्रेः वायव्ये स्थितः संस्थाजपेन उपतिष्ठेत। इसके बाद यजमान अग्नि के वायव्य दिशा में खड़े होकर संस्था जप जो कि आगे बताया जा रहा है, उससे हाथ जोडकर अग्नि की प्रार्थना करें।

अग्नये नमः। ॐ स्वस्ति। श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां विद्यां बुद्धिं श्रियंबलं। आयुष्यं तेज आरोग्यं देहि मे हव्यवाहन॥ मानस्तोक इत्यस्य कुत्सोरुद्रोजगती। विभूति ग्रहणे विनियोगः।

ॐ त्र्यायुषं जमदंग्नेः कश्यपंस्य त्र्यायुषम्। त्रेधामृतंस्य चक्षंणं त्रीणयायूँषि तेऽकरम्॥ *(अथर्ववेद ५.२८.७)*

इति स्रुव बिलपृष्ठेनैशानीगतां विभूतिं गृहीत्वा। उपरोक्त मंत्र पाठ करते हुए स्रुवा के बिल के पिछले हिस्से के ईशान भाग से भस्म (होम करें) को निकालें। ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे। (ललाटे में भस्म लगायें) ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषं इति कंठे। (कण्ठ में भस्म लगायें) ॐ अगस्त्यस्य त्र्यायुषं इति नाभौ। (नाभि में भस्म लगायें) ॐ यद्देवानां त्र्यायुषमिति दक्षिणस्कंधे (दाहिने भुजा में भस्म) ॐ तन्मे अस्तु त्र्यायुषं इति वाम स्कंधे (बाये कंधे पर) ॐ सर्वमस्तु शतायुषं इति शिरसि धारयेत् (सिर से भस्म लगायें) ततः परिस्तरणानि विसृज्य अग्निं परिसमूह्य परिषियुक्ष्य।

अग्नि का परिसमूहन एवं परिषिञ्चन करें। इसके बाद जिस प्रकार से डाले थे उसी प्रकार पूर्व से उन परिस्तरणों को अग्नि में डाल दें (विसर्जन) हाथों में जल लेकर पूर्वदिशा से प्रारम्भ करके प्रदक्षिणाकार में चारों ओर मार्जन करने की क्रिया परिसमूहन कहलाता है। पहले हाथ धो लें फिर जलयुक्त हाथ से पूर्वादि दिशाओं को स्पर्श करना चाहिये। पुनः हाथ धोकर इसी क्रिया दो बार और करना चाहिये। यह क्रिया परिसमूहन कहलाता है। अग्नेरैशानतस्त्रिरंभसा परिषेचनं। हाथ में जल लेकर ईशान्य से ईशान्य तक तीन बर जल से परिषिञ्चन करें।

ॐ उदेंनमुत्तरं नयाग्नें घृतेनांहुत। समेंनं वर्चंसा सृज प्रजयां च बहुं कृधि॥ *(अथर्ववेद ६.५.१)*

(पूर्व, आग्नेय, दक्षिण, नैऋत्य, पश्चिम, वायव्य, उत्तर, ईशान्य में पुष्पाक्षत से अग्निदेव का पूजन करें), ब्रह्मा को एवं ऋत्विजों को दक्षिणा देवें।

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपो होमक्रियादिषु। न्यूनं संपूर्णतां यातु सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविः ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्। ब्रह्मैव तेन गंतव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना॥

अनेन सग्रहमख सर्वाद्भुतशान्ति होमकर्मणा सपरिवारः भगवान् महा विष्णुः प्रीयताम्। यागमध्ये मंत्रतंत्र विपर्यासादि सर्वदोष परिहारार्थं नामत्रय जपं करिष्ये। ॐअच्युताय नमः। ॐअनंताय नमः। ॐगोविन्दाय नमः। ॐहराय नमः। ॐमृडाय नमः। ॐशंभवे नमः। इति जपेत्। कर्म के अन्त में पवित्र का विसर्जन करके दो बार आचमन करें। ॐतत् सत्॥ यहाँ पर मध्याह्न तक का कार्यक्रम संपन्न हुआ।

मध्याह्न य सायंकाल का कार्यक्रम—यह प्रारम्भ दिन से अन्तिम दिन के पहले दिन तक समान है। जप का विवरण अगले पन्ने (भाग) में है। आचम्य प्राणानायम्य उद्दिष्ट मंत्रजपं कुर्यात्। आचमन करके प्राणायाम करें। फिर उद्देशित मंत्रों का जप संपन्न करें। जप मंत्रों का संपूर्ण विवरण अगले भाग में है।

सर्वाद्भुत शान्ति भाग में—**जप के मन्त्र—महाशान्ति सूक्त—शन्नइन्द्राग्नि सूक्त—प्रधान विष्णु मन्त्र जप—नवग्रह जप**

द्वितीय दिन द्वितीय प्रहर सम्पन्न

तृतीय / चतुर्थ / पञ्चम दिन प्रथम प्रहर

देह शुद्धि—ॐ स्योनास्मै भव पृथिव्यनृक्षरा निवेशनी। यच्छास्मै शर्म सप्रथाः॥ *(अथर्ववेद १८.२.१६)*

इस मन्त्र से जल प्रोक्षण करने से भूमि शुद्ध होती है।

देह शुद्धि—ॐ या आपो याश्च देवता या विराड् ब्रह्मणा सह। शरीरं ब्रह्म प्राविशच्छरीरेऽधि प्रजापतिः॥ *(अथर्ववेद ११.८.३०)*

आचमन मन्त्र—ऋग्वेदाय स्वाहा। यजुर्वेदाय स्वाहा। सामवेदाय स्वाहा। (स्वाहा मन्त्र से जल पीना चाहिये।) अथर्ववेदाय नमः। इतिहास पुराणेभ्यो नमः। अग्नये नमः। वायवे नमः। प्राणाय नमः। सूर्याय नमः। चन्द्राय नमः। दिग्भ्यो नमः। इन्द्राय नमः। पृथिव्यै नमः। अन्तरिक्षाय नमः। दिवे नमः। ब्रह्मणे नमः। विष्णवे नमः। सदाशिवाय नमः। द्विराचम्य .. इस प्रक्रिया को दुबारा करना चाहिये।

पवित्र धारणम्— ॐ सुतासो मधुमत्तमाः सोमा इन्द्राय मन्दिनः। पवित्रवन्तो अक्षरन्देवानाच्छन्तु वो मदाः॥ *(अथर्ववेद २०.१३७.४)*

ॐभूर्भुवः स्वः कहकर जल सिञ्चन करें॥ (इन मन्त्रों से पवित्र शुद्धिकर धारण करना चाहिये आसन के नीचे दो कुश डाल लेना चाहिये।)

प्राणायाम—प्रणवस्य परब्रह्म ऋषिः, दैवी गायत्री छन्दः, परमात्मा देवता प्राणायामे विनियोगः।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योतीरसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवस्वरोम्। *(ऋग्वेद ३.६२.१०)* (रेखाङ्कित मन्त्र को तीन बार कुम्भक में जप करना चाहिये।)

करन्यासः- ॐअङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐतर्जनीभ्यां नमः। ॐमध्यमाभ्यां नमः। ॐअनामिकाभ्यां नमः। ॐकनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐकरतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

अङ्गन्यास, हृदयादिन्यासः-ॐहृदयाय नमः। ॐशिरसे स्वाहा। ॐशिखायै वषट्। ॐकवचाय हुम्। ॐनेत्रत्रयाय वौषट्। ॐअस्त्राय फट्। ॐभूर्भुव:

स्वरोमिति दिग्बन्धः

आसन शुद्धि— ॐ स्योनास्मै भव पृथिव्यनृक्षरा निवेशनी। यच्छास्मै शर्म सप्रथाः ॥ (अथर्ववेद १८.२.१९)

इस मन्त्र से जल प्रोक्षरा करने से भूमि शुद्ध होती है।

शिखाबन्धनम्—

ऊर्ध्वकेशि विरूपाक्षि मांसशोणित भक्षणे। तिष्ठ देवि शिखाबन्धे चामुण्डे ह्यपराजिते ॥ (ब्रह्मकर्म समुच्चय)

(इस मन्त्र से शिखाबन्धन करना चाहिये।)

महा संकल्प —हेमाद्रिसंकल्प

ॐस्वस्ति श्री समस्तजगदुत्पत्तिस्थितिलयकारणस्य रक्षा-शिक्षा-विचक्षणस्य प्रणतपारिजातस्य अशेषपराक्रमस्य श्रीमदनन्तवीर्यस्यादि नारायणस्य अचिन्त्यापरिमितशक्त्या ध्रियमाणानां महाजलौघमध्ये परिभ्रमताम् अनेक कोटि ब्रह्माण्डानाम् एकतमे अव्यक्त- महदहंकार - पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशाद्यावर णैरावृते अस्मिन् महति ब्रह्माण्डखण्डे आधारशक्तिश्रीमदादि- वाराह-दंष्ट्राग्र- विराजिते कूर्मानन्त- वासुकि-तक्षक-कुलिक - कर्कोटक -पद्म - महापद्म - शंखाद्यष्टमहानागैर्ध्रियमाणे ऐरावत-पुण्डरीक-वामन-कुमुद-अञ्जन-पुष्पदन्त-सार्वभौम-सुप्रतीकाष्टदिग्गजोपरिप्रतिष्ठितानाम् अतल-वितल-सुतल-तलातल-रसातल-महातल-पाताल-लोकानामुपरिभागे भुवर्लोक-स्वर्लोक-महर्लोक -जनोलोक - तपोलोक - सत्यलोकाख्य षड्लोकानामधोभागे भूर्लोके चक्रवाल शैल - महावलयनागमध्यवर्तिनो महाकाल महाफणि राजशेषस्य सहस्रफणामणिमण्डल मण्डिते दिग्दन्तिशुण्डादण्डोद्दण्डिते अमरावत्यशोकवती भोगवती - सिद्धवती- गान्धर्ववती - काशी- काञ्ची - अवन्ती अलकावती यशोवतीतिपुण्यपुरीप्रतिष्ठिते लोकालोकाचलवलयिते लवणेक्षु- सुरा- सर्पि - दधिक्षीरोदकार्णवपरिवृते जम्बू-प्लक्ष-कुश-क्रौञ्च - शाक शाल्मलिपुष्कराख्यसप्तद्वीपयुते इन्द्र-कांस्य-ताम्र-गभस्ति-नाग-सौम्य-गान्धर्व-चारणभारतेतिनव-

खण्डमण्डिते सुवर्णगिरिकर्णिकोपेत महासरोरुहाकार पञ्चाशत् कोटि योजनविस्तीर्णभूमण्डले अयोध्या मथुरा-माया-काशी-काञ्ची-अवन्तिका-पुरी द्वारावतीतिमोक्षदायिकसप्तपुरीप्रतिष्ठिते सुमेरु निषधत्रिकूट-रजतकूटाम्रकूट-चित्रकूट-हिमवद्विन्ध्याचलानां महापर्वत प्रतिष्ठिते हरिवर्ष किंपुरुषयोश्च दक्षिणे नवसहस्रयोजन विस्तीर्णे मलयाचल-सह्याचल विन्ध्याचलानामुत्तरे स्वर्णप्रस्थ-चण्डप्रस्थ-चान्द्र-सूक्तावन्तक-रमणक महारमणक-पाञ्चजन्य-सिंहल लंङ्केति-नवखण्डमण्डिते गंगा-भागीरथी-गोदावरी- क्षिप्रा-यमुना- सरस्वती-नर्मदा-ताप्ती-चन्द्रभागा-कावेरी-पयोष्णी-कृष्णावेणी-भीमरथी-तुंगभद्रा-ताम्रपर्णी- विशालाक्षी- चर्मण्वती-वेत्रवती- कौशिकी-गण्डकी- विश्वामित्रीसरयूकरतोया- ब्रह्मानन्दामहीत्यनेक पुण्यनदी विराजिते भारतवर्षे भरतखण्डे जम्बूद्वीपे कूर्मभूमौ साम्बवती कुरुक्षेत्रादि समभूमौ आर्यावर्तान्तर्गते ब्रह्मावर्तैकदेशे गंगायमुनयोर्मध्यभागे योजनव्यापिविस्तीर्णेक्षेत्रे, ज्ञानयुग प्रवर्तकानां महर्षि महेशयोगिवर्याणां परमाराध्यगुरुदेवै : अनन्तश्रीविभूषितैः ज्योतिष्पीठाधीश्वरैः जगद्गुरु श्रीमच्छङ्कराचार्य ब्रह्मानन्दसरस्वतीमहाभागैः सम्पादितशतमखकोटि होम महायज्ञपावितायां भूमौ.............................. सकलजगत्स्त्रष्टुः परार्धद्वय जीविनो ब्रह्मणो द्वितीये परार्धे एकपञ्चाशत्तमे वर्षे प्रथम मासे प्रथम पक्षे प्रथम दिवसे अह्नस्तृतीये यामे तृतीये मुहूर्ते रथन्तरादिद्वात्रिंशत्कल्पानांमध्ये अष्टमे श्वेतवाराहकल्पे स्वायंभुवादि मन्वन्तराणां मध्ये सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे कृत त्रेताद्वापरकलिसंज्ञकानां चतुर्णां युगानां मध्ये वर्तमाने अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमपादे प्रभवादि षष्ठि सम्वत्सराणां मध्ये........................

.................................संवत्सरे..................................अयने..............................ऋतौ ....मासे ....पक्षे

.... तिथौ .... वासरे .... नक्षत्रे .... योगे .... करणे ....राशि स्थिते श्रीसूर्ये

.... राशि स्थिते श्रीचन्द्रे...................... राशि स्थिते श्रीकुजे.................................... राशि स्थिते श्रीबुधे

.... राशि स्थिते श्रीदेवगुरौ .... राशि स्थिते श्रीशुक्रे............................ राशि स्थिते श्रीशनौ............ राशि स्थिते श्रीराहौ................ राशि स्थिते श्रीकेतौ.............एवं गुण विशेषण विशिष्टायां पुण्यायाम् महापुण्य शुभ तिथौ..

गुरु प्रार्थना —

नमो गुरुभ्यो गुरुपादुकाभ्यो नमः परेभ्यः परपादुकाभ्यः।
आचार्य सिद्धेश्वर पादुकाभ्यो नमोऽस्तु लक्ष्मीपति पादुकाभ्यः॥ *(श्रृङ्गेरी मठीय आचार्य प्रार्थनम्)*

श्री गुरु परमगुरु परमेष्ठी गुरु सद्गुरु पादुकाभ्यो नमो नमः। हम लोग ब्रह्मानन्दं गुरु तं नमानि। गुरु परम्परा को भी बोल सकते हैं। कर सकते हैं। हरौ रुष्टे गुरुस्त्राता गुरौ रुष्टे न कश्चन॥ ईश्वर के रुष्ट होने पर गुरुजी रक्षा करते हैं एवं गुरुजी के कुपित होने पर कोई भी रक्षक नहीं है।

भूतोच्चाटन मन्त्र—

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुविसंस्थिताः। ये भूता विघ्नकर्तारः ते गच्छन्तु शिवाज्ञया॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-आसन विधि प्रकरण)*
ॐ अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम्। सर्वेषामविरोधेन ब्रह्मकर्म समारभे॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-आसन विधि प्रकरण)*
ॐ तीक्ष्णादंष्ट्रमहाकाय कल्पान्ते दहनोपम। भैरवाय नमस्तुभ्यं अनुज्ञां दातुमर्हसि॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

इति भैरवं नमस्कृत्य। (इन मन्त्रों से भूतोच्चाटन कर भैरव जी से यज्ञ रक्षा की प्रार्थना करते हैं।)

गणपति प्रार्थना—ॐ इमा या ब्रह्मणस्पते विषूचीर्वात ईरते। सध्रीचीरिन्द्र ताः कृत्वा मह्यं शिवतमास्कृधि।
स्वस्ति नो अस्त्वभयं नो अस्तु नमोऽहोरात्राभ्यामस्तु॥ *(अथर्ववेद १६.८.६)* इन मन्त्रों से गणपति प्रार्थना कर पुष्पाक्षत छोड़ना चाहिये।

जल कलश पूजनम्—कलश में पूर्ण जल भरकर रखना चाहिये। फिर उसमें गन्ध अक्षत पुष्प कलश के अन्दर डालना चाहिये एवं बाहर भी चारों ओर लगाना चाहिये। गायत्री मन्त्र से तीन बार कलश छूकर जप करना चाहिये।

ॐ कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः। मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ॥
कुक्षौ तु सागरास्सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदस्सामवेदोह्यथर्वणः ॥
अङ्गैश्चसहितास्सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः। अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा ॥
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः। सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः ॥
गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिंकुरु ॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-देवपूजा प्रकरण)*
ॐ अप्सु ते राजन् वरुण गृहो हिरण्ययो मिथः। ततो धृतव्रतो राजा सर्वा धामानि मुञ्चतु ॥ *(अथर्ववेद ७.८३.१)*
ॐ एमां कुमारस्तरुण आ वत्सो जगता सह। एमां परिस्रुतः कुम्भ आ दध्नः कलशैरगुः ॥ *(अथर्ववेद ३.१२.७)*
श्री वरुण मूर्तये नमः।

(इन मन्त्रों को कलश छूकर पाठ करना चाहिये।)

सितमकरनिषण्णां शुभ्रवर्णां त्रिनेत्रां करधृत कलशोद्यत्पंकजाभीत्यभीष्टाम्।
विधि हरिहररूपां सेन्दुकोटीरचूडां भसितसितदुकूलां जाह्नवीं तां नमामि ॥ *(स्मृति संग्रह)*

(इस मन्त्र से कलश में गङ्गाजी का ध्यान करना चाहिये।)

आत्माराधनम्—हृदि स्थितं पंकजमष्टपत्रं सकेसरं कर्णिक मध्यनालं ॥
अङ्गुष्ठमात्रं मुनयो वदन्ति ध्यायेत् च विष्णुं पुरुषं पुराणम् ॥
हृदयकमलमध्ये सूर्यबिम्बासनस्थं सकलभुवनबीजं सृष्टिसंहारहेतुम्।

निरतिशयसुखात्म ज्योतिषं हंसरूपं परमपुरुषमाद्यं चिन्तयेदात्ममूर्तिम्॥
आराधयामि मणि सन्निभमात्मलिङ्गम्। मायापुरीरहृदय पंकज सन्निविष्टम्॥
श्रद्धा नदी विमलचित्त जलभिषेकै। र्नित्यं समाधि कुसुमैर्न पुनर्भवाय॥
देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो हंसः सदाशिवः। त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥
स्वामिन् सर्व जगन्नाथ यावत्पूजावसानकम्। तावत् त्वं प्रीति भावेन बिम्बेस्मिन् सन्निधिं कुरु॥ *(देवपूजा)*

ॐ आत्मने नमः। ॐ अन्तरात्मने नमः। ॐ परमात्मने नमः। ॐ ज्ञानात्मने नमः। आत्मपूजां समर्पयामि। इससे आत्मशुद्धि होती है। (इन मन्त्रों को कहकर अपने सिर पर अक्षत डाल लेवें।)

त्रिवाक्येण पुण्याह वाचन—

ॐ पार्थिवस्य रसे देवा भगस्य तन्वो३ बले। आयुष्यमस्मा अग्निः सूर्यो वर्च आ धाद् बृहस्पतिः॥
आयुरस्मै धेहि जातवेदः प्रजां त्वष्टरधिनिधेह्यस्मै।
रायस्पोषं सवितरा सुवास्मै शतं जीवाति शरदस्तवायम् *(अथर्ववेद २.२९.१-२)*
ॐ पुण्यं पूर्वा फल्गुन्यौ चात्र हस्तश्चित्रा शिवा स्वाति सुखो मे अस्तु।
राधे विशाखे सुहवानुराधा ज्येष्ठा सुनक्षत्रमरिष्ट मूलम्॥ *(अथर्ववेद १९.७.३)*

मह्यं सकुटुम्बिनेमहाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणायाद्यकरिष्यमाणामुककर्मणः पुण्याहं भवंतो ब्रुवंत्विति त्रिर्वदेत्।
(यजमान अपने सकुटुम्ब प्रणाम करते हुए आज संपन्न होने वाले कर्म के लिए पुण्याह की याचना करते हुए तीन बार कहते हैं। जिसका प्रत्युत्तर ब्राह्मण

तीन बार देते हैं।)

१. ॐ पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु। ॐ अस्तु पुण्याहम्। २. ॐ पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु। ॐ अस्तु पुण्याहम्। ३. ॐ पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु। ॐ अस्तु पुण्याहम्।

ॐ वेदः स्वस्तिर्द्रुघणः स्वस्तिः परशुर्वेदिः परशुर्नः स्वस्ति।

हविष्कृतो यज्ञिया यज्ञकामास्ते देवासो यज्ञमिमं जुषन्ताम्॥ *(अथर्ववेद ७.२८.१)*

इसके बाद नीचे लिखा वाक्य का तीन बार यजमान कहें। एवं ब्राह्मण प्रत्युत्तर दें। मह्यं सकुटुम्बिने महाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणायाद्यक रिष्यमाणामुककर्मणः स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु। (ब्राह्मण कहते हैं)—ॐ आयुष्मते स्वत्ति। इन उपरोक्त वाक्यों को तीन बार दोहराना चाहिये। इसके बाद पुनः पहले जैसे उत्तर कलश से जल नीचे रखे बड़े पात्र में थोड़ा-थोड़ा कर गिराते हुए मंत्रपाठ करें।

ॐ अर्धङ्मन्त्रो योनिं य आबभूवामृतासुर्वर्धमानः सुजन्मा।

अदब्धासुर्भ्राजमानोऽहेव त्रितो धर्ता दाधार त्रीणि॥ *(अथर्ववेद ५.१.१)*

इसके बाद पुनः नीचे लिखे वाक्यों को तीन बार यजमान कहें। एवं ब्राह्मण प्रत्युत्तर दें। मह्यं सकुटुंबिने महाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणायाद्य करिष्यमाण अस्य कर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।

(ब्राह्मण कहते हैं)—ॐ ऋध्यतां। इन उपरोक्त वाक्यों को तीन बार दोहराना चाहिये। इसके बाद मन्त्र पाठ करते हुए उत्तरकलश से नीचे रखे पात्र में जल छोड़ना चाहिये।

ॐ एह यातु वरुणः सोमो अग्निर्बृहस्पतिर्वसुभिरेह यातु।

अस्य श्रियमुपसंयात सर्व उग्रस्य चेत्तुः संमनसः सजाताः॥ *(अथर्ववेद ६.७३.१)*

इसके बाद पुनः नीचे लिखे वाक्यों को तीन बार यजमान कहें एवं ब्राह्मण प्रत्युत्तर दें। मह्यं सकुटुंबिने महाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणायाद्य करिष्यमाण अमुक कर्मणः श्रीरस्त्विति भवंतो ब्रुवन्तु। (ब्राह्मण कहते हैं)—ॐ अस्तु श्रीः। इन वाक्यों को तीन बार कहना चाहियें। वर्षशतं परि पूर्णमस्तु। गोत्राभिवृद्धिरस्तु। कर्माङ्ग देवता प्रीयताम्। (ब्राह्मण आशीर्वाद देते हैं—सौ साल पूर्ण हो। आप की वंश वृद्धि हो। कर्माङ्ग देवता आप पर प्रसन्न हो।)

मातृका पूजनम्—पान सुपारी दक्षिणा के ऊपर कूर्च (कुश से बना) रखकर उसमें मातृका आवाहन करके उनमें मातृका पूजन करना चाहिये। नान्दी मण्डल के आगे मातृका पूजन करना चाहिये।

ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा। वाराही तथेन्द्राणी चामुण्डाः सप्तमातरः॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

सात मातृकायें।

गौरीपद्मा शचीमेधासावित्रीविजयाजया। देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

धृतिः पुष्टिस्तथातुष्टिरात्मनः कुलदेवताः (गौर्यादि षोडश मातृकायें)। ब्राह्म्यादि सप्त मातृः गौर्यादि षोडश मातृः आवाहयामि। विनायकं आवाहयामि। दुर्गा आवाहयामि। क्षेत्रपालं आवाहयामि। गणपतिं आवाहयामि। मातृस्वसारं आवाहयामि। पितृस्वसारं आवाहयामि। एताभ्यो देवताभ्यो नमः। ध्यायामि। ध्यानं समर्पयामि। इनका षोडशोपचार पूजन करना याहिये। **उदाहरण**—आवाहित देवताभ्यो नमः। आसनं समर्पयामि आदि। षोडशोपचार पूजन संक्षेप में करें। (गणेश पूजन में है।)

अन्त में पुष्पांजलि मन्त्र—ॐ दे॒वानां॒ पत्नी॑रुश॒तीर॑वन्तु नः॒ प्राव॑न्तु नस्तु॒जये॒ वाज॑सातये।

याः पार्थि॑वासो॒ या अ॒पामपि॑ व्र॒ते ता नो॑ देवीः सु॒हवा॒ः शर्म॑ यच्छन्तु॥ *(अथर्ववेद ७.४९.१)*

ॐभूर्भुवः स्वः आवाहित देवताभ्यो नमः। मन्त्रपुष्पं समर्पयामि।

ॐ तदस्तु मित्रावरुणा तदग्ने शं योरस्मभ्यमिदमस्तु शस्तम्।

अशीमहि गाधमुत प्रतिष्ठां नमो दिवे बृहते सादनाय॥ *(अथर्ववेद १६.११.६)*

गृहावै सूक्तं, प्रतिवीतं तत्, प्रतिवीततमया वाचा शस्तव्यम्। स यद्यपि ह दूरात् पशूंल्लभते, गृहानेवैनानाजिगमिषति गृहाहिपशूनां प्रतिष्ठा।

(गो.ब्रा.) इन मन्त्रों को पढकर पुष्पाक्षत चढ़ायें।

मातृका पूजन समाप्तम्

आवाहित देवनान्दी पूजन—देवनान्दी में मातृका पूजन आवश्यक नहीं है। यज्ञ,(अतिरुद्र, सहस्त्रचण्डी) रथोत्सव आदि सार्वजनिक आचरणों में देवनान्दी ही करना चाहिये। **क्रतुदक्षावुत्सवे तु।** इस वाक्य से क्रतु एवं दक्ष नामक विश्वेदेव देवता हैं। देवनान्दी में पितृदेवता चार है। अमूर्त्य।

१. अग्निष्वात्ता, २. बर्हिषदः, ३. आज्यपाः, ४. सोमपाः

संकल्प—देशकालौ संकीर्त्य करिष्यमाण कर्माङ्ग भूतं नान्दीसमाराधनं करिष्ये। पहले दो मण्डल बनायें।

दत्वातण्डुलपूर्णपात्रयुगले संकल्प्य भुक्तिं तयोः।

ताम्बूलादि सुदक्षिणान्तिकमनुज्ञातः समुद्वाहयेत्॥ *(लक्षण संहिता)*

दो पात्रों में चावल, काजू किशमिश, फल, दाल, आदि दो मण्डलों पर रखें।

ॐ विश्वे देवा वसवो रक्षतेममुतादित्या जागृत यूयमस्मिन्।

मेमं सनाभिरुत वान्यनाभिर्मेमं प्रापत् पौरुषेयो वधो यः ॥ (अथर्ववेद १.३०.१)

ॐ क्रतुदक्षसंज्ञका विश्वेदेदेवाः—नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूभुर्वस्वः इयं च वृद्धिः। इससे दुर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें। अग्निष्वात्ताः पितृगणाः नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूभुर्वः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोड़ें।

बर्हिषदः पितृगणाः—नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें। **आज्यपाः पितृगणाः**—नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दुर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें। **सोमपाः पितृगणाः** नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें।

ॐ क्रतुदक्ष संज्ञका विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणायोः इदमासनगंधाद्युपचार कल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध अक्षत पुष्प दूर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें। **ॐ अग्निष्वात्ताः पितृगणाः** नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणायोः इदं आसनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध अक्षत पुष्प दूर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें। **बर्हिषदः पितृगणाः** नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणायोः इदमासनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध अक्षत पुष्प दुर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें। **आज्यपाः पितृगणाः** नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणायोः इदमासनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध, अक्षत, पुष्प, दुर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें।
सोमपाः पितृगणाः नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणायोः इदमासनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भूवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध, अक्षत, पुष्प, दुर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें। ॐभूर्भुवः स्वः सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि कहकर मण्डल पर रखे दोनों पात्रों को परिषेचन कर दक्षिणादिशा के पात्र को "इदं

विश्वेभ्यो देवेभ्य:'' उत्तरदिशा के पात्र को ''इदं नान्दीमुख पितृभ्य:'' कहकर दान संकल्प कर ब्राह्मणों को दे देवें।

क्रतुदक्षसंज्ञका: विश्वेदेवा: नान्दीमुखा: युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामं सोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नम:। भूर्भुव: स्व: इयं च वृद्धि:। कहकर ताम्बूल दक्षिणापर जल छोड़कर नीचे रखना चाहिये। **अग्निष्वात्ता: पितृगणा:** नान्दीमुखा: युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामंसोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नम:। भूर्भुव: स्व: इयं च वृद्धि:। कहकर ताम्बूल दक्षिणापर जल छोडकर नीचे रखना चाहिये। **बर्हिषद: पितृगणा:** नान्दीमुखा: गुग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं दमनामं सोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नम:। भूर्भुव: स्व: इयं च वृद्धि:। कहकर ताम्बूल दक्षिणापर जल छोड़कर नीचे रखना चाहिये। **आज्यपा: पितृगणा:** नान्दीमुखा युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामंसोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नम:। भूर्भुव: स्व: इयं च वृद्धि:। कहकर ताम्बूल दक्षिणापर जल छोडकर नीचे रखना चाहिये।

सोमपा: पितृगणा: नान्दीमुखा: युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामं सोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नम:। भूर्भुव: स्व: इयं च वृद्धि:। कहकर ताम्बूल दक्षिणा पर जल छोड़कर नीचे रखना चाहिये। आगे लिखे मन्त्रों से खड़े होकर उपस्थान करें।

एतद वै ब्रध्नस्यं विष्टपं यदोंदुन:

ब्रध्नलोंको भवति ब्रध्नस्यं विष्टपिं श्रयते य एवं वेदं

एतस्माद् वा ओंदुनात् त्रयंस्त्रिंशतं लोकान् निरंमिमीत प्रजापंति:

तेषां प्रज्ञानांय यज्ञमंसृजत

स य एवं विदुषं उपद्रष्टा भंवति प्राणं रुंणद्धि

न च प्राणं रुणद्धिं सर्वज्यानिं जीयते

न च सर्वज्यानिं जीयते पुरैनं जरसः प्राणो जहाति (अथर्ववेद ११.३.५०-५६)

कृतस्य देवनान्दी समाराधनस्य प्रतिठाफलसिद्ध्यर्थं द्राक्षामलक निष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृये। कहकर हाथ में दक्षिणा लेकर उस पर जल छोडकर नीचे रख दें।

प्रार्थना—अग्निष्वात्वा बर्हिषदः आज्यपाः सोमपास्तथा। एते भवन्तु मे प्रीताः प्रयच्छन्तु च मङ्गलम्॥ कहकर जल छोड़ें। अनेन नान्दीसमाराधनेन नान्दीमुखदेवताः प्रीयंताम्। **आचम्य**—मंगल तिलक रकें। **विसर्जन**—यज्ञ के अन्तिम दिन विसर्जन करें।

ॐ इडांयास्पदं घृतवंत् सरीसृपं जातवेदः प्रतिं हव्या गृंभाय।

ये ग्राम्याः पशवों विश्वरूपास्तेषां सप्तानां मयि रन्तिंरस्तु॥ (अथर्ववेद ६.७३.१)

यथाचारं हिरण्येन भाण्डवादनं। मन्त्र कहते हुए सिक्के से थाली के निचले भाग में शब्द करना चाहिये। (घण्टा वादन के बदले)

१. सर्वाद्भुत शान्ति याग के लिए-१—आचाय, एक कुण्ड में १-ब्रह्मा, ईशान्य में १-कलश पूजन, होमाङ्ग पूजन दक्षिण में १-इतर पूजन, पश्चिम में १-तर्पण के लिए, परिचारक (कर्मचारी) १-एक ब्राह्मण-कुल ५ पण्डित रहने पर

१५ पण्डित से संपन्न कर्म में—२-१५ पण्डित कर्म में (एक कुण्ड में), २-१५ पण्डित से संपन्न याग में—१ आचार्य, १ ब्रह्मा, १-कलश पूजन, १-इतर पूजन, १-तर्पण पूजन, १-परिचारक ब्राह्मण, ९-ऋत्विज होम के लिए

३-५५ पण्डित से संपन्न याग में—१- आचार्य (५ कुण्ड में), १-ब्रह्मा, १-कलश पूजन, १-इतर पूजन, १-तर्पण के लिए, १-परिचारक ब्राह्मण, ४५-

ऋत्विज होम के लिए, ४-अग्निमुख जानकार उप आचार्य (६×५)

४-१०० पण्डित से संपन्न या में—१-आचार्य (६ कुण्ड में), १-ब्रह्मा, १-कलश पूजन, १-इतर पूजन, १-तर्पण के लिए, ५-परिचारक ब्राह्मण, ८१-ऋत्विज होम के लिए, ६-अग्निमुख जानकार उपआचार्य (६×६), इसी अनुपात में अधिक संख्या में कर सकते हैं।

ॐ उत्तिष्ठब्रह्मणस्पते देवान् यज्ञेन बोधय।
आयुः प्राणं प्रजां पशून् कीर्ति यजमानं च वर्धय॥ *(अथर्ववेद १९.६३.१)*
यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मत्कृताम्। इष्टकामार्थसिद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

(इन मन्त्रों से आवाहित देवताओं को उठाना चाहिये।)

देवनान्दी समाप्त

ब्राह्मण वन्दन— **ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यो भवत्।**
मध्यं तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत॥ *(अथर्ववेद १९.६.६)*

इस मन्त्र से ब्राह्मण पूजा करें। "करिष्यमाण कर्मणः आरम्भमुहूर्तः सुमुहुर्तो अस्तु इति अनुगृणहन्तु"। यजमान पूछते है॥ "सुमुहूर्तमस्तु"।

सर्वतोभद्र मण्डल पूजनम्—मध्ये ब्रह्माणं, (मध्य में ब्रह्मा का आवाहन करें।)।

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरताद् वि सीमतः सुरुचो वेन आवः।
स बुध्न्यां उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च वि वः॥ *(अथर्ववेद ४.१.१)*

ॐभूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः। ब्रह्माणमावाहयामि। भो ब्रह्मन् इहागच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदो भव। **उत्तरे सोमं—**(उत्तर में सोम का आवाहन

करें।)

ॐ सुतासो मधुमत्तमाः सोमा इन्द्राय मन्दिनः। पवित्रवन्तो अक्षरन्देवान्गच्छन्तु वो मदाः॥ *(अथर्ववेद २०.१३७.४)*

ॐभूर्भुवः स्वः सोमय नमः। सोमं आवाहयामि। भो सोम इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदो भव। **ईशान्यं ईशानं**—(ईशान्य दिशा में ईशन का आवाहन करें।)

ॐ ईशानां त्वा भेषजानामुज्जेष आ रभामहे। चक्रे सहस्रवीर्यं सर्वस्मा ओषधे त्वा॥ *(अथर्ववेद ४.१७.१)*

ॐभूर्भुवः स्वः ईशानाय नमः। ईशानमावाहयामि। भो ईशान इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजा गृहाण वरदो भव। **पूर्वे इन्द्रं**—(पूर्व में इन्द्र का आवाहन करें।)

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं हवेहवे सुहवं शूरमिन्द्रम्॥
हुवे नु शक्रं पुरुहूतमिन्द्रं स्वस्ति न इन्द्रो मघवान् कृणोतु॥ *(अथर्ववेद ७.८६.१)*

ॐभूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयामि। भो इन्द्र इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहाण। वरदो भव॥ **आग्नेयामग्निं**—(आग्ने दिशा में अग्नि का आवाहन करें।)

ॐ अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम्। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुं॥ *(अथर्ववेद २०.१०१.१)*

ॐभूर्भुवः स्वः। अग्नेय नमः। अग्निमावाहयामि। भो अग्ने इहा गच्छ इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरणो भव। **दक्षिणे यमं**—(दक्षिण दिशा में यम का आवाहन करें।)

ॐ यमाय सोमः पवते यमाय क्रियते हविः। यमं ह यज्ञो गच्छत्यग्निदूतो अरंकृतः॥ *(अथर्ववेद १८.२.१)*

ॐभूर्भुवः स्वः यमाय नमः। यममावाहयामि। भो यम इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदो भव। **नैऋत्यां निऋतिं**—(नैऋत्य दिशा में निऋति को।)

ॐ यत् ते देवी निर्ऋतिराबबन्ध दाम ग्रीवास्वविमोक्यं यत्।
तत् ते वि ष्याम्यायुषे वर्चसे बलायादोमदमन्नमद्धि प्रसूतः ॥ *(अथर्ववेद ६.६३.१)*

ॐभूर्भुवः स्वः निर्ऋतये नमः। निर्ऋतिमावाहयामि। भो निऋति इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूहां गृहाण। वरदो भव। **पश्चिमे वरुणं**—(पश्चिम दिशा में वरुण का आवाहन करें।)

ॐ अप्सु ते राजन् वरुण गृहो हिरण्ययो मिथः। ततो धृतव्रतो राजा सर्वा धामानि मुञ्चतु ॥ *(अथर्ववेद ७.८३.१)*

ॐभूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः। वरुणमावाहयामि। भो वरुण इहागच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदो भव। **वायव्यां वायुं**—(वायव्य दिशा में वायु का आवाहन करें।)

ॐ गोसनिं वाचमुदेयं वर्चसा माभ्युदिहि। आ रुन्धां सर्वतो वायुस्त्वष्टा पोषं दधातु मे ॥ *(अथर्ववेद ४.२०.१०)*

ॐभूर्भुवः स्वः वायवे नमः। वायुमावाहयामि। भो वायो इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूहां गृहाण। वरदो भव। **वायुसोममध्ये अष्टवसून्**—वायु एवं सोम के बीच में अष्ठ वसुओं को (वायव्य एवं उत्तर के बीच में)

ॐ अस्मिन् वसु वसवो धारयन्त्विन्द्रः पूषा वरुणो मित्रो अग्निः।
इममादित्या उत विश्वे च देवा उत्तरस्मिन् ज्योतिषि धारयन्तु ॥ *(अथर्ववेद १.९.१)*

ॐभूर्भुवः स्वः अष्टवसुभ्यो नमः। अष्टवसून् आवाहयामि। भो अष्टवसवः इहा गच्छ। इह तिष्ठतः। पूजां गृहाण। वरदो भवत। **सोमेशानयोर्मध्ये एकादशरुद्रान्**—(सोमन एवं ईशान के बीच में एकादश रुद्रों का आवाहन करें।) (उत्तर एवं ईशान के बीच में)

ॐ रुद्रस्यैलबकारेभ्योऽसंसूक्तगिलेभ्यः। इदं महास्येभ्यः श्वभ्यो अकरं नमः ॥ *(अथर्ववेद ११.२.३०)*

ॐ भूर्भुवः स्वः एकादशरुद्रेभ्यो नमः। एकादश रुद्रानावाहयामि। भो एकादशरुद्राः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृषीत। वरदा भवत। **ईशानेन्द्रयोर्मध्ये द्वादशादित्यान्**—(ईशान्य एवं पूर्व के बीच में द्वादशादित्यों का आवाहन करें।)

ॐ उच्चा पतन्तमरुणं सुपर्णं मध्ये दिवस्तरणिं भ्राजमानम्।
पश्याम त्वा सवितारं यमाहुरजस्रं ज्योतिर्यदविन्ददत्रिः॥ *(अथर्ववेद १३.२.३६)*

ॐ भूर्भुवः स्वः द्वादशादित्येभ्यो नमः। द्वादशादित्यानावाहयामि। भो द्वादशादित्याः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृह्णीत। वरदो भवत। **इन्द्राग्निमध्ये अश्विनौ**—(पूर्वा एवं आग्नेय के बीच में अश्विनी देवताओं को आवाहन करें।)

ॐ यदुन्तरिक्षे यद्दिवि यत्पञ्च मानुषाँ अनु। नृम्णं तद्धत्तमश्विना *(अथर्ववेद २०.१३९.२)*

ॐ भूर्भुवः स्वः अश्विभ्यां नमः। अश्विनौ आवाहयामि। भो अश्विनौ इहा गच्छतं। इह तिष्ठतं पूजां गृषीतं। वरदौ भवतं। **अग्नियम मध्ये विश्वेदेवान् सपैतृकान्**—(आग्नेय एवं दक्षिण के बीच में पितृसाहित विश्वेदेवों का आवाहन करें।)

ॐ विश्वे देवा वसवो रक्षतेममुतादित्या जागृत यूयमस्मिन्।
मेमं सनाभिरुत वान्यनाभिर्मेमं प्रापत् पौरुषेयो वधो यः॥ *(अथर्ववेद १.३०.१)*

ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वेभ्योदेवेभ्यो नमः विश्वान् देवान् आवाहयामि। भो विश्वेदेवाः इहा गच्छत। इह तिष्ठंत पूजां गृह्णीत। वरदा भवत। **यम निर्ऋतिमध्ये सप्तयक्षान्**—(दक्षिण एवं नैऋत्य के बीच में सप्त यक्षों का आवाहन करें।)

ॐ देवान् यन्नाथितो हुवे ब्रह्मचर्यं यदूषिम। अक्षान् यद् बभ्रूनालभे ते नो मृडन्त्वीदृशे॥ *(अथर्ववेद ७.१०९.७)*

ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तयक्षेभ्यो नमः सप्तयक्षान् आवाहयामि। भो सप्तयक्षाः इहा गच्छत। इह तिष्ठत पूजां गृह्णीत। वरदा भवत। **निर्ऋति वरुण मध्ये**

भूतनागान्—(नैऋत्य एवं पश्चिम के बीच में भुतगण एवं नागों का आवाहन करें।)

ॐ अरायान् ब्रूमो रक्षांसि सर्पान् पुण्यजनान् पितॄन्। मृत्यूनेकशतं ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः॥ *(अथर्ववेद ११.६.१६)*

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्पेभ्यो नमः। सर्पान् आवाहयामि। भो सर्पाः इहागच्छत। इह तिष्ठत पूजां गृह्णीत। वरदा भवत। **वरुणवायुमध्ये गंधर्वाप्सरसः**—(पश्चिम एवं वायव्य के बीच में गन्धर्व एवं अप्सराओं का आवाहन करें।)

ॐ तं पुण्यं गन्धं गन्धर्वाप्सरस उप जीवन्ति पुण्यगन्धिरुपजीवनीयो भवति य एवं वेद॥ *(अथर्ववेद ८.१०-५.८)*

ॐ भूर्भुवः स्वः गन्धर्वाप्सरोभ्यो नमः। गन्धर्वाप्सिरस आवाहयामि। भो गन्धवाप्सरसः इहा गच्छत। इह तिष्ठत पूजां गृह्णीत। वरदा भवत।

ब्रह्म सोममध्ये स्कन्दं नन्दीश्वरं शूलं महाकालं च- (मध्ये में स्थित ब्रह्मा एवं सोम (उत्तर) के मध्य में स्कन्द नन्दीश्वर शूल एवं महाकाल का आवाहन करें।)

ॐ यन्मे स्कन्नं मनसो जातवेदो यद्वास्कन्दद्धविषो यत्रयत्र।
उत्प्रुषो विप्रुषः सं जुहोमि सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः॥ *(कौशिक सूत्र ६.१)*

ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दाय नमः। स्कन्दमावाहयामि। भो स्कन्द इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहाण। वरदो भव।

ॐ सहस्रशृङ्गो वृषभो यः समुद्रादुदाचरत्। तेना सहस्येना वयं नि जनान्त्स्वापयामसि॥ *(अथर्ववेद ४.५.१)*

ॐ भूर्भुवः स्वः नन्दीश्वराय नमः नन्दीश्वरं आवाहयामि। भो नंदीश्वर इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहाण। वरदो भव।

ॐ यां ते रुद्र इषुमस्यदङ्गेभ्यो हृदयाय च। इदं तामद्य त्वद् वयं विषूचीं वि वृहामसि॥ *(अथर्ववेद ६.९०.१)*

ॐ भूर्भुवः स्वः शूलायनमः शूलमावाहयामि। भो शूल इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूहां गृहाण। वरदो भव।

ॐ कालेन वातः पवते कालेन पृथिवी मही। द्यौर्मही काल आहिता॥ *(अथर्ववेद १९.५४.२)*

ॐभूर्भुवः स्वः महाकालाय नमः। महाकालमावाहयामि। भो महाकाल इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूहां गृहाण। वरदो भव। **ब्रह्मेशानमध्ये दक्षं**—(बीच में विद्यमान ब्रह्मा एवं ईशान्य दिशा के बीच में दक्ष का आवाहन करें।)

ॐ आशीर्णा ऊर्जमुत सौप्रजास्त्वं दक्षं धत्तं द्रविणं सचेतसौ।

जयं क्षेत्राणि सहसायमिन्द्र कृण्वानो अन्यानधरान्त्सपत्नान्॥ *(अथर्ववेद २.२९.३)*

ॐभूर्भुवः स्वः दक्षाय नमः। दक्षमावाहयामि। भो दक्ष इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहाण। वरदो भव। ब्रह्मेन्द्रमध्ये दुर्गां विष्णुं च (ब्रह्मा एवं इन्द्र के बीच में अर्थात् बीच में स्थित ब्रह्मा एवं पूर्व के बीच में दुर्गा एवं विष्णु का आवाहन करें।)

ॐ तामग्निवर्णां तपसाज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम्।

दुर्गां देवीं शरणमहंप्रपद्ये सुतरसितरसे नमः॥ *(यजुर्वेद-दुर्गासूक्त)*

ॐभूर्भुवः स्वः दुर्गायै नमः। दुर्गां आवाहयामि। भो दुर्गे इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदा भव।

ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदा। समूढमस्य पांसुरे॥ *(अथर्ववेद ९.२६.४)*

ॐभूर्भुवः स्वः विष्णावेनमः। विष्णुं आवाहयामि। भो विष्णो इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूहां गृहाण। वरदो भव। ग्रह्माग्नि मध्ये स्वधां (बीच में स्थित ब्रह्मा एवं आग्नेय दिशा के बीच में स्वधा को)

ॐ एतत् ते प्रततामह स्वधा ये च त्वामनु *(अथर्ववेद १८.४.७५)*

ॐभूर्भुवः वः स्वधायै नमः। स्वधामावाहयामि। भो स्वधे इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहाण। वरदा भव। **ब्रह्म यममध्ये मृत्युरोगान्**—(बीच में स्थित ब्रह्मा

एवं दक्षिण दिशा के बीच में मृत्यु एवं रोगों का आवाहन करें।)

ॐ परं मृत्यो अनु परेहि पन्थां यस्ते एष इतरो देवयानात्।
चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमीहेमे वीरा बहवो भवन्तु॥ *(अथर्ववेद १२.२.२१)*

ॐभूर्भुवः स्वः मृत्युरोगेभ्यो नमः। मृत्यरोगान् आवाहयामि। भो मृत्युरोगाः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृषीत। वरदा भवत। ब्रह्म निर्ऋतिमध्ये गणपतिं (बीच में स्थित ब्रह्मा एवं नैर्ऋत्य दिशा के बीच में गणपति का आवाहन करें।)

ॐ इमा या ब्रह्मणस्पते विषूचीर्वात ईरते। सध्रीचीरिन्द्र ताः कृत्वा मह्यं शिवतमास्कृधि
स्वस्ति नो अस्त्वभयं नो अस्तु नमोऽहोरात्राभ्यामस्तु॥ *(अथर्ववेद १६.८.६)*

ॐभूर्भुवः स्वः गणपतये नमः। गणपतिमावाहयामि। भो गणपति इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदो भव। **ब्रह्मवरुणमध्ये अपः**—(बीच में स्थित ब्रह्मा एवं पश्चिम दिशा के बीच में जल का आवाहन करें।)

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्रवन्तु नः॥ *(अथर्ववेद १.६.१)*

ॐभूर्भुवः स्वः अद्भयो नमः। अपः आवाहयामि। भो आपः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृह्णीत। वरदा भवत। **ब्रह्मवायुमध्ये मरुतः**—(बीच में स्थित ब्रह्मा एवं वायव्य दिशा के बीच में मरुत् का आवाहन करें।)

ॐ मरुतो यस्य हि क्षये पाथा दिवो विमहसः। स सुगोपातमो जनः॥ *(अथर्ववेद २०.१.२)*

ॐभूर्भुवः स्वः मरुद्भयो नमः। मरुतः आवाहयामि। भो मरुतः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृह्णीत। वरदा भवत। ब्रह्मणः पादमूले कर्णिकाधः पृथिवीं

(बीच में स्थित ब्रह्मा जी के नीचे पादमूल में पृथिवी का आवाहन करें।)

ॐ स्योनास्मैं भव पृथिव्यनृक्षरा निवेशनी। यच्छांस्मै शर्मं सप्रथाः॥ (अथर्ववेद १८.२.१९)

ॐभूर्भुवः स्वः भूम्यै नमः। भूमिं आवाहयामि। भो भूमे इहा गच्छा। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदा भव। **तत्रैव गङ्गादिसर्वनद्यः**—(उसी स्थान पर अर्थात पृथिवी पर ही गङ्गादि सभी नदियों का आवाहन करें।)

ॐ अप्सु तें राजन् वरुण गृहो हिंरण्ययों मिथः। ततों धृतव्रंतो राजा सर्वा धामांनि मुञ्चतु॥ (अथर्ववेद ७.८३.१)

ॐभूर्भुवः स्वः गङ्गादि नदीभ्यो नमः। गङ्गादि नदीः आवाहयामि। भो गङ्गादिनद्यः इहागच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृह्णीत। वरदा भवत। तत्रैव सप्तसागराः। (वहीं पर सात सागरों का आवाहन करें।)

ॐ समुद्रो नदीभिरुदंक्रामत् तां पुरं प्र णांयामि वः।
तामा विंशत तां प्र विंशत सा वः शर्मं च वर्मं यच्छतु॥ (अथर्ववेद १९.१९.७)

ॐभूर्भुवः स्वः सप्तसागरेभ्यो नमः। भो सप्तसागराः इहागच्छत। इह तिष्ठतः। पूहां गृह्णीत। वरदा भवत। तदुपरि मेरवे नमः। **मेरुं आवाहयामि।** (उसके ऊपर मेरु पर्वत का आवाहन करें।) (भूमि पर) सोमसमीपे गदायै नमः। **गदां आवाहयामि।** (सोम के पास (उत्तर) गदा का आवाहन करें।) ईशान समीपेत्रिशूलाय नमः। **त्रिशूलं आवाहयामि।।** (ईशान के पास ईशान में त्रिशूल का आवाहन करें।) इन्द्रसमीपे वज्राय नमः। **वज्रं आवाहयामि।** (इन्द्र के पास पूर्व में वज्र का आवाहन करें।) अग्नि समीपे शक्तये नमः। **शक्तिं आवाहयामि।** (अग्नि के पास आग्नेय में शक्ति का आवाहन करें।) यम समीपे दण्डाय नमः। **दण्डं आवाहयामि।** (यम के पास दक्षिण में दण्ड का आवाहन करें।) निर्ऋति समीपे खड्गय नमः। **खड्गमावाहयामि।** (निर्ऋति के पास नैऋत्य के खड्ग का आवाहन करें।) वरुण समीपे पाशाय नमः। **पाशं आवाहयामि।** (वरुण के पास पश्चिम में पाश का आवाहन करें।) वायु समीपे

अंकुशाय नमः। **अंकुशं आवाहयामि।** (वायु के पास वायव्य दिशा में अंकुश का आवाहन करें।)

तद्बाह्ये उत्तरादि क्रमेण (मण्डल के बाहर) गौतमाय नमः। **गौतमं आवाहयामि।** (उत्तर में गौतम जी का आवाहन करें।) भारद्वाजाय नमः। **भरद्वाजं आवाहयामि।** (ईशान में भरद्वाज जी का आवाहन करें।) विश्वामित्राय नमः। **विश्वामित्रं आवाहयामि।** (पूर्व में विश्वामित्र जी का आवाहन करें।) कश्यपाय नमः। **कश्यपं आवाहयामि।** (आग्नेय में अश्यप जी का आवाहन करें।) जमदग्नये नमः। **जमदग्निं आवाहयामि।** (दक्षिण में जमदग्नि जी का आवाहन करें।) वसिष्ठाय नमः। **वसिष्ठं आवाहयामि।** (नैर्ऋत्य में वसिष्ठ जी का आवाहन करें।) अत्रये नमः। **अत्रिं आवाहयामि।** (पश्चिम में अत्रि जी का आवाहन करें।) अरुंधत्यै नमः। **अरुंधतीं आवाहयामि।** (वायव्ये में अरुंधति जी का आवाहन करें।) ततः पूर्वादि क्रमेण मातृः। (पूर्वादि क्रम से मण्डल के बाहर मातृगणों का आवाहन करें।) ऐंद्र्यै नमः। **ऐन्द्रीं आवाहयामि।** (पूर्व में ऐन्द्री का आवाहन करें।) कौमार्यै नमः। **कौमारीं आवाहयामि।** (आग्नेय में कौमारी का आवाहन करें।) ब्राह्मै नमः। **ब्राह्मीं आवाहयामि।** (दक्षिण में ब्राह्मी का आवाहन करें।) वाराह्यै नमः। **वाराहीं आवाहयामि।** (नैऋत्य में वाराही का आवाहन करें।) चामुण्डायै नमः। **चामुण्डां आवाहयामि।** (पश्चिम में चामुण्डा का आवाहन करें।) वैष्णाव्यै नमः। **वैष्णावीं आवाहयामि।** (वायव्य में वैष्णावी का आवाहन करें।) वैनायक्यै नमः। **वैनायकीं आवाहयामि।** (ईशान्य में वैनायकी का आवाहन करें।) इति सर्वतो भद्र देवताः। (यहाँ पर सर्वतोभद्रमण्डल में विद्यमान सभी देवताओं का आवाहन संपन्न हुआ।)

ॐ तदस्तु मित्रावरुणा तदग्ने शं योरस्मभ्यमिदमस्तु शस्तम्।
अशीमहि गाधमुत प्रतिष्ठां नमो दिवे बृहते सादनाय॥ *(अथर्ववेद १९.११.६)*

गृहावै सूक्तं, प्रतिवीतं तत्, प्रतिवीततमया वाचा शस्तव्यम्। स यद्यपित दूरात् पशूंल्लभते, गृहानेवैनानाजिगमिषति गृहाहिपशूनां प्रतिष्ठा। *(गो.ब्रा.)*

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरताद् वि सीमतः सुरुचो वेन आवः।

स बुध्न्या॑ उप॒मा अ॑स्य वि॒ष्ठाः स॒तश्च॒ योनि॒मस॑तश्च॒ वि वः॑ ॥ (अथर्ववेद ४.१.१)

एताः ब्रह्मादि देवताः सुप्रतिष्ठिताः सन्तु। (इन मन्त्रों को कहकर आवाहित ब्रह्मादि देवताओं का प्रतिष्ठा करें।)
अनेन मंत्रेण पूजयेत्। (इस मन्त्र से पूजन करें।) ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। ध्यायामि। ध्यानं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। आवाहयामि। आसनं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। स्वागतं। पादारविन्दयो:पाद्यं पाद्यं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। मुखे आचमनीयं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ आपो॒ हि ष्ठा म॑यो॒भुव॒स्ता न॑ ऊ॒र्जे द॑धातन। म॒हे रणा॑य॒ चक्ष॑से ॥ (अथर्ववेद १.५.१)

ॐ यो वः॑ शि॒वत॑मो॒ रस॒स्तस्य॑ भाजयते॒ह नः॑। उ॒श॒तीरि॑व मा॒तरः॑ ॥ (अथर्ववेद १.५.२)

ॐ तस्मा॒ अरं॑ गमाम वो॒ यस्य॒ क्षया॑य॒ जिन्व॑थ। आपो॑ ज॒नय॑था च नः ॥ (अथर्ववेद १.५.३)

स्नानं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। स्नानाङ्ग आचमनं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ परि॑ धत्त ध॒त्त नो॒ वर्च॑से॒मं ज॒रामृ॑त्युं कृणुत दी॒र्घमायुः॑।
बृह॒स्पति॒ः प्राय॑च्छ॒द् वास॑ ए॒तत् सोमा॑य राज्ञे परि॑धात॒वा उ॑ ॥ (अथर्ववेद २.१३.२)

वस्त्रयुग्मं समर्पयामि। वस्त्राङ्ग आचमनं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहज पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुंच शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥ (ऋग्वेद)

यज्ञोपवीतं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ यद्धिरंण्यं सूर्येण सुवर्णं प्रजावंन्तो मनंवः पूर्वं ईषिरे।
तत् त्वां चन्द्रं वर्चसा सं सृजत्यायुंष्मान् भवति यो बिभर्ति॥ (अथर्ववेद १९.२६.२)

आभरणं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ गन्धं द्वारां दुराधर्षां नित्यपुंष्टां करीषिणीं। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपंह्वये श्रियंम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

गन्धं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ अर्चत प्रार्चत प्रियंमेधासो अर्चत। अर्चन्तु पुत्रका उत पुरं न धृष्णवंर्चत॥ (अथर्ववेद २०.९२.५)

अक्षतान् समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ आयंने ते परांयणे दूर्वारोहन्तु पुष्पिणीः।
उत्सों वा तत्र जायंतां ह्रदो वां पुण्डरींकवान्॥ (अथर्ववेद ६.१०६.१)

नाम पूजां करिष्ये—ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ सोमाय नमः। ॐ ईशानाय नमः। ॐ इन्द्राय नमः। ॐ अग्नेय नमः। ॐ यमाय नमः। ॐ निर्ऋतये नमः। ॐ वरुणाय नमः। ॐ वायवे नमः। ॐ अष्टवसुभ्यो नमः। ॐ एकादश रुद्रेभ्यो नमः। ॐ द्वादशादित्येभ्यो नमः। ॐ अश्विभ्यां नमः। ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। ॐ सप्तयक्षेभ्यो नमः। ॐ भूतनागेभ्यो नमः। ॐ गंधर्वाप्सरोभ्यो नमः। ॐ स्कन्दाय नमः। ॐ नन्दीश्वराय नमः। ॐ शूलाय नमः। ॐ महाकालाय नमः। ॐ दुर्गायै नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ स्वधायै नमः। ॐ मृत्युरोगेभ्यो नमः। ॐ गणपतये नमः। ॐ अद्भ्यो नमः। ॐ मरुद्भ्यो नमः। ॐ पृथिव्यै नमः। ॐ गङ्गादि सर्वनदीभ्यो नमः। ॐ सप्त सागरेभ्यो नमः। ॐ मेरवे नमः। ॐ गदायै नमः। ॐ त्रिशूलाय नमः। ॐ वज्राय नमः। ॐ शक्तये नमः। ॐ दण्डाय नमः। ॐ खड्गाय नमः। ॐ पाशाय नमः।

ॐ अंकुशाय नमः। ॐ गौतमाय नमः। ॐ भरद्वाजाय नमः। ॐ विश्वामित्राय नमः। ॐ कश्यपाय नमः। ॐ जमदग्नये नमः। ॐ वसिष्ठाय नमः। ॐ अत्रये नमः। ॐ अरुन्धत्यै नमः। ॐ ऐन्द्र्यै नमः। ॐ कौमार्यै नमः। ॐ ब्राह्मै नमः। ॐ वाराह्यै नमः। ॐ चामुण्डायै नमः। ॐ वैष्णव्यै नमः। ॐ माहेश्वर्यै नमः। ॐ वैनायक्यै नमः। (देवताओं के ५७ समूह।) नाम पूजां समर्पयामि। (ये सभी देवता सर्वतो भद्र मण्डल से आवाहित हैं।) ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

वनस्पति रसोत्पन्नो गन्धाढयः सुमनोहरः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम्॥ धूपं आघ्रापयामि। *(प्रयोगरत्नाकर)*

ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

आज्यं त्रिवर्ति संयुक्तं वह्निना योजितं मया। गृहाण मङ्गलं दीपं त्रैलोक्य तिमिरापह॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

दीपं दर्शयामि धूपदीपानन्तरं आचमनं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। (नैवेद्य को गायत्री मन्त्र से प्रोक्षण करें नैवेद्य मण्डल पर रखें। **सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि**। इस मन्त्र से परिषिञ्चन करें।) **अमृतोपस्तरणमसि** कहकर जल छोड़ें। ॐ प्राणाय स्वाहा (अङ्गुष्ठ एवं कनिष्ठिका मिलाकर) ॐ अपानाय स्वाहा (अङ्गुष्ठ एवं तर्जनी मिलाकर) ॐ व्यानाय स्वाहा (अङ्गुष्ठ एवं मध्यमा मिलाकर) ॐ उदानाय स्वाहा (अङ्गुष्ठ एवं अनामिका मिलाकर) ॐ समानाय स्वाहा (सभी अङ्गुलियों को मिलाकर) ॐ देवेभ्यः स्वाहा नैवेद्यं निवेदयामि। **अमृतापिधानमसि** कहकर जल छोड़ें। नैवेद्यं विसर्जयामि। हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि। गण्डूषं समर्पयामि। पुनराचमनं समर्पयामि। (कहकर जल छोड़ें) ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

पूगीफल समायुक्तं नागवल्ल्यादलैर्युतम्। चूर्ण कर्पूर संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यतां। क्रमुक ताम्बूलं समर्पयामि। *(देवपूजा)*

ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ एह यांतु वरुणः सोमो अग्निर्बृहस्पतिर्वसुभिरेह यांतु।
अस्य श्रियमुपसंयांत सर्व उग्रस्य चेत्तुः संमनसः सजाताः॥ *(अथर्ववेद ६.७३.१)*

मङ्गलनीराजनं समर्पयामि। नीराजनान्ते परिमल पत्र पुष्पाणि समर्पयामि। मन्त्रपुष्पं समर्पयामि। प्रदक्षिणां समर्पयामि। नमस्कारान् समर्पयामि।

देवाराधनमण्डलं सुरगणावासं सदामङ्गलं। कुर्तुः दर्शनमात्रतः शुभकरं तत् पञ्च भूतात्मकं॥
अर्णाद्यक्षरसंयुतं भयहरं तद् याग पुण्यार्जितं। नानामन्त्रमयं समस्त फलदं ध्यायेन्मनोनन्दनं॥
अरिष्टानि बहून्यस्मिन् दुष्कृतानि शतानि च। मण्डलानि निरीक्षन्ते यथा युद्धेषु कातराः॥ *(अनुष्ठान पद्धति)*

(युद्ध भूमि में कायर जैसे देखते ही भीत हो जाते हैं, वैसे ही मण्डल को देखते ही सभी अरिष्ट दूर हो जाते हैं।) **अनया पूजया ब्रह्मादि मण्डल देवताः प्रीयन्तां** यहाँ पर सर्वतोभद्र मण्डल पूजन संपन्न हुआ।

प्रधान देवता महाविष्णु षोडशोपचार पूजन

ध्यानम्—(पुष्प हाथ में लेकर ध्यान करें) **विष्णुं जिष्णुं महाविष्णुं प्रभविष्णुं महेश्वरम्।**
अनेकोत्पात शमनं नमामि पुरुषोत्तमम्॥ ॐ नमो नारायणाय।

आवाहन—ॐ सहस्रंबाहुः पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रंपात्। स भूमिं विश्वतों वृत्वात्यंतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥ (अथर्ववेद १९.६.१)
ॐ हिरंण्यवर्णां हरिंणीं सुवर्णरजतस्रंजाम्। चन्द्रां हिरण्यमंयी लक्ष्मीं जांतवेदो म आवंह॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

सपरिवार श्री महाविष्णवे नमः, आवाहयामि आवाहनं समर्पयामि।

आसनम्—ॐ त्रिभिः पुद्भिर्द्यामंरोहत्पादंस्येहाभंवत्पुनः। तथा व्यंक्रामद्विष्वंङशनानशने अनुं॥ *(अथर्ववेद १९.६.२)*
ॐ तां म आवंह जातवेदो लक्ष्मीमनंपगामिनींम्। यस्यां हिरंण्यं विंन्देयं गामश्वं पुरुंषानहम्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, । आसनं समर्पयामि ।

पाद्यम्— ॐ तावन्तो अस्य महिमानस्ततो ज्यायांश्च पूरुषः । पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥ (अथर्ववेद १९.६.३)

ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद प्रमोदिनीम् । श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, । पादारविंदयोः पाद्यं पाद्यं समर्पयामि ।

अर्घ्यं— ॐ पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम् । उतामृतत्वस्येश्वरो यदन्येनाभवत्सह ॥ (अथर्ववेद १९.६.४)

ॐ कां सोस्मितां हिरण्य प्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।

पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहो पह्वये श्रियम् ॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्) ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, हस्तयोः अर्घ्यमर्घ्यं समर्पयामि ।

आचमनम्— ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् । मुखं किमस्य किं बाहू किमूरू पादा उच्येते ॥ (अथर्ववेद १९.६.५)

ॐ चंद्रां प्रभासां यशसा ज्वलंतीं श्रियं लोके देवजुष्टा मुदाराम् ।

तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मेनश्यतां त्वां वृणे ॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, । मुखे आचमनीयं समर्पयामि ।

पञ्चामृत स्नानम् (दूध)— ॐ सं सिञ्चामि गवां क्षीरं समाज्येन बलं रसम् ।

संसिक्ता अस्माकं वीरा ध्रुवा गावो मयि गोपतौ ॥ (अथर्ववेद २.२६.४)

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, । पयः स्नानं समर्पयामि ।

शुद्ध जल—ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः ।
भवे भवेनाति भवे भवस्वमाम् भवोद्भवाय नमः ॥ *(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत् आरण्यक)*

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, । शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि

दहि— ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्यवाजिनः । सुरभि नो मुखा करत्प्र ण आयूंषि तारिषत् ॥ *(अथर्ववेद २०.१३७.३)*

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, । दधि स्नानं समर्पयामि ।

शुद्ध जल—ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमःश्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमःकालविकरणाय
नमोबलाय नमो बलप्रमथनाय नमस्सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः । *(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)*

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, । शुद्धोदक स्नानं सपर्मयामि ।

घी— ॐ घृतं ते अग्ने दिव्ये सधस्थे घृतेन त्वां मनुरद्या समिन्धे ।
घृतं ते देवीर्नप्त्य१ आ वहन्तु घृतं तुभ्यं दुह्रतां गावो अग्ने ॥ *(अथर्ववेद ७.८२.६)*

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, । घृतस्नानं समर्पयामि ।

शुद्ध जल—ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोर तरेभ्यः ।
सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥ *(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)*

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, । शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ।

मधु (शहद)—ॐ मधुमान् भवति मधुमदस्याहार्यं भवति। मधुमतो लोकान् जयति य एवं वेद॥ *(अथर्ववेद ९.१.२३)*

ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः,। मधु स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥ *(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)*

ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः,। शुद्धोदक स्नानं सपर्पयामि।

शर्करा (शक्कर)—ॐ स्वादोःस्वादीयः स्वादुना सृजा समदः सु मधु मधुनाभि योधीः॥ *(अथर्ववेद ५.२.३)*

ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः,। शर्करा स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जन—ॐ ईशानस्सर्वविद्यानामीश्वरस्सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणो
अधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्॥ *(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)*

ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः,। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

फल— ॐ पुष्पवतीः प्रसूमतीः फलिनीरफला उत। संमातरं इव दुह्रामस्मा अरिष्टतातये॥ *(अथर्ववेद ८.७.२७)*

ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः,। फल स्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदक—ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे॥ *(अथर्ववेद १.५.१)*
ॐ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः॥ *(अथर्ववेद १.५.२)*
ॐ तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः॥ *(अथर्ववेद १.५.३)*

ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यो भवत्। मध्यं तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत॥ (अथर्ववेद १९.६.६)

ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदंतु मायांतरा याश्च ब्राह्या अलक्ष्मीः। (ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः,। शुद्धदक स्नानं समर्पयामि।

वस्त्र— ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत। मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायत॥ (अथर्ववेद १९.६.७)

ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतोऽस्मिं राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥ (ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः,। वस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतं—ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरास्तात्। आयुष्यमग्रयं प्रतिमुंञ्चशुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥

ॐ विराडग्रे समभवद्विराजो अधि पूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः॥ (अथर्ववेद १९.६.९)

ॐ क्षुत् पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वान्निर्णुद मे गृहात्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः,। यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

आभरण—ॐ यद्धिरण्यं सूर्येण सुवर्णं प्रजावन्तो मनवः पूर्व ईषिरे।
तत् त्वां चन्द्रं वर्चसा सं सृजत्यायुष्मान् भवति यो बिभर्ति॥ (अथर्ववेद १९.२६.२)

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णवे नमः, । आभरणं समर्पयामि ।

गन्ध— ॐ गंधं द्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् । ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ नाभ्यां आसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ।

पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन् ॥ *(अथर्ववेद १९.६.८)*

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णवे नमः, । गन्धं समर्पयामि ।

अक्षत— ॐ अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत । अर्चन्तु पुत्रका उत पुरं न धृष्ण्वर्चत ॥ *(अथर्ववेद २०.९२.५)*

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णवे नमः, । अक्षतान् समर्पयामि ।

पुष्पाणि— ॐ विराडग्रे समभवद्विराजो अधि पूरुषः । स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥ *(अथर्ववेद १९.६.९)*

ॐ पुष्पवतीः प्रसूमतीः फलिनीरफला उत । संमातर इव दुह्रामस्मा अरिष्टतातये ॥ *(अथर्ववेद ८.७.२७)*

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि । पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥ *(ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णवे नमः, । पुष्पाणि समर्पयामि ।

प्रथमावरण पूजनम्— पूर्वादिक्रमेण ॐ विमलायै नमः १ । ॐ उत्कर्षिण्यै नमः २ । ॐ ज्ञानायै नमः ३ । ॐ क्रियायै नमः ४ । ॐ योगायै नमः ५ । ॐ प्रह्व्यै नमः ६ । ॐ सत्यायै नमः ७ । ॐ ईशानायै नमः ८ । मध्ये ॐ अनुग्रहायै नमः ९ ।

द्वितीयावरण पूजनम्— ॐ ब्राह्म्यै नमः । पूर्वे ॐ माहेश्वर्यै नमः । आग्नेय दिशि । ॐ कौमार्यै नमः । दक्षिण दिशि । ॐ वैष्णव्यै नमः । नैरृत्यां दिशि । ॐ वाराह्यै नमः पश्चिम दिशि । ॐ इन्द्राण्यै नमः । वायव्यां दिशि । ॐ चामुण्डायै नमः । उत्तरस्यां दिशि । ॐ गिरिजायै नमः ऐशान्यां दिशि । *(अनुष्ठान पद्धति)*

तृतीयावरण पूजनम्—ॐइन्द्राय सुराधिपतये पीतवर्णाय वज्रहस्ताय ऐरावत वाहनाय सशक्ति काय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवारायश्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐअग्नये तेजोधिपतये पिंगलवर्णाय शक्ति हस्ताय मेष वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय स वाहनाय स परिवाराय श्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐयमाय प्रेताधिपतये कृष्णवर्णाय दण्ड हस्ताय महिष वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐनिषतये रक्षोधिपतये रक्तवर्णाय खङ्ग हस्ताय नरवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐवरुणाय जलाधितये कुंदवर्णाय पाशहस्ताय मकरवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐवायवे प्राणाधिपतये धूम्रवर्णाय अंकुश हस्ताय हरिणवाहनाय सशक्ति काय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐसोमाय नक्षत्राधिपतये शुक्लवर्णाय गदा हस्ताय अश्व वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐईशानाय विद्याधिपतये स्फटिकवर्णाय त्रिशूल हस्ताय वृषभ वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री महाविष्णुमूर्तिपार्षदाय नमः। ॐअनंताय नागाधिपतये क्षीरवर्णाय चक्रहस्ताय गरुड वाहनाय स शक्तिाकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। नैर्ऋत्यं एवं पश्चिम दिशा के बीच में अनन्त का पूजन करें। ॐब्रह्मणे लोकाधिपतये कंजवर्णाय पषहस्ताय हंसवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। पूर्व एवं ईशान दिशा के बीच में ब्रह्मा जी का पूजन करें। *(अनुष्ठान पद्धति)*

चतुर्थावरणपूजनम्—ॐवज्राय नमः। (पूर्व में) ॐशक्त्यै नमः। (आग्नेय में) ॐदण्डाय नमः। (दक्षिण में) ॐखड्गाय नमः। (नैऋत्य) ॐपाशाय नमः। (पश्चिम में) ॐअंकुशाय नमः। (वायव्य में) ॐगदायै नमः। (उत्तर में) ॐत्रिशूलाय नमः। (ईशान में) ॐचक्राय न मः। (पश्चिम नैऋत्य के बीच में) ॐपद्माय नमः। (पूर्व ईशान के बीच में) *(अनुष्ठान पद्धति)*

अष्टोत्तर शतनाम पूजा

ॐ विष्णवे नमः। ॐ लक्ष्मीपतये नमः। ॐ कृष्णाय नमः। ॐ वैकुण्ठाय नमः। ॐ गरुडध्वजाय नमः। ॐ जगन्नाथाय नमः। ॐ परब्रह्मणे नमः।ॐ वासुदेवाय नमः। ॐ त्रिविक्रमाय नमः। ॐ दैत्यान्तकाय नमः। ॐ मधुरिपवे नमः। ॐ तार्क्ष्यवाहनाय नमः। ॐ सनातनाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ पद्मनाभाय नमः। ॐ हृषीकेशाय नमः। ॐ सुधाप्रदाय नमः। ॐ माधवाय नमः। ॐ पुण्डरीकाक्षाय नमः। ॐ स्थितिकर्त्रे नमः। ॐ परात्पराय नमः। ॐ वनकालिने नमः। ॐ यज्ञ रूपाय नमः। ॐ चक्र पाणये नमः। ॐ गदाधराय नमः। ॐ उपेन्द्राय नमः। ॐ केशवाय नमः। ॐ हंसाय नमः। ॐ समुद्रमथनाय नमः। ॐ हरये नमः। ॐ गोविन्दाय नमः। ॐ ब्रह्मजनकाय नमः ॐ कैटभासुरमर्दनाय नमः। ॐ श्रीधराय नमः। ॐ कामजनकाय नमः ॐ शेषशायिने नमः। ॐ चतुर्भजाय नमः। ॐ पाञ्चजन्यधराय नमः। ॐ श्रीमते नमः। ॐ शार्ङ्गपाणये नमः। ॐ जनार्दनाय नमः। ॐ पीताम्बरधराय नमः। ॐ देवाय नमः। ॐ सूर्यचन्द्रविलोचनाय नमः। ॐ मत्स्यरूपाय नमः। ॐ कूर्मतनवे नमः। ॐ क्रोडरूपाय नमः। ॐ नृकेसरिणे नमः। ॐ वामनाय नमः। ॐ भार्गवाय नमः। ॐ रामाय नमः। ॐ बलिने नमः। ॐ कल्किने नमः। ॐ हयाननाय नमः। ॐ विश्वम्भराय नमः। ॐ शिशुमाराय नमः। ॐ श्रीकराय नमः। ॐ कपिलाय नमः। ॐ ध्रुवाय नमः। ॐ दत्तात्रेयाय नमः। ॐ अच्युताय नमः। ॐ अनन्ताय नमः। ॐ मुकुन्दाय नमः। ॐ दधिवामनाय नमः। ॐ धन्वन्तरये नमः। ॐ श्रीनिवासाय नमः। ॐ प्रद्युम्नाय नमः। ॐ पुरुषोत्तमाय नमः। ॐ श्रीवत्सकौस्तुभधराय नमः। ॐ मुरारातये नमः। ॐ अधोक्षजाय नमः। ॐ ऋषभाय नमः। ॐ मोहिनी रुप धारिणे नमः। ॐ सङ्कर्षणाय नमः। ॐ पृथवे नमः। ॐ क्षीराब्धिशायिने नमः। ॐ भूतात्मने नमः। ॐ अनिरुद्धाय नमः। ॐ भक्तवत्सलाय नमः। ॐ नराय नमः। ॐ गजेन्द्रवरदाय नमः। ॐ त्रिधाम्ने नमः। ॐ भूतभावनाय नमः। ॐ श्वेतद्वीपसुवास्तव्याय नमः। ॐ सनकादिमुनिध्येयाय नमः। ॐ भगवते नमः। ॐ शङ्करप्रियाय नमः। ॐ नीलकान्ताय नमः। ॐ धराकान्ताय नमः। ॐ वेदात्मने नमः। ॐ बादरायणाय नमः। ॐ भागीरथीजन्मभूमि पादपद्माय नमः। ॐ सतांप्रभवे नमः। ॐ स्वभुवे नमः। ॐ विभवे नमः। ॐ घनश्यामाय नमः। ॐ जगत्कारणाय नमः। ॐ अव्ययाय नमः। ॐ बुद्धावताराय नमः। ॐ शान्तात्मने नमः। ॐ लीलामानुष

विग्रहाय नमः। ॐ दामोदराय नमः। ॐ विराड्रूपाय नमः। ॐ भूतभव्यभवत्प्रभवे नमः। ॐ आदिदेवाय नमः। ॐ प्रह्लादपरिपालकाय नमः। ॐ श्रीमहाविष्णावे नमः। अष्टोत्तर शतनाम पूजां समर्पयामि।

धूप— **ॐ वनस्पति रसोत्पन्नो गंधाढ्यः सुमनोहरः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम्॥**

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तो अस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥ *(अथर्ववेद १९.६.१०)*

ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि संभव कर्दम। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, धूपं आघ्रापयामि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

दीपम्—आज्यं त्रिवर्ति संयुक्तं वह्निना योजितं मया। गृहाण मङ्गलं दीपं त्रैलोक्य तिमिरापह॥

ॐ तं यज्ञं प्रावृषा प्रौक्षन्पुरुषं जातमग्रशः। तेन देवा अयजन्त साध्या वसवश्च ये॥ *(अथर्ववेद १९.६.११)*

ॐ आपः सृजंतु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे। निच देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः दीपं दर्शयामि। धूपदीपानंतरं आचमनीयं समर्पयामि।

नैवेद्यम्—देवस्याग्रे स्थलं संशोध्य गोमयेन मण्डलं कृत्वा तत्र शुद्धं पात्रं न्यस्य अभिघार्य निर्मलं हविः तदुपरि न्यस्य आज्येन द्रवीभूतं कृत्वा "ॐ भूर्भुवः स्वः इति गायत्र्या प्रोक्ष्य वायु बीजं जप्त्वा निवेद्यान्नं संशोध्य दक्षिणहस्ते अग्निबीजं विलिख्य तेन हस्तेन संदह्य वामहस्ते अमृत बीजं विलिख्य तेन हस्तेन हविराप्लाव्य सुरभिमुद्रां बध्वा अमृतमयं भावयित्वा मल धातु रसांशं विभाज्य देवस्य निवेद्य ग्रहणेच्छां कुर्यात्। **"सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि"** इत्यनेन परिषिच्य हस्तभ्यां पुष्पैः देवस्य जिह्वार्चीरुचिं निवेद्ये निपात्य निवेदयामि भवते जुषाणेदं हविर्विभो इति वामहस्तेन ग्रासमुद्रां प्रदर्श्य दक्षिणहस्तेन प्राणादि मुद्राः प्रदर्शयेत्। अन्नात् मलांशं धात्वंशं च परित्यज्य रसांशं देवस्य वदनार्चिषि समर्पयेत्। वं अबात्मना इति नैवेद्य मुद्रां प्रदर्शयेत्। नैवेद्य सारं

रससमर्पणात् जातं सुधांशं देवे समर्प्य अंजलिमुद्रा बध्वा नैवेद्यसारसमर्पित जातामृतमय सुधांशुना पुनः पुनः वर्धितं देवं हृन्मूर्ति देवं ध्यायन् स्व स्व मूलमंत्र यथा शक्ति जप्त्वा।

कलश के आगे स्थल शुद्धि कर गोमय से शुद्धि कर चतुरस्र मण्डल को बनाकर उस पर शुद्ध पात्र को रखें। पात्र में थोडा सा घी डालें। उस पात्र में निर्मलहविस् (नैवेद्य पदार्थ को) को घी पर रखें। उस हविस् को घीं से भिगोयें।

गायत्री मंत्र से नैवेद्य का प्रोक्षण करें—"यं यं यं" इस वायुबीज को जपकर हविस् को शुद्ध करें। दाहिने हाथ में (रं) अग्नि बीज को लिखकर उस अग्नि से हविस् में विद्यमान कश्मलों को जलाऐं (कल्पना करें)। बायें हाथ में अमृत बीज (वं) को लिखकर उस हाथ से हविस् को शुद्ध करें (धोने की कल्पना करें) ॐनमो नारायणाय। इस मन्त्र का आठ बार जप करें। हविस् को मंत्रमय एवं अमृतमय छोने की कल्पना करें। सुरभि मुद्रा से अमृतमय हुआ है मानकर मलांश, धातु का अंश एवं रसांश को अलग अलग करने की कल्पना करें। देवता को नैवेद्य ग्रहण करने की इच्छा उत्पन्न करती चाहिये।

"सत्यं त्र्तेन परिषिचामि" इससे परिषिञ्चन करें। दोनों हाथों में पुष्प लेकर देवता का जीभ नैवेद्य तक पहुँचने का चिन्तन करें।

"निवेदयामि भवते जुषाणेदं हविर्विभो" कहकर नैवेद्य स्वीकार करने की प्रार्थना करते हुए। बायें हाथ से ग्रास मुद्रा (जैसे बछडे को घास देते है) को दिखाकर दाहिने हाथ से प्राणाय स्वाहा-अङ्गुष्ठ कनिष्ठिका मिलाकर अपानाय स्वाहा-अङ्गुष्ठ एवं तर्जनी मिलाकर व्यानाय स्वाहा-अङ्गुष्ठ एवं अनामिका मिलाकर उदानाय स्वाहा-अङ्गुष्ठ एवं अनामिका मिलाकर समानाय स्वाहा। सभी अङ्गुलियों को मिलाकर। अन्त से मलांश एवं धातु के अंध को अलग कर केवल रसांश को अर्पित करने की कल्पना करें।

"वं अबात्मना नैवेद्यं कल्पयामि" कहकर नैवेद्य मुद्रा का प्रदर्शन करें (अङ्गुष्ठ एवं अनामिका मिलाने से नैवेद्य मुद्रा)। नैवेद्य का सार जो रसांश था उसका भी सार अमृत का जो अंश है उसे देवता को समर्पित कर, हाथ जोडकर, नैवेद्य के सार अमृत से भगवान् को बढते हुए मानकर उसे हृदय में स्थित

मानकर यथाशक्ति ''ॐ नमो नारायणाय''—इस मूल मंत्र का जप करें।

ॐ स्वादोःस्वादीयः स्वादुना सृजा समदः सु मधु मधुनाभि योधीः ॥ *(अथर्ववेद ५.२.३)*

ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

यथा संभव नैवेद्यं निवेदयामि। अमृतापिधानमसि कहकर उत्तरापोशन देवें। हस्तप्रक्षालनार्थे जलं समर्पयामि। गण्डूषार्थे जलं समर्पयामि। शुद्धाचमनार्थे जलं समर्पयामि। करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि।

ताम्बूल—ॐ तस्मादश्वा अजायन्त ये च के चोभयादतः। गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः ॥ *(अथर्ववेद १९.६.१२)*

पूगीफल समायुक्तं नागवल्या दलैर्युतं। चूर्ण कर्पूर संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णवे नमः। क्रमुक तांबूलं समर्पयामि।

नीराजन (आरति)—ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे।

छन्दो ह जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥ *(अथर्ववेद १९.६.१३)*

ॐ एह यातु वरुणः सोमो अग्निर्बृहस्पतिर्वसुभिरेह यातु।

अस्य श्रियमुपसंयात सर्व उग्रस्य चेत्तुः संमनसः सजाताः ॥ *(अथर्ववेद ६.७३.१)*

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णवे नमः। मङ्गल नीराजनं समर्पयामि।

मंत्रपुष्प—ॐ सहस्रबाहुः पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥ *(अथर्ववेद १९.६.१)*

ॐ मूर्ध्नो देवस्य बृहतो अंशवः सप्त सप्ततीः। राज्ञः सोमस्याजायन्त जातस्य पुरुषादधि ॥ *(अथर्ववेद १९.६.१६)*

ॐ तस्मा॑द्य॒ज्ञात्स॑र्व॒हुतः॒ संभृ॑तं पृषदा॒ज्यम्। प॒शूँस्ताँश्च॑क्रे वाय॒व्या॑न्नार॒ण्या ग्राम्या॑श्च॒ ये॥ (अथर्ववेद १९.६.१४)

ॐ आ॒र्द्रां य॒ः करि॑णीं य॒ष्टिं सु॒वर्णां॑ हेम॒मालि॑नीम्। सू॒र्यां हि॒रण्म॑यीं ल॒क्ष्मीं जात॑वेदो म॒ आव॑ह॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः। मंत्रपुष्पं समर्पयामि। षोडशोपचार के बाद अष्टावधान सेवा करें।

देवदेवोत्तम देवता सार्वभौम अखिलाण्डकोटिब्रह्माण्ड नायक ऋषिगणवन्द्य श्री महा भविष्णु स्वामिन् ऋग्वेद प्रिय ऋग्वेद सेवां अवधारय। ऋग्वेद मंत्रों का पाठ करें। देवदेवोत्तम देवता सार्वभौम अखिलाण्डकोटिब्रह्माण्ड नायकऋषिगणवन्द्य श्री महा विष्णुस्वामिन् यजुर्वेदप्रिय यजुर्वेदसेवां अवधारय। यजुर्वेद मंत्रों का पाठ करें। देवदेवोत्तम देवता सार्वभौम अखिलाण्डकोटिब्रह्माण्ड नायकऋषिगणवन्द्य श्री महा विष्णुस्वामिन् सावदेव प्रिय सामवेद सेवांअवधारय। सामवेद मंत्रों का पाठ करें। देवदेवोत्तम देवता सार्वभौम अखिलाण्डकोटिब्रह्माण्ड नायकऋषिगणवन्द्य श्री महा विष्णुस्वामिन् अथर्ववेद प्रिय अथर्ववेद सेवां अवधारय। अथर्ववेद मंत्रों का पाठ करें। देवदेवोत्तम देवता सार्वभौम अखिलाण्डकोटिब्रह्माण्ड नायकऋषिगणवन्द्य श्री महा विष्णुस्वार्मिन् शास्त्रप्रिय शास्त्र सेवां अवधारय। शास्त्रों का पाठ करें। तर्क, न्याय, मीमांसा, वेदान्त, साहित्य, व्याकरण, ज्योतिष आदि शास्त्र कहलाते हैं। देवदेवोत्तम देवता सार्वभौम अखिलाण्डकोटि ब्रह्माण्ड नायक ऋषिगणवन्द्य श्री महा विष्णुास्वामिन् पुराणप्रिय पुराण सेवां अवधारय। अठारह पुराणों में देवता विषयक कोई भाग या भवगद्गीता के श्लोक भी पुराण के अन्तर्गत आते हैं। देवदेवोत्तम देवता सार्वभौम अखिलाण्डकोटि ब्रह्माण्ड नायक ऋषिगणवन्द्य श्री महा विष्णुस्वामिन् अष्टक सेवाप्रिय अष्टकसेवां अवधारय। देवदेवोत्तम देवता सार्वभौम अखिलाण्डकोटिब्रह्माण्ड नायक ऋषिगणवन्द्य श्री महा विष्णुस्वामिन् सङ्गीतप्रिय सङ्गीत सेवां अवधारय। अष्टावधान सेवा को नीराजन के तुरन्त बाद मंत्र पुष्प से पहले भी कर सकते हैं। मन्त्र पुष्प के तुरन्त बाद प्रदक्षिण से पहले भी कर सकते हैं।

प्रदक्षिणा नमस्कार—यानि कानि च पापानि जन्मांतर कृतानि च। तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे॥ (देवपूजा-स्मृति

संग्रह)

ॐ सप्तास्यांसन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबंध्नन्पुरुषं पशुम्॥ (अथर्ववेद १९.६.१५)

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विंदेयं पुरुषानहम्॥

(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः। प्रदक्षिणा नमस्कारान् समर्पयामि।

प्रसन्नार्घ्य—ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि। तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्॥

इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यम्। (कहकर तीन बार पुष्पमिश्रित जल छोड़ें।)

सर्वोपचार पूजनम्—ॐछत्रं समर्पयामि। चामरेण वीजयामि। गीतं गायामि। नाट्यं नटामि। आंदोळिकामारोहयामि। अश्वमारोहयामि। गजमारोहयामि। समस्त राजोपचार देवोपचार पूजां समर्पयामि।

ॐ मूर्ध्नो देवस्य बृहतो अंशवः सप्त संसतीः। राज्ञः सोमस्याजायन्त जातस्य पुरुषादधि॥ (अथर्ववेद १९.६.१६)

ॐ यः शुचिः प्रयतोभूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्। सूक्तं पंचदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्॥ (ऋग्वेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः। सर्वोपचार पूजां समर्पयामि।

प्रार्थना—विष्णुं जिष्णुं महाविष्णुं प्रभविष्णुं महेश्वरम्। अनेकोत्पात शमनं नमामि पुरुषोत्तमम्॥

ॐ कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुध्यात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।

करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि॥ (पौराणिकम्)

ॐ ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविः ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्। ब्रह्मैव तेन गंतव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना ॥ *(श्री भगवद्गीते)* ॐ सपरिवाराय श्री महा विष्णवे नमः। अनेन पूजनेन सपरिवारः श्री महा विष्णुः प्रीयताम्। षोडशोपचार पूजनं संपूर्णम्।

नवग्रह षोडशोपचार पूजनम्

ध्यायामि। ध्यानं समर्पयामि।

ॐ सहस्त्रंबाहुः पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रंपात्। स भूमिं विश्वतों वृत्वात्यंतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥ *(अथर्ववेद १९.६.१)*

ॐ हिरंण्य वर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्त्रंजाम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वंह ॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ नवग्रहमण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, **आवाहनं समर्पयामि।**

ॐ त्रिभिः पद्भिर्द्यामरोहत्पादंस्येहाभंवत्पुनंः। तथा व्यंक्रामद्विष्वंडशनानशने अनुं ॥ *(अथर्ववेद १९.६.२)*

ॐ तां म आवंह जातवेदो लक्ष्मीमनंपगामिनीम्। यस्यां हिरंण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ नवग्रहमण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, आसनं समर्पयामि।

ॐ तावंन्तो अस्य महिमानस्ततो ज्यायांश्च पूरुषः। पादोंस्य विश्वां भूतानिं त्रिपादंस्यामृतं दिवि ॥ *(अथर्ववेद १९.६.३)*

ॐ अश्वपूर्वां रंथमध्यां हस्तिनांद प्रमोदिंनीम्। श्रियं देवी मुपंह्वये श्रीर्मां देवी जुंषताम् ॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, पादारविंदयोः पाद्यं पाद्यं समर्पयामि।

ॐ पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्येश्वरो यदन्येनाभवत्सह॥ (अथर्ववेद १९.६.४)

ॐ कां सोस्मितां हिरण्य प्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।

पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्। (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहितदेवताभ्यो नमः, हस्तयोः अर्घ्यमर्घ्यं समर्पयामि।

ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्य किं बाहू किमूरू पादा उच्येते॥ (अथर्ववेद १९.६.५)

ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्ती श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।

तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः। मुखे आचमनीयं समर्पयामि।

पञ्चामृत स्नानम् पयः (दूध)—ॐ सं सिञ्चामि गवां क्षीरं समाज्येन बलं रसम्।

संसिक्ता अस्माकं वीरा ध्रुवा गावो मयि गोपतौ॥ (अथर्ववेद २.२६.४)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, पयः स्नानं समर्पयामि। दूध से स्नान के बाद शुद्धोदक स्नान

ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे॥ (अथर्ववेद १.५.१)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः। पयः स्नानांते शूद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

दधि (दहि)—ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभि नो मुखा करत्प्र ण आयूंषि तारिषत्॥ (अथर्ववेद २०.१३७.३)

ॐनवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, दधि स्नानं समर्पयामि। दहि स्नान के बाद शुद्धोदक स्नान

ॐ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः॥ (अथर्ववेद १.५.२)

ॐनवग्रह मंडलस्थ आवाहितदेवताभ्यो नमः, दधि स्नानांते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

घृत (घी)—ॐ घृतं ते अग्ने दिव्ये सधस्थे घृतेन त्वां मनुरद्या समिन्धे।

घृतं ते देवीर्नप्त्य१ आ वहन्तु घृतं तुभ्यं दुह्रतां गावो अग्ने॥ (अथर्ववेद ७.८२.६)

ॐनवग्रह मंडलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, घृत स्नानं समर्पयामि। घी स्नान के बाद शुद्धोदक स्नान

ॐ तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः॥ (अथर्ववेद १.५.३)

ॐनवग्रह मंडलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, घृतस्नानांते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

मधु (शहद)—ॐ मधुमान् भवति मधुमदस्याहार्यं भवति। मधुमतो लोकान् जयति य एवं वेद॥ (अथर्ववेद ९.१.२३)

ॐनवग्रहमण्डलस्थ आवाहितदेवताभ्यो नमः, मधु स्नानं समर्पयामि।

ॐ ईशाना वार्याणां क्षयन्तीश्चर्षणीनाम्। अपो याचामि भेषजम्॥ (अथर्ववेद १.५.४)

ॐनवग्रह मण्डलस्थ आवाहितदेवताभ्यो नमः, मधु स्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

शर्करा (शक्कर)—ॐ स्वादोःस्वादीयः स्वादुना सृजा समदः सु मधु मधुनाभि योधीः॥ (अथर्ववेद ५.२.३)

ॐनवग्रह मंडलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, शर्करास्नानं समर्पयामि।

ॐ अप्सु मे सोमो अब्रवीदन्तर्विश्वानि भेषजा। अग्निं च विश्वशंभुवम्॥ (अथर्ववेद १.६.२)

ॐ नवग्रहमण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, शर्करास्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

ॐ पुष्पवतीः प्रसूमतीः फलिनीरफला उत। संमातर इव दुह्रामस्मा अरिष्टतातये॥ (अथर्ववेद ८.७.२७)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, फलस्नानं समर्पयामि।

ॐ उच्चा पतन्तमरुणं सुपर्णं मध्ये दिवस्तरणिं भ्राजमानम्।
पश्याम त्वा सवितारं यमाहुरजस्रं ज्योतिर्यदविन्ददत्रिः॥ (अथर्ववेद १३.२.३६)

ॐ सुतासो मधुमत्तमाः सोमा इन्द्राय मन्दिनः। पवित्रवन्तो अक्षरन्देवान्गच्छन्तु वो मदाः॥ (अथर्ववेद २०.१३७.४)

ॐ अग्निर्वासाः पृथिव्यसितज्ञूस्त्विषीमन्तं संशितं मा कृणोतु॥ (अथर्ववेद १२.१.२१)

ॐ कपृन्नरः कपृथमुद्दधातन चोदयत खुदत वाजसातये।
निष्टिग्र्यः पुत्रमा च्यावयोतय इन्द्रं सबाध इह सोमपतये॥ (अथर्ववेद २०.१३७.२)

ॐ बृहस्पतिर्नः परि पातु पश्चादुतोत्तरस्मादधरादघायोः।
इन्द्रः पुरस्तादुत मध्यतो नः सखा सखिभ्यो वरीयः कृणोतु॥ (अथर्ववेद ७.५१.१)

ॐ द्यौश्च म इदं पृथिवी च प्रचेतसौ शुक्रो बृहन् दक्षिणाया पिपर्तु।
अनु स्वधा चिकितां सोमो अग्निर्वायुर्नः पातु सविता भगश्च॥ (अथर्ववेद ६.५३.१)

ॐ शं नो वातो वातु शं नस्तपतु सूर्यः।

अहा॑नि॒ शं भ॑वन्तु न॒ः शं रात्री॒ प्रति॑ धीयतां॒ शमु॒षा नो॒ व्यु॑च्छतु॒ ॥ *(अथर्ववेद ७.६९.१)*

ॐ कया॑नश्चि॒त्र आ भु॑वदू॒ती स॒दावृ॑धः॒ सखा॑। कया॑ शचि॑ष्ठया वृ॒ता ॥ *(अथर्ववेद २०.१२४.१)*

ॐ के॒तुं कृ॒ण्वन्न॑के॒तवे॒ पेशो॑ मर्या अपे॒शसे॑। समु॒षद्भि॑रजायथाः ॥ *(अथर्ववेद २०.२६.६)*

ॐ ब्रा॒ह्म॒णो॑ऽस्य॒ मुख॑मासीद्बा॒हू रा॑ज॒न्यो॑ऽभवत्। मध्यं॒ तद॑स्य॒ यद्वैश्यः॑ प॒द्भ्यां शू॒द्रो अ॑जायत ॥ *(अथर्ववेद १९.६.६)*

ॐ आ॒दि॒त्यव॑र्णो॒ तप॒सोऽधि॑जा॒तो व॒नस्पति॒स्तव॑ वृ॒क्षोऽथ॑ बि॒ल्वः।
त॒स्य॒ फला॑नि तप॒सा नु॑दन्तु मा॒यान्त॑रा॒याश्च॑ बा॒ह्या अ॑ल॒क्ष्मीः ॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, शुद्धोदकस्नानं सपर्मयामि। शुद्धोदक स्नान मंत्रों के तीन प्रकार प्रचलित है।

प्रथम क्रम में—९ ग्रह- ९ अधिदेवता-९ प्रत्यधिदेवता ६ कर्म साद्गुण्य देवता, ८ क्रतु संरक्षक देवता कुल मिलाकर ४१ देवताओं का मंत्र पठन करके शुद्धोदक स्नान करना चाहिये। सभी मंत्र आवाहन में है। नवग्रह यागादियों में इसका प्रयोग होता है। जहाँ कलश पूजन के लिए ही एक पण्डित नियुक्त हो वहाँ भी इसे कर सकते हैं।

द्वितीय क्रम में—९ ग्रह+९ अधिदेवता+९ प्रत्यधिदेवता कुलमिलाकर २७ देवताओं का मंत्र पठन करके शुद्धोदक स्नान कराना चाहिये।

तृतीय क्रम में—९ ग्रहों का मंत्र पठन करके शुद्धोदक स्नान कराना चाहिये।

वस्त्रम्— ॐ चन्द्रमा॒ मन॑सो जा॒तश्चक्षोः॒ सूर्यो॑ अजायत। मुखा॒दिन्द्र॑श्चा॒ग्निश्च॑ प्रा॒णाद्वा॒युर॑जायत ॥ *(अथर्ववेद १९.६.७)*

ॐ उपै॑तु मां दे॑वस॒खः की॒र्तिश्च॒ मणि॑ना स॒ह। प्रा॒दु॒र्भू॒तोऽस्मि॑ रा॒ष्ट्रेऽस्मि॒न् की॒र्तिमृ॑द्धिं द॒दातु॑ मे ॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, वस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतम्—ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥

ॐ विराडग्रे समभवद्विराजो अधि पूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः॥ (अथर्ववेद १९.६.९)

ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि, आचमनं समर्पयामि।

आभरणम्—ॐ यद्धिरण्यं सूर्येण सुवर्णं प्रजावन्तो मनवः पूर्व ईषिरे।

तत् त्वा चन्द्रं वर्चसा सं सृजत्यायुष्मान् भवति यो बिभर्ति॥ (अथर्ववेद १९.२६.२)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, आभरणं समर्पयामि।

गन्धम्— ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।

पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन्॥ (अथर्ववेद १९.६.८)

ॐ नवग्रहमण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, गन्धं समर्पयामि।

अक्षतम्—ॐ अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत। अर्चन्तु पुत्रका उत पुरं न धृष्णवर्चत॥ (अथर्ववेद २०.९२.५)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पाणि—ॐ विराडग्रे समभवद्विराजो अधि पूरुषः। स जाते अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः॥ (अथर्ववेद १९.६.९)

ॐ पुष्पंवतीः प्रसूमंतीः फलिनींरफला उत। संमातरं इव दुह्रामस्मा अंरिष्टतांतये॥ (अथर्ववेद ८.७.२७)

ॐ मनंसः काममाकूंतिं वाचः सत्यमंशीमहि। पशूनां रूपंमन्नस्य मयि श्रीः श्रंयतां यशंः॥ (ऋग्वेद - पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, पुष्पाणि समर्पयामि।

नाम पूजा

ॐ सहस्रकिरणाय नमः। ॐ सूर्याय नमः। ॐ तपनाय नमः। ॐ सवित्रे नमः। ॐ रवये नमः। ॐ विकर्तनाय नमः। ॐ जगच्चक्षुषे नमः। ॐ द्युमणये नमः। ॐ तिग्मदीधितये नमः। ॐ त्रयीमूर्तये नमः। ॐ द्वादशात्मने नमः। ॐ ब्रह्माविष्णुशिवात्मकाय नमः। ॐ आदित्याय नमः। ॐ अग्नये नमः। ॐ रुद्राय नमः। ॐ चन्द्रमसे नमः। ॐ अद्भ्यो नमः। ॐ गौर्यै नमः। ॐ अङ्गारकाय नमः। ॐ भूम्यै नमः। ॐ स्कन्दाय नमः। ॐ बुधाय नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ पुरुषाय नमः। ॐ बृहस्पतये नमः। ॐ इंद्राय नमः। ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ शुक्राय नमः। ॐ इंद्राण्यै नमः। ॐ इंद्राय नमः। ॐ शनैश्चराय नमः। ॐ प्रजापतये नमः। ॐ यमाय नमः। ॐ राहवे नमः। ॐ सर्पेभ्यो नमः। ॐ मृत्यवे नमः। ॐ केतवे नमः। ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ चित्रगुप्ताय नमः। ॐ विनायकाय नमः। ॐ दुर्गायै नमः। ॐ क्षेत्रपालाय नमः। ॐ वायवे नमः। ॐ आकाशाय नमः। ॐ अश्विभ्यां नमः। ॐ इन्द्राय नमः। ॐ अग्नये नमः। ॐ यमाय नमः। ॐ निर्ऋतये नमः। ॐ वरुणाय नमः। ॐ वायवे नमः। ॐ सोमाय नमः। ॐ ईशानाय नमः। ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, नाम पूजां समर्पयामि।

धूपः— **वनस्पति रसोत्पन्नो गन्धाढ्यः सुमनोहरः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥**

ॐ यत्पुरुंषेण हविषां देवा यज्ञमतंन्वत। वसन्तो अंस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥ (अथर्ववेद १९.६.१०)

ॐ कर्दमेन प्रंजा भूता मयि संम्भव कर्दम। श्रियं वासयं मे कुले मातरं पद्ममालिंनीम्॥ (ऋग्वेद - पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, धूपं आघ्रापयामि।

दीपं— **साज्यं त्रिवर्ति संयुक्तं वह्निना योजितं मया। गृहाण मङ्गलं दीपं त्रैलोक्यतिमिरापह॥**

ॐ तं यज्ञं प्रावृषा प्रौक्षन्पुरुषं जातमग्रशः। तेन देवा अयजन्त साध्या वसवश्च ये॥ (अथर्ववेद १९.६.११)

ॐ आपः स्रजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत व स मे गृहे। नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥ (ऋग्वेद - पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, दीपं दर्शयामि। धूपदीपानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि।

नैवेद्यं—नैवेद्य रखने के स्थल पर मण्डल बनायें (चतुरस्र) नैवेद्य को मण्डल पर रखने के बाद मंत्र पढ़ें। विश्वामित्र ऋषिः देवी गायत्री छन्दः, सविता देवता निवेदने विनियोगः। एक बार नैवेद्य पर गायत्री मंत्र से प्रोक्षण करें। सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि इस मंत्र से दिन में एवं **ऋतं त्वा सत्येन परिषिञ्चामि**। इस मंत्र से रात्रि में परिषिञ्चन करें।

यथा संभव नैवेद्यं निरीक्षस्व कहकर प्रार्थना कर **अमृतोपस्तरणमसि** मन्त्र से जल छोड़ें। बायें हाथ से ग्रास मुद्रा (जैसे बछड़े को घास खिलाते हैं) एवं दाहिने हाथ से निम्न मुद्राओं से देवताओं को नैवेद्य अर्पण करें। मन में कल्पना करें कि भगवान को खिला रहे हैं। प्राणाय स्वाहा। अपानाय स्वाहा। व्यानाय स्वाहा। उदानाय स्वाहा। समानाय स्वाहा। ॐ घृणिः सूर्य आदित्यः-इस मूल मंत्र को आठ बार जप करें।

ॐ स्वादोःस्वादीयः स्वादुना सृजा समदः सु मधु मधुनाभि योधीः॥ (अथर्ववेद ५.२.३)

ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥ (ऋग्वेद - पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

यथा सम्भवं नैवेद्यं निवेदयामि। अमृतापिधानमसि। कहकर उत्तरापोशण जल दें। उत्तरापोशनार्थं जलं समर्पयामि। हस्तप्रक्षालनार्थे जलं समर्पयामि। गण्डूषार्थे जलं समर्पयामि। शुद्धाचमनार्थे जलं समर्पयामि। करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि।

ताम्बूलम्—पूगीफलसमायुक्तं नागवल्ल्यादलैर्युतम्। चूर्ण कर्पूर संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ तस्मादश्वा अजायन्त ये च के चोभयादतः। गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः॥ (अथर्ववेद १९.६.१२)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, अमुक ताम्बूलं समर्पयामि। ताम्बूल के पश्चात् नीराजन करें।

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दो ह जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत॥ (अथर्ववेद १९.६.१३)

ॐ एह यातु वरुणः सोमो अग्निर्बृहस्पतिर्वसुभिरेह यातु।

अस्य श्रियमुपसंयात सर्व उग्रस्य चेत्तुः संमनसः सजाताः॥ (अथर्ववेद ६.७३.१)

ॐ नवग्रह मडलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, मङ्गल नीराजनं दर्शयामि।

मन्त्र पुष्पः—ॐ उच्चा पतन्तमरुणं सुपर्णं मध्ये दिवस्तरणिं भ्राजमानम्।

पश्याम त्वा सवितारं यमाहुरजस्रं ज्योतिर्यदविन्ददत्रिः॥ (अथर्ववेद १३.२.३६)

ॐ सुतासो मधुमत्तमाः सोमा इन्द्राय मन्दिनः। पवित्रवन्तो अक्षरन्देवान्गच्छन्तु वो मदाः॥ (अथर्ववेद २०.१३७.४)

ॐ अग्निर्वासाः पृथिव्यसितज्ञूस्त्विषीमन्तं संशितं मा कृणोतु॥ (अथर्ववेद १२.१.२१)

ॐ कपृन्नरः कपृथमुद्दधातन चोदयत खुदत वाजसातये।

निष्टिग्र्यः पुत्रमा च्यावयोतय इन्द्रं सबाध इह सोमपीतये॥ (अथर्ववेद २०.१३७.२)

ॐ बृहस्पतिर्नः परि पातु पश्चादुतोत्तरस्मादधरादघायोः।

इन्द्रः पुरस्तादुत मध्यतो नः सखा सखिभ्यो वरीयः कृणोतु॥ (अथर्ववेद ७.५१.१)

ॐ द्यौश्च म इदं पृथिवी च प्रचेतसौ शुक्रो बृहन् दक्षिणया पितर्तु।

अनु स्वधा चिकितां सोमो अग्निर्वायुर्नः पातु सविता भगश्च॥ (अथर्ववेद ६.५३.१)

ॐ शं नो वातो वातु शं नस्तपतु सूर्यः।

अहानि शं भवन्तु नः शं रात्री प्रति धीयतां शमुषा नो व्युच्छतु॥ (अथर्ववेद ७.६९.१)

ॐ कयानश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥ (अथर्ववेद २०.१२४.१)

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः॥ (अथर्ववेद २०.२६.६)

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्। पशूँस्ताश्चक्रे वायव्यां नारण्या ग्राम्याश्च ये॥ (अथर्ववेद १९.६.१४)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, मंत्रपुष्पं समर्पयामि।

प्रदक्षिणा नमस्कारः—यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च। तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे पदे॥

ॐ सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन्पुरुषं पशुम्॥ (अथर्ववेद १९.६.१५)

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्या हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्।

(ऋग्वेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रहमण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, प्रदक्षिणा नमस्कारान् समर्पयामि।

प्रसन्नार्घ्यः— ॐ प्रभाकराय विद्महे दिवाकराय धीमहि। तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्॥

ॐ अत्रिपुत्राय विद्महे अमृतोद्भवाय धीमहि। तन्नः सोमः प्रचोदयात्॥

ॐ भूमिपुत्राय विद्महे भारद्वाजाय धीमहि। तन्नः कुजः प्रचोदयात्॥

ॐ तारापुत्राय विद्महे सोमपुत्राय धीमहि। तन्नो बुधः प्रचोदयात्॥

ॐ देवाचार्याय विद्महे वाचस्पतये धीमहि। तन्नो गुरुः प्रचोदयात्॥

ॐ दैत्याचार्याय विद्महे विद्यारूपाय धीमहि। तन्नः शुक्रः प्रचोदयात्॥

ॐ सूर्यपुत्राय विद्महे शनैश्चराय धीमहि। तन्नो मंदः प्रचोदयात्॥

ॐ सैंहिकेयाय विद्महे तमोमयाय धीमहि। तन्नो राहुः प्रचोदयात्॥

ॐ ब्रह्मपुत्राय विद्महे विकृतास्याय धीमहि। तन्नः केतुः प्रचोदयात्॥

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यं, प्रसन्नार्घ्यं समर्पयामि।

सर्वोपचार पूजनम्— ॐ छत्रं समर्पयामि। चामरेण वीजयामि। गीतं गायामि। नाट्यं नटामि। आन्दोळिकामारोहयामि। अश्वमारोहयामि। गजमारोहयामि। समस्त राजोपचार देवोपचारपूजां समर्पयामि।

ॐ मूर्ध्नो देवस्य बृहतो अंशवः सप्त संसतीः। राज्ञः सोमस्याजायन्त जातस्य पुरुषादधि॥ *(अथर्ववेद १९.६.१६)*

ॐ यः शुचि प्रयंतो भूत्वा जुहुयांदाज्यमन्वंहम्। सूक्तं पंचदंशर्चं च श्रीकामंः सततं जंपेत्॥ *(ऋग्वेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, सर्वोपचारपूजां समर्पयामि।

प्रार्थना— ग्रहाणामादिरादित्यो लोकरक्षणकारकः। विषमस्थानसंभूतां पीडां हरतु ते रविः॥
रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रः सुधाशनः। विषमस्थानसंभूतां पीडां हरतु ते विधुः॥
भूमिपुत्रो महातेजा जगतां भयकृत्सदा। वृष्टिकृद्वृष्टिहर्ता च पीडां हरतु ते कुजः॥
उत्पातरूपो जगतां चन्द्रपुत्रो महाद्युतिः। सूर्य प्रियकरो विद्वान् पीडां हरतु ते बुधः॥
देवमन्त्री विशालाक्षः सदालोकहितेरतः। अनेक शिष्य संपूर्णः पीडां हरतु ते गुरुः॥
दैत्यमन्त्री गुरुस्तेषां प्राणदश्च महामतिः। प्रभुस्ताराग्रहाणां च पीडां हरतु ते भृगुः॥
सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः। मंदचारः प्रसन्नात्म पीडां हरतु ते शनिः॥
महाशिरा महावक्त्रौ दीर्घदंष्ट्रो महाबलः। अतनुश्चोर्ध्व केशश्च पीडां हरतु ते तमः॥
अनेक रूपवर्णैश्च शतशोथ सहस्त्रशः। उत्पातरूपो जगतः पीडां हरतु ते शिखी॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*
आरोग्यं पद्मबन्धुर्वितरतु विपुलां संपदं शीतरश्मिः, भूलाभं भूमिपुत्रः सकलगुणयुतां वाग्विभूतिं च सौम्यः।
सौभाग्यं देवमन्त्री रिपुभयशमनं भार्गवः शौर्यमार्किः, दीर्घायुस्सैंहिकेयो विपुलतरयशः केतुराचन्द्रतारम्॥

शान्तिरस्तु शिवं ते अस्तु ग्रहाः कुर्वन्तु मङ्गलम्। अरिष्टानि प्रणश्यन्तु दुरितानि भयानि च। ॐनवग्रहमण्डलस्थ देवताभ्यो नमः, प्रार्थनां समर्पयामि।

यहाँ पर नवग्रह पूजन समाप्त हुआ। मण्डप में कलशों का पूजन भी संपूर्ण हुआ।

तृतीय / चतुर्थ / पञ्चम दिन द्वितीय प्रहर

भू-शुद्धि— ॐ स्योनास्मै भव पृथिव्यनृक्षरा निवेशनी। यच्छास्मै शर्म सप्रथाः॥ *(अथर्ववेद १८.२.१९)*

इस मन्त्र से जल प्रोक्षण करने से भूमि शुद्ध होती है।

देह शुद्धि— ॐ या आपो याश्च देवता या विराड् ब्रह्मणा सह।
शरीरं ब्रह्म प्राविशच्छरीरेऽधि प्रजापतिः॥ *(अथर्ववेद ११.८.३०)*

आचमन मन्त्र— ऋग्वेदाय स्वाहा। यजुर्वेदाय स्वाहा। सामवेदाय स्वाहा। (स्वाहा मन्त्र से जल पीना चाहिये।)

अथर्ववेदाय नमः। इतिहास पुराणेभ्यो नमः। अग्नये नमः। वायवे नमः। प्राणाय नमः। सूर्याय नमः। चन्द्राय नमः। दिग्भ्यो नमः। इन्द्राय नमः। पृथिव्यै नमः। अन्तरिक्षाय नमः। दिवे नमः। ब्रह्मणे नमः। विष्णवे नमः। सदाशिवाय नमः। द्विराचम्य .. इस प्रक्रिया को दुबारा करना चाहिये।

पवित्र धारणम्— ॐ सुतासो मधुमत्तमाः सोमा इन्द्राय मन्दिनः। पवित्रवन्तो अक्षरन्देवान्गच्छन्तु वो मदाः॥ *(अथर्ववेद २०.१३७.४)*

ॐभूर्भुवः स्वः कहकर जल सिञ्चन करें॥ (इन मन्त्रों से पवित्र शुद्धिकर धारण करना चाहिये आसन के नीचे दो कुश डाल लेना चाहिये।)

प्राणायाम— प्रणवस्य परब्रह्म ऋषिः। दैवी गायत्री छन्दः। परमात्मा देवता। प्राणायामे विनियोगः।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योतीरसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवस्वरोम्। *(ऋग्वेद ३.६२.१०)*

(रेखङ्कित मन्त्र को तीन बार कुम्भक में जप करना चाहिये।)

आसन शुद्धि—ॐ स्योना पृंथिवि भवानृक्षरा निवेशंनी। यच्छां नः शर्मं सप्रथः।' *(१५ मन्त्र-२२ सूक्त-प्रथम मण्डल)* इस मन्त्र से जल प्रोक्षण करने से भूमि शुद्ध होती है।

शिखाबन्धनम्—

ऊर्ध्वकेशि विरूपाक्षि मांसशोणित भक्षणे। तिष्ठ देवि शिखाबन्धे चामुण्डे ह्यपराजिते॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

(इस मन्त्र से शिखाबन्धन करना चाहिये।)

महा संकल्प —..........

गुरु प्रार्थना —

नमो गुरुभ्यो गुरुपादुकाभ्यो नमः परेभ्यः परपादुकाभ्यः।
आचार्य सिद्धेश्वर पादुकाभ्यो नमोऽस्तु लक्ष्मीपति पादुकाभ्यः॥ *(श्रृङ्गेरी मठीय आचार्य प्रार्थनम्)*

श्री गुरु परमगुरु परमेष्ठी गुरु सद्‌गुरु पादुकाभ्यो नमो नमः। हम लोग ब्रह्मानन्दं गुरु तं नमानि। गुरु परम्परा को भी बोल सकते हैं। कर सकते हैं। हरौ रुष्टे गुरुस्त्राता गुरौ रुष्टे न कश्चन॥ ईश्वर के रुष्ट होने पर गुरुजी रक्षा करते हैं एवं गुरुजी के कुपित होने पर कोई भी रक्षक नहीं है।

भूतोच्चाटन मन्त्र—

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुविसंस्थिताः। ये भूता विघ्नकर्तारः ते गच्छन्तु शिवाज्ञया॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-आसन विधि प्रकरण)*
ॐ अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम्। सर्वेषामविरोधेन ब्रह्मकर्म समारभे॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-आसन विधि प्रकरण)*
ॐ तीक्ष्णदंष्ट्रमहाकाय कल्पान्ते दहनोपम। भैरवाय नमस्तुभ्यं अनुज्ञां दातुमर्हसि॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

इति भैरवं नमस्कृत्य। (इन मन्त्रों से भूतोच्चाटन कर भैरव जी से यज्ञ रक्षा की प्रार्थना करते हैं।)

गणपति प्रार्थना—ॐ इमा या ब्रह्मणस्पते विषूचीर्वात ईरते। सध्रीचीरिन्द्र ताः कृत्वा मह्यं शिवतमास्कृधि।

स्वस्ति नो अस्त्वभयं नो अस्तु नमोऽहोरात्राभ्यामस्तु॥ *(अथर्ववेद १९.८.६)* इन मन्त्रों से गणपति प्रार्थना कर पुष्पाक्षत छोड़ना चाहिये।

जल कलश पूजनम्—कलश में पूर्ण जल भरकर रखना चाहिये। फिर उसमें गन्ध अक्षत पुष्प कलश के अन्दर डालना चाहिये एवं बाहर भी चारों ओर लगाना चाहिये। गायत्री मन्त्र से तीन बार कलश छूकर जप करना चाहिये।

ॐ कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः। मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥
कुक्षौ तु सागरास्सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदस्सामवेदोह्यथर्वणः॥
अङ्गैश्चसहितास्सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः। अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा॥
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः। सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः॥
गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिंकुरु॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-देवपूजा प्रकरण)*
ॐ अप्सु ते राजन् वरुण गृहो हिरण्ययो मिथः। ततो धृतव्रतो राजा सर्वा धामानि मुञ्चतु॥ *(अथर्ववेद ७.८३.१)*
ॐ एमां कुमारस्तरुण आ वत्सो जगता सह। एमां परिस्रुतः कुम्भ आ दध्नः कलशैरगुः॥ *(अथर्ववेद ३.१२.७)*
श्री वरुण मूर्तये नमः।

(इन मन्त्रों को कलश छूकर पाठ करना चाहिये।)

सितमकरनिषण्णां शुभ्रवर्णां त्रिनेत्रां करधृत कलशोद्यत्पंकजाभीत्यभीष्टाम्।

विधि हरिहररूपां सेन्दुकोटीरचूडां भसितसितदुकूलां जाह्नवीं तां नमामि ॥ *(स्मृति संग्रह)*

(इस मन्त्र से कलश में गङ्गाजी का ध्यान करना चाहिये।)

आत्माराधनम्—हृदि स्थितं पंकजमष्टपत्रं सकेसरं कर्णिक मध्यनालं ॥

अङ्गुष्ठमात्रं मुनयो वदन्ति ध्यायेत् च विष्णुं पुरुषं पुराणम् ॥

हृदयकमलमध्ये सूर्यबिम्बासनस्थं सकलभुवनबीजं सृष्टिसंहारहेतुम्।

निरतिशयसुखात्म ज्योतिषं हंसरूपं परमपुरुषमाद्यं चिन्तयेदात्ममूर्तिम् ॥

आराधयामि मणि सन्निभमात्मलिङ्गम्। मायापुरीरहृदय पंकज सन्निविष्टम् ॥

श्रद्धा नदी विमलचित्त जलभिषेकै। र्नित्यं समाधि कुसुमैर्न पुनर्भवाय ॥

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो हंसः सदाशिवः। त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत् ॥

स्वामिन् सर्व जगन्नाथ यावत्पूजावसानकम्। तावत् त्वं प्रीति भावेन बिम्बेस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥ (देवपूजा)

ॐ आत्मने नमः। ॐ अन्तरात्मने नमः। ॐ परमात्मने नमः। ॐ ज्ञानात्मने नमः। आत्मपूजां समर्पयामि। इससे आत्मशुद्धि होती है। (इन मन्त्रों को कहकर अपने सिर पर अक्षत डाल लेवें।)

हवन कुण्ड में

स्थंडिल शुद्धिः—तद् गोमयेन प्रदक्षिणमुपलिप्य दक्षिणे उदीच्यां द्वे, प्रतीच्यां चतुः, प्राच्यामर्धं इत्यंगुलानित्यक्त्वा दक्षिणोपक्रमां उदक्संस्थां प्रादेशमात्रां एकां लेखां तस्या दक्षिणोत्तरयोः प्रागायते पूर्वरेखया असंसृष्टे प्रादेशसंमिते

द्वे लेखे लिखित्वा तयोर्मध्ये परस्परं असंसृष्टाः उदक्संस्थाः प्रागायताः प्रादेश संमिताः तिस्त्रः इति षड्लेखाः यज्ञीय शकलमूलेन दक्षिण हस्तेन उल्लिख्य लेखासु तच्छकलं उदगग्रं निधाय स्तंडिलं अद्भिः अभ्युक्ष्य शकलं भंक्त्वा आग्रेय्यां निरस्य पाणिं प्रक्षाल्य वाग्यतः भवेत्।

स्थण्डिल को पहले गोमय से लेपना चाहिये। स्थण्डिल (वेदी) में दक्षिण में आठ अंगुल, उत्तर में दो अंगुल, पश्चिम में चार अंगुल, पूर्व में आधा अंगुल छोड़कर दक्षिण से प्रारम्भकर उत्तर में समाप्त हो ऐसे १२ अंगुल चौक बनाना चाहिये। फिर बीच में दक्षिण से उत्तर एक रेखा खींचना चाहिये। १२ अंगुल फिर दक्षिण से प्रारम्भ कर एक दक्षिण में एवं एक उत्तर में दो रेखायें पश्चिम से पूर्व की ओर खीचें १२ अंगुल बी फिर दक्षिण से प्रारम्भकर दक्षिण में समाप्त होने वाले पश्चिम से पूर्व में समाप्त होने वाले तीन रेखायें। (१२ अंगुल) खीचें। (प्रादेश प्रमाण–लगभग १२ अंगुल) (ब) इसे यज्ञ में प्रयुक्त अश्वत्थादि समित् के अग्रभाग से इन लकीरों को खीचना चाहिये। दाहिने हाथ से लिखें। (रेत पर) खीचने वाले समित् को उसके ऊपर उत्तर उत्तराभिमुख रखें। फिर स्थण्डिल (stage) को जल से अभ्युक्षण करना चाहिये। (अभ्युक्षण मतलब मुष्टि में जल लेकर सिञ्चन करना चाहिये।) फिर उस समित् को (लकीर खीचें) तोडकर आग्रेय दिशा में फेंककर हाथ धो लेना चाहिये।

त्वं भूमित्येष्योजसा त्वं वेद्यां सीदसि चारुरध्वरे। त्वां पवित्रमृषयो भरन्तस्त्वं पुनीहि दुरितान्यस्म॥

दिति पवित्रे अन्तर्धाय हविर्निर्वपति (इस वाक्य से चरुपात्र में दो कुशा डालें फिर अक्षत की कटोरी हाथ में लें उसमें से प्रत्येक देवता के नाम से दो-दो दाना चरु पात्र में डालते जायें —मुठ्ठी-मुठ्ठी भर प्रत्येक देताओं के नाम से निकालना चाहिए ये नियम है।) देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यामग्रये जुष्टं निर्वपामीति (आदित्याय जुष्ठम निर्वपामि, चन्द्राय अङ्गारकाय, बुधाय, बृहस्पतये, शुक्राय, शनिश्चराय, राहवे, केतवे, विनाकाय, दुर्गायै, क्षेत्रपालाय, वायवे, आकाशाय, अश्विनभ्यां, इन्द्राय, अग्रेयै, यमाय, नैर्ऋतये, वरुणाय, वायवे, सोमाय, इशानाय, विष्णावे जुष्टं निर्वपामि एवं जुष्टं प्रोक्षामि

कुशा लेकर के जल पात्र से चरुपात्र में प्रोक्षण करें)

परित्वाग्ने पुरं वयमिति त्रिः पर्यग्नि करोति। (इस मन्त्र से ३ बार अग्नि कुण्ड की पूर्व दिशा से जल घुमाकर पूर्व दिशा तक ही प्रदक्षिणा करें)

परिं त्वाग्ने पुरं वयं विप्रं सहस्य धीमहि। धृषद् वर्णं दिवेदिवे हन्तारं भङ्गुरावंतः॥ त्रिः पर्यग्नि करोति।

अग्निं अर्चयेत—अग्नेर्मन्वे प्रथमस्य प्रचेतसः पाञ्चजन्यस्य बहुधा यमिन्धते।

विशोविशः प्रविशिवांसमीमहे स नों मुञ्चत्वंहसः॥

यथां हव्यं वहंसि जातवेदो यथां यज्ञं कल्पयंसि प्रजानन्। एवा देवेभ्यः सुमतिं न आ वह स नों मुञ्चत्वंहसः॥

यामन्यामन्नुपयुक्तं वहिंष्ठं कर्मन्कर्मन्नाभंगम्। अग्निमींडे रक्षोहणं यज्ञवृधं घृताहुतं स नों मुञ्चत्वंहसः॥

सुजातं जातवेदसमग्निं वैश्वानरं विभुम। हव्यवाहं हवामहे स नों मुञ्चत्वंहसः॥

येन ऋषयो बलमद्योतयन् युजा येनासुराणामयुवन्त मायाः। येनाग्निना पणीनिन्द्रो जिगाय स नों मुञ्चत्वंहसः॥

येनं देवा अमृतमन्वविन्दन् येनौषधीर्मधुमतीरकृण्वन्। येनं देवाः स्वश्राभरन्त्स नों मुञ्चत्वंहसः॥

यस्येदं प्रदिशि यद् विरोचते यज्जातं जनितव्यं च केवलम्। स्तौम्यग्निं नाथितो जोहवीमि स नों मुञ्चत्वंहसः॥

(अथर्ववेद .४.२३.१-७)

इन मंत्रों को बोल करके अग्नि देवता का ध्यान एवं पञ्चोपचार पूजन करना चाहिए।

अग्निमूर्तिध्यान—ॐ चत्वारि शृङ्गास्त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य।

त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महोदेवो मर्त्यां आविवेश॥ *(गोपथ ब्राह्मण १.१६)*

सप्तहस्तश्चतुः शृंगः सप्तजिह्वो द्विशीर्षकः। त्रिपात्प्रसन्नवदनः सुखासीनः सुचिस्मितः॥
स्वाहांतुदक्षिणेपार्श्वे देवीं वामेस्वधां तथा। बिभ्रद्दक्षिण हस्तैस्तु शक्तिमन्नंस्त्रुचं स्त्रुवं॥
तोमरंव्यजनंवामैर्घृतपात्रं च धारयन्। मेषारूढो जटाबद्ध गौरवर्णो महौजसः।
धूम्रध्वजो लोहिताक्षः सप्तार्चिः सर्वकामदः॥ आत्माभिमुखमासीन एवं रूपो हुताशनः। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-अग्निमुख प्रकरण)*

हे अग्ने शाण्डिल्यगोत्र मेषारूढ वैश्वानर प्राङ्‌मुखः सन् ममाभिमुखो वरदस्सुप्रसन्नो भव। अष्टदिशी अग्निं अर्च्येत्। ॐ पूर्वे अग्नये नमः ॐ आग्नेयां अग्नये नमः ॐ दक्षिणे अग्नये नमः ॐ नैर्ऋत्यां अग्नये नमः ॐ पश्चिमे अग्नये नमः ॐ वायव्ये अग्नये नमः ॐ उत्तरे अग्नये नमः ॐ ऐशान्ये अग्नये नमः ॐ मध्ये यज्ञ पुरुषाय नमः॥ उत्तरतोऽग्नेरुपसादयतीध्मम्। (इस वाक्य से १५ लकड़ी के गाठ को इध्मा कहते हैं कुण्ड के उत्तर दिशा में नीचे कुशा का आसन बिछाकर उसके ऊपर इध्मा रख दें एवं उसी के उत्तर में बर्हिः मुठ्ठी भर कुशा को बर्हिः कहते हैं) उत्तर बर्हिः। अग्नये त्वा जुष्टं प्रोक्षामीतीध्मम्। (इस वाक्य से इध्मा को प्रोक्षण करें एवं बर्हिः को भी प्रोक्षण करें) पृथिव्या प्रोक्षामि इति बर्हिः। (इस वाक्य को बोल करके मुठ्ठी भर कुशाओं को जहां घी का पात्र रखा जाता है वहां पर दक्षिण से लेकर उत्तर तक बिछाना है) दर्भमुष्टिमभ्युक्ष्य पश्चादग्नेः प्रागग्रं निदधात्यूर्णम्रदं प्रथस्व स्वासस्थं देवम्य इति । दर्भाणामपादाय (बड़ा वाला कुशा लेकर करके ब्रह्मा के आसन को स्पर्श करें नियम ये है कि ब्रह्मा जी का आसन अग्नि कुण्ड के दक्षिण दिशा में देना चाहिए ऋषीणां इस मन्त्र को बोले) ऋषीणां प्रस्तरोऽसीति दक्षिणतो ऽग्नेर्ब्रह्मासनं निदधाति।

ऋषीणां प्रस्तरोंऽसि नमोंऽस्तु दैवांय प्रस्तरायं।

पुरस्तादग्ररास्तार्य तेषां मूलान्यपरेषां प्रान्तैरवछादयन्परिसर्पति दक्षिणेनाग्निमा पश्चार्धात्। परि स्तृणीहीति संप्रेष्यति।

(यहां पर जो आगे वाक्य लिखा है उस वाक्य को बोलते हुए इस्तीर्ण वशिष्ठ कुशा लेकर के पहले पूर्व दिशा में डाले जिसका मूल भाग दक्षिण दिशा

की ओर होना चाहिए एवं अग्र भाग उत्तर दिशा की ओर होना चाहिए इसी तरह से पश्चिम दिशा में डाले फिर मूल भाग पश्चिम दिशा को एवं अग्र भाग पूर्व दिशा की ओर होना चाहिए इसी तरह उत्तर दिशा में भी डालें **नोट**—अग्र भाग पूर्व एवं उत्तर की ओर होना चाहिए एवं मूल भाग दक्षिण एवं पश्चिम की ओर होना चाहिए) पुरस्तादग्नेरास्तीर्य तेषां मूलान्यपरेषां प्रान्तैरवछादयन्परिसर्पति (इन वाक्यों से स्तीर्य को स्पर्श करें) दक्षिणेनाग्निमा पश्चार्धात् । परि स्तृणीहीति संप्रेष्यति।

परिं॑स्तृणीहि॒परिं॑ धेहि॒ वेदिं॒मा जा॒मिं मोंषीरमु॒या शया॑नाम्। हो॒तृ॒षद॑नं॒ हरिं॑तं हि॒र॒ण्ययं॑ नि॒ष्का ए॒ते यज॑मानस्य लो॒के॥

(देवस्यत्वा इस मंत्र से स्तीर्ण को प्रोक्षण करें)

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यांप्रसूतः प्रशिषा परिस्तृणामीति।

स्तीर्णं प्रोक्षति (हवि को प्रोक्षण करें) हविषां त्वा जुष्टं प्रोक्षामीति। (दो कुशा लेकर के अग्नि में जलाकर घी पात्र के अन्दर ३ परिक्रमा करें उसके बाद कुशा को अग्नि कुण्ड के अन्दर डाल दें।) विलीनपूतमाज्यं गृहीत्वाधिश्रृत्य पर्यग्नि कृत्वो (इस वाक्य से उत्तर की ओर घी पात्र को किंचित खिंचना है।) दगुद्वास्य पश्चाद्ग्रेरुपसाद्योदगग्राभ्यांपवित्राभ्यामुत्पुनाति। (दो कुशा को लेकर अनामिका एवं अंगुष्ठ के बीच में दबा कर घी पात्र के अन्दर ४ बार चलायें यह प्रक्रिया पूरी होने के बाद अग्नि कुण्ड में कुशा को डाल दें।)

विष्णोर्मनसा पूतमसि। देवस्त्वा सवितोत्पुनातु। अच्छिद्रेण त्वा पवित्रेण शतधारेण सहस्त्रधारेण सुप्वोत्पुनामीति

तृतीयम्। तूष्णीं चतुर्थम्। (इस वाक्य को पढ़कर श्रुवा से दो बार घी चरु पात्र में डालें।) श्रृतं हविरभिघारयति मध्वा समञ्जन्घृतवत्कराथेति। अभिघार्योदञ्चमुद्वासयत्युद्वासयाग्नेः (इस वाक्य को पढ़कर चरु पात्र को उत्तर दिशा की ओर खिचें।)

अदा॑रसृद् भवतु देव सोमा॒स्मिन् य॒ज्ञे म॑रुतो मृ॒डता॑ नः। मा नों विददभि॒भा मो अशं॑स्ति॒र्मा नों विदद् वृ॒जि॒ना द्वेष्या॒ या॥

(इस मन्त्र से घी पात्र के दायें एवं बायें हाथ फैला करके घी को देखें) श्रुतमर्क हव्यमा सीद पृष्ठममृतस्य धामेति। पश्चादाज्यस्य निधायालंकृत्य समानेनोत्पुनाति। अदारसृदित्यवेक्षते। उत्तिष्ठतेत्यैन्द्रम्। (३ समीधा हाथ में लेकर के अग्नि को दिखाकर के घी पात्र के बायीं तरफ रख दें।)

अ॒ग्निर्भूम्या॒मोष॑धीष्व॒ग्निमापो॑ बिभ्रत्य॒ग्निरश्म॑सु। अ॒ग्निर॒न्तः पुरु॑षेषु गोष्वश्वे॑ष्व॒ग्नयः॑॥

अग्निर्भूम्यामिति तिसृभिरुपसमादधात्यस्मै क्षत्राणयेतमिध्ममिति वा।

युनज्मि त्वा ब्रह्मणा दैव्येन हव्यायास्मै वोढवे जातवेदः। इन्धानास्त्वा सुप्रजसः सुवीर ज्योग्जीवेम बलिहृतो वयं त

इति। (इस वाक्य को पढ़कर के कुण्ड के नैर्ऋत्य एवं दक्षिण के मध्य में खाली जल पात्र को स्पर्श करके अभी मन्त्रीत करें।) दक्षिणतो जाङ्मायनमुदपात्रमुपसाद्याभिमन्त्रयते तथोदपात्रं धारय यथाग्रे ब्रह्मणस्पतिः। सत्यधर्मां अदीधरद्देवस्य सवितुः सव इति।

अथोदकमासिञ्चति—(नीचे लिखे हुए मन्त्र को पढ़कर के जल पात्र में जलधारा डालें।)

इहेत देवीरमृतं वसाना हिरण्यवर्णा अनवद्यरूपाः। आपः समुद्रो वरुणश्च राजा संपातभागान्हविषो जुषन्ताम्। इन्द्रप्रशिष्टा वरुणप्रसूता अपः समुद्राद्दिवमुद्वहन्तु। इन्द्रप्रशिष्टा वरुणप्रसूता दिवस्पृथिव्याः श्रियमा वहन्त्विति।

(इस वाक्य को पढ़कर के हवि आज्यादि पर एवं सामाग्रीयों पर प्रोक्षण करें) ऋतं त्वा सत्येन परिषिञ्चामि जातवेद इति सह हविर्भिः पर्युक्ष्य (मंत्र को पढ़कर के ४ बार आचमन करें मन्त्र आगे है)

जी॒वा स्थ॑ जी॒व्यासं॒ सर्व॒मायु॑र्जीव्यासम्। उ॒प॒जी॒वा स्थोप॑ जीव्यासं॒ सर्व॒मायु॑र्जीव्यासम्।
सं॒जीवा स्थ॒ सं जीव्यासं॒ सर्व॒मायु॑र्जीव्यासम्। जी॒व॒ला स्थ॑ जी॒व्यासं॒ सर्व॒मायु॑र्जीव्यासम्।

जीवाभिराचम्योपोत्थाय (आगे दिये गये वाक्य से वेद भगवान एवं यज्ञ पुरुष को प्रणाम करें) वेद प्रपद्भिः प्रपद्यत

ॐ प्रपद्ये भूः प्रपद्ये भुवः प्रपद्ये स्वः प्रपद्ये जनत्प्रपद्य इति।

प्रपद्य (आगे वाक्य को पढ़कर यजमान अपने आसन के नीचे दो कुशा डालें) पश्चात्स्तीर्णस्य दर्भानास्तीर्याहि दैधिषव्योदतस्तिष्ठा (आगे वाक्य को पढ़कर के ब्रह्मासन को देखना चाहिए एवं बड़े कुशा से ब्रह्मा जी को स्पर्श करें) न्यस्य सदने सीद यो ऽस्मत्पाकतर इति ब्रह्मासनमन्वीक्षते। (आगे वाक्य को पढ़कर के बह्माजी के आसन के नीचे कुशा का आसन है उसमें से दक्षिण कुशा निकाल करके नैर्ऋत्य दिशा की ओर फेंक दें) निरस्तः पराग्वसुः सह पाप्मना निरस्तः सो ऽस्तु यो ऽस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्म इति दक्षिणा तृणं निरस्यति। (इस वाक्य को पढ़कर के एवं आगे मन्त्र दिया गया है विमृग्वरी इस मन्त्र को पढ़ते हुए ब्रह्मासन कुशा से स्पर्श करें) तदन्वालभ्य जपतीदमहमर्वाग्वसोः सदने सीदाम्यृतस्य सदने सीदामि सत्यस्य सदने सीदामीष्टस्य सदने सीदामि पूर्तस्य सदने सीदामि मामृषदेव बर्हिः स्वासस्थं त्वाध्यासदेयमूर्णम्रदमनभिशोकम्।

वि॒मृग्व॑रीं पृथि॒वीमा व॑दामि क्ष॒मां भूमिं॒ ब्रह्म॑णा वावृधा॒नाम्। ऊर्जं॑ पु॒ष्टं बिभ्र॑तीमन्नभा॒गं घृ॒तं त्वा॒भि नि षी॑देम भूमे॥

मित्युपविश्यासनीयं ब्रह्मजपं जपति (आगे इस वाक्य को पढ़कर के अपने आसन को पकडकर अभिमन्त्रित करें) बृहस्पतिर्ब्रह्मा ब्रहमसदन आसिष्ये बृहस्पते यज्ञं गोपाय यदुदुद्वत उन्निवतः शकेयमिति। (आगे लिखे हुए वाक्य से यजमान अपने दक्षिण हाथ में दो कुशा लेकर के अंगुली में लपेट लें एवं बायें हाथ में श्रुवा लें मूल भाग से लेकर अग्र भाग होते हुए मूल भाग तक ३ बार परिक्रमा करने के उपरान्त कुशा एवं श्रुवा सहित अग्नि में तपायें फिर हाथ में लिपटा हुआ कुशा अग्नि कुण्ड में डाल दें) दर्भैः स्रुवं निर्मृज्य निष्टप्तं रक्षो निष्टप्ता अरातयः प्रत्युष्टं रक्षः प्रत्युष्टा अरातय इति प्रतप्य। मूले स्रुवं गृहीत्वा जपति विष्णोर्हस्तो ऽसि दक्षिणः पूष्णा दत्तो बृहस्पतेः तं त्वाहं स्रुवमाददे देवानां हव्यवाहनम्। अयं स्रुवो वि दधाति होमाञ्छताक्षरछन्दसा जागतेन। (मूल भाग में श्रुवा को पकड़े इसके उपरान्त वाक्य रुपी मंत्र को बोलते हुये श्रुवा को चार बार स्थानांतरण करें) सर्वा यज्ञस्य समनक्ति विष्ठा बार्हस्पत्येष्टिः शर्मणा दैव्येनेति। ओं भूः शं भूत्यै त्वा गृह्णे भूतय इति प्रथमं ग्रहं गृह्णाति। ओं भुवः शं पुष्ट्यै त्वा गृह्णे पुष्टय

इति द्वितीयम्। ओं स्वः शं त्वा गृह्णे सहस्रपोषायेति तृतीयम्। ओं जनच्छं त्वा गृह्णे ऽपरिमितपोषायेति चतुर्थम्। राजकर्माभिचारिकेष्वमुष्य त्वा प्राणाय गृह्णे ऽपानाय व्यानाय समानायोदानायेति पञ्चमम्। अग्नावग्निर्हदा पूतं पुरस्ताद्युक्तो यज्ञस्य चक्षुरिति जुहोति। (इन चार मंत्रो को पढ़ते हुये श्रुवा से चार बार घी की आहूति दें यज्ञ कुण्ड के मध्य में दें।)

ॐ अग्नावग्निश्चरति प्रविष्ट ऋषीणां पुत्रो अभिशस्तिपा उ।
नमस्कारेण नमसा ते जुहोमि मा देवानां मिथुया कर्म भागम् स्वाहा
हृदा पूतं मनसा जातवेदो विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
सप्तास्यानि तव जातवेदस्तेभ्यो जुहोमि स जुषस्व हव्यम् स्वाहा
पुरस्ताद् युक्तो वह जातवेदोऽग्ने विद्धि क्रियमाणं यथेदम्।
त्वं भिषग् भेषजस्यासि कर्ता त्वया गामश्वं पुरुषं सनेम स्वाहा
यज्ञस्य चक्षुः प्रभृतिर्मुखं च वाचा श्रोत्रेण मनसा जुहोमि।
इमं यज्ञं विततं विश्वकर्मणा देवा यन्तु सुमनस्यमानाः स्वाहा।

पश्चादग्नेर्मध्यदेशे समानत्र पुरस्ताद्धोमान्। दक्षिणेनाग्निमुदपात्र आज्याहुतीनां संपातानानयति। पुरस्ताद्धोम आज्यभागः संस्थितहोमः समृद्धिः शान्तानामिति। एतावाज्यभागौ।

वृष्णे बृहते स्वर्विदे अग्नये शुल्कं हरामि त्विषीमते। स न स्थिरान्बलवतः कृणोतु ज्योक्च नो जीवातवे दधात्वग्नये स्वाहे त्युत्तरपूर्वार्ध आग्नेयमाज्यभागं जुहोति। (इस वाक्य रुपी मंत्र को पढ़कर के पूर्व एवं उत्तर के मध्य ईशान दिशा के बीचो बीच में घी की आहूति दें) दक्षिणपूर्वार्ध

सोमाय— त्वं सोम दिव्यो नृचक्षाः सुगाँ अस्मभ्यं पथो अनु ख्यः। अभि नो गोत्रं विदुष इव नेषो ऽछा नो वाचमुशंती जिगासि सोमाय स्वाहेति। (दक्षिण पूर्व के बीचो बीच अग्नेय कोण में घी की आहूति दें यह भी ध्यान दें कि ये आहूतियां यज्ञ की नेत्र मानी जाती है ये समझ कर आहूतियां दें) मध्ये हविः। उपस्तीर्याज्यं संहताभ्यामङ्गुलिभ्यां द्विर्हविषो ऽवद्यति मध्यात्पूर्वार्धाच्च। अवत्तमभिघार्य द्विर्हविः प्रत्यभिघारयति। (इस वाक्य को पढ़कर के श्रुवा से घी लेकर के दो बार श्रुक में डालें इसके उपरान्त चरु पात्र के अन्दर से चरु निकालना हैं मध्य एवं पूर्वाध से ये चरु श्रुक में रखे फिर श्रुवा से दो बार जहां से चरु निकाला गया है उसी स्थान पर घी डालें फिर श्रुवा से दोबारा दो बार श्रुक में घी डालें) यतोयतो ऽवद्यति तदनुपूर्वम्। एवं सर्वाण्यवदाननि । अन्यत्र सौविष्टकृतात्।

ॐ उदेनमुत्तरं नयाग्ने घृतेनाहुत। समेनं वर्चसा सृज प्रजया च बहुं कृधि स्वाहा

उदेनमुत्तरं नयेति पुरस्तादधोमसंहतां पूर्वाम्। एवं पूर्वांपूर्वां संहतां जुहोति। स्वाहान्ताभिः प्रत्यृचं होमाः। (इस मंत्र को बोल करके यजमान श्रुक वाली आहूति हवन कुण्ड के मध्य में छोड़ दे फिर सभी पंडित मिलकर के नवग्रह क्रतु साद्गुण्य क्रतु संरक्षक एवं प्रधान देवता श्री विष्णु का हवन करें)

नवग्रह होमः

प्रधान देवता सूर्य होमः—प्रधान देवता आदित्य प्रीत्यर्थे अर्कसमित्, आज्य, चरु होमे विनियोगः।

ॐ उच्चा पतन्तमरुणं सुपर्णं मध्ये दिवस्तरणिं भ्राजमानम्।
पश्याम त्वा सवितारं यमाहुरजस्रं ज्योतिर्यदविन्दुदत्रिः स्वाहा॥

आदित्यायेदं न मम। २८ बार इस मंत्र से अर्क सहित घी एवं चरु से होम यह संख्या ८ या २८ या १०८ बार कर सकते हैं।

दिवाकरं दीप्त सहस्त्ररश्मिं तेजोमयं जगतः कर्मसाक्षिम्। अंशुं भानुं सूर्यमादिं ग्रहाणां दिवाकरं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

आदित्याय नमः।

प्रधान देवता सोम होमः—प्रधान देवता चन्द्रप्रीत्यर्थे पलाश समित्, आज्य, चरु होम विनियोगः।

ॐ सुतासो मधुमत्तमाः सोमा इन्द्राय मन्दिनः। पवित्रवन्तो अक्षरन्देवान्गच्छन्तु वो मदाः स्वाहा॥

सोमाय इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से पलाश सहित घी एवं चरु से होम करें।

प्रार्थना— यः कालहेतोः क्षयवृद्धिमेति यं देवताः पितरश्चापिबन्ति तं वै वरेण्यं ब्रह्मेन्द्रवन्द्यं चन्द्रं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

चन्द्राय नमः।

प्रधान देवता अङ्गारक होमः—प्रधान देवता अङ्गारक प्रीत्यर्थे खदिरसमित आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ अग्निर्वासाः पृथिव्यं सितज्ञूस्त्विषीमन्तं संशितं मा कृष्णोतु स्वाहा।

अङ्गारकाय इदं न मम। २८ बार इस मंत्र में खदिर समित्, घी एवं चरु से होम करें।

प्रार्थना— महेश्वरस्याननस्वेदबिन्दोर्भूमौ जातं रक्तमालांबराढ्यं। सुरश्मिणं लोहिताङ्गं कुमारमङ्गारकं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

अङ्गारकाय नमः।

प्रधान देवता बुध होमः—प्रधान देवता बुध प्रीत्यर्थे अपामार्ग समित्, आज्य, चरु होमे विनियोगः।

ॐ कपृन्नरः कपृथमुद्दधातन चोदयंत खुदत वाजसातये।

निष्टिग्र्यः पुत्रमा च्यावयोतय इन्द्रं सबाध इह सोमपीतये स्वाहा।

बुधाय इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से अपामार्ग समित्, घी एवं चरु से होम करें।

प्रार्थना— उत्पातरूपो जगतां चन्द्रपुत्रौ महाद्युतिः। सूर्य प्रियकरो विद्वान् पीडां दहतु मे बुधः॥ ॐ बुधाय नमः।

प्रधान देवता बृहस्पति होमः—प्रधान देवता बृहस्पति प्रीत्यर्थे पिप्ल समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ बृहस्पतिर्नः परि पातु पश्चादुतोत्तरस्मादधरदघायोः।

इन्द्रः पुरस्तादुत मध्यतो नः सखा सखिभ्यो वरीयः कृणोतु स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १०.४२.११)*

बृहस्पतये इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से पिप्ल समित्, घी एवं चरु से होम करें।

प्रार्थना— बुध्यात्मनो यस्य न कश्चिदन्यो मतिं देवा उपजीवंति यस्य। प्रजापते रात्मजं धर्मनिष्ठं गुरुं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

ॐ गुरुवे नमः।

प्रधान देवता शुक्र होमः—प्रधान देवता शुक्रक्रह प्रीत्यर्थे औदुम्बर समित्, आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ द्यौश्च म इदं पृथिवी च प्रचेतसौ शुक्रो बृहन् दक्षिणाया पितर्तु।

अनु स्वधा चिकितां सोमो अग्निर्वायुर्नः पातु सविता भगश्च स्वाहा।

शुक्राय इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से औदुम्बर समित्, घी एवं चरु से हाम करें।

प्रार्थना— वर्षप्रदं चिन्तितार्थानुकूलं मौनाद्विशिष्टं सुनयोमपन्नम्। तं भार्गवं योगविशुद्धसत्वं शुक्रं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

ॐ शुक्राय नमः।

प्रधान देवता शनैश्चर होमः—प्रधान देवता शनैश्चर प्रीत्यर्थे शमी समित्, आज्य, चरु होमे विनियोगः।

ॐ शं नो वातो वातु शं नस्तपतु सूर्यः।
अहानि शं भवन्तु नः शं रात्री प्रति धीयतां शमुषा नो व्युच्छत स्वाहा।

शनैश्चराय इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से शमी समित्, घी एवं चरु से होम करें।

प्रार्थना— शनैश्चरो राशितो राशिमेति शनैर्भोगो गमनं चेष्टितं च। सूर्यात्मजं क्रोधनं सुप्रसन्नं शनैश्चरं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

ॐ शनैश्चराय नमः।

प्रधान देवता राहु होम—प्रधान देवता राहु प्रीत्यर्थे दूर्वासमित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ कयानश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता स्वाहा॥ *(अथर्ववेद २०.१२४.१)*

राहवे इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से दूर्वा समित्, घी एवं चरु से होम करें।

प्रार्थना— यो विष्णुनैवामृतं भोक्ष्यमाणः छित्वाशिरो ग्रहभावे नियुक्तः। यश्चन्द्रसूर्यौ ग्रसते पर्व काले राहुं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

ॐ राहवे नमः।

प्रधान देवता केतु होमः—प्रधान देवता केतु प्रीत्यर्थे कुश समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः स्वाहा॥

केतवे इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से कुश समित्, घी एवं चरु से होम करें।

प्रार्थना—हे ब्रह्मपुत्रा ब्रह्मसमानवक्त्राः ब्रह्मोद्भवाः ब्रह्मसमाः कुमाराः।

ब्रह्मोत्तमा वरदा जामदग्न्याः केतून् सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

ॐकेतवे नमः। यहाँ पर नवग्रह होम संपन्न हुआ। आगे छः कर्म साद्गुण्य देवता होम होगा।

कर्म साद्गुण्य देवता विनायक होमः-१— क्रतु साद्गुण्यदेवता विनायक प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ यस्यं कृण्मो हविर्गृहे तमंग्ने वर्धया त्वम्। तस्मै सोमो अधिं ब्रवदयं ब्रह्मंणस्पतिः स्वाहां।

कर्म सादगुण्यदेवतायै विनायकाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

कर्म साद्गुण्यदेवता दुर्गा होमः-२—क्रतुसाद्गुण्यदेवता दुर्गा प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ देवानां पत्नींरुशतीरंवन्तु नः प्रावंन्तु नस्तुजये वाजंसातये।

याः पार्थिवासो या अपामपिं व्रते ता नों देवीः सुहवाः शर्मं यच्छन्तु स्वाहां॥

क्रतु साद्गुण्य देवतायै दुर्गायै इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

कर्म साद्गुण्यदेवता क्षेत्रपाल होमः-३—चरु होमे विनियोगः।

ॐ मधुंमतीरोषंधीर्द्याव आपो मधुंमन्नो भवत्वन्तरिंक्षम्।

क्षेत्रंस्य पतिर्मधुंमान्नो अस्त्वरिंष्यन्तो अन्वेंनं चरेम स्वाहां।

क्रतु साद्गुण्य देवतायै क्षेत्रपालाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

कर्म साद्गुरय देवता वायु होमः-४—क्रतु साद्गुरय देवता वायु प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ वायोः पूतः पवित्रेण प्रत्यङ् सोमो अति द्रुतः। इन्द्रस्य युज्यः सखा स्वाहा॥

क्रतु साद्गुरय देवतायै वायवे इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

कर्म साद्गुरय देवता आकाश होमः-५—क्रतु साद्गुरय देवता आकाश प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ आशानामाशापालेभ्यश्चतुर्भ्यो अमृतेभ्यः। इदं भूतस्याध्यक्षेभ्यो विधेम हविषा वयम् स्वाहा॥

क्रतु साद्गुरयदेवतायै आकाशाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

कर्म साद्गुरय देवता अश्विनी देवता होमः-६—अश्वि प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ यदन्तरिक्षे यद्दिवि यत्पञ्च मानुषाँ अनु। नृम्णं तद्धत्तमश्विना स्वाहा॥

क्रतु साद्गुरय देवतायै अश्विभ्यां इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता इन्द्र होमः—क्रतु संरक्षक देवता इन्द्र प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ इन्द्रं त्वा वृषभं वयं सुते सोमे हवामहे। स पाहि मध्वो अन्धसः स्वाहा॥

क्रतु संरक्षक देवतायै इन्द्राय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता अग्नि होमः—क्रतु संरक्षक देवता अग्नि प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम्। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् स्वाहा॥

क्रतु संरक्षक देवतौ अग्नय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता यम होमः—क्रतु संरक्षक देवता यम प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ यमाय सोमः पवते यमाय क्रियते हविः। यमं हं यज्ञो गच्छत्यग्निदूतो अरंकृतः स्वाहा॥

क्रतु संरक्षक देवतायै यमाय इदं न मम। इस मंत्र को दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता निर्ऋति होमः—क्रतु संरक्षक देवता निर्ऋति प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ यत् ते देवी निर्ऋतिराबबन्ध दाम ग्रीवास्वविमोक्यं यत्।
तत् ते वि ष्याम्यायुषे वर्चसे बलायादोमदमन्नमद्धि प्रसूतः स्वाहा॥

क्रतु संरक्षक देवतायै निर्ऋतये इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता वरुण होमः—क्रतु संरक्षक देवता वरुण प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ अप्सु ते राजन् वरुण गृहो हिरण्ययो मिथः। ततो धृतव्रतो राजा सर्वा धामानि मुञ्चतु स्वाहा॥

क्रतु संरक्षक देवतायै वरुणाय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता वायु होमः—क्रतु संरक्षक देवता वायु प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ गोसनिं वाचमुदेयं वर्चसा माभ्युदिहि। आ रुन्धां सर्वतो वायुस्त्वष्टा पोषं दधातु मे स्वाहा॥

क्रतु संरक्षक देवतायै वायवे इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

सूर्यस्यावृतमित्यभिदक्षिणामावर्तते।

ॐ अगंन्म् स्वः स्वं रगन्म् सं सूर्यस्य ज्योतिंषागन्म॥

अगन्म स्वरित्यादित्यमीक्षते। (इसके बाद यजमान अपने आसन में बैठ जाये फिर दक्षिण दिशा में जो उदपात्र है उसको अपने हाथों से उठा करके किसी ब्राह्मण के हाथ में दें साथ में कुशा भी दें फिर ब्राह्मण आपो हि ष्ठा से मंत्र से मार्जन करें)

इन्द्रस्य वचसा वयं मित्रस्य वरुणस्य च। ब्रह्मणा स्थापितं पात्रं पुनरुत्थापयामसी त्यपरेणाग्निमुदपात्रं परिहृत्योत्तरणाग्नि।

ॐ आपो हि ष्ठा मंयोभुवस्ता नं ऊर्जे दंधातन। महे रणांय चक्षंसे॥ (अथर्ववेद १.५.१)

ॐ यो वंः शिवतंमो रसस्तस्यं भाजयतेह नंः। उशतीरिंव मातरंः॥ (अथर्ववेद १.५.२)

ॐ तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयांय जिन्वंथ। आपों जनयंथा च नः॥ (अथर्ववेद १.५.३)

ॐ ईशांना वार्यांणां क्षयंन्तीश्चर्षणीनाम्। अपो यांचामि भेषजम्॥

मापो हि ष्ठा मयोभुव इति मार्जयित्वा बर्हिषि पत्न्याञ्जलौ निनयति समुद्रं वः प्र हिणोमीतीदं जनास इति वा। वीरपत्न्यहं भूयासमिति मुखं विमार्ष्टि। व्रतानि व्रतपतय इति समिधमादधाति। सत्यं त्वर्तेनति परिषिच्योदञ्चि हविरुच्छिष्टान्युद्वासयति। पूर्ण पात्रं दक्षिणा।

करौ प्रक्षाल्यः हस्ते पुष्पाणी गृहित्वा अग्निं अर्चयेत ॐ पूर्वे अग्नये नमः ॐ आग्नेयां अग्नये नमः ॐ दक्षिणे अग्नये नमः ॐ नैर्ऋत्यां अग्नये नमः ॐ पश्चिमे अग्नये नमः ॐ वायव्ये अग्नये नमः ॐ उत्तरे अग्नये नमः ॐ ऐशान्ये अग्नये नमः ॐ मध्ये यज्ञ पुरुषाय नमः॥ आचमनं ॐ ऋग्वेदाय स्वाहा। ॐ यजुर्वेदाय स्वाहा। ॐ सामवेदाय स्वाहा। करौ प्रक्षाल्यः। हस्ते जलाक्षत पुष्पाणी गृहित्वा संकल्प वाक्यान स्मैरेयुः स्वस्ति पूर्वोच्चारित ग्रह, गुण, गण, विशेषण, विशिष्टायाम, शुभ पुण्य तिथौ, अमुख गोत्रा, अमुख नाम शर्मामः षड दिवस साद्य अद्य...............दिने।

क्रतु संरक्षक देवता सोम होम—क्रतु संरक्षक देवता सोम प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ अभि त्यं देवं सवितारमोण्योः कविक्रतुम्। अर्चामि सत्यसवं रत्नधामभि प्रियं मतिम् स्वाहा॥

क्रतु संरक्षक देवतायै सोमाय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता ईशान होमः—क्रतु संरक्षक देवता ईशान प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ मा नो मर्ता अभि द्रुहन् तनूनामिन्द्र गिर्वणः। ईशानो यवया वधम् स्वाहा॥

क्रतु संरक्षक देवतायै ईशानाय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें। यहाँ पर क्रतु संरक्षक देवता होम संपन्न हुआ।

व्याहृति होमः—व्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापतिः बृहती व्याहृति होमे विनियोगः। ॐभूः स्वाहा, अग्नये इदं न मम। ॐभुवः स्वाहा,वायवे इदं न मम। ॐस्वः स्वाहा, सूर्याय इदं न मम। ॐभूर्भुवः स्वः स्वाहा, प्रजापतये इदं न मम। इन मत्रों से एक बार होम करें।

प्रधान देवता विष्णु होमः—विष्णु प्रीत्यर्थे चरु होमे विनियोगः।

ॐ इदं विष्णुर्वि चंक्रमे त्रेधा नि दंधे पदा। समूढमस्य पांसुरे स्वाहा। *(अथर्ववेद ७.२६.४)*

विष्णाव इदं न मम। इस मंत्र से १०८ बार, २१६ बार, ३१४ बार होम कर सकते हैं। ॐविष्णावे स्वाहा, विष्णाव इदं न मम। ॐसर्वभूतपतये स्वाहा, सर्वभूतपतय इदं न मम। ॐचक्रपाणाये स्वाहा, चक्रपाणाये इदं न मम। ॐईश्वराय स्वाहा, ईश्वराय इदं न मम। ॐसर्वोत्पातशमनाय स्वाहा, सवोत्पातशमनाय इदं न मम। प्रधान देवता के होम के बाद इन पॉच मंत्रों से घी की आहूति एक-एक बार देवें।

प्रायश्चित आहूतिया— प्रधान यजमान घृत की आहूति करें।

आकूत्यै त्वा स्वाहा। कामाय त्वा स्वाहा। समृधे त्वा स्वाहा। आकूत्यै त्वा कामाय त्वा समृधे त्वा स्वाहा। ऋचा स्तोमं समर्धय गायत्रेण रथंतरम्।

बृहद्रायत्रवर्तनि स्वाहा। (इन मंत्रों को बोल करके प्रत्येक देवताओं के नाम से आहूति छोड़ते जाये फिर आगे दश मंत्रो को पढ़कर के आहूतियां डालें।)

पृथिव्यामग्नये समनमन्निति संनतिभिश्च। प्रजापते न त्वदेतान्यन्य इति च।

ॐ पृथिव्यामग्नये समनमन्त्स आर्ध्नोत्। यथा पृथिव्यामग्नये समनमन्नेवा मह्यं संनमः सं नमन्तु स्वाहा

पृथिवी धेनुस्तस्या अग्निर्वत्सः। सा मेऽग्निना वत्सेनेषमूर्जं कामं दुहाम्। आयुः पथमं प्रजां पोषं रयिं स्वाहा

अन्तरिक्षे वायवे समनमन्त्स आर्ध्नोत्। यथान्तरिक्षे वायवे समनमन्नेवा मह्यं संनमः सं नमन्तु स्वाहा

अन्तरिक्षे धेनुस्तस्या वायुर्वत्सः। सा मे वायुना वत्सेनेषमूर्जं कामं दुहाम्। आयुः प्रथमं प्रजां पोषं रयिं स्वाहा

दिव्या दित्याय समनमन्त्स आर्ध्नोत्। यथा दिव्या दित्याय समनमन्नेवा मह्यं संनमः स नमन्तु स्वाहा

द्यौर्धेनुस्तस्या आदित्यो वत्सः। सा म आदित्येन वत्सेनेषमूर्जं कामं दुहाम्। अयुः प्रथमं प्रजां पोषं रयिं स्वाहा

दिक्षु चन्द्राय समनमन्त्स आर्ध्नोत्। यथा दिक्षु चन्द्राय समनमन्नेवा मह्यं संनमः सं नमन्तु स्वासा

दिशो धेनवस्तासां चन्द्रो वत्सः। ता मे चन्द्रेणा वत्सेनेषमूर्जं कामं दुहाम्। आयुः प्रथमं प्रजां पोषं रयिं स्वाहा

अग्रावग्निश्चरति प्रविष्ट ऋषीणां पुत्रो अभिशस्तिपा उ।

नमस्कारेण नमसा ते जुहोमि मा देवानां मिथुया कर्म भागम् स्वाहा

हृदा पूतं मनसा जातवेदो विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।

सप्तास्यानि तव जातवेदस्तेभ्यो जुहोमि स जुषस्व हव्यम् स्वाहा

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परिभूर्जजान।

यत् कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् स्वाहा

उपस्तीर्याज्यं सर्वेषामुत्तरतः सकृत्सकृदवदाय द्विरवत्तमभिघारयति। न हवीं षि॥ (इस वाक्य से यजमान दो बार घी श्रुक में डालें फिर चरु पात्र में जितना चरु बचा हो वो दो बार में श्रुक में डालें फिर पुनः दो बार घी श्रुक में डालें चरु पात्र में घी नहीं डालना है)

आ देवानामपि पन्थामगन्म यच्छक्नवाम तदनुप्रवोढुम्। अग्निर्विद्वान्स यज्ञात्स इद्धोता सो ऽध्वरान्स ऋतून्कल्पयात्यग्नये स्विष्टकृते स्वाहेत्युत्तरपूर्वार्धे (इस वाक्य को बोलकर के श्रुक वाली आहूति कुण्ड में डालें) ऽवयुतं हुत्वा सर्व प्रायश्चित्तीयन्होमाञ्जुहोति। स्वाहेष्टेभ्यः स्वाहा। वषडनिष्टेभ्यः स्वाहा। भेषजं स्विष्ट्यै स्वाहा। निष्कृतिर्दरिष्ट्यै स्वाहा। दैवीभ्यस्तनूभ्यः स्वाहा।

अयाश्चाग्ने ऽस्यनभिशस्तिश्च सत्यमित्त्वमया असि। अयासा मनसा कृतो ऽयास्यं हव्यमूहिषे। अया नो धेहि भेषजं स्वाहेत्यों स्वाहा भूः स्वाहा भुवः स्वाहा स्वः स्वाहों भूर्भुवः स्वः स्वाहेति।

यन्मे स्कन्नं मनसो जातवेदो यद्वास्कन्दद्धविषो यत्रयत्र। उत्प्रुषो विप्रुषः सं जुहोमि सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः स्वाहेति।

यन्मे स्कन्नं यदस्मृतीति च स्कन्नास्मृतिहोमौ।

ॐ यदस्मृति चकृम किं चिदग्न उपारिम चरणे जातवेदः।
ततः पाहि त्वं नः प्रचेतः शुभे सखिभ्यो अमृतत्वमस्तु नः स्वाहा

यदद्य त्वा प्रयतीति संस्थितहोमाः।

ॐ यदद्य त्वा प्रयति प्रयति यज्ञे अस्मिन् होतश्चिकित्वन्नवृणीमहीह।
ध्रुवमयो ध्रुवमुता शविष्ठ प्रविद्वान् यज्ञमुप याहि सोमम् स्वाहा॥ मनसस्पत इत्युत्तमं चतुर्गृहीतेन।

मनसस्पत इमं नो दिवि देवेषु यज्ञम्।
स्वाहा दिवि स्वाहा पृथिव्यां स्वाहान्तरिक्षे स्वाहा वाते धां स्वाहा॥

(इस मंत्र को पढ़ते हुए यजमान श्रुवा से चार बार घी श्रुक में डालें फिर खड़े होकर श्रुक की आहूति दें) बर्हिराज्यशेषे ऽनक्ति पृथिव्यै त्वेति मूलमन्तरिक्षाय त्वेति मध्यं दिवे त्वेत्यग्रम्। एवं त्रिः। (इस वाक्य से बर्हि को वायें हाथ में पकड़े एवं श्रुवा दाहिने हाथ में पकड़कर घी बर्हि में मूलभाग एवं मध्य भाग एवं अग्र भाग में डालें यह प्रक्रिया तीन बार होनी चाहिये आगे वाला मंत्र बोलकर बर्हि को स्वाहा कर दें) सं बर्हिरक्तमित्यनुप्रहरति यथादेवतम्।

ॐ सं बर्हिरक्तं हविषा घृतेन समिन्द्रेण वसुना सं मरुद्भिः। सं देवैर्विश्वदेवेभिरक्तमिन्द्रं गच्छतु हविः स्वाहा॥

स्रुवमग्नौ धारयति। (इस वाक्य को पढ़कर यजमान वायें हाथ में घी पात्र दाहिने हाथ में श्रुवा लेकर खड़े होकर धारा प्रवाह रुपी आहूति डालें) यदाज्यधान्यां तत्संस्रावयति संस्रावभागास्तविषा बृहन्तः प्रस्तरेष्ठा बर्हिषदश्च देवाः।

इमं यज्ञमभि विश्वे गृणन्तः स्वाहा देवा अमृता मादयन्तामिति। स्रुवो ऽसि घृतादनिशितः। सपत्नक्षयणो दिवि षीद। अन्तरिक्षे सीद पृथिव्यां सीदोत्तरो ऽहं भूयासमधरे मत्सपत्ना (इस वाक्य को पढ़कर श्रुवा को उल्टा करके यज्ञ कुण्ड से टीका कर रखदें) इति स्रुवं प्राग्दण्डं निदधाति।

(इस वाक्य एवं मंत्र से ३ समिधाओं को हाथ में लेकर के एक एक करके आगे दिये गये वाक्य एवं मंत्र से आहुति दें) वि मुञ्चामि ब्रह्मणा जातवेदसमग्निं होतारमजरं रथस्पृतम्। सर्वा देवानां जनिमानि विद्वान्यथाभागं वहतु हव्यमग्निरग्रये स्वाहेति इति प्रथमा।

ॐ एधोऽस्येधिषीय स्वाहा इति द्वितीया **समिदसि समेधिषीय स्वाहा।** एधो ऽसीति द्वितीयां समिदसीति तृतीयाम्।

करौ प्रक्षाल्यः अग्निं प्रत्यप **ॐ तेजोऽसि तेजो मयि धेहि।** (इस मंत्र से पहले हाथ धुल करके हाथ को अग्नि से सेंके फिर उसके उपरान्त हाथ से अपने मुख को मलें)

तेजो ऽसीति मुखं विमार्ष्टि। (इसके बाद पूर्णाहुति के दिन यहां से बलिदान करें उसके उपरान्त आगे तीन पग चलने का मंत्र एवं कार्य आगे बढ़ाये) दक्षिणेनाग्निं त्रन्विष्णुक्रमान्क्रमते।

ॐ विष्णोः क्रमोऽसिसपत्नहा पृथिवीसंशितोऽग्नितेजाः।
पृथिवीमनु वि क्रमेऽहं पृथिव्यास्तं निर्भजामो यो३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः॥
स मा जीवीत् तं प्राणो जहातु।
विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहान्तरिक्षसंशितो वायुतेजाः।
अन्तरिक्षमनु वि क्रमेऽहमन्तरिक्षात् तं निर्भजामो यो३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः।
स मा जीवीत् तं प्राणो जहातु।
विष्णोः क्रमोऽसि सपत्नहा द्यौसंशितः सूर्यतेजाः।
दिवमनु वि क्रमेऽहं दिवस्तं निर्भजामो यो३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः॥
स मा जीवीत् तं प्राणो जहातु।

विष्णोः क्रमो ऽसीति दक्षिणेन पादेनानुसंहरति सव्यम्। (इसके उपरान्त कुण्ड की परिक्रमा करते हुए यजमान को यज्ञशाला के बाहर जाकर सूर्य भगवान को देखें एवं नमस्कार करें)

ॐ सूर्यस्यावृतमन्वावर्ते दक्षिणामन्वावृतम्। सा मे द्रविणं यच्छतु सा मे ब्राह्मणवर्चसम्॥
दिशो ज्योतिष्मतीरभ्यावर्ते। ता मे द्रविणं यच्छन्तु ता मे ब्राह्मणवर्चसम्॥

सूर्यस्यावृतमित्यभिदक्षिणामावर्तते।

ॐ अगंन्म् स्वं१ः स्वं रगन्म् सं सूर्यस्य् ज्योतिंषागन्म॥

अगन्म स्वरित्यादित्यमीक्षते। (इसके बाद यजमान अपने आसन में बैठ जाये फिर दक्षिण दिशा में जो उदपात्र है उसको अपने हाथों से उठा करके किसी ब्राह्मण के हाथ में दें साथ में कुशा भी दें फिर ब्राह्मण आपो हि ष्ठा से मंत्र से मार्जन करें)

इन्द्रस्य वचसा वयं मित्रस्य वरुणस्य च। ब्रह्मणा स्थापितं पात्रं पुनरुत्थापयामसी त्यपरेणाग्निमुदपात्रं परिहृत्योत्तरणाग्नि।

ॐ आपो् हि ष्ठा मंयोभुवस्ता नं ऊर्जे दंधातन। म्हे रणाय् चक्षंसे॥ (अथर्ववेद १.५.१)

ॐ यो वंः शिवतंमो् रसस्तस्यं भाजयते्ह नंः। उशतीरिंव मातरंः॥ (अथर्ववेद १.५.२)

ॐ तस्मा् अरं गमाम वो् यस्य् क्षयांय् जिन्वंथ। आपों जनयंथा च नः॥ (अथर्ववेद १.५.३)

ॐ ईशांना् वार्याणां् क्षयंन्तीश्चर्षणीनाम्। अपो यांचामि भेषुजम्॥

मापो हि ष्ठा मयोभुव इति मार्जयित्वा बर्हिषि पत्न्याञ्जलौ निनयति समुद्रं वः प्र हिणोमीतीदं जनास इति वा। वीरपत्न्यहं भूयासमिति मुखं विमार्ष्टि। व्रतानि व्रतपतय इति समिधमादधाति। सत्यं त्वर्तेनति परिषिच्योदञ्चि हविरुच्छिष्टान्युद्वासयति। पूर्णा पात्रं दक्षिणा।

करौ प्रक्षाल्यः हस्ते पुष्पाणी गृहित्वा अग्निं अर्चयेत ॐ पूर्वे अग्नये नमः ॐ आग्नेयां अग्नये नमः ॐ दक्षिणे अग्नये नमः ॐ नैर्ऋत्यां अग्नये नमः ॐ पश्चिमे अग्नये नमः ॐ वायव्ये अग्नये नमः ॐ उत्तरे अग्नये नमः ॐ ऐशान्ये अग्नये नमः ॐ मध्ये यज्ञ पुरुषाय नमः॥ आचमनं ॐ ऋग्वेदाय स्वाहा। ॐ यजुर्वेदाय स्वाहा। ॐ सामवेदाय स्वाहा। करौ प्रक्षाल्यः। हस्ते जलाक्षत पुष्पाणी गृहित्वा संकल्प वाक्यान स्मैरेयुः स्वस्ति पूर्वोच्चारित ग्रह, गुण, गण, विशेषण, विशिष्टायाम, शुभ पुण्य तिथौ, अमुख गोत्रा, अमुख नाम शर्मामः षड दिवस साद्य अद्य................दिने।

हवन कुण्ड में षोडशोपचार पूजनम्

आवाहनम्—ॐ सहस्रबाहुः पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥ (अथर्ववेद १९.६.१)
ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)
सपरिवार श्री महाविष्णावे नमः, आवाहयामि आवाहनं समर्पयामि।

आसनम्—ॐ त्रिभिः पद्भिर्द्यामरोहत्पादस्येहाभवत्पुनः। तथा व्यक्रामद्विष्वङशनानशने अनु॥ (अथर्ववेद १९.६.२)
ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)
ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, । आसनं समर्पयामि।

पाद्यम्— ॐ तावन्तो अस्य महिमानस्ततो ज्यायांश्च पूरुषः। पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥ (अथर्ववेद १९.६.३)
ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद प्रमोदिनीम्। श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)
ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, । पादारविंदयोः पाद्यं पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यं— ॐ पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्येश्वरो यदन्येनाभवत्सह॥ (अथर्ववेद १९.६.४)
ॐ कां सोस्मितां हिरण्य प्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहो पह्वये श्रियम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्) ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, हस्तयोः अर्घ्यमर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनम्—ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्य किं बाहू किमूरू पादा उच्येते॥ (अथर्ववेद १९.६.५)

ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टां मुदाराम्।

तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मेनश्यतां त्वां वृणे॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, । मुखे आचमनीयं समर्पयामि।

पञ्चामृत स्नानम् (दूध)— ॐ सं सिञ्चामि गवां क्षीरं समाज्येन बलं रसम्।

संसिक्ता अस्माकं वीरा ध्रुवा गावो मयि गोपतौ॥ (अथर्ववेद २.२६.४)

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, । पयः स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः।

भवे भवेनातिं भवे भवस्वमाम् भवोद्भवाय नमः॥ (यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत् आरण्यक)

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, । शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि

दहि— ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्यवाजिनः। सुरभि नो मुखा करत्प्र ण आयूंषि तारिषत्॥ (अथर्ववेद २०.१३७.३)

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, । दधि स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमःश्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमःकालविकरणाय

नमोबलाय नमो बलप्रमथनाय नमस्सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः। (यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, । शुद्धोदक स्नानं सपर्मयामि ।

घी— ॐ घृतं ते अग्ने दिव्ये सधस्थे घृतेन त्वां मनुरद्या समिन्धे ।
घृतं ते देवीर्नप्त्य१ आ वहन्तु घृतं तुभ्यं दुह्रतां गावो अग्ने ॥ (अथर्ववेद ७.८२.६)

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, । घृतस्नानं समर्पयामि ।

शुद्ध जल—ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोर तरेभ्यः ।
सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥ (यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, । शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ।

मधु (शहद)—ॐ मधुमान् भवति मधुमदस्याहार्यं भवति । मधुमतो लोकान् जयति य एवं वेद ॥ (अथर्ववेद ९.१.२३)

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, । मधु स्नानं समर्पयामि ।

शुद्ध जल—ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि । तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥ (यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, । शुद्धोदक स्नानं सपर्पयामि ।

शर्करा (शक्कर)—ॐ स्वादोःस्वादीयः स्वादुना सृजा समदः सु मधु मधुनाभि योधीः ॥ (अथर्ववेद ५.२.३)

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, । शर्करा स्नानं समर्पयामि ।

शुद्ध जन—ॐ ईशानस्सर्वं विद्यानामीश्वरस्सर्वं भूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणो

अधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम् ॥ (यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णवे नमः, । शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ।

फल— ॐ पुष्पवतीः प्रसूमतीः फलिनीरफला उत । संमातरं इव दुह्रामस्मा अरिष्टतातये ॥ (अथर्ववेद ८.७.२७)

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णवे नमः, । फल स्नानं समर्पयामि ।

शुद्धोदक—ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन । महे रणाय चक्षसे ॥ (अथर्ववेद १.५.१)

ॐ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः । उशतीरिव मातरः ॥ (अथर्ववेद १.५.२)

ॐ तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ । आपो जनयथा च नः ॥ (अथर्ववेद १.५.३)

ॐ ब्राह्मणो स्य मुखमासीद्बाहू राजन्यो भवत् । मध्यं तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत ॥ (अथर्ववेद १९.६.६)

ॐ आदित्यवर्णो तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः ।
तस्य फलानि तपसा नुदंतु मायांतरा याश्च ब्राह्या अलक्ष्मीः । (ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णवे नमः, । शुद्धदक स्नानं समर्पयामि ।

वस्त्र— ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत । मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायत ॥ (अथर्ववेद १९.६.७)

ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥ (ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, । वस्त्रं समर्पयामि ।

यज्ञोपवीतं—ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात् । आयुष्यमग्रयं प्रतिमुञ्चशुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥

ॐ विराडग्रे समभवद्विराजो अधि पूरुषः । स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥ (अथर्ववेद १९.६.९)

ॐ क्षुत् पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् । अभूतिमसमृद्धिं च सर्वान्निर्णुद मे गृहात् ॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, । यज्ञोपवीतं समर्पयामि ।

आभरण—ॐ यद्धिरण्यं सूर्येण सुवर्णं प्रजावन्तो मनवः पूर्व ईषिरे ।

तत् त्वा चन्द्रं वर्चसा सं सृजत्यायुष्मान् भवति यो बिभर्ति ॥ (अथर्ववेद १९.२६.२)

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, । आभरणं समर्पयामि ।

गन्ध— ॐ गंधं द्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् । ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ।

पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन् ॥ (अथर्ववेद १९.६.८)

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, । गन्धं समर्पयामि ।

अक्षत—ॐ अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत । अर्चन्तु पुत्रका उत पुरं न धृष्ण्वर्चत ॥ (अथर्ववेद २०.९२.५)

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, । अक्षतान् समर्पयामि ।

पुष्पाणि—ॐ विराडग्रे समभवद्विराजो अधि पूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः॥ *(अथर्ववेद १९.६.९)*

ॐ पुष्पवतीः प्रसूमतीः फलिनीरफला उत। संमातर इव दुह्रामस्मा अरिष्टतातये॥ *(अथर्ववेद ८.७.२७)*

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥ *(ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः,। पुष्पाणि समर्पयामि।

प्रथमावरण पूजनम्—पूर्वादिक्रमेण ॐ विमलायै नमः १। ॐ उत्कर्षिण्यै नमः २। ॐ ज्ञानायै नमः ३। ॐ क्रियायै नमः ४। ॐ योगायै नमः ५। ॐ प्रह्वयै नमः ६। ॐ सत्यायै नमः ७। ॐ ईशानायै नमः ८। मध्ये ॐ अनुग्रहायै नमः ९।

द्वितीयावरण पूजनम्—ॐ ब्राह्मयै नमः। पूर्वे ॐ माहेश्वर्यै नमः। आग्नेय दिशि। ॐ कौमार्यै नमः। दक्षिण दिशि। ॐ वैष्णव्यै नमः। नैऋत्यां दिशि। ॐ वाराह्यै नमः पश्चिम दिशि। ॐ इन्द्राण्यै नमः। वायव्यां दिशि। ॐ चामुण्डायै नमः। उत्तरस्यां दिशि। ॐ गिरिजायै नमः ऐशान्यां दिशि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

तृतीयावरण पूजनम्—ॐ इन्द्राय सुराधिपतये पीतवर्णाय वज्रहस्ताय ऐरावत वाहनाय सशक्ति काय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवारायश्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐ अग्नये तेजोधिपतये पिंगलवर्णाय शाक्ति हस्ताय मेष वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय स वाहनाय स परिवाराय श्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐ यमाय प्रेताधिपतये कृष्णवर्णाय दण्ड हस्ताय महिष वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐ निषतये रक्षोधिपतये रक्तवर्णाय खड्ग हस्ताय नरवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐ वरुणाय जलाधितये कुंदवर्णाय पाशहस्ताय मकरवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐ वायवे प्राणाधिपतये धूम्रवर्णाय अंकुश हस्ताय हरिणवाहनाय सशक्ति काय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐ सोमाय नक्षत्राधिपतये शुक्लवर्णाय गदा हस्ताय अश्व वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री

महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐईशानाय विद्याधिपतये स्फटिकवर्णाय त्रिशूल हस्ताय वृषभ वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री महाविष्णुमूर्तिपार्षदाय नमः। ॐअनंताय नागाधिपतये क्षीरवर्णाय चक्रहस्ताय गरुड वाहनाय स शक्तिाकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। नैर्ऋत्यं एवं पश्चिम दिशा के बीच में अनन्त का पूजन करें। ॐब्रह्मणे लोकाधिपतये कंजवर्णाय पषहस्ताय हंसवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। पूर्व एवं ईशान दिशा के बीच में ब्रह्मा जी का पूजन करें। *(अनुष्ठान पद्धति)*

चतुर्थावरणपूजनम्—ॐवज्राय नमः। (पूर्व में) ॐशक्त्यै नमः। (आग्नेय में) ॐदण्डाय नमः। (दक्षिण में) ॐखड्गाय नमः। (नैऋत्य) ॐपाशाय नमः। (पश्चिम में) ॐअंकुशाय नमः। (वायव्य में) ॐगदायै नमः। (उत्तर में) ॐत्रिशूलाय नमः। (ईशान में) ॐचक्राय न मः। (पश्चिम नैऋत्य के बीच में) ॐपद्माय नमः। (पूर्व ईशान के बीच में) *(अनुष्ठान पद्धति)*

अष्टोत्तर शतनाम पूजा

ॐविष्णवे नमः। ॐलक्ष्मीपतये नमः। ॐ कृष्णाय नमः। ॐ वैकुण्ठाय नमः। ॐ गरुडध्वजाय नमः। ॐ जगन्नाथाय नमः। ॐपरब्रह्मणे नमः।ॐवासुदेवाय नमः। ॐत्रिविक्रमाय नमः। ॐ दैत्यान्तकाय नमः। ॐ मधुरिपवे नमः। ॐ तार्क्ष्यवाहनाय नमः। ॐसनातनाय नमः। ॐनारायणाय नमः। ॐपद्मनाभाय नमः। ॐहृषीकेशाय नमः। ॐसुधाप्रदाय नमः। ॐ माधवाय नमः। ॐ पुण्डरीकाक्षाय नमः। ॐ स्थितिकर्त्रे नमः। ॐपरात्पराय नमः। ॐवनकालिने नमः। ॐयज्ञ रूपाय नमः। ॐचक्र पाणये नमः। ॐगदाधराय नमः। ॐउपेन्द्राय नमः। ॐकेशवाय नमः। ॐ हंसाय नमः। ॐ समुद्रमथनाय नमः। ॐ हरये नमः। ॐगोविन्दाय नमः। ॐ ब्रह्मजनकाय नमः ॐ कैटभासुरमर्दनाय नमः। ॐ श्रीधराय नमः। ॐ कामजनकाय नमः ॐ शेषशायिने नमः। ॐ चतुर्भजाय

नमः। ॐ पाञ्चजन्यधराय नमः। ॐ श्रीमते नमः। ॐ शार्ङ्गपाणये नमः। ॐ जनार्दनाय नमः। ॐ पीताम्बरधराय नमः। ॐ देवाय नमः। ॐ सूर्यचन्द्रविलोचनाय नमः। ॐ मत्स्यरूपाय नमः। ॐ कूर्मतनवे नमः। ॐ क्रोडरूपाय नमः। ॐ नृकेसरिणे नमः। ॐ वामनाय नमः। ॐभार्गवाय नमः। ॐ रामाय नमः। ॐ बलिने नमः। ॐ कल्किने नमः। ॐ हयाननाय नमः। ॐ विश्वम्भराय नमः। ॐ शिशुमाराय नमः। ॐश्रीकराय नमः। ॐ कपिलाय नमः। ॐ ध्रुवाय नमः। ॐ दत्तात्रेयाय नमः। ॐ अच्युत्ताय नमः। ॐअनन्ताय नमः। ॐ मुकुन्दाय नमः। ॐ दधिवामनाय नमः। ॐ धन्वन्तरये नमः। ॐ श्रीनिवासाय नमः। ॐप्रद्युम्नाय नमः। ॐ पुरुषोत्तमाय नमः। ॐ श्रीवत्सकौस्तुभधराय नमः। ॐ मुरारातये नमः। ॐ अधोक्षजाय नमः। ॐ ऋषभाय नमः। ॐ मोहिनी रुप धारिणे नमः। ॐ सङ्कर्षणाय नमः। ॐ पृथवे नमः। ॐ क्षीराब्धिशायिने नमः। ॐ भूतात्मने नमः। ॐ अनिरुद्धाय नमः। ॐ भक्तवत्सलाय नमः। ॐनराय नमः। ॐ गजेन्द्रवरदाय नमः। ॐ त्रिधाम्ने नमः। ॐ भूतभावनाय नमः। ॐ श्वेतद्वीपसुवास्तव्याय नमः। ॐ सनकादिमुनिध्येयाय नमः। ॐ भगवते नमः। ॐ शङ्करप्रियाय नमः। ॐ नीलकान्ताय नमः। ॐ धराकान्ताय नमः। ॐवेदात्मने नमः। ॐ बादरायणाय नमः। ॐ भागीरथीजन्मभूमि पादपद्माय नमः। ॐ सतांप्रभवे नमः। ॐस्वभुवे नमः। ॐ विभवे नमः। ॐ घनश्यामाय नमः। ॐ जगत्कारणाय नमः। ॐ अव्ययाय नमः। ॐ बुद्धावताराय नमः। ॐ शान्तात्मने नमः। ॐ लीलामानुष विग्रहाय नमः। ॐ दामोदराय नमः। ॐ विराड्रूपाय नमः। ॐ भूतभव्यभवत्प्रभवे नमः। ॐ आदिदेवाय नमः। ॐ प्रह्लादपरिपालकाय नमः। ॐ श्रीमहाविष्णावे नमः। अष्टोत्तर शतनाम पूजां समर्पयामि।

धूप— **ॐ वनस्पति रसोत्पन्नो गंधाढ्यः सुमनोहरः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम्॥**

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तो अस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥ *(अथर्ववेद १९.६.१०)*

ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि संभव कर्दम। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, धूपं आघ्रापयामि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

दीपम्—आज्यं त्रिवर्ति संयुक्तं वह्निना योजितं मया। गृहाण मङ्गलं दीपं त्रैलोक्य तिमिरापह॥

ॐ तं यज्ञं प्रावृषा प्रौक्षन्पुरुषं जातमग्रशः। तेनं देवा अयजन्त साध्या वसवश्च ये॥ (अथर्ववेद १९.६.११)

ॐ आपः सृजंतु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे। निच देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः दीपं दर्शयामि। धूपदीपानंतरं आचमनीयं समर्पयामि।

नैवेद्यम्—देवस्याग्रे स्थलं संशोध्य गोमयेन मण्डलं कृत्वा तत्र शुद्धं पात्रं न्यस्य अभिघार्य निर्मलं हविः तदुपरि न्यस्य आज्येन द्रवीभूतं कृत्वा "ॐभूर्भुवः स्वः इति गायत्र्या प्रोक्ष्य वायु बीजं जप्त्वा निवेद्यात्रं संशोध्य दक्षिणहस्ते अग्निबीजं विलिख्य तेन हस्तेन संदह्य वामहस्ते अमृत बीजं विलिख्य तेन हस्तेन हविराप्लाव्य सुरभिमुद्रां बध्वा अमृतमयं भावयित्वा मल धातु रसांशं विभाज्य देवस्य निवेद्य ग्रहणेच्छां कुर्यात्। "**सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि**" इत्यनेन परिषिच्य हस्तभ्यां पुष्पैः देवस्य जिह्वार्चीरुचिं निवेद्ये निपात्य निवेदयामि भवते जुषाणेदं हविर्विभो इति वामहस्तेन ग्रासमुद्रां प्रदर्श्य दक्षिणहस्तेन प्राणादि मुद्राः प्रदर्शयेत्। अन्नात् मलांशं धात्वंशं च परित्यज्य रसांशं देवस्य वदनार्चिषि समर्पयेत्। वं अबात्मना इति नैवेद्य मुद्रां प्रदर्शयेत्। नैवेद्य सारं रससमर्पणात् जातं सुधांशं देवे समर्प्य अंजलिमुद्रा बध्वा नैवेद्यसारसमर्पित जातामृतमय सुधांशुना पुनः पुनः वर्धितं देवं हृन्मूर्ति देवं ध्यायन् स्व स्व मूलमंत्र यथा शक्ति जप्त्वा।

कलश के आगे स्थल शुद्धि कर गोमय से शुद्धि कर चतुरस्त्र मण्डल को बनाकर उस पर शुद्ध पात्र को रखें। पात्र में थोडा सा घी डालें। उस पात्र में निर्मलहविस् (नैवेद्य पदार्थ को) को घी पर रखें। उस हविस् को घीं से भिगोयें।

गायत्री मंत्र से नैवेद्य का प्रोक्षण करें—"यं यं यं" इस वायुबीज को जपकर हविस् को शुद्ध करें। दाहिने हाथ में (रं) अग्नि बीज को लिखकर उस अग्नि से हविस् में विद्यमान कश्मलों को जलाऐं (कल्पना करें)। बायें हाथ में अमृत बीज (वं) को लिखकर उस हाथ से हविस् को शुद्ध करें (घोने

की कल्पना करें) ॐनमो नारायणाय। इस मन्त्र का आठ बार जप करें। हविस् को मंत्रमय एवं अमृतमय छोने की कल्पना करें। सुरभि मुद्रा से अमृतमय हुआ है मानकर मलांश, धातु का अंश एवं रसांश को अलग अलग करने की कल्पना करें। देवता को नैवेद्य ग्रहण करने की इच्छा उत्पन्न करती चाहिये।

''सत्यं त्र्तेन परिषिचामि'' इससे परिषिञ्चन करें। दोनों हाथों में पुष्प लेकर देवता का जीभ नैवेद्य तक पहुँचने का चिन्तन करें।

''निवेदयामि भवते जुषाणेदं हविर्विभो'' कहकर नैवेद्य स्वीकार करने की प्रार्थना करते हुए। बायें हाथ से ग्रास मुद्रा (जैसे बछडे को घास देते है) को दिखाकर दाहिने हाथ से प्राणाय स्वाहा-अङ्गुष्ठ कनिष्ठिका मिलाकर अपानाय स्वाहा-अङ्गुष्ठ एवं तर्जनी मिलाकर व्यानाय स्वाहा-अङ्गुष्ठ एवं अनामिका मिलाकर उदानाय स्वाहा-अङ्गुष्ठ एवं अनामिका मिलाकर समानाय स्वाहा। सभी अङ्गुलियों को मिलाकर। अन्त से मलांश एवं धातु के अंध को अलग कर केवल रसांश को अर्पित करने की कल्पना करें।

''वं अबात्मना नैवेद्यं कल्पयामि'' कहकर नैवेद्य मुद्रा का प्रदर्शन करें (अङ्गुष्ठ एवं अनामिका मिलाने से नैवेद्य मुद्रा)। नैवेद्य का सार जो रसांश था उसका भी सार अमृत का जो अंश है उसे देवता को समर्पित कर, हाथ जोडकर, नैवेद्य के सार अमृत से भगवान् को बढते हुए मानकर उसे हृदय में स्थित मानकर यथाशक्ति ''ॐनमो नारायणाय''—इस मूल मंत्र का जप करें।

ॐ स्वादोःस्वादींयः स्वादुनां सृजा समदः सु मधु मधुंनाभि योंधीः ॥ *(अथर्ववेद ५.२.३)*

ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिंनम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातंवेदो म आवंह ॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

यथा संभव नैवेद्यं निवेदयामि। अमृतापिधानमसि कहकर उत्तरापोशन देवें। हस्तप्रक्षालनार्थे जलं समर्पयामि। गण्डूषार्थे जलं समर्पयामि। शुद्धाचमनार्थे जलं समर्पयामि। करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि।

ताम्बूल—ॐ तस्मादश्वां अजायन्त ये च के चोंभयादंतः। गावों ह जज्ञिरे तस्मात्तस्मांज्जाता अंजावयः ॥ *(अथर्ववेद १९.६.१२)*

पूगीफल समायुक्तं नागवल्या दलैर्युतं। चूर्ण कर्पूर संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥ ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः। क्रमुक तांबूलं समर्पयामि।

नीराजन (आरति)—ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दों ह जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत॥ (अथर्ववेद १९.६.१३)
ॐ एह यातु वरुणः सोमो अग्निर्बृहस्पतिर्वसुभिरेह यातु।
अस्य श्रियमुपसंयात सर्व उग्रस्य चेत्तुः संमनसः सजाताः॥ (अथर्ववेद ६.७३.१)

ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः। मङ्गल नीराजनं समर्पयामि।

मंत्रपुष्प—ॐ सहस्रबाहुः पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥ (अथर्ववेद १९.६.१)
ॐ मूर्ध्नो देवस्य बृहतो अंशवः सप्त सप्ततीः। राज्ञः सोमस्याजायन्त जातस्य पुरुषादधि॥ (अथर्ववेद १९.६.१६)
ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्। पशूँस्ताश्चक्रे वायव्यां नारण्या ग्राम्याश्च ये॥ (अथर्ववेद १९.६.१४)
ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्। सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः। मंत्रपुष्पं समर्पयामि।

प्रदक्षिणा नमस्कार—यानि कानि च पापानि जन्मांतर कृतानि च। तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे॥ (देवपूजा-स्मृति संग्रह)
ॐ सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन्पुरुषं पशुम्॥ (अथर्ववेद १९.६.१५)ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगा मिनीम्। यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विंदेयं पुरुषानहम्॥

(पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः। प्रदक्षिरा नमस्कारान् समर्पयामि।

प्रसन्नार्घ्य—ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि। तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्॥

इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यम्। (कहकर तीन बार पुष्पमिश्रित जल छोड़ें।)

सर्वोपचार पूजनम्—ॐ छत्रं समर्पयामि। चामरेरा वीजयामि। गीतं गायामि। नाट्यं नटामि। आंदोळिकामारोहयामि। अश्वमारोहयामि। गजमारोहयामि। समस्त राजोपचार देवोपचार पूजां समर्पयामि।

ॐ मूर्ध्नो देवस्य बृहतो अंशवः सप्त सप्ततीः। राज्ञः सोमस्याजायन्त जातस्य पुरुषादधि॥ (अथर्ववेद १९.६.१६)

ॐ यः शुचिः प्रयतोभूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्। सूक्तं पंचदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्॥ (ऋग्वेद-पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः। सर्वोपचार पूजां समर्पयामि।

प्रार्थना—विष्णुं जिष्णुं महाविष्णुं प्रभविष्णुं महेश्वरम्। अनेकोत्पात शमनं नमामि पुरुषोत्तमम्॥

ॐ कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुध्यात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि॥ (पौराणिकम्)

ॐ ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविः ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्। ब्रह्मैव तेन गंतव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना॥ (श्री भगवद्गीते) ॐ सपरिवाराय श्री महा विष्णावे नमः। अनेन पूजनेन सपरिवारः श्री महा विष्णुः प्रीयताम्। षोडशोपचार पूजनं संपूर्णम्।

पूर्णाहुति—प्रतिदिन संक्षेप में पूर्णाहुति करनी चाहिये अन्तिम दिन विशेष रूप से करनी चाहिये।

प्रतिदिन वाला पूर्णाहुति—स्रुचि स्रुवेण द्वादशवारं आज्यं गृहीत्वा तस्यां स्रुवं ऊर्ध्वबिलं निधाय पुनरधो बिलं निक्षिप्य स्रुवाग्रे कुसुमाक्षतान् निधाय सव्य पाणिना स्रुकूस्रुवमूले धृत्वा दक्षिणपाणिना स्रुकूस्रुवं शंखमुद्रया गृहीत्वातिष्ठन् समपाद ऋजुकायः स्रुवाग्रे न्यास्त दृष्टिः प्रसन्नात्मना। स्रुवा से स्रुक में १२ बार घी डाले। स्रुक् के ऊपर स्रुवा को ऊपर मुख करके रखें, फिर उसे उल्टा करके स्रुक् के ऊपर रखें। स्रुवा के अग्रभाग में पुष्प एवं अक्षतों से पूजन करें। बायें हाथ से स्रुक् एवं स्रुवा के मूल को पकडकर, दाहिने हाथ से शंखमुद्रा से स्रुक एवं स्रुवा को पकडकर, सीधे खडे रहकर स्रुवा के अग्रभाग को देखते हुए प्रसन्न मन से पूर्णाहुति होम करें। धामं ते वामदेव आपो जगती पूर्णाहुति होमेविनियोगः।

ॐ सं सं स्त्रवन्तु सिन्धवः सं वाताः सं पतत्रिणः। इमं यज्ञं प्रदिवो मे जुषन्तां संस्राव्येण हविषा जुहोमि॥
इहैव हवमा यात म इह संस्त्रावणा उतेमं वर्धयता गिरः। इहैतु सर्वो यः पशुरस्मिन् तिष्ठतु या रयिः॥
ये नदीनां संस्त्रवन्त्युत्सासः सदमक्षिताः। तेभिर्मे सर्वैः संस्रावैर्धनं सं स्त्रावयामसि॥
ये सर्पिषः संस्त्रवन्ति क्षीरस्य चोदुकस्य च। तेभिर्मे सर्वैः संस्रावैर्धनं सं स्त्रावयामसि॥ *(अथर्ववेद १.१५.१-४)*

इतना कहकर स्रुक् में शेष घी का होम करें। अग्रये इदं न मम। कहकर हाथ जोडें। विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा। विश्वेभ्यः देवेभ्य इदं न मम। स्रुक् स्रुवा में शेष बचे घी का भी होम करें। यह संस्राव कहलता है। अथावभृथस्थानीयं पूर्णपात्रजलेन मार्जनं कुर्यात्। अवभृथस्नान के जगह (बदले) पूर्णपात्र जल से मार्जन करें। पूर्वसादितं पूर्णपात्रं आस्तीर्णे बर्हिषि दक्षिणपाणिना निधाय तत्र गङ्गादि पुण्यनदीः स्मरन् दक्षिण पाणिना स्पृशन्। उत्तर में स्थापित प्रणीतापात्र के जल से अवभृथस्नान के बदले में आगे बिछाये बर्हिषि (कुशाग्रों) के ऊपर रखकर दाहिने हाथ से उसे छूते हुए गङ्गादि पुण्यनदियों का स्मरण करते हुए मंत्र पाठ करें।

यदाज्यधान्यां तत्संस्रावयति संस्रावभागास्तविषा बृहन्तः प्रस्तरेष्ठा बर्हिषदश्च देवाः।

इमं यज्ञमभि विश्वे गृणान्तः स्वाहा देवा अमृता मादयन्तामिति।

स्रुक् स्रुवा में शेष बचे घी का भी होम करें। यह संस्राव कहलता है। अथावभृथस्थानीयं पूर्णपात्रजलेन मार्जनं कुर्यात्। अवभृथस्नान के जगह (बदले) पूर्णपात्र जल से मार्जन करें। पूर्वसादितं पूर्णपात्रं आस्तीर्णे बर्हिषि दक्षिणपाणिना निधाय तत्र गङ्गादि पुण्यनदीः स्मरन् दक्षिण पाणिना स्पृशन्। उत्तर में स्थापित प्रणीतापात्र के जल से अवभृथस्नान के बदले में आगे बिछाये बर्हिषि (कुशाग्रों) के ऊपर रखकर दाहिने हाथ से उसे छूते हुए गङ्गादि पुण्यनदियों का स्मरण करते हुए मंत्र पाठ करें।

स्रुवो ऽसि घृतादनिशितः। सपत्नक्षयणो दिवि षीद। अन्तरिक्षे सीद पृथिव्यां सीदोत्तरो ऽहं भूयासमधरे मत्सपत्ना इति स्रुवं प्राग्दण्डं निदधाति। वि मुञ्चामि ब्रह्मणा जातवेदसमग्निं होतारमजरं रथस्पृतम्। सर्वा देवानां जनिमानि विद्वान्यथाभागं वहतु हव्यमग्निरग्रये स्वाहेति समिधमादधाति। एधो ऽसीति द्वितीयां समिदसीति तृतीयाम्। तेजो ऽसीति मुखं विमार्ष्टि।

दक्षिणेनाग्निं त्रन्विष्णुक्रमान्क्रमते विष्णोः क्रमो ऽसीति दक्षिणेन पादेनानुसंहरति सव्यम्। सूर्यस्यावृतमित्यभिदक्षिणमावर्तते। अगन्म स्वरित्यादित्यमीक्षते। व्रतानि व्रतपतय इति समिधमादधाति। सत्यं त्वर्तेनति परिषिच्योदञ्चि हविरुच्छिष्टान्युद्वासयति। पूर्णा पात्रं दक्षिणा।

इन्द्रस्य वचसा वयं मित्रस्य वरुणस्य च। ब्रह्मणा स्थापितं पात्रं पुनरुत्थापयामसी त्यपरेणाग्निमुदपात्रं परिहृत्योत्तरणाग्निमापो हि ष्ठा मयोभुव इति मार्जयित्वा बर्हिषि पत्न्याञ्जलौ निनयति समुद्रं वः प्र हिणोमीतीदं जनास इति वा। वीरपत्न्यहं भूयासमिति मुखं विमार्ष्टि। ततः कर्ता अग्नेः वायव्ये स्थितः संस्थाजपेन उपतिष्ठेत। इसके बाद यजमान अग्नि के वायव्य दिशा में खड़े होकर संस्था जप जो कि आगे बताया जा रहा है, उससे हाथ जोडकर अग्नि की प्रार्थना करें।

अग्नये नमः। ॐ स्वस्ति। श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां विद्यां बुद्धिं श्रियंबलं। आयुष्यं तेज आरोग्यं देहि मे हव्यवाहन॥ मानस्तोक इत्यस्य कुत्सोरुद्रोजगती। विभूति

ग्रहणे विनियोगः।

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम्। त्रेधामृतस्य चक्षणं त्रीण्यायूंषि तेऽकरम्॥ (अथर्ववेद ५.२८.७)

इति स्रुव बिलपृष्ठेनैशानीगतां विभूतिं गृहीत्वा। उपरोक्त मंत्र पाठ करते हुए स्रुवा के बिल के पिछले हिस्से के ईशान भाग से भस्म (होम करें) को निकालें। ॐत्र्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे। (ललाटे में भस्म लगायें) ॐकश्यपस्य त्र्यायुषं इति कंठे। (कण्ठ में भस्म लगायें) ॐअगस्त्यस्य त्र्यायुषं इति नाभौ। (नाभि में भस्म लगायें) ॐयद्देवानां त्र्यायुषमिति दक्षिणस्कंधे (दाहिने भुजा में भस्म) ॐतन्मे अस्तु त्र्यायुषं इति वाम स्कंधे (बाये कंधे पर) ॐसर्वमस्तु शतायुषं इति शिरसि धारयेत् (सिर से भस्म लगायें) ततः परिस्तरणानि विसृज्य अग्निं परिसमूह्य परिषियुक्ष्य।

अग्नि का परिसमूहन एवं परिषिञ्चन करें। इसके बाद जिस प्रकार से डाले थे उसी प्रकार पूर्व से उन परिस्तरणों को अग्नि में डाल दें (विसर्जन) हाथों में जल लेकर पूर्वदिशा से प्रारम्भ करके प्रदक्षिणाकार में चारों ओर मार्जन करने की क्रिया परिसमूहन कहलाता है। पहले हाथ धो लें फिर जलयुक्त हाथ से पूर्वादि दिशाओं को स्पर्श करना चाहिये। पुनः हाथ धोकर इसी क्रिया दो बार और करना चाहिये। यह क्रिया परिसमूहन कहलाता है। अग्नेरैशानतस्त्रिरंभसा परिषेचनं। हाथ में जल लेकर ईशान्य से ईशान्य तक तीन बर जल से परिषिञ्चन करें।

ॐ उदेनमुत्तरं नयाग्ने घृतेनाहुत। समेनं वर्चसा सृज प्रजया च बहुं कृधि॥ (अथर्ववेद ६.५.१)

(पूर्व, आग्नेय, दक्षिण, नैऋत्य, पश्चिम, वायव्य, उत्तर, ईशान्य में पुष्पाक्षत से अग्निदेव का पूजन करें), ब्रह्मा को एवं ऋत्विजों को दक्षिणा देवें।

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपो होमक्रियादिषु। न्यूनं संपूर्णतां यातु सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविः ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्। ब्रह्मैव तेन गंतव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना॥

अनेन सग्रहमख सर्वाद्भुतशान्ति होमकर्मणा सपरिवारः भगवान् महा विष्णुः प्रीयताम्। यागमध्ये मंत्रतंत्र विपर्यासादि सर्वदोष परिहारार्थं नामत्रय जपं

करिष्ये। ॐअच्युताय नमः। ॐअनंताय नमः। ॐगोविन्दाय नमः। ॐहराय नमः। ॐमृडाय नमः। ॐशंभवे नमः। इति जपेत्। कर्म के अन्त में पवित्र का विसर्जन करके दो बार आचमन करें। ॐतत् सत्॥ यहाँ पर मध्याह्न तक का कार्यक्रम संपन्न हुआ।

मध्याह्न य सांयकाल का कार्यक्रम—यह प्रारम्भ दिन से अन्तिम दिन के पहले दिन तक समान है। जप का विवरण अगले पन्ने (भाग) में है। आचम्य प्राणानायम्य उद्दिष्ट मंत्रजपं कुर्यात्। आचमन करके प्राणायाम करें। फिर उद्देशित मंत्रों का जप संपन्न करें। जप मंत्रों का संपूर्ण विवरण अगले भाग में है।

सर्वाद्भुत शान्ति भाग में—**जप के मन्त्र—महाशान्ति सूक्त—शन्नइन्द्राग्नि सूक्त—प्रधान विष्णु मन्त्र जप—नवग्रह जप**

तृतीय / चतुर्थ / पञ्चम दिन द्वितीय प्रहर सम्पन्न

षष्ठ दिन प्रथम प्रहर

देह शुद्धि—ॐ स्योनास्मै भव पृथिव्यनृक्षरा निवेशनी। यच्छास्मै शर्म सप्रथाः॥ *(अथर्ववेद १८.२.१९)*

इस मन्त्र से जल प्रोक्षण करने से भूमि शुद्ध होती है।

देह शुद्धि—ॐ या आपो याश्च देवता या विराड् ब्रह्मणा सह। शरीरं ब्रह्म प्राविशच्छरीरेऽधि प्रजापतिः॥ *(अथर्ववेद ११.८.३०)*

आचमन मन्त्र—ऋग्वेदाय स्वाहा। यजुर्वेदाय स्वाहा। सामवेदाय स्वाहा। (स्वाहा मन्त्र से जल पीना चाहिये।) अथर्ववेदाय नमः। इतिहास पुराणेभ्यो नमः। अग्नये नमः। वायवे नमः। प्राणाय नमः। सूर्याय नमः। चन्द्राय नमः। दिग्भ्यो नमः। इन्द्राय नमः। पृथिव्यै नमः। अन्तरिक्षाय नमः। दिवे नमः। ब्रह्मणे नमः। विष्णवे नमः। सदाशिवाय नमः। द्विराचम्य .. इस प्रक्रिया को दुबारा करना चाहिये।

पवित्र धारणम्— ॐ सुतासो मधुमत्तमाः सोमा इन्द्राय मन्दिनः। पवित्रवन्तो अक्षरन्देवान्गच्छन्तु वो मदाः॥ *(अथर्ववेद २०.१३७.४)*

ॐभूर्भुवः स्वः कहकर जल सिञ्चन करें॥ (इन मन्त्रों से पवित्र शुद्धिकर धारण करना चाहिये आसन के नीचे दो कुश डाल लेना चाहिये।)

प्राणायाम—प्रणवस्य परब्रह्म ऋषिः, दैवी गायत्री छन्दः, परमात्मा देवता प्राणायामे विनियोगः।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योतीरसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवस्वरोम्। *(ऋग्वेद ३.६२.१०)* (रेखाङ्कित मन्त्र को तीन बार कुम्भक में जप करना चाहिये।)

करन्यासः– ॐअङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐतर्जनीभ्यां नमः। ॐमध्यमाभ्यां नमः। ॐअनामिकाभ्यां नमः। ॐकनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐकरतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

अङ्गन्यास, हृदयादिन्यासः–ॐहृदयाय नमः। ॐशिरसे स्वाहा। ॐशिखायै वषट्। ॐकवचाय हुम्। ॐनेत्रत्रयाय वौषट्। ॐअस्त्राय फट्। ॐभूर्भुवः

स्वरोमिति दिग्बन्धः

आसन शुद्धि— ॐ स्योनास्मैं भव पृथिव्यनृक्षरा निवेशनी। यच्छांस्मै शर्मं सप्रथाः॥ *(अथर्ववेद १८.२.१९)*

इस मन्त्र से जल प्रोक्षण करने से भूमि शुद्ध होती है।

शिखाबन्धनम्—

ऊर्ध्वकेशि विरूपाक्षि मांसशोणित भक्षणे। तिष्ठ देवि शिखाबन्धे चामुण्डे ह्यपराजिते॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

(इस मन्त्र से शिखाबन्धन करना चाहिये।)

महा संकल्प —हेमाद्रिसंकल्प

ॐस्वस्ति श्री समस्तजगदुत्पत्तिस्थितिलयकारणस्य रक्षा-शिक्षा-विचक्षणस्य प्रणतपारिजातस्य अशेषपराक्रमस्य श्रीमदनन्तवीर्यस्यादि नारायणस्य अचिन्त्यापरिमितशक्त्या ध्रियमाणानां महाजलौघमध्ये परिभ्रमताम् अनेक कोटि ब्रह्माण्डानाम् एकतमे अव्यक्त- महदहंकार - पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशाद्यावर णैरावृते अस्मिन् महति ब्रह्माण्डखण्डे आधारशक्तिश्रीमदादि- वाराह-दंष्ट्राग्र- विराजिते कूर्मानन्त- वासुकि-तक्षक-कुलिक - कर्कोटक -पद्म - महापद्म - शंखाद्यष्टमहानागैर्ध्रियमाणे ऐरावत-पुण्डरीक-वामन-कुमुद-अञ्जन-पुष्पदन्त-सार्वभौम-सुप्रतीकाष्टदिग्गजोपरिप्रतिष्ठितानाम् अतल-वितल-सुतल-तलातल-रसातल-महातल-पाताल-लोकानामुपरिभागे भुवर्लोक-स्वर्लोक-महर्लोक -जनोलोक - तपोलोक - सत्यलोकाख्य षड्लोकानामधोभागे भूर्लोके चक्रवाल शैल - महावलयनागमध्यवर्तिनो महाकाल महाफणि राजशेषस्य सहस्रफणामणिमण्डल मण्डिते दिग्दन्तिशुण्डादण्डोद्दण्डिते अमरावत्यशोकवती भोगवती - सिद्धवती- गान्धर्ववती - काशी- काञ्ची - अवन्ती अलकावती यशोवतीतिपुण्यपुरीप्रतिष्ठिते लोकालोकाचलवलयिते लवणेक्षु- सुरा- सर्पि - द

धक्षीरोदकार्णवपरिवृते जम्बू-प्लक्ष-कुश-क्रौञ्च - शाक शाल्मलिपुष्कराख्यसप्तद्वीपयुते इन्द्र-कांस्य-ताम्र-गभस्ति-नाग-सौम्य-गान्धर्व-चारणभारतेतिनव-खण्डमण्डिते सुवर्णगिरिकर्णिकोपेत महासरोरुहाकार पञ्चाशत् कोटि योजनविस्तीर्णभूमण्डले अयोध्या मथुरा-माया-काशी-काञ्ची-अवन्तिका-पुरी द्वार ावतीतिमोक्षदायिकसप्तपुरीप्रतिष्ठिते सुमेरु निषधत्रिकूट-रजतकूटाम्रकूट-चित्रकूट-हिमवद्विन्ध्याचलानां महापर्वत प्रतिष्ठिते हरिवर्ष किंपुरुषयोश्च दक्षिणे नवसहस्रयोजन विस्तीर्णे मलयाचल-सह्याचल विन्ध्याचलानामुत्तरे स्वर्णप्रस्थ-चण्डप्रस्थ-चान्द्र-सूक्तावन्तक-रमणक महारमणक-पाञ्चजन्य-सिंहल लंङ्केति-नवखण्डमण्डिते गंगा-भागीरथी-गोदावरी- क्षिप्रा-यमुना- सरस्वती-नर्मदा-ताप्ती-चन्द्रभागा-कावेरी-पयोष्णी-कृष्णवेणी-भीमरथी-तुंगभद्रा-ताम्रपर्णी- विशालाक्षी- चर्मण्वती-वेत्रवती- कौशिकी-गण्डकी- विश्वामित्रीसरयूकरतोया- ब्रह्मानन्दामहीत्यनेक पुण्यनदी विराजिते भारतवर्षे भरतखण्डे जम्बूद्वीपे कूर्मभूमौ साम्बवती कुरुक्षेत्रादि समभूमौ आर्यावर्तान्तर्गते ब्रह्मावर्तैकदेशे गंगायमुनयोर्मध्यभागे योजनव्यापिविस्तीर्णक्षेत्रे, ज्ञानयुग प्रवर्तकानां महर्षि महेशयोगिवर्याणां परमाराध्यगुरुदेवै : अनन्तश्रीविभूषितैः ज्योतिष्पीठाधीश्वरैः जगद्गुरु श्रीमच्छङ्कराचार्य ब्रह्मानन्दसरस्वतीमहाभागैः सम्पादितशतमखकोटि होम महायज्ञपावितायां भूमौ.............................. सकलजगत्स्त्रष्टुः परार्धद्वय जीविनो ब्रह्मणो द्वितीये परार्धे एकपञ्चाशत्तमे वर्षे प्रथम मासे प्रथम पक्षे प्रथम दिवसे अह्नस्तृतीये यामे तृतीये मुहूर्ते रथन्तरादिद्वात्रिंशत्कल्पानांमध्ये अष्टमे श्वेतवाराहकल्पे स्वायंभुवादि मन्वन्तराणां मध्ये सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे कृत त्रेताद्वापरकलिसंज्ञकानां चतुर्णां युगानां मध्ये वर्तमाने अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमपादे प्रभवादि षष्ठि सम्वत्सराणां मध्ये.........................
.............................संवत्सरे.................................अयने..............................ऋतौ ....मासे ....पक्षे
.... तिथौ .... वासरे .... नक्षत्रे .... योगे .... करणे ....राशि स्थिते श्रीसूर्ये
.... राशि स्थिते श्रीचन्द्रे...................... राशि स्थिते श्रीकुजे.................................. राशि स्थिते श्रीबुधे
.... राशि स्थिते श्रीदेवगुरौ .... राशि स्थिते श्रीशुक्रे........................... राशि स्थिते श्रीशनौ............ राशि

स्थिते श्रीराहौ................ राशि स्थिते श्रीकेतौ.............एवं गुण विशेषण विशिष्टायां पुण्यायाम् महापुण्य शुभ तिथौ..

गुरु प्रार्थना —

नमो गुरुभ्यो गुरुपादुकाभ्यो नमः परेभ्यः परपादुकाभ्यः।
आचार्य सिद्धेश्वर पादुकाभ्यो नमोऽस्तु लक्ष्मीपति पादुकाभ्यः॥ *(श्रृङ्गेरी मठीय आचार्य प्रार्थनम्)*

श्री गुरु परमगुरु परमेष्ठी गुरु सद्गुरु पादुकाभ्यो नमो नमः। हम लोग ब्रह्मानन्दं गुरु तं नमानि। गुरु परम्परा को भी बोल सकते हैं। कर सकते हैं। हरौ रुष्टे गुरुस्त्राता गुरौ रुष्टे न कश्चन॥ ईश्वर के रुष्ट होने पर गुरुजी रक्षा करते हैं एवं गुरुजी के कुपित होने पर कोई भी रक्षक नहीं है।

भूतोच्चाटन मन्त्र—

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुविसंस्थिताः। ये भूता विघ्नकर्तारः ते गच्छन्तु शिवाज्ञया॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-आसन विधि प्रकरण)*
ॐ अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम्। सर्वेषामविरोधेन ब्रह्मकर्म समारभे॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-आसन विधि प्रकरण)*
ॐ तीक्ष्णदंष्ट्रमहाकाय कल्पान्ते दहनोपम। भैरवाय नमस्तुभ्यं अनुज्ञां दातुमर्हसि॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

इति भैरवं नमस्कृत्य। (इन मन्त्रों से भूतोच्चाटन कर भैरव जी से यज्ञ रक्षा की प्रार्थना करते हैं।)

गणपति प्रार्थना—ॐ इ॒मा या ब्र॒ह्मण॒स्पते॒ विषू॑ची॒र्वात॒ ईर॑ते। स॒ध्रीची॑रिन्द्र॒ ताः कृ॒त्वा म॒ह्यं शि॒वत॑मास्कृधि।
स्व॒स्ति नो॑ अ॒स्त्वभ॑यं नो अ॒स्तु नमो॑ऽहोरा॒त्राभ्या॑मस्तु॥ *(अथर्ववेद १९.८.६)* इन मन्त्रों से गणपति प्रार्थना कर पुष्पाक्षत छोड़ना चाहिये।

जल कलश पूजनम्—कलश में पूर्ण जल भरकर रखना चाहिये। फिर उसमें गन्ध अक्षत पुष्प कलश के अन्दर डालना चाहिये एवं बाहर भी चारों ओर लगाना चाहिये। गायत्री मन्त्र से तीन बार कलश छूकर जप करना चाहिये।

ॐ कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः। मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥
कुक्षौ तु सागरास्सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदस्सामवेदोह्यथर्वणः॥
अङ्गैश्चसहितास्सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः। अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा॥
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः। सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः॥
गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिंकुरु॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-देवपूजा प्रकरण)*
ॐ अप्सु ते राजन् वरुण गृहो हिरण्ययो मिथः। ततो धृतव्रतो राजा सर्वा धामानि मुञ्चतु॥ *(अथर्ववेद ७.८३.१)*
ॐ एमां कुमारस्तरुण आ वत्सो जगता सह। एमां परिस्रुतः कुम्भ आ दध्नः कलशैरगुः॥ *(अथर्ववेद ३.१२.७)*
श्री वरुण मूर्तये नमः।

(इन मन्त्रों को कलश छूकर पाठ करना चाहिये।)

सितमकरनिषण्णां शुभ्रवर्णां त्रिनेत्रां करधृत कलशोद्यत्पंकजाभीत्यभीष्टाम्।
विधि हरिहररूपां सेन्दुकोटीरचूडां भसितसितदुकूलां जाह्नवीं तां नमामि॥ *(स्मृति संग्रह)*

(इस मन्त्र से कलश में गङ्गाजी का ध्यान करना चाहिये।)

आत्माराधनम्—हृदि स्थितं पंकजमष्टपत्रं सकेसरं कर्णिक मध्यनालं॥
अङ्गुष्ठमात्रं मुनयो वदन्ति ध्यायेत् च विष्णुं पुरुषं पुराणम्॥
हृदयकमलमध्ये सूर्यबिम्बासनस्थं सकलभुवनबीजं सृष्टिसंहारहेतुम्।

निरतिशयसुखात्म ज्योतिषं हंसरूपं परमपुरुषमाद्यं चिन्तयेदात्ममूर्तिम्॥
आराधयामि मणि सन्निभमात्मलिङ्गम्। मायापुरीरहृदय पंकज सन्निविष्टम्॥
श्रद्धा नदी विमलचित्त जलभिषेकै। र्नित्यं समाधि कुसुमैर्न पुनर्भवाय॥
देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो हंसः सदाशिवः। त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥
स्वामिन् सर्व जगन्नाथ यावत्पूजावसानकम्। तावत् त्वं प्रीति भावेन बिम्बेस्मिन् सन्निधिं कुरु॥ (देवपूजा)

ॐ आत्मने नमः। ॐ अन्तरात्मने नमः। ॐ परमात्मने नमः। ॐ ज्ञानात्मने नमः। आत्मपूजां समर्पयामि। इससे आत्मशुद्धि होती है। (इन मन्त्रों को कहकर अपने सिर पर अक्षत डाल लेवें।)

त्रिवाक्येण पुण्याह वाचन—

ॐ पार्थिवस्य रसे देवा भगस्य तन्वो३ बले। आयुष्यमस्मा अग्निः सूर्यो वर्च आ धाद् बृहस्पतिः॥
आयुरस्मै धेहि जातवेदः प्रजां त्वष्टरधिनिधेह्यस्मै।
रायस्पोषं सवितरा सुवास्मै शतं जीवाति शरदस्तवायम् (अथर्ववेद २.२९.१-२)
ॐ पुण्यं पूर्वा फल्गुन्यौ चात्र हस्तश्चित्रा शिवा स्वाति सुखो मे अस्तु।
राधे विशाखे सुहवानुराधा ज्येष्ठा सुनक्षत्रमरिष्ट मूलम्॥ (अथर्ववेद १९.७.३)

मह्यं सकुटुम्बिनेमहाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणायाद्यकरिष्यमाणामुककर्मणः पुण्याहं भवंतो ब्रुवंत्विति त्रिर्वदेत्।

(यजमान अपने सकुटुम्ब प्रणाम करते हुए आज संपन्न होने वाले कर्म के लिए पुण्याह की याचना करते हुए तीन बार कहते हैं। जिसका प्रत्युत्तर ब्राह्मण

तीन बार देते हैं।)

१. ॐ पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु। ॐ अस्तु पुण्याहम्। २. ॐ पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु। ॐ अस्तु पुण्याहम्। ३. ॐ पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु। ॐ अस्तु पुण्याहम्।

ॐ वेदः स्वस्तिर्द्रुघणः स्वस्तिः परशुर्वेदिः परशुर्नः स्वस्ति।
हविष्कृतो यज्ञिया यज्ञकामास्ते देवासो यज्ञमिमं जुषन्ताम्॥ (अथर्ववेद ७.२८.१)

इसके बाद नीचे लिखा वाक्य का तीन बार यजमान कहें। एवं ब्राह्मण प्रत्युत्तर दें। मह्यं सकुटुम्बिने महाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणायाद्यक रिष्यमाणामुककर्मणः स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु। (ब्राह्मण कहते हैं)—ॐ आयुष्मते स्वत्ति। इन उपरोक्त वाक्यों को तीन बार दोहराना चाहिये। इसके बाद पुनः पहले जैसे उत्तर कलश से जल नीचे रखे बड़े पात्र में थोड़ा-थोड़ा कर गिराते हुए मंत्रपाठ करें।

ॐ ऋधङ्मन्त्रो योनिं य आबभूवामृतासुर्वर्धमानः सुजन्मा।
अदब्धासुर्भ्राजमानोऽहेव त्रितो धर्ता दाधार त्रीणि॥ (अथर्ववेद ५.१.१)

इसके बाद पुनः नीचे लिखे वाक्यों को तीन बार यजमान कहें। एवं ब्राह्मण प्रत्युत्तर दें। मह्यं सकुटुंबिने महाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणायाद्य करिष्यमाण अस्य कर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।

(ब्राह्मण कहते हैं)—ॐ ऋध्यतां। इन उपरोक्त वाक्यों को तीन बार दोहराना चाहिये। इसके बाद मन्त्र पाठ करते हुए उत्तरकलश से नीचे रखे पात्र में जल छोड़ना चाहिये।

ॐ एह यातु वरुणः सोमो अग्निर्बृहस्पतिर्वसुभिरेह यातु।
अस्य श्रियमुपसंयात सर्व उग्रस्य चेत्तुः संमनसः सजाताः॥ (अथर्ववेद ६.७३.१)

इसके बाद पुनः नीचे लिखे वाक्यों को तीन बार यजमान कहें एवं ब्राह्मण प्रत्युत्तर दें। मह्यं सकुटुंबिने महाजनान्नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचनमपेक्षमाणायाद्य करिष्यमाण अमुक कर्मणः श्रीरस्त्विति भवंतो ब्रुवन्तु। (ब्राह्मण कहते हैं)—ॐ अस्तु श्रीः। इन वाक्यों को तीन बार कहना चाहियें। वर्षशतं परि पूर्णमस्तु। गोत्राभिवृद्धिरस्तु। कर्माङ्ग देवता प्रीयताम्। (ब्राह्मण आशीर्वाद देते हैं—सौ साल पूर्ण हो। आप की वंश वृद्धि हो। कर्माङ्ग देवता आप पर प्रसन्न हो।)

मातृका पूजनम्—पान सुपारी दक्षिणा के ऊपर कूर्च (कुश से बना) रखकर उसमें मातृका आवाहन करके उनमें मातृका पूजन करना चाहिये। नान्दी मण्डल के आगे मातृका पूजन करना चाहिये।

ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा। वाराही तथेन्द्राणी चामुण्डाः सप्तमातरः॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

सात मातृकायें।

गौरीपद्मा शचीमेधासावित्रीविजयाजया। देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

धृतिः पुष्टिस्तथातुष्टिरात्मनः कुलदेवताः (गौर्यादि षोडश मातृकायें)। ब्राह्म्यादि सप्त मातृः गौर्यादि षोडश मातृः आवाहयामि। विनायकं आवाहयामि। दुर्गा आवाहयामि। क्षेत्रपालं आवाहयामि। गणपतिं आवाहयामि। मातृस्वसारं आवाहयामि। पितृस्वसारं आवाहयामि। एताभ्यो देवताभ्यो नमः। ध्यायामि। ध्यानं समर्पयामि। इनका षोडशोपचार पूजन करना याहिये। **उदाहरण**—आवाहित देवताभ्यो नमः। आसनं समर्पयामि आदि। षोडशोपचार पूजन संक्षेप में करें। (गणेश पूजन में है।)

अन्त में पुष्पांजलि मन्त्र—ॐ देवानां पत्नीरुशतीरवन्तु नः प्रावन्तु नस्तुजये वाजसातये।

याः पार्थिवासो या अपामपिं व्रते ता नों देवीः सुहवाः शर्म यच्छन्तु॥ *(अथर्ववेद ७.४६.१)*

ॐ भूर्भुवः स्वः आवाहित देवताभ्यो नमः। मन्त्रपुष्पं समर्पयामि।

ॐ तदस्तु मित्रावरुणा तदग्ने शं योरस्मभ्यमिदमस्तु शस्तम्।

अशीमहि गाधमुत प्रतिष्ठां नमो दिवे बृहते सादनाय॥ *(अथर्ववेद १६.११.६)*

गृहावै सूक्तं, प्रतिवीतं तत्, प्रतिवीततमया वाचा शस्तव्यम्। स यद्यपि ह दूरात् पशूंल्लभते, गृहानेवैनानाजिगमिषति गृहाहिपशूनां प्रतिष्ठा।

(गो.ब्रा.) इन मन्त्रों को पढकर पुष्पाक्षत चढ़ायें।

मातृका पूजन समाप्तम्

आवाहित देवनान्दी पूजन—देवनान्दी में मातृका पूजन आवश्यक नहीं है। यज्ञ,(अतिरुद्र, सहस्रचण्डी) रथोत्सव आदि सार्वजनिक आचरणों में देवनान्दी ही करना चाहिये। **क्रतुदक्षावुत्सवे तु**। इस वाक्य से क्रतु एवं दक्ष नामक विश्वेदेव देवता हैं। देवनान्दी में पितृदेवता चार है। अमूर्त्य।

१. अग्निष्वात्ता, २. बर्हिषदः, ३. आज्यपाः, ४. सोमपाः

संकल्प—देशकालौ संकीर्त्य करिष्यमाण कर्माङ्ग भूतं नान्दीसमाराधनं करिष्ये। पहले दो मण्डल बनायें।

दत्वातण्डुलपूर्णपात्रयुगले संकल्प्य भुक्तिं तयोः।

ताम्बूलादि सुदक्षिणान्तिकमनुज्ञातः समुद्वाहयेत्॥ *(लक्षण संहिता)*

दो पात्रों में चावल, काजू किशमिश, फल, दाल, आदि दो मण्डलों पर रखें।

ॐ विश्वे देवा वसवो रक्षतेममुतादित्या जागृत यूयमस्मिन्।

मेमं सनांभिरुत वान्यनांभिर्मेमं प्रापत् पौरुंषेयो वधो यः ॥ *(अथर्ववेद १.३०.१)*

ॐ क्रतुदक्षसंज्ञका विश्वेदेदेवाः—नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूभुर्वस्वः इयं च वृद्धिः। इससे दुर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें। अग्निष्वात्ताः पितृगणाः नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूभुर्वः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोड़ें।

बर्हिषदः पितृगणाः—नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें। **आज्यपाः पितृगणाः**—नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दुर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें। **सोमपाः पितृगणाः** नान्दीमुखाः उभाभ्यां ब्राह्मणाभ्यां इदं वः पाद्यं इदं नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। इससे भी दूर्वा हाथ में रखकर उस पर से जल छोडें।

ॐ क्रतुदक्ष संज्ञका विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणायोः इदमासनगंधाद्युपचार कल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध अक्षत पुष्प दूर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें। **ॐ अग्निष्वात्ताः पितृगणाः** नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणायोः इदं आसनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध अक्षत पुष्प दूर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें। **बर्हिषदः पितृगणाः** नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणायोः इदमासनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध अक्षत पुष्प दुर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें। **आज्यपाः पितृगणाः** नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणायोः इदमासनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध, अक्षत, पुष्प, दुर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें।

सोमपाः पितृगणाः नान्दीमुखाः उभयोः ब्राह्मणायोः इदमासनगंधाद्युपचारकल्पनं स्वाहा नमः। भूर्भूवः स्वः इयं च वृद्धिः। गन्ध, अक्षत, पुष्प, दुर्वा हाथ में लेकर उस पर जल छोडें। ॐभूर्भुवः स्वः सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि कहकर मण्डल पर रखे दोनों पात्रों को परिषेचन कर दक्षिणादिशा के पात्र को "इदं

विश्वेभ्यो देवेभ्यः'' उत्तरदिशा के पात्र को ''इदं नान्दीमुख पितृभ्यः'' कहकर दान संकल्प कर ब्राह्मणों को दे देवें।
क्रतुदक्षसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामं सोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणापर जल छोड़कर नीचे रखना चाहिये। **अग्निष्वात्ताः पितृगणाः** नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामंसोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणापर जल छोडकर नीचे रखना चाहिये। **बर्हिषदः पितृगणाः** नान्दीमुखाः गुग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं दमनामं सोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणापर जल छोड़कर नीचे रखना चाहिये। **आज्यपाः पितृगणाः** नान्दीमुखा युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामंसोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणापर जल छोडकर नीचे रखना चाहिये।
सोमपाः पितृगणाः नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तं इदमामं सोपस्करं सताम्बूलं सदक्षिणाकं स्वाहा नमः। भूर्भुवः स्वः इयं च वृद्धिः। कहकर ताम्बूल दक्षिणा पर जल छोड़कर नीचे रखना चाहिये। आगे लिखे मन्त्रों से खड़े होकर उपस्थान करें।

एतद वै ब्रध्नस्यं विष्टपं यदोंदुनः
ब्रध्नलोंको भवति ब्रध्नस्यं विष्टपिं श्रयते य एवं वेदं
एतस्माद् वा ओंदुनात् त्रयंस्त्रिंशतं लोकान् निरंमिमीत प्रजापंतिः
तेषां प्रज्ञानांय यज्ञमंसृजत
स य एवं विदुषं उपद्रष्टा भंवति प्राणं रुंणद्धि
न चं प्राणं रुणद्धिं सर्वज्यानिं जींयते

न च सर्वज्यानिं जीयते पुरैनं जरसः प्राणो जहाति *(अथर्ववेद ११.३.५०-५६)*

कृतस्य देवनान्दी समाराधनस्य प्रतिठाफलसिद्ध्यर्थं द्राक्षामलक निष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृये। कहकर हाथ में दक्षिणा लेकर उस पर जल छोडकर नीचे रख दें।

प्रार्थना—अग्निष्वात्वा बर्हिषदः आज्यपाः सोमपास्तथा। एते भवन्तु मे प्रीताः प्रयच्छन्तु च मङ्गलम्॥ कहकर जल छोड़ें। अनेन नान्दीसमाराधनेन नान्दीमुखदेवताः प्रीयंताम्। **आचम्य**—मंगल तिलक रकें। **विसर्जन**—यज्ञ के अन्तिम दिन विसर्जन करें।

ॐ इडायास्पदं घृतवत् सरीसृपं जातवेदः प्रति हव्या गृभाय।
ये ग्राम्याः पशवो विश्वरूपास्तेषां सप्तानां मयि रन्तिरस्तु॥ *(अथर्ववेद ६.७३.१)*

यथाचारं हिरण्येन भाण्डवादनं। मन्त्र कहते हुए सिक्के से थाली के निचले भाग में शब्द करना चाहिये। (घण्टा वादन के बदले)

१. सर्वाद्भुत शान्ति याग के लिए-१—आचाय, एक कुण्ड में १-ब्रह्मा, ईशान्य में १-कलश पूजन, होमाङ्ग पूजन दक्षिण में १-इतर पूजन, पश्चिम में १-तर्पण के लिए, परिचारक (कर्मचारी) १-एक ब्राह्मण-कुल ५ पंण्डित रहने पर

१५ पण्डित से संपन्न कर्म में—२-१५ पण्डित कर्म में (एक कुण्ड में), २-१५ पण्डित से संपन्न याग में—१ आचार्य, १ ब्रह्मा, १-कलश पूजन, १-इतर पूजन, १-तर्पण पूजन, १-परिचारक ब्राह्मण, ९-ऋत्विज होम के लिए

३-५५ पण्डित से संपन्न याग में—१- आचार्य (५ कुण्ड में), १-ब्रह्मा, १-कलश पूजन, १-इतर पूजन, १-तर्पण के लिए, १-परिचारक ब्राह्मण, ४५-ऋत्विज होम के लिए, ४-अग्निमुख जानकार उप आचार्य (९×५)

४-१०० पण्डित से संपन्न या में—१-आचार्य (९ कुण्ड में), १-ब्रह्मा, १-कलश पूजन, १-इतर पूजन, १-तर्पण के लिए, ५-परिचारक ब्राह्मण, ८१-

ऋत्विज होम के लिए, ६-अग्निमुख जानकार उपआचार्य (६×६), इसी अनुपात में अधिक संख्या में कर सकते हैं।

ॐ उत्तिष्ठब्रह्मणस्पते देवान् यज्ञेनं बोधय।

आयुः प्राणं प्रजां पशून् कीर्तिं यजमानं च वर्धय॥ *(अथर्ववेद १९.६३.१)*

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मत्कृताम्। इष्टकामार्थसिद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

(इन मन्त्रों से आवाहित देवताओं को उठाना चाहिये।)

देवनान्दी समास

***ब्राह्मण वन्दन*— ॐ ब्राह्मणोंऽस्य मुखंमासीद्बाहू राजन्यों भवत्।**

मध्यं तदंस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अंजायत॥ *(अथर्ववेद १९.६.६)*

इस मन्त्र से ब्राह्मण पूजा करें। "करिष्यमाण कर्मणः आरम्भमुहूर्तः सुमुहुर्तो अस्तु इति अनुगृणहन्तु"। यजमान पूछते है॥ "सुमुहूर्तमस्तु"।

सर्वतोभद्र मण्डल पूजनम्—मध्ये ब्रह्माणं, (मध्य में ब्रह्मा का आवाहन करें।)।

ॐ ब्रह्मं जज्ञानं प्रथमं पुरताद् वि सीमतः सुरुचों वेन आंवः।

स बुध्न्यां उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसंतश्च वि वंः॥ *(अथर्ववेद ४.१.१)*

ॐभूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः। ब्रह्माणमावाहयामि। भो ब्रह्मन् इहागच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदो भव। **उत्तरे सोमं**—(उत्तर में सोम का आवाहन करें।)

ॐ सुतासो मधुंमत्तमाः सोमा इन्द्रांय मन्दिनः। पवित्रंवन्तो अक्षरन्देवान्गंच्छन्तु वो मदाः॥ *(अथर्ववेद २०.१३७.४)*

ॐ भूर्भुवः स्वः सोमय नमः। सोमं आवाहयामि। भो सोम इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदो भव। **ईशान्यं ईशानं**—(ईशान्य दिशा में ईशन का आवाहन करें।)

ॐ ईशा॑नां त्वा भे॒ष॒जाना॒मुज्जे॑ष॒ आ र॑भामहे। च॒क्रे स॒हस्र॑वीर्यं॒ सर्व॑स्मा ओषधे त्वा ॥ *(अथर्ववेद ४.१७.१)*

ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानाय नमः। ईशानमावाहयामि। भो ईशान इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजा गृहाण वरदो भव। **पूर्वे इन्द्रं**—(पूर्व में इन्द्र का आवाहन करें।)

ॐ त्रा॒तार॒मिन्द्र॑मवि॒तार॒मिन्द्रं॒ हवे॑हवे सु॒हवं॒ शूर॒मिन्द्र॑म् ॥
हु॒वे नु श॒क्रं पु॑रुहू॒तमिन्द्रं॑ स्व॒स्ति न॒ इन्द्रो॑ म॒घवा॑न् कृणोतु ॥ *(अथर्ववेद ७.८६.१)*

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः इन्द्रमावाहयामि। भो इन्द्र इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहाण। वरदो भव॥ **आग्नेयामग्निं**—(आग्ने दिशा में अग्नि का आवाहन करें।)

ॐ अ॒ग्निं दू॒तं वृ॑णीमहे होता॑रं वि॒श्ववे॑दसम्। अ॒स्य य॒ज्ञस्य॑ सु॒क्रतु॑म् ॥ *(अथर्ववेद २०.१०१.१)*

ॐ भूर्भुवः स्वः। अग्नेय नमः। अग्निमावाहयामि। भो अग्ने इहा गच्छ इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरणो भव। **दक्षिणे यमं**—(दक्षिण दिशा में यम का आवाहन करें।)

ॐ य॒माय॒ सोमः॑ पवते य॒माय॑ क्रियते ह॒विः। य॒मं ह॑ य॒ज्ञो ग॑च्छत्य॒ग्निदू॑तो॒ अरं॑कृतः ॥ *(अथर्ववेद १८.२.१)*

ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः। यममावाहयामि। भो यम इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदो भव। **नैऋत्यां निऋतिं**—(नैऋत्य दिशा में निऋति को।)

ॐ यत् ते॑ दे॒वी निर्ऋ॑तिराब॒बन्ध॒ दाम॑ ग्रीवास्व॑विमो॒क्यं यत्।
तत् ते॒ वि ष्या॒म्यायु॑षे॒ वर्च॑से॒ बला॑यादोम॒दमन्न॑मद्धि॒ प्रसू॑तः ॥ *(अथर्ववेद ६.६३.१)*

ॐभूर्भुवः स्वः निर्ऋतये नमः। निर्ऋतिमावाहयामि। भो निऋति इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूहां गृहाण। वरदो भव। **पश्चिमे वरुणां—**(पश्चिम दिशा में वरुण का आवाहन करें।)

ॐ अप्सु ते राजन् वरुण गृहो हिरण्ययो मिथः। ततो धृतव्रतो राजा सर्वा धामानि मुञ्चतु॥ *(अथर्ववेद ७.८३.१)*

ॐभूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः। वरुणमावाहयामि। भो वरुण इहागच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदो भव। **वायव्यां वायुं—**(वायव्य दिशा में वायु का आवाहन करें।)

ॐ गोसनिं वाचमुदेयं वर्चसा माभ्युदिहि। आ रुन्धां सर्वतो वायुस्त्वष्टा पोषं दधातु मे॥ *(अथर्ववेद ४.२०.१०)*

ॐभूर्भुवः स्वः वायवे नमः। वायुमावाहयामि। भो वायो इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूहां गृहाण। वरदो भव। **वायुसोममध्ये अष्टवसून्—**वायु एवं सोम के बीच में अष्ट वसुओं को (वायव्य एवं उत्तर के बीच में)

ॐ अस्मिन् वसु वसवो धारयन्त्विन्द्रः पूषा वरुणो मित्रो अग्निः।
इममादित्या उत विश्वे च देवा उत्तरस्मिन् ज्योतिषि धारयन्तु॥ *(अथर्ववेद १.९.१)*

ॐभूर्भुवः स्वः अष्टवसुभ्यो नमः। अष्टवसून् आवाहयामि। भो अष्टवसवः इहा गच्छ। इह तिष्ठतः। पूजां गृहाण। वरदो भवत। **सोमेशानयोर्मध्ये एकादशरुद्रान्—**(सोमन एवं ईशान के बीच में एकादश रुद्रों का आवाहन करें।) (उत्तर एवं ईशान के बीच में)

ॐ रुद्रस्यैलबकारेभ्योऽसंसूक्तगिलेभ्यः। इदं महास्येभ्यः श्वभ्यो अकरं नमः॥ *(अथर्ववेद ११.२.३०)*

ॐभूर्भुवः स्वः एकादशरुद्रेभ्यो नमः। एकादश रुद्रानावाहयामि। भो एकादशरुद्राः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृषीत। वरदा भवत। **ईशानेन्द्रयोर्मध्ये द्वादशादित्यान्—**(ईशान्य एवं पूर्व के बीच में द्वादशादित्यों का आवाहन करें।)

ॐ उच्चा पतन्तमरुणं सुपर्णं मध्ये दिवस्तरणिं भ्राजमानम्।
पश्याम त्वा सवितारं यमाहुरजस्रं ज्योतिर्यदविन्ददत्रिः॥ *(अथर्ववेद १३.२.३६)*

ॐभूर्भुवः स्वः द्वादशादित्येभ्यो नमः। द्वादशादित्यानावाहयामि। भो द्वादशादित्याः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृह्णीत। वरदो भवत। **इन्द्राग्निमध्ये अश्विनौ**—(पूर्वा एवं आग्नेय के बीच में अश्विनी देवताओं को आवाहन करें।)

ॐ यदन्तरिक्षे यद्दिवि यत्पञ्च मानुषाँ अनु। नृम्णं तद्धत्तमश्विना *(अथर्ववेद २०.१३९.२)*

ॐभूर्भुवः स्वः अश्विभ्यां नमः। अश्विनौ आवाहयामि। भो अश्विनौ इहा गच्छतं। इह तिष्ठतं पूजां गृषीतं। वरदौ भवतं। **अग्नियम मध्ये विश्वेदेवान् सपैतृकान्**—(आग्नेय एवं दक्षिण के बीच में पितृसाहित विश्वेदेवों का आवाहन करें।)

ॐ विश्वे देवा वसवो रक्षतेममुतादित्या जागृत यूयमस्मिन्।
मेमं सनाभिरुत वान्यनाभिर्मेमं प्रापत् पौरुषेयो वधो यः॥ *(अथर्ववेद १.३०.१)*

ॐभूर्भुवः स्वः विश्वेभ्योदेवेभ्यो नमः विश्वान् देवान् आवाहयामि। भो विश्वेदेवाः इहा गच्छत। इह तिष्ठंत पूजां गृह्णीत। वरदा भवत। **यम निर्ऋतिमध्ये सप्तयक्षान्**—(दक्षिण एवं नैर्ऋत्य के बीच में सप्त यक्षों का आवाहन करें।)

ॐ देवान् यन्नाथितो हुवे ब्रह्मचर्यं यदूषिम। अक्षान् यद् बभ्रूनालभे ते नो मृडन्त्वीदृशे॥ *(अथर्ववेद ७.१०९.७)*

ॐभूर्भुवः स्वः सप्तयक्षेभ्यो नमः सप्तयक्षान् आवाहयामि। भो सप्तयक्षाः इहा गच्छत। इह तिष्ठत पूजां गृह्णीत। वरदा भवत। **निर्ऋति वरुण मध्ये भूतनागान्**—(नैर्ऋत्य एवं पश्चिम के बीच में भुतगण एवं नागों का आवाहन करें।)

ॐ अरायान् ब्रूमो रक्षांसि सर्पान् पुण्यजनान् पितॄन्। मृत्यूनेकशतं ब्रूमस्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः॥ *(अथर्ववेद ११.६.१६)*

ॐभूर्भुवः स्वः सर्पेभ्यो नमः। सर्पान् आवाहयामि। भो सर्पाः इहागच्छत। इह तिष्ठत पूजां गृह्णीत। वरदा भवत। **वरुणवायुमध्ये गंधर्वाप्सरसः—**(पश्चिम एवं वायव्य के बीच में गन्धर्व एवं अप्सराओं का आवाहन करें।)

ॐ तं पुण्यं गन्धं गन्धर्वाप्सरस उप जीवन्ति पुण्यंगन्धिरुपजीवनीयो भवति य एवं वेद॥ *(अथर्ववेद ८.१०-५.८)*

ॐभूर्भुवः स्वः गन्धर्वाप्सरोभ्यो नमः। गन्धर्वाप्सरस आवाहयामि। भो गन्धवाप्सरसः इहा गच्छत। इह तिष्ठत पूजां गृह्णीत। वरदा भवत।

ब्रह्म सोममध्ये स्कन्दं नन्दीश्वरं शूलं महाकालं च- (मध्ये में स्थित ब्रह्मा एवं सोम (उत्तर) के मध्य में स्कन्द नन्दीश्वर शूल एवं महाकाल का आवाहन करें।)

ॐ यन्मे स्कन्नं मनसो जातवेदो यद्वास्कन्दद्धविषो यत्रयत्र।
उत्प्रुषो विप्रुषः सं जुहोमि सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः ॥ *(कौशिक सूत्र ६.१)*

ॐभूर्भुवः स्वः स्कन्दाय नमः। स्कन्दमावाहयामि। भो स्कन्द इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहाण। वरदो भव।

ॐ सहस्रशृङ्गो वृषभो यः समुद्रादुदाचरत्। तेना सहस्येना वयं नि जनान्त्स्वापयामसि॥ *(अथर्ववेद ४.५.१)*

ॐभूर्भुवः स्वः नन्दीश्वराय नमः नन्दीश्वरं आवाहयामि। भो नंदीश्वर इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहाण। वरदो भव।

ॐ यां ते रुद्र इषुमस्यदङ्गेभ्यो हृदयाय च। इदं तामद्य त्वद् वयं विषूचीं वि वृहामसि॥ *(अथर्ववेद ६.९०.१)*

ॐभूर्भुवः स्वः शूलायनमः शूलमावाहयामि। भो शूल इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूहां गृहाण। वरदो भव।

ॐ कालेन वातः पवते कालेन पृथिवी मही। द्यौर्मही काल आहिता॥ *(अथर्ववेद १९.५४.२)*

ॐभूर्भुवः स्वः महाकालाय नमः। महाकालमावाहयामि। भो महाकाल इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूहां गृहाण। वरदो भव। **ब्रह्मेशानमध्ये दक्षं—**(बीच में विद्यमान ब्रह्मा एवं ईशान्य दिशा के बीच में दक्ष का आवाहन करें।)

ॐ आशीर्णा ऊर्जमुत सौप्रजास्त्वं दक्षं धत्तं द्रविणं सचेतसौ।
जयं क्षेत्राणि सहसायमिन्द्र कृण्वानो अन्यानधरान्त्सपत्नान्॥ *(अथर्ववेद २.२९.३)*

ॐभूर्भुवः स्वः दक्षाय नमः। दक्षमावाहयामि। भो दक्ष इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहाण। वरदो भव। ब्रह्मेन्द्रमध्ये दुर्गां विष्णुं च (ब्रह्मा एवं इन्द्र के बीच में अर्थात् बीच में स्थित ब्रह्मा एवं पूर्व के बीच में दुर्गा एवं विष्णु का आवाहन करें।)

ॐ तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम्।
दुर्गां देवीं शरणमहं प्रपद्ये सुतरसि तरसे नमः॥ *(यजुर्वेद-दुर्गासूक्त)*

ॐभूर्भुवः स्वः दुर्गायै नमः। दुर्गां आवाहयामि। भो दुर्गे इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदा भव।

ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदा। समूढमस्य पांसुरे॥ *(अथर्ववेद ९.२६.४)*

ॐभूर्भुवः स्वः विष्णवेनमः। विष्णुं आवाहयामि। भो विष्णो इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूहां गृहाण। वरदो भव। ग्रह्माग्नि मध्ये स्वधां (बीच में स्थित ब्रह्मा एवं आग्नेय दिशा के बीच में स्वधा को)

ॐ एतत् ते प्रततामह स्वधा ये च त्वामनु *(अथर्ववेद १८.४.७५)*

ॐभूर्भुवः वः स्वधायै नमः। स्वधामावाहयामि। भो स्वधे इहा गच्छ। इह तिष्ठ पूजां गृहाण। वरदा भव। **ब्रह्म यममध्ये मृत्युरोगान्**—(बीच में स्थित ब्रह्मा एवं दक्षिण दिशा के बीच में मृत्यु एवं रोगों का आवाहन करें।)

ॐ परं मृत्यो अनु परेहि पन्थां यस्ते एष इतरो देवयानात्।

चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमीहेमे वीरा बहवो भवन्तु ॥ *(अथर्ववेद १२.२.२१)*

ॐभूर्भुवः स्वः मृत्युरोगेभ्यो नमः। मृत्यरोगान् आवाहयामि। भो मृत्युरोगाः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृषीत। वरदा भवत। ब्रह्म निऋतिमध्ये गणपतिं (बीच में स्थित ब्रह्मा एवं नैऋत्य दिशा के बीच में गणपति का आवाहन करें।)

ॐ इमा या ब्रह्मणस्पते विषूचीर्वात ईरते। सध्रीचीरिन्द्र ताः कृत्वा मह्यं शिवतमास्कृधि

स्वस्ति नो अस्त्वभयं नो अस्तु नमोऽहोरात्राभ्यामस्तु ॥ *(अथर्ववेद १९.८.६)*

ॐभूर्भुवः स्वः गणपतये नमः। गणपतिमावाहयामि। भो गणपति इहा गच्छ। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदो भव। **ब्रह्मवरुणामध्ये अपः**—(बीच में स्थित ब्रह्मा एवं पश्चिम दिशा के बीच में जल का आवाहन करें।)

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्रवन्तु नः ॥ *(अथर्ववेद १.६.१)*

ॐभूर्भुवः स्वः अद्भ्यो नमः। अपः आवाहयामि। भो आपः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृह्णीत। वरदा भवत। **ब्रह्मवायुमध्ये मरुतः**—(बीच में स्थित ब्रह्मा एवं वायव्य दिशा के बीच में मरुत् का आवाहन करें।)

ॐ मरुतो यस्य हि क्षये पाथा दिवो विमहसः। स सुगोपातमो जनः ॥ *(अथर्ववेद २०.१.२)*

ॐभूर्भुवः स्वः मरुद्भ्यो नमः। मरुतः आवाहयामि। भो मरुतः इहा गच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृह्णीत। वरदा भवत। ब्रह्मणः पादमूले कर्णिकाधः पृथिवीं (बीच में स्थित ब्रह्मा जी के नीचे पादमूल में पृथिवी का आवाहन करें।)

ॐ स्योनास्मै भव पृथिव्यनृक्षरा निवेशनी। यच्छास्मै शर्म सप्रथाः ॥ *(अथर्ववेद १८.२.१९)*

ॐभूर्भुवः स्वः भूम्यै नमः। भूमिं आवाहयामि। भो भूमे इहा गच्छा। इह तिष्ठ। पूजां गृहाण। वरदा भव। **तत्रैव गङ्गादिसर्वनद्यः**—(उसी स्थान पर अर्थात पृथिवी पर ही गङ्गादि सभी नदियों का आवाहन करें।)

ॐ अप्सु तें राजन् वरुण गृहो हिरण्ययों मिथः। ततों धृतव्रतो राजा सर्वा धामानि मुञ्चतु॥ *(अथर्ववेद ७.८३.१)*

ॐभूर्भुवः स्वः गङ्गादि नदीभ्यो नमः। गङ्गादि नदीः आवाहयामि। भो गङ्गादिनद्यः इहागच्छत। इह तिष्ठत। पूजां गृह्णीत। वरदा भवत। तत्रैव सप्तसागराः। (वहीं पर सात सागरों का आवाहन करें।)

ॐ समुद्रो नदीभिरुदक्रामत् तां पुरं प्र णयामि वः।
तामा विंशत तां प्र विंशत सा वः शर्म च वर्म यच्छतु॥ *(अथर्ववेद १९.१९.७)*

ॐभूर्भुवः स्वः सप्तसागरेभ्यो नमः। भो सप्तसागराः इहागच्छत। इह तिष्ठतः। पूहां गृह्णीत। वरदा भवत। तदुपरि मेरवे नमः। **मेरुं आवाहयामि।** (उसके ऊपर मेरु पर्वत का आवाहन करें।) (भूमि पर) सोमसमीपे गदायै नमः। **गदां आवाहयामि।** (सोम के पास (उत्तर) गदा का आवाहन करें।) ईशान समीपेत्रिशूलाय नमः। **त्रिशूलं आवाहयामि।।** (ईशान के पास ईशान में त्रिशूल का आवाहन करें।) इन्द्रसमीपे वज्राय नमः। **वज्रं आवाहयामि।** (इन्द्र के पास पूर्व में वज्र का आवाहन करें।) अग्नि समीपे शक्तये नमः। **शक्तिं आवाहयामि।** (अग्नि के पास आग्नेय में शक्ति का आवाहन करें।) यम समीपे दण्डाय नमः। **दण्डं आवाहयामि।** (यम के पास दक्षिण में दण्ड का आवाहन करें।) निर्ऋति समीपे खड्गय नमः। **खड्गमावाहयामि।** (निर्ऋति के पास नैऋत्य के खड्ग का आवाहन करें।) वरुण समीपे पाशाय नमः। **पाशं आवाहयामि।** (वरुण के पास पश्चिम में पाश का आवाहन करें।) वायु समीपे अंकुशाय नमः। **अंकुशं आवाहयामि।** (वायु के पास वायव्य दिशा में अंकुश का आवाहन करें।)

तद्बाहये उत्तरादि क्रमेण (मण्डल के बाहर) गौतमाय नमः। **गौतमं आवाहयामि।** (उत्तर में गौतम जी का आवाहन करें।) भारद्वाजाय नमः। **भरद्वाजं**

आवाहयामि। (ईशान में भरद्वाज जी का आवाहन करें।) विश्वामित्राय नमः। **विश्वामित्रं आवाहयामि।** (पूर्व में विश्वामित्र जी का आवाहन करें।) कश्यपाय नमः। **कश्यपं आवाहयामि।** (आग्नेय में अश्यप जी का आवाहन करें।) जमदग्नये नमः। **जमदग्निं आवाहयामि।** (दक्षिण में जमदग्नि जी का आवाहन करें।) वसिष्ठाय नमः। **वसिष्ठं आवाहयामि।** (नैर्ऋत्य में वसिष्ठ जी का आवाहन करें।) अत्रये नमः। **अत्रिं आवाहयामि।** (पश्चिम में अत्रि जी का आवाहन करें।) अरुंधत्यै नमः। **अरुंधतीं आवाहयामि।** (वायव्ये में अरुंधति जी का आवाहन करें।) ततः पूर्वादि क्रमेण मातृः। (पूर्वादि क्रम से मण्डल के बाहर मातृगणों का आवाहन करें।) ऐंद्र्यै नमः। **ऐन्द्रीं आवाहयामि।** (पूर्व में ऐन्द्री का आवाहन करें।) कौमार्यै नमः। **कौमारीं आवाहयामि।** (आग्नेय में कौमारी का आवाहन करें।) ब्राह्मै नमः। **ब्राह्मीं आवाहयामि।** (दक्षिण में ब्राह्मी का आवाहन करें।) वाराह्मै नमः। **वाराहीं आवाहयामि।** (नैऋत्य में वाराही का आवाहन करें।) चामुण्डायै नमः। **चामुण्डां आवाहयामि।** (पश्चिम में चामुण्डा का आवाहन करें।) वैष्णाव्यै नमः। **वैष्णावीं आवाहयामि।** (वायव्य में वैष्णावी का आवाहन करें।) वैनायक्यै नमः। **वैनायकीं आवाहयामि।** (ईशान्य में वैनायकी का आवाहन करें।) इति सर्वतो भद्र देवताः। (यहाँ पर सर्वतोभद्रमण्डल में विद्यमान सभी देवताओं का आवाहन संपन्न हुआ।)

ॐ तदस्तु मित्रावरुणा तदग्ने शं योरस्मभ्यमिदमस्तु शस्तम्।
अशीमहिं गाधमुत प्रतिष्ठां नमो दिवे बृहते सादनाय॥ *(अथर्ववेद १६.११.६)*

गृहावै सूक्तं, प्रतिवीतं तत्, प्रतिवीततमया वाचा शस्तव्यम्। स यद्यपित दूरात् पशूंल्लभते, गृहानेवैनानाजिगमिषति गृहाहिपशूनां प्रतिष्ठा। *(गो.ब्रा.)*

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरताद् वि सीमतः सुरुचो वेन आवः।
स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसंतश्च वि वः॥ *(अथर्ववेद ४.१.१)*

एताः ब्रह्मादि देवताः सुप्रतिष्ठिताः सन्तु। (इन मन्त्रों को कहकर आवाहित ब्रह्मादि देवताओं का प्रतिष्ठा करें।)

अनेन-मंत्रेण पूजयेत्। (इस मन्त्र से पूजन करें।) ॐब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। ध्यायामि। ध्यानं समर्पयामि। ॐब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। आवाहयामि। आसनं समर्पयामि। ॐब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। स्वागतं। पादारविन्दयोःपाद्यं पाद्यं समर्पयामि। ॐब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि। ॐब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। मुखे आचमनीयं समर्पयामि। ॐब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे॥ *(अथर्ववेद १.५.१)*

ॐ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः॥ *(अथर्ववेद १.५.२)*

ॐ तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः॥ *(अथर्ववेद १.५.३)*

स्नानं समर्पयामि। ॐब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। स्नानाङ्ग आचमनं समर्पयामि। ॐब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ परि धत्त धत्त नो वर्चसेमं जरामृत्युं कृणुत दीर्घमायुः।
बृहस्पतिः प्रायच्छद् वास एतत् सोमाय राज्ञे परिधातवा उ॥ *(अथर्ववेद २.१३.२)*

वस्त्रयुग्मं समर्पयामि। वस्त्राङ्ग आचमनं समर्पयामि। ॐब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहज पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुंच शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥ *(ऋग्वेद)*

यज्ञोपवीतं समर्पयामि। ॐब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ यद्धिरण्यं सूर्येण सुवर्णं प्रजावन्तो मनवः पूर्व ईषिरे।
तत् त्वा चन्द्रं वर्चसा सं सृजत्यायुष्मान् भवति यो बिभर्ति॥ *(अथर्ववेद १९.२६.२)*

आभरणं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ गन्धं द्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीं। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

गन्धं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत। अर्चन्तु पुत्रका उत पुरं न धृष्ण्वर्चत॥ (अथर्ववेद २०.९२.५)

अक्षतान् समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ आयने ते परायणे दूर्वा रोहन्तु पुष्पिणीः।

उत्सो वा तत्र जायतां ह्रदो वा पुण्डरीकवान्॥ (अथर्ववेद ६.१०६.१)

नाम पूजां करिष्ये—ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ सोमाय नमः। ॐ ईशानाय नमः। ॐ इन्द्राय नमः। ॐ अग्नेय नमः। ॐ यमाय नमः। ॐ निर्ऋतये नमः। ॐ वरुणाय नमः। ॐ वायवे नमः। ॐ अष्टवसुभ्यो नमः। ॐ एकादश रुद्रेभ्यो नमः। ॐ द्वादशादित्येभ्यो नमः। ॐ अश्विभ्यां नमः। ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। ॐ सप्तयक्षेभ्यो नमः। ॐ भूतनागेभ्यो नमः। ॐ गंधर्वाप्सरोभ्यो नमः। ॐ स्कन्दाय नमः। ॐ नन्दीश्वराय नमः। ॐ शूलाय नमः। ॐ महाकालाय नमः। ॐ दुर्गायै नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ स्वधायै नमः। ॐ मृत्युरोगेभ्यो नमः। ॐ गणपतये नमः। ॐ अद्भ्यो नमः। ॐ मरुद्भ्यो नमः। ॐ पृथिव्यै नमः। ॐ गङ्गादि सर्वनदीभ्यो नमः। ॐ सप्त सागरेभ्यो नमः। ॐ मेरवे नमः। ॐ गदायै नमः। ॐ त्रिशूलाय नमः। ॐ वज्राय नमः। ॐ शक्तये नमः। ॐ दण्डाय नमः। ॐ खड्गाय नमः। ॐ पाशाय नमः। ॐ अंकुशाय नमः। ॐ गौतमाय नमः। ॐ भरद्वाजाय नमः। ॐ विश्वामित्राय नमः। ॐ कश्यपाय नमः। ॐ जमदग्नये नमः। ॐ वसिष्ठाय नमः। ॐ अत्रये नमः। ॐ अरुन्धत्यै नमः। ॐ ऐन्द्र्यै नमः। ॐ कौमार्यै नमः। ॐ ब्राह्मै नमः। ॐ वाराह्यै नमः। ॐ चामुण्डायै नमः। ॐ वैष्णव्यै नमः। ॐ माहेश्वर्यै नमः। ॐ वैनायक्यै नमः। (देवताओं के ५७ समूह।) नाम पूजां समर्पयामि। (ये सभी देवता सर्वतो भद्र मण्डल से आवाहित हैं।) ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

वनस्पति रसोत्पन्नो गन्धाढयः सुमनोहरः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम्॥ धूपं आघ्रापयामि। *(प्रयोगरत्नाकर)*

ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

आज्यं त्रिवर्ति संयुक्तं वह्निना योजितं मया। गृहाण मङ्गलं दीपं त्रैलोक्य तिमिरापह॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

दीपं दर्शयामि धूपदीपानन्तरं आचमनं समर्पयामि। ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः। (नैवेद्य को गायत्री मन्त्र से प्रोक्षण करें नैवेद्य मण्डल पर रखें। **सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि।** इस मन्त्र से परिषिञ्चन करें।) **अमृतोपस्तरणमसि** कहकर जल छोड़ें। ॐ प्राणाय स्वाहा (अङ्गुष्ठ एवं कनिष्ठिका मिलाकर) ॐ अपानाय स्वाहा (अङ्गुष्ठ एवं तर्जनी मिलाकर) ॐ व्यानाय स्वाहा (अङ्गुष्ठ एवं मध्यमा मिलाकर) ॐ उदानाय स्वाहा (अङ्गुष्ठ एवं अनामिका मिलाकर) ॐ समानाय स्वाहा (सभी अङ्गुलियों को मिलाकर) ॐ देवेभ्यः स्वाहा नैवेद्यं निवेदयामि। **अमृतापिधानमसि** कहकर जल छोड़ें। नैवेद्यं विसर्जयामि। हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि। गण्डूषं समर्पयामि। पुनराचमनं समर्पयामि। (कहकर जल छोड़ें) ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

पूगीफल समायुक्तं नागवल्ल्यादलैर्युतम्। चूर्ण कर्पूर संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यतां। क्रमुक ताम्बूलं समर्पयामि। *(देवपूजा)*

ॐ ब्रह्मादि देवताभ्यो नमः।

ॐ एह यांतु वरुणः सोमो अग्निर्बृहस्पतिर्वसुभिरेह यांतु।
अस्य श्रियमुपसंयांत सर्व उग्रस्य चेत्तुः संमनसः सजाताः॥ *(अथर्ववेद ६.७३.१)*

मङ्गलनीराजनं समर्पयामि। नीराजनान्ते परिमल पत्र पुष्पाणि समर्पयामि। मन्त्रपुष्पं समर्पयामि। प्रदक्षिणां समर्पयामि। नमस्कारान् समर्पयामि।

देवाराधनमण्डलं सुरगणावासं सदामङ्गलं। कुर्तुः दर्शनमात्रतः शुभकरं तत् पञ्च भूतात्मकं॥

अर्णाद्यक्षरसंयुतं भयहरं तद् याग पुण्यार्जितं। नानामन्त्रमयं समस्त फलदं ध्यायेन्मनोनन्दनं॥
अरिष्टानि बहून्यस्मिन् दुष्कृतानि शतानि च। मण्डलानि निरीक्षन्ते यथा युद्धेषु कातरा:॥ *(अनुष्ठान पद्धति)*

(युद्ध भूमि में कायर जैसे देखते ही भीत हो जाते हैं, वैसे ही मण्डल को देखते ही सभी अरिष्ट दूर हो जाते हैं।) **अनया पूजया ब्रह्मादि मण्डल देवता: प्रीयन्तां** यहाँ पर सर्वतोभद्र मण्डल पूजन संपन्न हुआ।

प्रधान देवता महाविष्णु षोडशोपचार पूजन

ध्यानम्—(पुष्प हाथ में लेकर ध्यान करें) **विष्णुं जिष्णुं महाविष्णुं प्रभविष्णुं महेश्वरम्।**
अनेकोत्पात शमनं नमामि पुरुषोत्तमम्॥ ॐ नमो नारायणाय।

आवाहन—ॐ सहस्रबाहु: पुरुष: सहस्राक्ष: सहस्रपात्। स भूमिं विश्वतों वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥ (अथर्ववेद १९.६.१)
ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्। चन्द्रां हिरण्यमयी लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

सपरिवार श्री महाविष्णवे नम:, आवाहयामि आवाहनं समर्पयामि।

आसनम्—ॐ त्रिभि: पद्भिर्द्यामरोहत्पादस्येहाभवत्पुन:। तथा व्यक्रामद्विष्वङशनानशने अनु॥ *(अथर्ववेद १९.६.२)*
ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णवे नम:,। आसनं समर्पयामि।

पाद्यम्— ॐ तावन्तो अस्य महिमानस्ततो ज्यायांश्च पूरुष:। पादोस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥ *(अथर्ववेद १९.६.३)*

ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद प्रमोदिनीम्। श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः,। पादारविंदयोः पाद्यं पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यं— ॐ पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्येश्वरो यदन्येनाभवत्सह॥ *(अथर्ववेद १९.६.४)*

ॐ कां सोस्मितां हिरण्य प्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।

पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहो पह्वये श्रियम्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)* ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, हस्तयोः अर्घ्यमर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनम्—ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्य किं बाहू किमूरू पादा उच्येते॥ *(अथर्ववेद १९.६.५)*

ॐ चंद्रां प्रभासां यशसा ज्वलंतीं श्रियं लोके देवजुष्टा मुदाराम्।

तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मेनश्यतां त्वां वृणे॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः,। मुखे आचमनीयं समर्पयामि।

पञ्चामृत स्नानम् (दूध)— ॐ सं सिञ्चामि गवां क्षीरं समाज्येन बलं रसम्।

संसिक्ता अस्माकं वीरा ध्रुवा गावो मयि गोपतौ॥ *(अथर्ववेद २.२६.४)*

ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः,। पयः स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः।

भुवे भवेनाति भुवे भवस्वमाम् भुवोद्भवाय नमः ॥ (यजुर्वेद-महानारायणोपनिपत् आरण्यक)

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः,। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि

दहि— ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्यवाजिनः। सुरभि नो मुखा करत्प्र ण आयूंषि तारिषत् ॥ (अथर्ववेद २०.१३७.३)

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः,। दधि स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमःश्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमःकालविकरणाय
नमोबलाय नमो बलप्रमथनाय नमस्सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः। (यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः,। शुद्धोदक स्नानं सपर्मयामि।

घी— ॐ घृतं ते अग्ने दिव्ये सधस्थे घृतेन त्वां मनुरद्या समिन्धे।
घृतं ते देवीर्नप्त्य१ आ वहन्तु घृतं तुभ्यं दुह्रतां गावो अग्ने ॥ (अथर्ववेद ७.८२.६)

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः,। घृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोर तरेभ्यः।
सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥ (यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः,। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

मधु (शहद)—ॐ मधुमान् भवति मधुमदस्याहार्यं भवति। मधुमतो लोकान् जयति य एवं वेद ॥ (अथर्ववेद ९.१.२३)

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, । मधु स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥ *(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)*

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, । शुद्धोदक स्नानं सपर्पयामि।

शर्करा (शक्कर)—ॐ स्वादोःस्वादीयः स्वादुना सृजा समदः सु मधु मधुनाभि योधीः॥ *(अथर्ववेद ५.२.३)*

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, । शर्करा स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जन—ॐ ईशानस्सर्वं विद्यानामीश्वरस्सर्वं भूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणो अधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्॥ *(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)*

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, । शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

फल— ॐ पुष्पवतीः प्रसूमतीः फलिनीरफला उत। संमातर इव दुह्रामस्मा अरिष्टतातये॥ *(अथर्ववेद ८.७.२७)*

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, । फल स्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदक—ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे॥ *(अथर्ववेद १.५.१)*

ॐ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः॥ *(अथर्ववेद १.५.२)*

ॐ तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः॥ *(अथर्ववेद १.५.३)*

ॐ ब्राह्मणो स्य मुखमासीद्बाहू राजन्यो भवत्। मध्यं तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत॥ *(अथर्ववेद १९.६.६)*

ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदंतु मायांतरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः। (ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, । शुद्धदक स्नानं समर्पयामि।

वस्त्र— ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत। मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायत॥ (अथर्ववेद १९.६.७)
ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥ (ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, । वस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतं—ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्रयं प्रतिमुञ्चशुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥
ॐ विराडग्रे समभवद्विराजो अधि पूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः॥ (अथर्ववेद १९.६.९)
ॐ क्षुत् पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वान्निर्णुद मे गृहात्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, । यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

आभरण—ॐ यद्धिरण्यं सूर्येण सुवर्णं प्रजावन्तो मनवः पूर्व ईषिरे।
तत् त्वां चन्द्रं वर्चसा सं सृजत्यायुष्मान् भवति यो बिभर्ति॥ (अथर्ववेद १९.२६.२)

ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, । आभरणं समर्पयामि।

गन्ध— ॐ गंधं द्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ *(पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ नाभ्यां आसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।

पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन्॥ *(अथर्ववेद १६.६.८)*

ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, । गन्धं समर्पयामि।

अक्षत— ॐ अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत। अर्चन्तु पुत्रका उत पुरं न धृष्ण्वर्चत॥ *(अथर्ववेद २०.६२.५)*

ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, । अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पाणि— ॐ विराडग्रे समभवद्विराजो अधि पूरुषः। स जाते अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः॥ *(अथर्ववेद १६.६.६)*

ॐ पुष्पवतीः प्रसूमतीः फलिनीरफला उत। संमातर इव दुह्रामस्मा अरिष्टतातये॥ *(अथर्ववेद ८.७.२७)*

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥ *(ऋग्वेद पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)*

ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, । पुष्पाणि समर्पयामि।

प्रथमावरण पूजनम्— पूर्वादिक्रमेण ॐविमलायै नमः १। ॐ उत्कर्षिण्यै नमः २। ॐ ज्ञानायै नमः ३। ॐ क्रियायै नमः ४। ॐ योगायै नमः ५। ॐ प्रह्व्यै नमः ६। ॐ सत्यायै नमः ७। ॐ ईशानायै नमः ८। मध्ये ॐ अनुग्रहायै नमः ६।

द्वितीयावरण पूजनम्— ॐब्राह्म्यै नमः। पूर्वे ॐमाहेश्वर्यै नमः। आग्नेय दिशि। ॐकौमार्यै नमः। दक्षिण दिशि। ॐवैष्णव्यै नमः। नैरृत्यां दिशि। ॐवाराह्यै नमः पश्चिम दिशि। ॐइन्द्राण्यै नमः। वायव्यां दिशि। ॐचामुण्डायै नमः। उत्तरस्यां दिशि। ॐगिरिजायै नमः ऐशान्यां दिशि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

तृतीयावरण पूजनम्— ॐइन्द्राय सुराधिपतये पीतवर्णाय वज्रहस्ताय ऐरावत वाहनाय सशक्ति काय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवारायश्री

महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐअग्नये तेजोधिपतये पिंगलवर्णाय शाक्ति हस्ताय मेष वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय स वाहनाय स परिवाराय श्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐयमाय प्रेताधिपतये कृष्णावर्णाय दण्ड हस्ताय महिष वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐनिषतये रक्षोधिपतये रक्तवर्णाय खङ्ग हस्ताय नरवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐवरुणाय जलाधितये कुंदवर्णाय पाशहस्ताय मकरवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐवायवे प्राणाधिपतये धूम्रवर्णाय अंकुश हस्ताय हरिणवाहनाय सशक्ति काय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐसोमाय नक्षत्राधिपतये शुक्लवर्णाय गदा हस्ताय अश्व वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐईशानाय विद्याधिपतये स्फटिकवर्णाय त्रिशूल हस्ताय वृषभ वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री महाविष्णुमूर्तिपार्षदाय नमः। ॐअनंताय नागाधिपतये क्षीरवर्णाय चक्रहस्ताय गरुड वाहनाय स शक्तिाकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। नैर्ऋत्यं एवं पश्चिम दिशा के बीच में अनन्त का पूजन करें। ॐब्रह्मणे लोकाधिपतये कंजवर्णाय पषहस्ताय हंसवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। पूर्व एवं ईशान दिशा के बीच में ब्रह्मा जी का पूजन करें। *(अनुष्ठान पद्धति)*

चतुर्थावरणपूजनम्—ॐवज्राय नमः। (पूर्व में) ॐशक्त्यै नमः। (आग्नेय में) ॐदण्डाय नमः। (दक्षिण में) ॐखड्गाय नमः। (नैर्ऋत्य) ॐपाशाय नमः। (पश्चिम में) ॐअंकुशाय नमः। (वायव्य में) ॐगदायै नमः। (उत्तर में) ॐत्रिशूलाय नमः। (ईशान में) ॐचक्राय न मः। (पश्चिम नैर्ऋत्य के बीच में) ॐपद्माय नमः। (पूर्व ईशान के बीच में) *(अनुष्ठान पद्धति)*

अष्टोत्तर शतनाम पूजा

ॐ विष्णवे नमः। ॐ लक्ष्मीपतये नमः। ॐ कृष्णाय नमः। ॐ वैकुण्ठाय नमः। ॐ गरुडध्वजाय नमः। ॐ जगन्नाथाय नमः। ॐ परब्रह्मणे नमः। ॐ वासुदेवाय नमः। ॐ त्रिविक्रमाय नमः। ॐ दैत्यान्तकाय नमः। ॐ मधुरिपवे नमः। ॐ तार्क्ष्यवाहनाय नमः। ॐ सनातनाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ पद्मनाभाय नमः। ॐ हृषीकेशाय नमः। ॐ सुधाप्रदाय नमः। ॐ माधवाय नमः। ॐ पुण्डरीकाक्षाय नमः। ॐ स्थितिकर्त्रे नमः। ॐ परात्पराय नमः। ॐ वनकालिने नमः। ॐ यज्ञ रूपाय नमः। ॐ चक्र पाणये नमः। ॐ गदाधराय नमः। ॐ उपेन्द्राय नमः। ॐ केशवाय नमः। ॐ हंसाय नमः। ॐ समुद्रमथनाय नमः। ॐ हरये नमः। ॐ गोविन्दाय नमः। ॐ ब्रह्मजनकाय नमः ॐ कैटभासुरमर्दनाय नमः। ॐ श्रीधराय नमः। ॐ कामजनकाय नमः ॐ शेषाशायिने नमः। ॐ चतुर्भजाय नमः। ॐ पाञ्चजन्यधराय नमः। ॐ श्रीमते नमः। ॐ शार्ङ्गपाणये नमः। ॐ जनार्दनाय नमः। ॐ पीताम्बरधराय नमः। ॐ देवाय नमः। ॐ सूर्यचन्द्रविलोचनाय नमः। ॐ मत्स्यरूपाय नमः। ॐ कूर्मतनवे नमः। ॐ क्रोडरूपाय नमः। ॐ नृकेसरिणे नमः। ॐ वामनाय नमः। ॐ भार्गवाय नमः। ॐ रामाय नमः। ॐ बलिने नमः। ॐ कल्किने नमः। ॐ हयाननाय नमः। ॐ विश्वम्भराय नमः। ॐ शिशुमाराय नमः। ॐ श्रीकराय नमः। ॐ कपिलाय नमः। ॐ ध्रुवाय नमः। ॐ दत्तात्रेयाय नमः। ॐ अच्युताय नमः। ॐ अनन्ताय नमः। ॐ मुकुन्दाय नमः। ॐ दधिवामनाय नमः। ॐ धन्वन्तरये नमः। ॐ श्रीनिवासाय नमः। ॐ प्रद्युम्नाय नमः। ॐ पुरुषोत्तमाय नमः। ॐ श्रीवत्सकौस्तुभधराय नमः। ॐ मुरारातये नमः। ॐ अधोक्षजाय नमः। ॐ ऋषभाय नमः। ॐ मोहिनी रुप धारिणे नमः। ॐ सङ्कर्षणाय नमः। ॐ पृथवे नमः। ॐ क्षीराब्धिशायिने नमः। ॐ भूतात्मने नमः। ॐ अनिरुद्धाय नमः। ॐ भक्तवत्सलाय नमः। ॐ नराय नमः। ॐ गजेन्द्रवरदाय नमः। ॐ त्रिधाम्ने नमः। ॐ भूतभावनाय नमः। ॐ श्वेतद्वीपसुवास्तव्याय नमः। ॐ सनकादिमुनिध्येयाय नमः। ॐ भगवते नमः। ॐ शङ्करप्रियाय नमः। ॐ नीलकान्ताय नमः। ॐ धराकान्ताय नमः। ॐ वेदात्मने नमः। ॐ बादरायणाय नमः। ॐ भागीरथीजन्मभूमि पादपद्माय नमः। ॐ सतांप्रभवे नमः। ॐ स्वभुवे नमः। ॐ विभवे नमः। ॐ घनश्यामाय नमः। ॐ जगत्कारणाय नमः। ॐ अव्ययाय नमः। ॐ बुद्धावताराय नमः। ॐ शान्तात्मने नमः। ॐ लीलामानुष

विग्रहाय नमः। ॐ दामोदराय नमः। ॐ विराड्रूपाय नमः। ॐ भूतभव्यभवत्प्रभवे नमः। ॐ आदिदेवाय नमः। ॐ प्रह्लादपरिपालकाय नमः। ॐ श्रीमहाविष्णावे नमः। अष्टोत्तर शतनाम पूजां समर्पयामि।

धूप— **ॐ वनस्पति रसोत्पन्नो गंधाढ्यः सुमनोहरः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम्॥**

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तो अस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥ *(अथर्ववेद १९.६.१०)*

ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि संभव कर्दम। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, धूपं आघ्रापयामि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

दीपम्—आज्यं त्रिवर्ति संयुक्तं वह्निना योजितं मया। गृहाण मङ्गलं दीपं त्रैलोक्य तिमिरापह॥

ॐ तं यज्ञं प्रावृषा प्रौक्षन्पुरुषं जातमग्रशः। तेन देवा अयजन्त साध्या वसवश्च ये॥ *(अथर्ववेद १९.६.११)*

ॐ आपः सृजंतु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे। निच देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः दीपं दर्शयामि। धूपदीपानंतरं आचमनीयं समर्पयामि।

नैवेद्यम्—देवस्याग्रे स्थलं संशोध्य गोमयेन मण्डलं कृत्वा तत्र शुद्धं पात्रं न्यस्य अभिघार्य निर्मलं हविः तदुपरि न्यस्य आज्येन द्रवीभूतं कृत्वा "ॐ भूर्भुवः स्वः इति गायत्र्या प्रोक्ष्य वायु बीजं जप्त्वा निवेद्यान्नं संशोध्य दक्षिणहस्ते अग्निबीजं विलिख्य तेन हस्तेन संदह्य वामहस्ते अमृत बीजं विलिख्य तेन हस्तेन हविराप्लाव्य सुरभिमुद्रां बध्वा अमृतमयं भावयित्वा मल धातु रसांशं विभाज्य देवस्य निवेद्य ग्रहणेच्छां कुर्यात्। "**सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि**" इत्यनेन परिषिच्य हस्तभ्यां पुष्पैः देवस्य जिह्वार्चीरुचिं निवेद्ये निपात्य निवेदयामि भवते जुषाणेदं हविर्विभो इति वामहस्तेन ग्रासमुद्रां प्रदर्श्य दक्षिणहस्तेन प्राणादि मुद्राः प्रदर्शयेत्। अन्नात् मलांशं धात्वंशं च परित्यज्य रसांशं देवस्य वदनार्चिषि समर्पयेत्। वं अबात्मना इति नैवेद्य मुद्रां प्रदर्शयेत्। नैवेद्य सारं

रससमर्पणात् जातं सुधांशं देवे समर्प्य अंजलिमुद्रा बध्वा नैवेद्यसारसमर्पित जातामृतमय सुधांशुना पुनः पुनः वर्धितं देवं हृन्मूर्ति देवं ध्यायन् स्व स्व मूलमंत्र यथा शक्ति जप्त्वा।

कलश के आगे स्थल शुद्धि कर गोमय से शुद्धि कर चतुरस्र मण्डल को बनाकर उस पर शुद्ध पात्र को रखें। पात्र में थोडा सा घी डालें। उस पात्र में निर्मलहविस् (नैवेद्य पदार्थ को) को घी पर रखें। उस हविस् को घीं से भिगोयें।

गायत्री मंत्र से नैवेद्य का प्रोत्क्षण करें—"यं यं यं" इस वायुबीज को जपकर हविस् को शुद्ध करें। दाहिने हाथ में (रं) अग्नि बीज को लिखकर उस अग्नि से हविस् में विद्यमान कश्मलों को जलाऐं (कल्पना करें)। बायें हाथ में अमृत बीज (वं) को लिखकर उस हाथ से हविस् को शुद्ध करें (धोने की कल्पना करें) ॐनमो नारायणाय। इस मन्त्र का आठ बार जप करें। हविस् को मंत्रमय एवं अमृतमय छोने की कल्पना करें। सुरभि मुद्रा से अमृतमय हुआ है मानकर मलांश, धातु का अंश एवं रसांश को अलग अलग करने की कल्पना करें। देवता को नैवेद्य ग्रहण करने की इच्छा उत्पन्न करती चाहिये।

"सत्यं त्तेंन परिषिचामि" इससे परिषिञ्चन करें। दोनों हाथों में पुष्प लेकर देवता का जीभ नैवेद्य तक पहुँचने का चिन्तन करें।

"निवेदयामि भवते जुषाणेदं हविर्विभो" कहकर नैवेद्य स्वीकार करने की प्रार्थना करते हुए। बायें हाथ से ग्रास मुद्रा (जैसे बछडे को घास देते है) को दिखाकर दाहिने हाथ से प्राणाय स्वाहा-अङ्गुष्ठ कनिष्ठिका मिलाकर अपानाय स्वाहा-अङ्गुष्ठ एवं तर्जनी मिलाकर व्यानाय स्वाहा-अङ्गुष्ठ एवं अनामिका मिलाकर उदानाय स्वाहा-अङ्गुष्ठ एवं अनामिका मिलाकर समानाय स्वाहा। सभी अङ्गुलियों को मिलाकर। अन्त से मलांश एवं धातु के अंध को अलग कर केवल रसांश को अर्पित करने की कल्पना करें।

"वं अबात्मना नैवेद्यं कल्पयामि" कहकर नैवेद्य मुद्रा का प्रदर्शन करें (अङ्गुष्ठ एवं अनामिका मिलाने से नैवेद्य मुद्रा)। नैवेद्य का सार जो रसांश था उसका भी सार अमृत का जो अंश है उसे देवता को समर्पित कर, हाथ जोडकर, नैवेद्य के सार अमृत से भगवान् को बढते हुए मानकर उसे हृदय में स्थित

मानकर यथाशक्ति ''ॐनमो नारायणाय''—इस मूल मंत्र का जप करें।

ॐ स्वादोःस्वादीयः स्वादुना सृजा समदः सु मधु मधुनाभि योधीः ॥ (अथर्ववेद ५.२.३)

ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनम्। चन्द्रां हिरणमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥ (पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)

यथा संभव नैवेद्यं निवेदयामि। अमृतापिधानमसि कहकर उत्तरापोशन देवें। हस्तप्रक्षालनार्थे जलं समर्पयामि। गराडूषार्थे जलं समर्पयामि। शुद्धाचमनार्थे जलं समर्पयामि। करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि।

ताम्बूल—ॐ तस्मादश्वा अजायन्त ये च के चोभयादतः। गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः॥ (अथर्ववेद १९.६.१२)

पूगीफल समायुक्तं नागवल्या दलैर्युतं। चूर्ण कर्पूर संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥ ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णवे नमः। क्रमुक तांबूलं समर्पयामि।

नीराजन (आरति)—ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे।

छन्दो ह जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत॥ (अथर्ववेद १९.६.१३)

ॐ एह यांतु वरुणः सोमो अग्निर्बृहस्पतिर्वसुभिरेह यांतु।

अस्य श्रियमुपसंयात सर्व उग्रस्य चेत्तुः संमनसः सजाताः॥ (अथर्ववेद ६.७३.१)

ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णवे नमः। मङ्गल नीराजनं समर्पयामि।

मंत्रपुष्प—ॐ सहस्त्रबाहुः पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्। स भूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥ (अथर्ववेद १९.६.१)

ॐ मूर्ध्नो देवस्य बृहतो अंशवः सप्त संप्ततीः। राज्ञः सोमस्याजायन्त जातस्य पुरुषादधि॥ (अथर्ववेद १९.६.१६)

ॐ तस्मा॑द्य॒ज्ञात्स॑र्व॒हु॒तः॑ संभृ॑तं पृषदा॒ज्यम्। प॒शूँस्ताश्च॑क्रे वाय॒व्यां॑ नार॒ण्या ग्रा॒म्याश्च॒ ये॥ (अथर्ववेद १९.६.१४)

ॐ आ॒र्द्रां य॒ः करि॑णीं य॒ष्टिं सु॒वर्णां॑ हेम॒मालि॑नीम्। सूर्यां॑ हिर॒ण्मयीं॑ ल॒क्ष्मीं जात॑वेदो म॒ आव॑ह॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णवे नमः। मंत्रपुष्पं समर्पयामि।

प्रदक्षिणा नमस्कार—यानि कानि च पापानि जन्मांतर कृतानि च। तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे॥ (देवपूजा-स्मृति संग्रह)

ॐ स॒प्तास्या॑सन्परि॒धय॒स्त्रिः स॒प्त स॒मिधः॑ कृ॒ताः। दे॒वा यद्य॒ज्ञं त॑न्वा॒ना अब॑ध्न॒न्पुरु॑षं प॒शुम्॥ (अथर्ववेद १९.६.१५)

ॐ तां म॒ आव॑ह जातवेदो ल॒क्ष्मीमन॑पगा॒मिनी॑म्। यस्यां॒ हिर॑ण्यं॒ प्रभू॑तं॒ गावो॑ दा॒स्योऽश्वा॑न् वि॒न्देयं॒ पुरु॑षान॒हम्॥

(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णवे नमः। प्रदक्षिणा नमस्कारान् समर्पयामि।

प्रसन्नार्घ्य—ॐ ना॒रा॒य॒णाय॑ वि॒द्महे॑ वासुदे॒वाय॑ धीमहि। तन्नो॑ विष्णुः प्रचो॒दया॑त्॥

इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यम्। (कहकर तीन बार पुष्पमिश्रित जल छोड़ें।)

सर्वोपचार पूजनम्—ॐ छत्रं समर्पयामि। चामरेण वीजयामि। गीतं गायामि। नाट्यं नटामि। आंदोळिकामारोहयामि। अश्वमारोहयामि। गजमारोहयामि। समस्त राजोपचार देवोपचार पूजां समर्पयामि।

ॐ मू॒र्ध्नो दे॒वस्य॑ बृ॒हतो॑ अं॒शवः॑ स॒प्त स॑प्त॒तीः। रा॒ज्ञः सोम॑स्याजायन्त जा॒तस्य॒ पुरु॑षा॒दधि॑॥ (अथर्ववेद १९.६.१६)

ॐ यः शुचि॒ः प्रय॑तोभूत्वा जु॒हुया॑दाज्य॒मन्व॑हम्। सूक्तं पं॑चद॒शर्चं॑ च श्री॒कामः॑ सत॒तं ज॑पेत्॥ (ऋग्वेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णवे नमः। सर्वोपचार पूजां समर्पयामि।

प्रार्थना—विष्णुं जिष्णुं महाविष्णुं प्रभविष्णुं महेश्वरम्। अनेकोत्पात शमनं नमामि पुरुषोत्तमम्॥

ॐ कायेन वाचा मनसे न्द्रियैर्वा बुध्यात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि॥ *(पौराणिकम्)*

ॐ ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविः ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्। ब्रह्मैव तेन गंतव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना॥ *(श्री भगवद्गीते)* ॐ सपरिवाराय श्री महा विष्णवे नमः। अनेन पूजनेन सपरिवारः श्री महा विष्णुः प्रीयताम्। षोडशोपचार पूजनं संपूर्णम्।

नवग्रह षोडशोपचार पूजनम्

ध्यायामि। ध्यानं समर्पयामि।

ॐ सहस्रबाहुः पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥ *(अथर्ववेद १९.६.१)*
ॐ हिरण्य वर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ नवग्रहमण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, आवाहनं समर्पयामि।

ॐ त्रिभिः पद्भिर्द्यामरोहत्पादस्येहाभवत्पुनः। तथा व्यक्रामद्विष्वङशनानशने अनु॥ *(अथर्ववेद १९.६.२)*
ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ नवग्रहमण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, आसनं समर्पयामि।

ॐ तावन्तो अस्य महिमानस्ततो ज्यायाँश्च पूरुषः। पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥ (अथर्ववेद १९.६.३)

ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद प्रमोदिनीम्। श्रियं देवी मुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, पादारविंदयोः पाद्यं पाद्यं समर्पयामि।

ॐ पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्येश्वरो यदन्येनाभवत्सह॥ (अथर्ववेद १९.६.४)

ॐ कां सोस्मितां हिरण्य प्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।

पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्। (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहितदेवताभ्यो नमः, हस्तयोः अर्घ्यमर्घ्यं समर्पयामि।

ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्य किं बाहू किमूरू पादा उच्येते॥ (अथर्ववेद १९.६.५)

ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।

तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः। मुखे आचमनीयं समर्पयामि।

पञ्चामृत स्नानम् पयः (दूध)—ॐ सं सिञ्चामि गवां क्षीरं समाज्येन बलं रसम्।

संसिक्ता अस्माकं वीरा ध्रुवा गावो मयि गोपतौ॥ (अथर्ववेद २.२६.४)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, पयः स्नानं समर्पयामि। दूध से स्नान के बाद शुद्धोदक स्नान

ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता नं ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे॥ (अथर्ववेद १.५.१)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः। पयः स्नानांते शूद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

दधि (दहि)—ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभि नो मुखा करत्प्र ण आयूंषि तारिषत्॥ (अथर्ववेद २०.१३७.३)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, दधि स्नानं समर्पयामि। दहि स्नान के बाद शुद्धोदक स्नान

ॐ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः॥ (अथर्ववेद १.५.२)

ॐ नवग्रह मंडलस्थ आवाहितदेवताभ्यो नमः, दधि स्नानांते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

घृत (घी)—ॐ घृतं ते अग्ने दिव्ये सधस्थे घृतेन त्वां मनुरद्या समिन्धे।
घृतं ते देवीर्नप्त्य आ वहन्तु घृतं तुभ्यं दुह्रतां गावो अग्ने॥ (अथर्ववेद ७.८२.६)

ॐ नवग्रह मंडलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, घृत स्नानं समर्पयामि। घी स्नान के बाद शुद्धोदक स्नान

ॐ तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः॥ (अथर्ववेद १.५.३)

ॐ नवग्रह मंडलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, घृतस्नानांते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

मधु (शहद)—ॐ मधुमान् भवति मधुमदस्याहार्यं भवति। मधुमतो लोकान् जयति य एवं वेद॥ (अथर्ववेद ९.१.२३)

ॐ नवग्रहमण्डलस्थ आवाहितदेवताभ्यो नमः, मधु स्नानं समर्पयामि।

ॐ ईशाना वार्याणां क्षयन्तीश्चर्षणीनाम्। अपो याचामि भेषजम्॥ (अथर्ववेद १.५.४)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहितदेवताभ्यो नमः, मधु स्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

शर्करा (शक्कर)—ॐ स्वादोःस्वादीयः स्वादुना सृजा समदः सु मधु मधुनाभि योधीः ॥ (अथर्ववेद ५.२.३)

ॐ नवग्रह मंडलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, शर्करास्नानं समर्पयामि।

ॐ अप्सु मे सोमो अब्रवीदन्तर्विश्वानि भेषजा। अग्निं च विश्वशंभुवम् ॥ (अथर्ववेद १.६.२)

ॐ नवग्रहमण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, शर्करास्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

ॐ पुष्पवतीः प्रसूमतीः फलिनीरफला उत। संमातर इव दुह्नामस्मा अरिष्टतातये ॥ (अथर्ववेद ८.७.२७)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, फलस्नानं समर्पयामि।

ॐ उच्चा पतन्तमरुणं सुपर्णं मध्ये दिवस्तरणिं भ्राजमानम्।
पश्याम त्वा सवितारं यमाहुरजस्रं ज्योतिर्यदविन्दुदत्रिः ॥ (अथर्ववेद १३.२.३६)

ॐ सुतासो मधुमत्तमाः सोमा इन्द्राय मन्दिनः। पवित्रवन्तो अक्षरन्देवान्गच्छन्तु वो मदाः ॥ (अथर्ववेद २०.१३७.४)

ॐ अग्निवासाः पृथिव्यसितज्ञूस्त्विषीमन्तं संशितं मा कृणोतु ॥ (अथर्ववेद १२.१.२१)

ॐ कपृन्नरः कपृथमुद्दधातन चोदयत खुदत वाजसातये।
निष्टिग्र्यः पुत्रमा च्यावयोतय इन्द्रं सबाध इह सोमपतये ॥ (अथर्ववेद २०.१३७.२)

ॐ बृहस्पतिर्नः परि पातु पश्चादुतोत्तरस्मादधरदघायोः।
इन्द्रः पुरस्तादुत मध्यतो नः सखा सखिभ्यो वरीयः कृणोतु ॥ (अथर्ववेद ७.५१.१)

ॐ द्यौश्च म इदं पृथिवी च प्रचेतसौ शुक्रो बृहन् दक्षिणाया पिपर्तु।
अनु स्वधा चिकितां सोमो अग्निर्वायुर्नः पातु सविता भगश्च ॥ (अथर्ववेद ६.५३.१)
ॐ शं नो वातो वातु शं नस्तपतु सूर्यः।
अहानि शं भवन्तु नः शं रात्री प्रति धीयतां शमुषा नो व्युच्छतु ॥ (अथर्ववेद ७.६९.१)
ॐ कयानश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता ॥ (अथर्ववेद २०.१२४.१)
ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः ॥ (अथर्ववेद २०.२६.६)
ॐ ब्राह्मणो स्य मुखमासीद्बाहू राजन्यो भवत्। मध्यं तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत ॥ (अथर्ववेद १९.६.६)
ॐ आदित्यवर्णो तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, शुद्धोदकस्नानं सपर्मयामि। शुद्धोदक स्नान मंत्रों के तीन प्रकार प्रचलित है।

प्रथम क्रम में—९ ग्रह- ९ अधिदेवता-९ प्रत्यधिदेवता ६ कर्म साद्गुण्य देवता, ८ क्रतु संरक्षक देवता कुल मिलाकर ४१ देवताओं का मंत्र पठन करके शुद्धोदक स्नान करना चाहिये। सभी मंत्र आवाहन में है। नवग्रह यागादियों में इसका प्रयोग होता है। जहाँ कलश पूजन के लिए ही एक पण्डित नियुक्त हो वहाँ भी इसे कर सकते हैं।

द्वितीय क्रम में—९ ग्रह+९ अधिदेवता+९ प्रत्यधिदेवता कुलमिलाकर २७ देवताओं का मंत्र पठन करके शुद्धोदक स्नान कराना चाहिये।

तृतीय क्रम में—९ ग्रहों का मंत्र पठन करके शुद्धोदक स्नान कराना चाहिये।

वस्त्रम्— ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत। मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायत॥ (अथर्ववेद १९.६.७)

ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, वस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतम्—ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥

ॐ विराडग्रे समभवद्विराजो अधि पूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः॥ (अथर्ववेद १९.६.९)

ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वा निर्णुद मे गृहात्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि, आचमनं समर्पयामि।

आभरणम्—ॐ यद्धिरण्यं सूर्येण सुवर्णं प्रजावन्तो मनवः पूर्व ईषिरे।

तत् त्वा चन्द्रं वर्चसा सं सृजत्यायुष्मान् भवति यो बिभर्ति॥ (अथर्ववेद १९.२६.२)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, आभरणं समर्पयामि।

गन्धम्— ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।

पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन्॥ (अथर्ववेद १९.६.८)

ॐ नवग्रहमण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, गन्धं समर्पयामि।

अक्षतम्—ॐ अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत। अर्चन्तु पुत्रका उत पुरं न धृष्ण्वर्चत॥ (अथर्ववेद २०.९२.५)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पाणि—ॐ विराडग्रे समभवद्विराजो अधि पूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः॥ (अथर्ववेद १९.६.९)

ॐ पुष्पवतीः प्रसूमतीः फलिनीरफला उत। संमातर इव दुह्रामस्मा अरिष्टतातये॥ (अथर्ववेद ८.७.२७)

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥ (ऋग्वेद - पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, पुष्पाणि समर्पयामि।

नाम पूजा

ॐ सहस्रकिरणाय नमः। ॐ सूर्याय नमः। ॐ तपनाय नमः। ॐ सवित्रे नमः। ॐ रवये नमः। ॐ विकर्तनाय नमः। ॐ जगच्चक्षुषे नमः। ॐ द्युमणये नमः। ॐ तिग्मदीधितये नमः। ॐ त्रयीमूर्तये नमः। ॐ द्वादशात्मने नमः। ॐ ब्रह्माविष्णुशिवात्मकाय नमः। ॐ आदित्याय नमः। ॐ अग्नये नमः। ॐ रुद्राय नमः। ॐ चन्द्रमसे नमः। ॐ अद्भ्यो नमः। ॐ गौर्यै नमः। ॐ अङ्गारकाय नमः। ॐ भूम्यै नमः। ॐ स्कन्दाय नमः। ॐ बुधाय नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ पुरुषाय नमः। ॐ बृहस्पतये नमः। ॐ इंद्राय नमः। ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ शुक्राय नमः। ॐ इंद्राण्यै नमः। ॐ इंद्राय नमः। ॐ शनैश्चराय नमः। ॐ प्रजापतये नमः। ॐ यमाय नमः। ॐ राहवे नमः। ॐ सर्पेभ्यो नमः। ॐ मृत्यवे नमः। ॐ केतवे नमः। ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ चित्रगुप्ताय नमः। ॐ विनायकाय नमः। ॐ दुर्गायै नमः। ॐ क्षेत्रपालाय नमः। ॐ वायवे नमः। ॐ आकाशाय नमः। ॐ अश्विभ्यां नमः। ॐ इन्द्राय नमः। ॐ अग्नये नमः। ॐ यमाय नमः। ॐ निर्ऋतये नमः। ॐ वरुणाय नमः। ॐ वायवे नमः। ॐ सोमाय नमः। ॐ ईशानाय नमः। ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, नाम पूजां समर्पयामि।

धूपः— वनस्पति रसोत्पन्नो गन्धाढ्यः सुमनोहरः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥
ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तो अस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥ (अथर्ववेद १९.६.१०)
ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥ (ऋग्वेद - पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, धूपं आघ्रापयामि।

दीपं— साज्यं त्रिवर्ति संयुक्तं वह्निना योजितं मया। गृहाण मङ्गलं दीपं त्रैलोक्यतिमिरापह॥
ॐ तं यज्ञं प्रावृषा प्रौक्षन्पुरुषं जातमग्रशः। तेन देवा अयजन्त साध्या वसवश्च ये॥ (अथर्ववेद १९.६.११)
ॐ आपः स्रजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत व स मे गृहे। नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥ (ऋग्वेद - पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, दीपं दर्शयामि। धूपदीपानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि।

नैवेद्यं—नैवेद्य रखने के स्थल पर मण्डल बनायें (चतुरस्त्र) नैवेद्य को मण्डल पर रखने के बाद मंत्र पढ़ें। विश्वामित्र ऋषिः देवी गायत्री छन्दः, सविता देवता निवेदने विनियोगः। एक बार नैवेद्य पर गायत्री मंत्र से प्रोक्षण करें। सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि इस मंत्र से दिन में एवं **ऋतं त्वा सत्येन परिषिञ्चामि**। इस मंत्र से रात्रि में परिषिञ्चन करें।

यथा संभव नैवेद्यं निरीक्षस्व कहकर प्रार्थना कर **अमृतोपस्तरणमसि** मन्त्र से जल छोड़ें। बायें हाथ से ग्रास मुद्रा (जैसे बछड़े को घास खिलाते हैं) एवं दाहिने हाथ से निम्न मुद्राओं से देवताओं को नैवेद्य अर्पण करें। मन में कल्पना करें कि भगवान को खिला रहे हैं। प्राणाय स्वाहा। अपानाय स्वाहा। व्यानाय स्वाहा। उदानाय स्वाहा। समानाय स्वाहा। ॐ घृणिः सूर्य आदित्यः-इस मूल मंत्र को आठ बार जप करें।

ॐ स्वादोःस्वादीयः स्वादुना सृजा समदः सु मधु मधुनाभि योधीः॥ (अथर्ववेद ५.२.३)

ॐ आद्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥ (ऋग्वेद - पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

यथा सम्भवं नैवेद्यं निवेदयामि। अमृतापिधानमसि। कहकर उत्तरापोशण जल दें। उत्तरापोशनार्थं जलं समर्पयामि। हस्तप्रक्षालनार्थे जलं समर्पयामि। गण्डूषार्थे जलं समर्पयामि। शुद्धाचमनार्थे जलं समर्पयामि। करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि।

ताम्बूलम्—पूगीफलसमायुक्तं नागवल्ल्यादलैर्युतम्। चूर्ण कर्पूर संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ तस्मादश्वा अजायन्त ये च के चोभयादतः। गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः॥ (अथर्ववेद १९.६.१२)

ॐनवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, अमुक ताम्बूलं समर्पयामि। ताम्बूल के पश्चात् नीराजन करें।

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दो ह जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत॥ (अथर्ववेद १९.६.१३)

ॐ एह यातु वरुणः सोमो अग्निर्बृहस्पतिर्वसुभिरेह यातु।

अस्य श्रियमुपसंयात सर्व उग्रस्य चेत्तुः संमनसः सजाताः॥ (अथर्ववेद ६.७३.१)

ॐनवग्रह मडलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, मङ्गल नीराजनं दर्शयामि।

मन्त्र पुष्पः—ॐ उच्चा पतन्तमरुणं सुपर्णं मध्ये दिवस्तरणिं भ्राजमानम्।

पश्याम त्वा सवितारं यमाहुरजस्त्रं ज्योतिर्यदविन्ददत्रिः॥ (अथर्ववेद १३.२.३६)

ॐ सुतासो मधुमत्तमाः सोमा इन्द्राय मन्दिनः। पवित्रवन्तो अक्षरन्देवान्गच्छन्तु वो मदाः॥ (अथर्ववेद २०.१३७.४)

ॐ अग्निर्वासाः पृथिव्यं सितज्ञूस्त्विषीमन्तं संशितं मा कृणोतु॥ (अथर्ववेद १२.१.२१)

ॐ कर्पृन्नरः कपृथमुद्दधातन चोदयत खुदत वाजसातये।
निष्टिग्र्यः पुत्रमा च्यावयोतय इन्द्रं सबाध इह सोमपतये॥ (अथर्ववेद २०.१३७.२)

ॐ बृहस्पतिर्नः परि पातु पश्चादुतोत्तरस्मादधरदघायोः।
इन्द्रः पुरस्तादुत मध्यतो नः सखा सखिभ्यो वरीयः कृणोतु॥ (अथर्ववेद ७.५१.१)

ॐ द्यौश्च म इदं पृथिवी च प्रचेतसौ शुक्रो बृहन् दक्षिणया पिपर्तु।
अनु स्वधा चिकितां सोमो अग्निर्वायुर्नः पातु सविता भगश्च॥ (अथर्ववेद ६.५३.१)

ॐ शं नो वातो वातु शं नस्तपतु सूर्यः।
अहानि शं भवन्तु नः शं रात्री प्रति धीयतां शमुषा नो व्युच्छतु॥ (अथर्ववेद ७.६९.१)

ॐ कयानश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥ (अथर्ववेद २०.१२४.१)

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः॥ (अथर्ववेद २०.२६.६)

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्। पशूँस्तांश्चक्रे वायव्यान् नारण्या ग्राम्याश्च ये॥ (अथर्ववेद १९.६.१४)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, मंत्रपुष्पं समर्पयामि।

प्रदक्षिणा नमस्कारः—यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च। तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे पदे॥

ॐ सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन्पुरुषं पशुम्॥ (अथर्ववेद १९.६.१५)

ॐ तां म॒ आव॑ह जातवेदो ल॒क्ष्मीमन॑पगा॒मिनी॑म्। यस्या॒ हिर॑ण्यं॒ प्रभू॑तं॒ गावो॑ दा॒स्योऽश्वा॑न् वि॒न्देयं॒ पुरु॑षान॒हम्।

(ऋग्वेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रहमण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, प्रदक्षिणा नमस्कारान् समर्पयामि।

प्रसन्नार्घ्यः— ॐ प्रभाकराय विद्महे दिवाकराय धीमहि। तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्॥
ॐ अत्रिपुत्राय विद्महे अमृतोद्भवाय धीमहि। तन्नः सोमः प्रचोदयात्॥
ॐ भूमिपुत्राय विद्महे भारद्वाजाय धीमहि। तन्नः कुजः प्रचोदयात्॥
ॐ तारापुत्राय विद्महे सोमपुत्राय धीमहि। तन्नो बुधः प्रचोदयात्॥
ॐ देवाचार्याय विद्महे वाचस्पतये धीमहि। तन्नो गुरुः प्रचोदयात्॥
ॐ दैत्याचार्याय विद्महे विद्यारूपाय धीमहि। तन्नः शुक्रः प्रचोदयात्॥
ॐ सूर्यपुत्राय विद्महे शनैश्चराय धीमहि। तन्नो मंदः प्रचोदयात्॥
ॐ सैंहिकेयाय विद्महे तमोमयाय धीमहि। तन्नो राहुः प्रचोदयात्॥
ॐ ब्रह्मपुत्राय विद्महे विकृतास्याय धीमहि। तन्नः केतुः प्रचोदयात्॥
ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यं, प्रसन्नार्घ्यं समर्पयामि।

सर्वोपचार पूजनम्— ॐ छत्रं समर्पयामि। चामरेण वीजयामि। गीतं गायामि। नाट्यं नटामि। आन्दोळिकामारोहयामि। अश्वमारोहयामि। गजमारोहयामि। समस्त राजोपचार देवोपचारपूजां समर्पयामि।

ॐ मू॒र्ध्नो दे॒वस्य॑ बृ॒ह॒तो अं॒शव॑ः स॒प्त स॑प्त॒तीः। रा॒ज्ञः सोम॑स्याजायन्त जा॒तस्य॒ पुरु॑षा॒दधि॥ *(अथर्ववेद १९.६.१६)*

ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्। सूक्तं पंचदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्॥ (ऋग्वेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नवग्रह मण्डलस्थ आवाहित देवताभ्यो नमः, सर्वोपचारपूजां समर्पयामि।

प्रार्थना— ग्रहाणामादिरादित्यो लोकरक्षणकारकः। विषमस्थानसंभूतां पीडां हरतु ते रविः॥
रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रः सुधाशनः। विषमस्थानसंभूतां पीडां हरतु ते विधुः॥
भूमिपुत्रो महातेजा जगतां भयकृत्सदा। वृष्टिकृद्वृष्टिहर्ता च पीडां हरतु ते कुजः॥
उत्पातरूपो जगतां चन्द्रपुत्रो महाद्युतिः। सूर्य प्रियकरो विद्वान् पीडां हरतु ते बुधः॥
देवमन्त्री विशालाक्षः सदालोकहितेरतः। अनेक शिष्य संपूर्णः पीडां हरतु ते गुरुः॥
दैत्यमन्त्री गुरुस्तेषां प्राणदश्च महामतिः। प्रभुस्ताराग्रहाणां च पीडां हरतु ते भृगुः॥
सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः। मंदचारः प्रसन्नात्म पीडां हरतु ते शनिः॥
महाशिरा महावक्त्रौ दीर्घदंष्ट्रो महाबलः। अतनुश्चोर्ध्व केशश्च पीडां हरतु ते तमः॥
अनेक रूपवर्णैश्च शतशोथ सहस्त्रशः। उत्पातरूपो जगतः पीडां हरतु ते शिखी॥ (ब्रह्मकर्म समुच्चय)
आरोग्यं पद्मबन्धुर्वितरतु विपुलां संपदं शीतरश्मिः, भूलाभं भूमिपुत्रः सकलगुणयुतां वाग्विभूतिं च सौम्यः।
सौभाग्यं देवमन्त्री रिपुभयशमनं भार्गवः शौर्यमार्किः, दीर्घायुस्सैंहिकेयो विपुलतरयशः केतुराचन्द्रतारम्॥

शान्तिरस्तु शिवं ते अस्तु ग्रहाः कुर्वन्तु मङ्गलम्। अरिष्टानि प्रणश्यन्तु दुरितानि भयानि च। ॐ नवग्रहमण्डलस्थ देवताभ्यो नमः, प्रार्थनां समर्पयामि।

यहाँ पर नवग्रह पूजन समाप्त हुआ। मण्डप में कलशों का पूजन भी संपूर्ण हुआ।

षष्ठ दिन द्वितीय प्रहर

देह शुद्धि—ॐ स्योनास्मैं भव पृथिव्यनृक्षरा निवेशनी। यच्छांस्मै शर्मं सप्रथाः॥ (अथर्ववेद १८.२.१९)

इस मन्त्र से जल प्रोक्षण करने से भूमि शुद्ध होती है।

देह शुद्धि—ॐ या आपो याश्च देवता या विराड् ब्रह्मणा सह।
शरीरं ब्रह्म प्राविंशच्छरीरेऽधिं प्रजापंतिः॥ (अथर्ववेद ११.८.३०)

आचमन मन्त्र—ऋग्वेदाय स्वाहा। यजुर्वेदाय स्वाहा। सामवेदाय स्वाहा। (स्वाहा मन्त्र से जल पीना चाहिये।) अथर्ववेदाय नमः। इतिहास पुराणेभ्यो नमः। अग्नये नमः। वायवे नमः। प्राणाय नमः। सूर्याय नमः। चन्द्राय नमः। दिग्भ्यो नमः। इन्द्राय नमः। पृथिव्यै नमः। अन्तरिक्षाय नमः। दिवे नमः। ब्रह्मणे नमः। विष्णवे नमः। सदाशिवाय नमः। द्विराचम्य .. इस प्रक्रिया को दुबारा करना चाहिये।

पवित्र धारणम्— ॐ सुतासो मधुमत्तमाः सोमा इन्द्राय मन्दिनः। पवित्रवन्तो अक्षरन्देवान्गच्छन्तु वो मदाः॥ (अथर्ववेद २०.१३७.४)

ॐभूर्भुवः स्वः कहकर जल सिञ्चन करें॥ (इन मन्त्रों से पवित्र शुद्धिकर धारण करना चाहिये आसन के नीचे दो कुश डाल लेना चाहिये।)

प्राणायाम—प्रणवस्य परब्रह्म ऋषिः। दैवी गायत्री छन्दः। परमात्मा देवता। प्राणायामे विनियोगः।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योतीरसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवस्वरोम्। (ऋग्वेद ३.६२.१०)

(रेखङ्कित मन्त्र को तीन बार कुम्भक में जप करना चाहिये।)

आसन शुद्धि—ॐ स्योना पृथिवि भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथः।' *(१५ मन्त्र-२२ सूक्त-प्रथम मण्डल)* इस मन्त्र से जल प्रोक्षण करने से भूमि शुद्ध होती है।

शिखाबन्धनम्—

ऊर्ध्वकेशि विरूपाक्षि मांसशोणित भक्षणे। तिष्ठ देवि शिखाबन्धे चामुण्डे ह्यपराजिते॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

(इस मन्त्र से शिखाबन्धन करना चाहिये।)

महा संकल्प —..........

गुरु प्रार्थना —

नमो गुरुभ्यो गुरुपादुकाभ्यो नमः परेभ्यः परपादुकाभ्यः।
आचार्य सिद्धेश्वर पादुकाभ्यो नमोऽस्तु लक्ष्मीपति पादुकाभ्यः॥ *(शृङ्गेरी मठीय आचार्य प्रार्थनम्)*

श्री गुरु परमगुरु परमेष्ठी गुरु सद्गुरु पादुकाभ्यो नमो नमः। हम लोग ब्रह्मानन्दं गुरु तं नमानि। गुरु परम्परा को भी बोल सकते हैं। कर सकते हैं। हरौ रुष्टे गुरुस्त्राता गुरौ रुष्टे न कश्चन॥ ईश्वर के रुष्ट होने पर गुरुजी रक्षा करते हैं एवं गुरुजी के कुपित होने पर कोई भी रक्षक नहीं है।

भूतोच्चाटन मन्त्र—

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुविसंस्थिताः। ये भूता विघ्नकर्तारः ते गच्छन्तु शिवाज्ञया॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-आसन विधि प्रकरण)*
ॐ अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम्। सर्वेषामविरोधेन ब्रह्मकर्म समारभे॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-आसन विधि प्रकरण)*
ॐ तीक्ष्णदंष्ट्रमहाकाय कल्पान्ते दहनोपम। भैरवाय नमस्तुभ्यं अनुज्ञां दातुमर्हसि॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

इति भैरवं नमस्कृत्य। (इन मन्त्रों से भूतोच्चाटन कर भैरव जी से यज्ञ रक्षा की प्रार्थना करते हैं।)

गणपति प्रार्थना—ॐ इमा या ब्रह्मणस्पते विषूचीर्वात ईरते। सध्रीचीरिन्द्र ताः कृत्वा मह्यं शिवतमास्कृधि।

स्वस्ति नो अस्त्वभयं नो अस्तु नमोऽहोरात्राभ्यामस्तु॥ *(अथर्ववेद १९.८.६)* इन मन्त्रों से गणपति प्रार्थना कर पुष्पाक्षत छोड़ना चाहिये।

जल कलश पूजनम्—कलश में पूर्ण जल भरकर रखना चाहिये। फिर उसमें गन्ध अक्षत पुष्प कलश के अन्दर डालना चाहिये एवं बाहर भी चारों ओर लगाना चाहिये। गायत्री मन्त्र से तीन बार कलश छूकर जप करना चाहिये।

ॐ कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः। मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥
कुक्षौ तु सागरास्सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदस्सामवेदोह्यथर्वणः॥
अङ्गैश्चसहितास्सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः। अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा॥
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः। सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः॥
गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिंकुरु॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-देवपूजा प्रकरण)*
ॐ अप्सु ते राजन् वरुण गृहो हिरण्ययो मिथः। ततो धृतव्रतो राजा सर्वा धामानि मुञ्चतु॥ *(अथर्ववेद ७.८३.१)*
ॐ एमां कुमारस्तरुण आ वत्सो जगता सह। एमां परिस्रुतः कुम्भ आ दध्नः कलशैरगुः॥ *(अथर्ववेद ३.१२.७)*
श्री वरुण मूर्तये नमः।

(इन मन्त्रों को कलश छूकर पाठ करना चाहिये।)

सितमकरनिषण्णां शुभ्रवर्णां त्रिनेत्रां करधृत कलशोद्यत्पंकजाभीत्यभीष्टाम्।

विधि हरिहररूपां सेन्दुकोटीरचूडां भसितसितदुकूलां जाह्नवीं तां नमामि ॥ (स्मृति संग्रह)

(इस मन्त्र से कलश में गङ्गाजी का ध्यान करना चाहिये।)

आत्माराधनम्—हृदि स्थितं पंकजमष्टपत्रं सकेसरं कर्णिक मध्यनालं ॥
अङ्गुष्ठमात्रं मुनयो वदन्ति ध्यायेत् च विष्णुं पुरुषं पुराणम् ॥
हृदयकमलमध्ये सूर्यबिम्बासनस्थं सकलभुवनबीजं सृष्टिसंहारहेतुम्।
निरतिशयसुखात्म ज्योतिषं हंसरूपं परमपुरुषमाद्यं चिन्तयेदात्ममूर्तिम् ॥
आराधयामि मणि सन्निभमात्मलिङ्गम्। मायापुरीरहृदय पंकज सन्निविष्टम् ॥
श्रद्धा नदी विमलचित्त जलभिषेकै। र्नित्यं समाधि कुसुमैर्न पुनर्भवाय ॥
देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो हंसः सदाशिवः। त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत् ॥
स्वामिन् सर्व जगन्नाथ यावत्पूजावसानकम्। तावत् त्वं प्रीति भावेन बिम्बेस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥ (देवपूजा)

ॐआत्मने नमः। ॐअन्तरात्मने नमः। ॐपरमात्मने नमः। ॐज्ञानात्मने नमः। आत्मपूजां समर्पयामि। इससे आत्मशुद्धि होती है। (इन मन्त्रों को कहकर अपने सिर पर अक्षत डाल लेवें।)

हवन कुण्ड में

स्थंडिल शुद्धिः—तद् गोमयेन प्रदक्षिणामुपलिप्य दक्षिणे उदीच्यां द्वे, प्रतीच्यां चतुः, प्राच्यामर्ध इत्यंगुलानित्यक्त्वा दक्षिणोपक्रमां उदक्संस्थां प्रादेशमात्रां एकां लेखां तस्या दक्षिणोत्तरयोः प्रागायते पूर्वरेखया असंसृष्टे प्रादेशसंमिते

द्वे लेखे लिखित्वा तयोर्मध्ये परस्परं असंसृष्टाः उदक्संस्थाः प्रागायताः प्रादेश संमिताः तिस्रः इति षड्लेखाः यज्ञीय शकलमूलेन दक्षिण हस्तेन उल्लिख्य लेखासु तच्छकलं उदगग्रं निधाय स्तंडिलं अद्भिः अभ्युक्ष्य शकलं भंक्त्वा आग्नेय्यां निरस्य पाणिं प्रक्षाल्य वाग्यतः भवेत्।

स्थण्डिल को पहले गोमय से लेपना चाहिये। स्थण्डिल (वेदी) में दक्षिण में आठ अंगुल, उत्तर में दो अंगुल, पश्चिम में चार अंगुल, पूर्व में आधा अंगुल छोड़कर दक्षिण से प्रारम्भकर उत्तर में समाप्त हो ऐसे १२ अंगुल चौक बनाना चाहिये। फिर बीच में दक्षिण से उत्तर एक रेखा खींचना चाहिये। १२ अंगुल फिर दक्षिण से प्रारम्भ कर एक दक्षिण में एवं एक उत्तर में दो रेखायें पश्चिम से पूर्व की ओर खीचें १२ अंगुल बी फिर दक्षिण से प्रारम्भकर दक्षिण में समाप्त होने वाले पश्चिम से पूर्व में समाप्त होने वाले तीन रेखायें। (१२ अंगुल) खीचें। (प्रादेश प्रमाण-लगभग १२ अंगुल) (ब) इसे यज्ञ में प्रयुक्त अश्वत्थादि समित् के अग्रभाग से इन लकीरों को खीचना चाहिये। दाहिने हाथ से लिखें। (रेत पर) खीचने वाले समित् को उसके ऊपर उत्तर उत्तराभिमुख रखें। फिर स्थण्डिल (stage) को जल से अभ्युक्षण करना चाहिये। (अभ्युक्षण मतलब मुष्टि में जल लेकर सिञ्चन करना चाहिये।) फिर उस समित् को (लकीर खीचें) तोडकर आग्नेय दिशा में फेंककर हाथ धो लेना चाहिये।

त्वं भूमित्येष्योजसा त्वं वेद्यां सीदसि चारुरध्वरे। त्वां पवित्रमृषयो भरन्तस्त्वं पुनीहि दुरितान्यस्म॥

दिति पवित्रे अन्तर्धाय हविर्निर्वपति (इस वाक्य से चरुपात्र में दो कुशा डालें फिर अक्षत की कटोरी हाथ में लें उसमें से प्रत्येक देवता के नाम से दो-दो दाना चरु पात्र में डालते जायें —मुठ्ठी-मुठ्ठी भर प्रत्येक देताओं के नाम से निकालना चाहिए ये नियम है।) देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यामग्नये जुष्टं निर्वपामीति (आदित्याय जुष्टम निर्वपामि, चन्द्राय अङ्गारकाय, बुधाय, बृहस्पतये, शुक्राय, शनिश्चराय, राहवे, केतवे, विनाकाय, दुर्गायै, क्षेत्रपालाय, वायवे, आकाशाय, अश्विनभ्यां, इन्द्राय, अग्नेयै, यमाय, नैर्ऋतये, वरुणाय, वायवे, सोमाय, इशानाय, विष्णवे जुष्टं निर्वपामि एवं जुष्टं प्रोक्षामि

कुशा लेकर के जल पात्र से चरुपात्र में प्रोक्षण करें)

परित्वाग्ने पुरं वयमिति त्रिः पर्यग्नि करोति। (इस मन्त्र से ३ बार अग्नि कुण्ड की पूर्व दिशा से जल घुमाकर पूर्व दिशा तक ही प्रदक्षिणा करें)

परिं त्वाग्ने पुरं वयं विप्रं सहस्य धीमहि। धृषद् वर्णं दिवेदिवे हन्तारं भङ्गुरावंतः॥ त्रिः पर्यग्नि करोति।

अग्निं अर्चयेत—अग्नेर्मन्वे प्रथमस्य प्रचेतसः पाञ्चजन्यस्य बहुधा यमिन्धते।
विशोविशः प्रविशिवांसमीमहे स नो मुञ्चत्वंहसः॥
यथा हव्यं वहसि जातवेदो यथा यज्ञं कल्पयसि प्रजानन्। एवा देवभ्यः सुमतिं न आ वह स नो मुञ्चत्वंहसः॥
यामन्यामन्नुपयुक्तं वहिष्ठं कर्मन्कर्मन्नाभगम्। अग्निमीडे रक्षोहणं यज्ञवृधं घृताहुतं स नो मुञ्चत्वंहसः॥
सुजातं जातवेदसमग्निं वैश्वानरं विभुम। हव्यवाहं हवामहे स नो मुञ्चत्वंहसः॥
येन ऋषयो बलमद्योतयन् युजा येनासुराणामयुवन्त मायाः। येनाग्निना पणीनिन्द्रो जिगाय स नो मुञ्चत्वंहसः॥
येन देवा अमृतमन्वविन्दन् येनौषधीर्मधुमतीरकृण्वन्। येन देवाः स्वश्राभरन्त्स नो मुञ्चत्वंहसः॥
यस्येदं प्रदिशि यद् विरोचते यज्जातं जनितव्यं च केवलम्। स्तौम्यग्निं नाथितो जोहवीमि स नो मुञ्चत्वंहसः॥

(अथर्ववेद .४.२३.१-७)

इन मंत्रों को बोल करके अग्नि देवता का ध्यान एवं पञ्चोपचार पूजन करना चाहिए।

अग्निमूर्तिध्यान—ॐ चत्वारि शृङ्गास्त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य।
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महोदेवो मर्त्यां आविवेश॥ *(गोपथ ब्राह्मण १.१६)*

सप्तहस्तश्चतुः शृंगः सप्तजिह्वो द्विशीर्षकः। त्रिपात्प्रसन्नवदनः सुखासीनः सुचिस्मितः॥
स्वाहांतुदक्षिणेपार्श्वे देवीं वामेस्वधां तथा। बिभ्रद्दक्षिण हस्तैस्तु शक्तिमन्नंस्त्रुचं स्त्रुवं॥
तोमरंव्यजनंवामैर्घृतपात्रं च धारयन्। मेषारूढो जटाबद्ध गौरवर्णो महौजसः।
धूम्रध्वजो लोहिताक्षः सप्तार्चिः सर्वकामदः॥ आत्माभिमुखमासीन एवं रूपो हुताशनः। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय-अग्निमुख प्रकरण)*

हे अग्ने शाण्डिल्यगोत्र मेषारूढ वैश्वानर प्राङ्मुखः सन् ममाभिमुखो वरदस्सुप्रसन्नो भव। अष्टदिशी अग्निं अर्च्येत्। ॐ पूर्वे अग्नये नमः ॐ आग्नेयां अग्नये नमः ॐ दक्षिणे अग्नये नमः ॐ नैर्ऋत्यां अग्नये नमः ॐ पश्चिमे अग्नये नमः ॐ वायव्ये अग्नये नमः ॐ उत्तरे अग्नये नमः ॐ ऐशान्ये अग्नये नमः ॐ मध्ये यज्ञ पुरुषाय नमः॥ उत्तरतोऽग्नेरुपसादयतीध्मम्। (इस वाक्य से १५ लकड़ी के गाठ को इध्मा कहते हैं कुण्ड के उत्तर दिशा में नीचे कुशा का आसन विछाकर उसके ऊपर इध्मा रख दें एवं उसी के उत्तर में बर्हिः मुठ्ठी भर कुशा को बर्हिः कहते हैं) उत्तर बर्हिः। अग्नये त्वा जुष्टं प्रोक्षामीतीध्मम्। (इस वाक्य से इध्मा को प्रोक्षण करें एवं बर्हिः को भी प्रोक्षण करें) पृथिव्या प्रोक्षामि इति बर्हिः। (इस वाक्य को बोल करके मुठ्ठी भर कुशाओं को जहां घी का पात्र रखा जाता है वहां पर दक्षिण से लेकर उत्तर तक विछाना है) दर्भमुष्टिमभ्युक्ष्य पश्चादग्नेः प्रागग्रं निदधात्यूर्णम्रदं प्रथस्व स्वासस्थं देवम्य इति। दर्भाणामपादाय (बड़ा वाला कुशा लेकर करके ब्रह्मा के आसन को स्पर्श करें नियम ये है कि ब्रह्मा जी का आसन अग्नि कुण्ड के दक्षिण दिशा में देना चाहिए ऋषीणां इस मन्त्र को बोले) ऋषीणां प्रस्तरोऽसीति दक्षिणतो ऽग्नेर्ब्रह्मासनं निदधाति।

ऋषीणां प्रस्तरोऽसि नमोऽस्तु दैवाय प्रस्तराय।

पुरस्तादग्रास्तार्य तेषां मूलान्यपरेषां प्रान्तैरवछादयन्परिसर्पति दक्षिणेनाग्निमा पश्चार्धात्। परि स्तृणीहीति संप्रेष्यति।

(यहां पर जो आगे वाक्य लिखा है उस वाक्य को बोलते हुए इस्तीर्ण वशिष्ठ कुशा लेकर के पहले पूर्व दिशा में डाले जिसका मूल भाग दक्षिण दिशा

की ओर होना चाहिए एवं अग्र भाग उत्तर दिशा की ओर होना चाहिए इसी तरह से पश्चिम दिशा में डाले फिर मूल भाग पश्चिम दिशा को एवं अग्र भाग पूर्व दिशा की ओर होना चाहिए इसी तरह उत्तर दिशा में भी डालें **नोट**—अग्र भाग पूर्व एवं उत्तर की ओर होना चाहिए एवं मूल भाग दक्षिण एवं पश्चिम की ओर होना चाहिए) पुरस्तादग्नेरास्तीर्य तेषां मूलान्यपरेषां प्रान्तैरवछादयन्परिसर्पति (इन वाक्यों से स्तीर्य को स्पर्श करें) दक्षिणेनाग्निमा पश्चार्धात् । परि स्तृणीहीति संप्रेष्यति।

परिस्तृणीहिपरिं धेहि वेदिंमा जामिं मोंषीरमुया शयानाम्। होतृषदंनं हरिंतं हिरण्ययं निष्का एते यजमानस्य लोके॥

(देवस्यत्वा इस मंन्त्र से स्तीर्ण को प्रोक्षण करें)

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यांप्रसूतः प्रशिषा परिस्तृणामीति।

स्तीर्णं प्रोक्षति (हवि को प्रोक्षण करें) हविषां त्वा जुष्टं प्रोक्षामीति। (दो कुशा लेकर के अग्नि में जलाकर घी पात्र के अन्दर ३ परिक्रमा करें उसके बाद कुशा को अग्नि कुण्ड के अन्दर डाल दें।) विलीनपूतमाज्यं गृहीत्वाधिश्रृत्य पर्यग्नि कृत्वो (इस वाक्य से उत्तर की ओर घी पात्र को किंचित खिंचना है।) दगुद्वास्य पश्चाद्ग्नेरुपसाद्योदगग्राभ्यांपवित्राभ्यामुत्पुनाति। (दो कुशा को लेकर अनामिका एवं अंगुष्ठ के बीच में दबा कर घी पात्र के अन्दर ४ बार चलायें यह प्रक्रिया पूरी होने के बाद अग्नि कुण्ड में कुशा को डाल दें।)

विष्णोर्मनसा पूतमसि। देवस्त्वा सवितोत्पुनातु। अछिद्रेण त्वा पवित्रेण शतधारेण सहस्त्रधारेण सुप्वोत्पुनामीति

तृतीयम्। तूष्णीं चतुर्थम्। (इस वाक्य को पढ़कर श्रुवा से दो बार घी चरु पात्र में डालें।) शृतं हविरभिघारयति मध्वा समञ्जन्घृतवत्कराथेति।

अभिघार्योदञ्चमुद्वासयत्युद्वासयाग्रे: (इस वाक्य को पढ़कर चरु पात्र को उत्तर दिशा की ओर खिचें।)

अदारसृद् भवतु देव सोमास्मिन् यज्ञे मंरुतो मृडतां नः। मा नों विददभिभा मो अशंस्तिर्मा नों विदद् वृजिना द्वेष्या या॥

(इस मन्त्र से घी पात्र के दायें एवं बायें हाथ फैला करके घी को देखें) श्रृतमर्क हव्यमा सीद पृष्ठममृतस्य धामेति। पश्चादाज्यस्य निधायालंकृत्य समानेनोत्पुनाति। अदारसृदित्यवेक्षते। उत्तिष्ठतेत्यैन्द्रम्। (३ समीधा हाथ में लेकर के अग्नि को दिखाकर के घी पात्र के बायीं तरफ रख दें।)

अग्निर्भूम्यामोषधीष्वग्निमापो बिभ्रत्यग्निरश्मसु। अग्निरन्तः पुरुषेषु गोष्वश्वेष्वग्नयः॥

अग्निर्भूम्यामिति तिसृभिरुपसमादधात्यस्मै क्षत्राण्येतमिध्ममिति वा।

युनज्मि त्वा ब्रह्मणा दैव्येन हव्यायास्मै वोढवे जातवेदः। इन्धानास्त्वा सुप्रजसः सुवीर ज्योग्जीवेम बलिहृतो वयं त

इति। (इस वाक्य को पढ़कर के कुण्ड के नैर्ऋत्य एवं दक्षिण के मध्य में खाली जल पात्र को स्पर्श करके अभी मन्त्रीत करें।) दक्षिणतो जाङ्मायनमुदपात्रमुपसाद्याभिमन्त्रयते तथोदपात्रं धारय यथाग्रे ब्रह्मणस्पतिः। सत्यधर्मा अदीधरद्देवस्य सवितुः सव इति।

अथोदकमासिञ्चति—(नीचे लिखे हुए मन्त्र को पढ़कर के जल पात्र में जलधारा डालें।)

इहेत देवीरमृतं वसाना हिरण्यवर्णा अनवद्यरूपाः। आपः समुद्रो वरुणश्च राजा संपातभागान्हविषो जुषन्ताम्। इन्द्रप्रशिष्टा वरुणप्रसूता अपः समुद्राद्दिवमुद्वहन्तु। इन्द्रप्रशिष्टा वरुणप्रसूता दिवस्पृथिव्याः श्रियमा वहन्त्विति।

(इस वाक्य को पढ़कर के हवि आज्यादि पर एवं सामाग्रीयों पर प्रोक्षण करें) अतं त्वा सत्येन परिषिञ्चामि जातवेद इति सह हविर्भिः पर्युक्ष्य (मंत्र को पढ़कर के ४ बार आचमन करें मन्त्र आगे है)

जीवा स्थ जीव्यासं सर्वमायुर्जीव्यासम्। उपजीवा स्थोप जीव्यासं सर्वमायुर्जीव्यासम्।
संजीवा स्थ सं जीव्यासं सर्वमायुर्जीव्यासम्। जीवला स्थ जीव्यासं सर्वमायुर्जीव्यासम्।

जीवाभिराचम्योपोत्थाय (आगे दिये गये वाक्य से वेद भगवान एवं यज्ञ पुरुष को प्रणाम करें) वेद प्रपद्भिः प्रपद्यत

ॐ प्रपद्ये भूः प्रपद्ये भुवः प्रपद्ये स्वः प्रपद्ये जनत्प्रपद्य इति।

प्रपद्य (आगे वाक्य को पढ़कर यजमान अपने आसन के नीचे दो कुशा डालें) पश्चात्स्तीर्णस्य दर्भानास्तीर्यहि दैधिषव्योदतस्तिष्ठा (आगे वाक्य को पढ़कर के ब्रह्मासन को देखना चाहिए एवं बड़े कुशा से ब्रह्मा जी को स्पर्श करें) न्यस्य सदने सीद यो ऽस्मत्पाकतर इति ब्रह्मासनमन्वीक्षते। (आगे वाक्य को पढ़कर के बह्माजी के आसन के नीचे कुशा का आसन है उसमें से दक्षिण कुशा निकाल करके नैर्ऋत्य दिशा की ओर फेंक दें) निरस्तः पराग्वसुः सह पाप्मना निरस्तः सो ऽस्तु यो ऽस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्म इति दक्षिणा तृणं निरस्यति। (इस वाक्य को पढ़कर के एवं आगे मन्त्र दिया गया है विमृग्वरी इस मन्त्र को पढ़ते हुए ब्रह्मासन कुशा से स्पर्श करें) तदन्वालभ्य जपतीदमहमर्वाग्वसोः सदने सीदाम्यृतस्य सदने सीदामि सत्यस्य सदने सीदामीष्टस्य सदने सीदामि पूर्तस्य सदने सीदामि मामृषदेव बर्हिः स्वासस्थं त्वाध्यासदेयमूर्णाम्रदमनभिशोकम्।

वि॒मृग्व॑रीं पृथि॒वीमा व॑दामि क्ष॒मां भूमिं॒ ब्रह्म॑णा वावृधा॒नाम्। ऊर्जं॑ पुष्टं॑ बिभ्र॑तीमन्नभा॒गं घृ॒तं त्वा॒भि नि षीं॑देम भूमे॥

मित्युपविश्यासनीयं ब्रह्मजपं जपति (आगे इस वाक्य को पढ़कर के अपने आसन को पकडकर अभिमन्त्रित करें) बृहस्पतिर्ब्रह्मा ब्रहमसदन आसिष्ये बृहस्पते यज्ञं गोपाय यदुदुद्वत उन्निवतः शकेयमिति। (आगे लिखे हुए वाक्य से यजमान अपने दक्षिण हाथ में दो कुशा लेकर के अंगुली में लपेट लें एवं बायें हाथ में श्रुवा लें मूल भाग से लेकर अग्र भाग होते हुए मूल भाग तक ३ बार परिक्रमा करने के उपरान्त कुशा एवं श्रुवा सहित अग्नि में तपायें फिर हाथ में लिपटा हुआ कुशा अग्नि कुण्ड में डाल दें) दर्भैः स्रुवं निर्मृज्य निष्टप्तं रक्षो निष्टप्ता अरातयः प्रत्युष्टं रक्षः प्रत्युष्टा अरातय इति प्रतप्य।

मूले स्रुवं गृहीत्वा जपति विष्णोर्हस्तो ऽसि दक्षिणः पूष्णा दत्तो बृहस्पतेः तं त्वाहं स्रुवमाददे देवानां हव्यवाहनम्। अयं स्रुवो वि दधाति होमाञ्छताक्षरछन्दसा जागतेन। (मूल भाग में श्रुवा को पकड़े इसके उपरान्त वाक्य रुपी मंत्र को बोलते हुये श्रुवा को चार बार स्थानांतरण करें)

सर्वा यज्ञस्य समनक्ति विष्ठा बार्हस्पत्येष्टिः शर्मणा दैव्येनेति। ओं भूः शं भूत्यै त्वा गृह्णे भूतय इति प्रथमं ग्रहं गृह्णाति। ओं भुवः शं पुष्ट्यै त्वा गृह्णे पुष्टय

इति द्वितीयम्। ओं स्वः शं त्वा गृह्णे सहस्रपोषायेति तृतीयम्। ओं जनच्छं त्वा गृह्णे ऽपरिमितपोषायेति चतुर्थम्। राजकर्माभिचारिकेष्वमुष्य त्वा प्राणाय गृह्णे ऽपानाय व्यानाय समानायोदानायेति पञ्चमम्। अग्नावग्निर्हृदा पूतं पुरस्ताद्युक्तो यज्ञस्य चक्षुरिति जुहोति। (इन चार मंत्रो को पढ़ते हुये श्रुवा से चार बार घी की आहूति दें यज्ञ कुण्ड के मध्य में दें।)

ॐ अग्नावग्निश्चरति प्रविष्ट ऋषीणां पुत्रो अभिशस्तिपा उ।
नमस्कारेण नमसा ते जुहोमि मा देवानां मिथुया कर्म भागम् स्वाहा
हृदा पूतं मनसा जातवेदो विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
सप्तास्यानि तव जातवेदस्तेभ्यो जुहोमि स जुषस्व हव्यम् स्वाहा
पुरस्ताद् युक्तो वह जातवेदोऽग्ने विद्धि क्रियमाणं यथेदम्।
त्वं भिषग् भेषजस्यासि कर्ता त्वया गामश्वं पुरुषं सनेम स्वाहा
यज्ञस्य चक्षुः प्रभृतिर्मुखं च वाचा श्रोत्रेण मनसा जुहोमि।
इमं यज्ञं विततं विश्वकर्मणा देवा यन्तु सुमनस्यमानाः स्वाहा।

पश्चादग्नेर्मध्यदेशे समानत्र पुरस्ताद्धोमान्। दक्षिणेनाग्निमुदपात्र आज्याहुतीनां संपातानानयति। पुरस्ताद्धोम आज्यभागः संस्थितहोमः समृद्धिः शान्तानामिति। एतावाज्यभागौ।

वृष्णो बृहते स्वर्विदे अग्नये शुल्कं हरामि त्विषीमते। स न स्थिरान्बलवतः कृणोतु ज्योक्च नो जीवातवे दधात्वग्नये स्वाहे त्युत्तरपूर्वार्ध आग्नेयमाज्यभागं जुहोति। (इस वाक्य रुपी मंत्र को पढ़कर के पूर्व एवं उत्तर के मध्य ईशान दिशा के बीचो बीच में घी की आहूति दें) दक्षिणपूर्वार्ध

सोमाय— त्वं सोम दिव्यो नृचक्षाः सुगाँ अस्मभ्यं पथो अनु ख्यः। अभि नो गोत्रं विदुष इव नेषो ऽछा नो वाचमुशंती जिगासि सोमाय स्वाहेति। (दक्षिण पूर्व के बीचो बीच अग्नेय कोण में घी की आहूति दें यह भी ध्यान दें कि ये आहूतियां यज्ञ की नेत्र मानी जाती है ये समझ कर आहूतियां दें) मध्ये हविः। उपस्तीर्याज्यं संहताभ्यामङ्गुलिभ्यां द्विर्हविषो ऽवद्यति मध्यात्पूर्वार्धाच्च। अवत्तमभिघार्य द्विर्हविः प्रत्यभिघारयति। (इस वाक्य को पढ़कर के श्रुवा से घी लेकर के दो बार श्रुक में डालें इसके उपरान्त चरु पात्र के अन्दर से चरु निकालना हैं मध्य एवं पूर्वाध से ये चरु श्रुक में रखे फिर श्रुवा से दो बार जहां से चरु निकाला गया है उसी स्थान पर घी डालें फिर श्रुवा से दोबारा दो बार श्रुक में घी डालें) यतोयतो ऽवद्यति तदनुपूर्वम्। एवं सर्वाण्यवदानानि । अन्यत्र सौविष्टकृतात्।

ॐ उदेंनमुत्तरं नयाग्ने घृतेनाहुत। समेंनं वर्चसा सृज प्रजयां च बहुं कृधि स्वाहा

उदेनमुत्तरं नयेति पुरस्तादधोमसंहतां पूर्वाम्। एवं पूर्वांपूर्वां संहतां जुहोति। स्वाहान्ताभिः प्रत्यृचं होमाः। (इस मंत्र को बोल करके यजमान श्रुक वाली आहूति हवन कुण्ड के मध्य में छोड़ दे फिर सभी पंडित मिलकर के नवग्रह क्रतु साद्‌गुण्य क्रतु संरक्षक एवं प्रधान देवता श्री विष्णु का हवन करें)

नवग्रह होमः

प्रधान देवता सूर्य होमः—प्रधान देवता आदित्य प्रीत्यर्थे अर्कसमित्, आज्य, चरु होमे विनियोगः।

ॐ उच्चा पतंन्तमरुणं सुंपर्णं मध्यें दिवस्तरणिं भ्राजंमानम्।
पश्यांम त्वा सवितारं यमाहुरजंस्त्रं ज्योतिर्यदविन्दुदत्रिंः स्वाहां॥

आदित्यायेदं न मम। २८ बार इस मंत्र से अर्क सहित घी एवं चरु से होम यह संख्या ८ या २८ या १०८ बार कर सकते हैं।

दिवाकरं दीप्त सहस्त्ररश्मिं तेजोमयं जगतः कर्मसाक्षिम्। अंशुं भानुं सूर्यमादिं ग्रहाणां दिवाकरं सदा शरणमहं प्रपद्ये।।

आदित्याय नमः।

प्रधान देवता सोम होमः—प्रधान देवता चन्द्रप्रीत्यर्थे पलाश समित्, आज्य, चरु होम विनियोगः।

ॐ सुतासो मधुमत्तमाः सोमा इन्द्राय मन्दिनः। पवित्रवन्तो अक्षरन्देवानगच्छन्तु वो मदाः स्वाहा।।

सोमाय इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से पलाश सहित घी एवं चरु से होम करें।

प्रार्थना— यः कालहेतोः क्षयवृद्धिमेति यं देवताः पितरश्चापिबन्ति तं वै वरेण्यं ब्रह्मेन्द्रवन्द्यं चन्द्रं सदा शरणमहं प्रपद्ये।।

चन्द्राय नमः।

प्रधान देवता अङ्गारक होमः—प्रधान देवता अङ्गारक प्रीत्यर्थे खदिरसमित आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ अग्निर्वासाः पृथिव्यं सितज्ञूस्त्विषीमन्तं संशितं मा कृणोतु स्वाहा।

अङ्गारकाय इदं न मम। २८ बार इस मंत्र में खदिर समित्, घी एवं चरु से होम करें।

प्रार्थना— महेश्वरस्याननस्वेदबिन्दोर्भूमौ जातं रक्तमालांबराढ्यं। सुरश्मिणं लोहिताङ्गं कुमारमङ्गारकं सदा शरणमहं प्रपद्ये।।

अङ्गारकाय नमः।

प्रधान देवता बुध होमः—प्रधान देवता बुध प्रीत्यर्थे अपामार्ग समित्, आज्य, चरु होमे विनियोगः।

ॐ कपृन्नरः कपृथमुद्दधातन चोदयत खुदत वाजसातये।

निष्टिग्र्यः पुत्रमा च्यावयोतय इन्द्रं सबाध इह सोमपीतये स्वाहा।

बुधाय इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से अपामार्ग समित्, घी एवं चरु से होम करें।

प्रार्थना— **उत्पातरूपो जगतां चन्द्रपुत्रो महाद्युतिः। सूर्य प्रियकरो विद्वान् पीडां दहतु मे बुधः॥** ॐ बुधाय नमः।

प्रधान देवता बृहस्पति होमः—प्रधान देवता बृहस्पति प्रीत्यर्थे पिप्ल समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ बृहस्पतिर्नः परि पातु पश्चादुतोत्तरस्मादधरादघायोः।

इन्द्रः पुरस्तादुत मध्यतो नः सखा सखिभ्यो वरीयः कृणोतु स्वाहा॥ *(ऋग्वेद १०.४२.११)*

बृहस्पतये इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से पिप्ल समित्, घी एवं चरु से होम करें।

प्रार्थना— **बुध्यात्मनो यस्य न कश्चिदन्यो मतिं देवा उपजीवंति यस्य। प्रजापते रात्मजं धर्मनिष्ठं गुरुं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥**

ॐ गुरुवे नमः।

प्रधान देवता शुक्र होमः—प्रधान देवता शुक्रग्रह प्रीत्यर्थे औदुम्बर समित्, आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ द्यौश्च म इदं पृथिवी च प्रचेतसौ शुक्रो बृहन् दक्षिणाया पितर्तु।

अनु स्वधा चिकितां सोमो अग्निर्वायुर्नः पातु सविता भगश्च स्वाहा।

शुक्राय इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से औदुम्बर समित्, घी एवं चरु से हाम करें।

प्रार्थना— **वर्षप्रदं चिन्तितार्थानुकूलं मौनाद्विशिष्टं सुनयोमपन्नम्। तं भार्गवं योगविशुद्धसत्वं शुक्रं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥**

ॐ शुक्राय नमः।

प्रधान देवता शनैश्चर होमः—प्रधान देवता शनैश्चर प्रीत्यर्थे शमी समित्, आज्य, चरु होमे विनियोगः।

ॐ शं नो वातो वातु शं नस्तपतु सूर्यः।

अहानि शं भवन्तु नः शं रात्री प्रति धीयतां शमुषा नो व्युच्छत स्वाहा।

शनैश्चराय इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से शमी समित्, घी एवं चरु से होम करें।

प्रार्थना— शनैश्चरो राशितो राशिमेति शनैर्भोगो गमनं चेष्टितं च। सूर्यात्मजं क्रोधनं सुप्रसन्नं शनैश्चरं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

ॐ शनैश्चराय नमः।

प्रधान देवता राहु होम—प्रधान देवता राहु प्रीत्यर्थे दूर्वासमित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ कयानश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता स्वाहा॥ *(अथर्ववेद २०.१२४.१)*

राहवे इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से दूर्वा समित्, घी एवं चरु से होम करें।

प्रार्थना— यो विष्णुनैवामृतं भोक्ष्यमाणः छित्वाशिरो ग्रहभावे नियुक्तः। यश्चन्द्रसूर्यौ ग्रसते पर्व काले राहुं सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

ॐ राहवे नमः।

प्रधान देवता केतु होमः—प्रधान देवता केतु प्रीत्यर्थे कुश समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः स्वाहा॥

केतवे इदं न मम। २८ बार इस मंत्र से कुश समित्, घी एवं चरु से होम करें।

प्रार्थना—हे ब्रह्मपुत्रा ब्रह्मसमानवक्त्राः ब्रह्मोद्भवाः ब्रह्मसमाः कुमाराः।
ब्रह्मोत्तमा वरदा जामदग्न्याः केतून् सदा शरणमहं प्रपद्ये॥

ॐ केतवे नमः। यहाँ पर नवग्रह होम संपन्न हुआ। आगे छः कर्म साद्गुण्य देवता होम होगा।

कर्म साद्गुण्य देवता विनायक होमः-१— क्रतु साद्गुण्यदेवता विनायक प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ यस्य॑ कु॒र्मो ह॒विर्गृ॒हे तम॑ग्ने वर्धया॒ त्वम्। तस्मै॑ सोमो॒ अधि॑ ब्रवद॒यं ब्रह्म॑ण॒स्पति॒ः स्वाहा॑।

कर्म सादगुण्यदेवतायै विनायकाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

कर्म साद्गुण्यदेवता दुर्गा होमः-२—क्रतुसाद्गुण्यदेवता दुर्गा प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ दे॒वाना॒ं पत्नी॑रुश॒तीर॑वन्तु न॒ः प्राव॑न्तु नस्तु॒जये॒ वाज॑सातये।
याः पार्थि॑वासो॒ या अ॒पामपि॑ व्र॒ते ता नो॑ देवीः सु॒हवा॒ः शर्म॑ यच्छन्तु॒ स्वाहा॑॥

क्रतु साद्गुण्य देवतायै दुर्गायै इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

कर्म साद्गुण्यदेवता क्षेत्रपाल होमः-३—चरु होमे विनियोगः।

ॐ मधु॑मती॒रोष॑धी॒र्द्याव॒ आपो॒ मधु॑मन्नो भवत्व॒न्तरि॑क्षम्।
क्षेत्र॑स्य॒ पति॒र्मधु॑मान्नो अ॒स्त्वरि॑ष्यन्तो॒ अन्वे॑नं चरेम॒ स्वाहा॑।

क्रतु साद्गुण्य देवतायै क्षेत्रपालाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

कर्म साद्गुण्य देवता वायु होमः-४—क्रतु साद्गुण्य देवता वायु प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ वायोः पूतः पवित्रेण प्रत्यङ् सोमो अति द्रुतः। इन्द्रस्य युज्यः सखा स्वाहा॥

क्रतु साद्गुण्य देवतायै वायवे इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

कर्म साद्गुण्य देवता आकाश होमः-५—क्रतु साद्गुण्य देवता आकाश प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ आशानामाशापालेभ्यश्चतुर्भ्यो अमृतेभ्यः। इदं भूतस्याध्यक्षेभ्यो विधेम हविषा वयम् स्वाहा॥

क्रतु साद्गुण्यदेवतायै आकाशाय इदं न मम। इस मंत्र से तीन बार होम करें।

कर्म साद्गुण्य देवता अश्विनी देवता होमः-६—अश्वि प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ यदुन्तरिक्षे यद्दिवि यत्पञ्च मानुषाँ अनु। नृम्णं तद्धत्तमश्विना स्वाहा॥

क्रतु साद्गुण्य देवतायै अश्विभ्यां इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता इन्द्र होमः—क्रतु संरक्षक देवता इन्द्र प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ इन्द्रं त्वा वृषभं वयं सुते सोमे हवामहे। स पाहि मध्वो अन्धसः स्वाहा॥

क्रतु संरक्षक देवतायै इन्द्राय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता अग्नि होमः—क्रतु संरक्षक देवता अग्नि प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम्। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् स्वाहा॥

क्रतु संरक्षक देवतौ अग्नय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता यम होमः—क्रतु संरक्षक देवता यम प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ यमाय सोमः पवते यमायं क्रियते हविः। यमं ह यज्ञो गच्छत्यग्निदूंतो अरंकृतः स्वाहा॥

क्रतु संरक्षक देवतायै यमाय इदं न मम। इस मंत्र को दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता निर्ऋति होमः—क्रतु संरक्षक देवता निर्ऋति प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ यत् ते देवी निर्ऋतिराबबन्ध दामं ग्रीवास्वंमिोक्यं यत्।
तत् ते वि ष्याम्यायुषे वर्चसे बलायादोमदमन्नमद्धि प्रसूतः स्वाहा॥

क्रतु संरक्षक देवतायै निर्ऋतये इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता वरुण होमः—क्रतु संरक्षक देवता वरुण प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ अप्सु ते राजन् वरुण गृहो हिरण्ययो मिथः। ततो धृतव्रतो राजा सर्वा धामानि मुञ्चतु स्वाहा॥

क्रतु संरक्षक देवतायै वरुणाय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता वायु होमः—क्रतु संरक्षक देवता वायु प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ गोसनिं वाचमुदेयं वर्चसा माभ्युदिहि। आ रुन्धां सर्वतो वायुस्त्वष्टा पोषं दधातु मे स्वाहा॥

क्रतु संरक्षक देवतायै वायवे इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता सोम होम—क्रतु संरक्षक देवता सोम प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ अभि त्यं देवं सवितारमोण्योः कविक्रतुम्। अर्चामि सत्यसवं रत्नधामभि प्रियं मतिम् स्वाहा॥

क्रतु संरक्षक देवतायै सोमाय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें।

क्रतु संरक्षक देवता ईशान होमः—क्रतु संरक्षक देवता ईशान प्रीत्यर्थे समित् आज्य चरु होमे विनियोगः।

ॐ मा नो मर्ता अभि द्रुहन् तनूनामिन्द्र गिर्वणः। ईशानो यवया वधम् स्वाहा॥

क्रतु संरक्षक देवतायै ईशानाय इदं न मम। इस मंत्र से दो बार होम करें। यहाँ पर क्रतु संरक्षक देवता होम संपन्न हुआ।

व्याहृति होमः—व्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापतिः बृहती व्याहृति होमे विनियोगः। ॐभूः स्वाहा, अग्नये इदं न मम। ॐभुवः स्वाहा,वायवे इदं न मम। ॐस्वः स्वाहा, सूर्याय इदं न मम। ॐभूर्भुवः स्वः स्वाहा, प्रजापतये इदं न मम। इन मत्रों से एक बार होम करें।

प्रधान देवता विष्णु होमः—विष्णु प्रीत्यर्थे चरु होमे विनियोगः।

ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदा। समूढमस्य पांसुरे स्वाहा। (अथर्ववेद ७.२६.४)

विष्णाव इदं न मम। इस मंत्र से १०८ बार, २१६ बार, ३१४ बार होम कर सकते हैं। ॐविष्णावे स्वाहा, विष्णाव इदं न मम। ॐसर्वभूतपतये स्वाहा, सर्वभूतपतय इदं न मम। ॐचक्रपाणये स्वाहा, चक्रपाणये इदं न मम। ॐईश्वराय स्वाहा, ईश्वराय इदं न मम। ॐसर्वोत्पातशमनाय स्वाहा, सवोत्पातशमनाय इदं न मम। प्रधान देवता के होम के बाद इन पॉच मंत्रों से घी की आहूति एक-एक बार देवें।

प्रायश्चित आहूतिया— प्रधान यजमान घृत की आहूति करें।

आकूत्यै त्वा स्वाहा। कामाय त्वा स्वाहा। समृधे त्वा स्वाहा। आकूत्यै त्वा कामाय त्वा समृधे त्वा स्वाहा। ऋचा स्तोमं समर्धय गायत्रेण रथंतरम्।

बृहद्रायत्रवर्तनि स्वाहा। (इन मंत्रों को बोल करके प्रत्येक देवताओं के नाम से आहूति छोड़ते जाये फिर आगे दश मंत्रो को पढ़कर के आहूतियां डालें।)
पृथिव्यामग्नये समनमन्निति संनतिभिश्च। प्रजापते न त्वदेतान्यन्य इति च।

ॐ पृथिव्यामग्नये समनमन्त्स आर्ध्नोत्। यथा पृथिव्यामग्नये समनमन्नेवा मह्यं संनमः सं नमन्तु स्वाहा
पृथिवी धेनुस्तस्या अग्निर्वत्सः। सा मेऽग्निना वत्सेनेषमूर्जं कामं दुहाम्। आयुः पथमं प्रजां पोषं रयिं स्वाहा
अन्तरिक्षे वायवे समनमन्त्स आर्ध्नोत्। यथान्तरिक्षे वायवे समनमन्नेवा मह्यं संनमः सं नमन्तु स्वाहा
अन्तरिक्षे धेनुस्तस्या वायुर्वत्सः। सा मे वायुना वत्सेनेषमूर्जं कामं दुहाम्। आयुः प्रथमं प्रजां पोषं रयिं स्वाहा
दिव्या दित्याय समनमन्त्स आर्ध्नोत्। यथा दिव्या दित्याय समनमन्नेवा मह्यं संनमः स नमन्तु स्वाहा
द्यौर्धेनुस्तस्या आदित्यो वत्सः। सा म आदित्येन वत्सेनेषमूर्जं कामं दुहाम्। अयुः प्रथमं प्रजां पोषं रयिं स्वाहा
दिक्षु चन्द्राय समनमन्त्स आर्ध्नोत्। यथा दिक्षु चन्द्राय समनमन्नेवा मह्यं संनमः सं नमन्तु स्वासा
दिशो धेनवस्तासां चन्द्रो वत्सः। ता मे चन्द्रेण वत्सेनेषमूर्जं कामं दुहाम्। आयुः प्रथमं प्रजां पोषं रयिं स्वाहा
अग्रावग्निश्चरति प्रविष्ट ऋषीणां पुत्रो अभिशस्तिपा उ।
नमस्कारेण नमसा ते जुहोमि मा देवानां मिथुया कर्म भागम् स्वाहा
हृदा पूतं मनसा जातवेदो विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
सप्तास्यानि तव जातवेदस्तेभ्यो जुहोमि स जुषस्व हव्यम् स्वाहा
प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परिभूर्जजान।

यत् का॑मास्ते जुहुमस्तन्नो॑ अस्तु व॒यं स्या॑म॒ पत॑यो रयी॒णाम् स्वाहा॑

उपस्तीर्याज्यं सर्वेषामुत्तरतः सकृत्सकृदवदाय द्विरवत्तमभिघारयति। न हवीं षि॥ (इस वाक्य से यजमान दो बार घी श्रुक में डालें फिर चरु पात्र में जितना चरु बचा हो वो दो बार में श्रुक में डालें फिर पुनः दो बार घी श्रुक में डालें चरु पात्र में घी नहीं डालना है)

आ देवानामपि पन्थामगन्म यच्छक्नवाम तदनुप्रवोढुम्। अग्निर्विद्वान्स यज्ञात्स इद्धोता सो ऽध्वरान्स ऋतून्कल्पयात्यग्नये स्विष्टकृते स्वाहेत्युत्तरपूर्वार्धे (इस वाक्य को बोलकर के श्रुक वाली आहूति कुण्ड में डालें) ऽवयुतं हुत्वा सर्व प्रायश्चित्तीयन्होमाञ्जुहोति। स्वाहेष्टेभ्यः स्वाहा। वषडनिष्टेभ्यः स्वाहा। भेषजं स्विष्टयै स्वाहा। निष्कृतिर्दरिष्ट्यै स्वाहा। दैवीभ्यस्तनूभ्यः स्वाहा।

अयाश्चाग्ने ऽस्यनभिशस्तिश्च सत्यमित्त्वमया असि। अयासा मनसा कृतो ऽयास्यं हव्यमूहिषे। अया नो धेहि भेषजं स्वाहेत्यों स्वाहा भूः स्वाहा भुवः स्वाहा स्वः स्वाहों भूर्भुवः स्वः स्वाहेति।

यन्मे स्कन्नं मनसो जातवेदो यद्वास्कन्दद्धविषो यत्रयत्र। उत्प्रुषो विप्रुषः सं जुहोमि सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः स्वाहेति।

यन्मे स्कन्नं यदस्मृतीति च स्कन्नास्मृतिहोमौ।

ॐ यदस्मृ॑ति चकृ॒म किं चि॑दग्न उपारि॒म चर॑णे जातवेदः।
तत॑ः पाहि त्वं न॑ः प्रचेतः शु॒भे सखि॑भ्यो अमृत॒त्वम॑स्तु न॒ः स्वाहा॑

यदद्य त्वा प्रयतीति संस्थितहोमाः।

ॐ यदु॒द्य त्वा॑ प्रयु॒ति प्रयु॒ति यु॒ज्ञे अ॒स्मिन् होत॑श्चिकित्व॒न्नवृ॑णीमही॒ह।
ध्रुवम॑यो ध्रुवमु॒ता श॑विष्ठ प्रवि॒द्वान् यु॒ज्ञमुप॑ याहि सोम॒म् स्वाहा॑॥ मनसस्पत इत्युत्तमं चतुर्गृहीतेन।

मनसस्पत इमं नो दिवि देवेषु यज्ञम्।

स्वाहा दिवि स्वाहा पृथिव्यां स्वाहान्तरिक्षे स्वाहा वाते धां स्वाहा॥

(इस मंत्र को पढ़ते हुए यजमान श्रुवा से चार बार घी श्रुक में डालें फिर खड़े होकर श्रुक की आहूति दें) बर्हिराज्यशेषे ऽनक्ति पृथिव्यै त्वेति मूलमन्तरिक्षाय त्वेति मध्यं दिवे त्वेत्यग्रम्। एवं त्रिः। (इस वाक्य से बर्हि को वायें हाथ में पकड़े एवं श्रुवा दाहिने हाथ में पकड़कर घी बर्हि में मूलभाग एवं मध्य भाग एवं अग्र भाग में डालें यह प्रक्रिया तीन बार होनी चाहिये आगे वाला मंत्र बोलकर बर्हि को स्वाहा कर दें) सं बर्हिरक्तमित्यनुप्रहरति यथादेवतम्।

ॐ सं बर्हिरक्तं हविषा घृतेन समिन्द्रेण वसुना सं मरुद्भिः। सं देवैर्विश्वदेवेभिरक्तमिन्द्रं गच्छतु हविः स्वाहा॥

स्रुवमग्रौ धारयति। (इस वाक्य को पढ़कर यजमान वायें हाथ में घी पात्र दाहिने हाथ में श्रुवा लेकर खड़े होकर धारा प्रवाह रुपी आहूति डालें) यदाज्यधान्यां तत्संस्रावयति संस्रावभागास्तविषा बृहन्तः प्रस्तरेष्ठा बर्हिषदश्च देवाः।

इमं यज्ञमभि विश्वे गृणन्तः स्वाहा देवा अमृता मादयन्तामिति। स्रुवो ऽसि घृतादनिशितः। सपत्नक्षयणो दिवि षीद। अन्तरिक्षे सीद पृथिव्यां सीदोत्तरो ऽहं भूयासमधरे मत्सपत्ना (इस वाक्य को पढ़कर श्रुवा को उल्टा करके यज्ञ कुण्ड से टीका कर रखदें) इति स्रुवं प्राग्दण्डं निदधाति।

(इस वाक्य एवं मंत्र से ३ समिधाओं को हाथ में लेकर के एक एक करके आगे दिये गये वाक्य एवं मंत्र से आहुति दें) वि मुञ्चामि ब्रह्मणा जातवेदसमग्निं होतारमजरं रथस्पृतम्। सर्वा देवानां जनिमानि विद्वान्यथाभागं वहतु हव्यमग्निरग्नये स्वाहेति इति प्रथमा।

ॐ एधोऽस्येधिषीय स्वाहा इति द्वितीया **समिदसि समेधिषीय स्वाहा।** एधो ऽसीति द्वितीयां समिदसीति तृतीयाम्।

करौ प्रक्षाल्यः अग्नि प्रत्यप **ॐ तेजोऽसि तेजो मयि धेहि।** (इस मंत्र से पहले हाथ धुल करके हाथ को अग्नि से सेंके फिर उसके उपरान्त हाथ से अपने मुख को मलें)

तेजो ऽसीति मुखं विमार्ष्टि। (इसके बाद पूर्णाहुति के दिन यहां से बलिदान करें उसके उपरान्त आगे तीन पग चलने का मंत्र एवं कार्य आगे बढ़ाये) दक्षिणेनाग्निं त्रन्विष्णुक्रमान्क्रमते।

ॐ विष्णोः क्रमोंऽसिसपत्नहा पृथिवीसंशितोऽग्नितेंजाः।
पृथिवीमनु वि क्रंमेऽहं पृथिव्यास्तं निर्भंजामो यो३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः॥
स मा जींवीत् तं प्राणो जंहातु।
विष्णोः क्रमोंऽसि सपत्नहान्तरिंक्षसंशितो वायुतेंजाः।
अन्तरिंक्षमनु वि क्रंमेऽहमन्तरिंक्षात् तं निर्भंजामो यो३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः।
स मा जींवीत् तं प्राणो जंहातु।
विष्णोः क्रमोंऽसि सपत्नहा द्यौसंशितः सूर्यतेजाः।
दिवमनु वि क्रंमेऽहं दिवस्तं निर्भंजामो यो३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः॥
स मा जींवीत् तं प्राणो जंहातु।

विष्णोः क्रमो ऽसीति दक्षिणेन पादेनानुसंहरति सव्यम्। (इसके उपरान्त कुण्ड की परिक्रमा करते हुए यजमान को यज्ञशाला के बाहर जाकर सूर्य भगवान को देखें एवं नमस्कार करें)

ॐ सूर्यस्यावृतंमन्वावंर्ते दक्षिंणामन्वावृतंम्। सा मे द्रविंणं यच्छतु सा में ब्राह्मणवर्चसम्॥
दिशो ज्योतिंष्मतीरभ्यावंर्ते। ता मे द्रविंणं यच्छन्तु ता में ब्राह्मणवर्चसम्॥

सूर्यस्यावृतमित्यभिदक्षिणामावर्तते।

ॐ अगन्म स्वः स्वरगन्म सं सूर्यस्य ज्योतिषागन्म॥

अगन्म स्वरित्यादित्यमीक्षते। (इसके बाद यजमान अपने आसन में बैठ जाये फिर दक्षिण दिशा में जो उदपात्र है उसको अपने हाथों से उठा करके किसी ब्राह्मण के हाथ में दें साथ में कुशा भी दें फिर ब्राह्मण आपो हि ष्ठा से मंत्र से मार्जन करें)

इन्द्रस्य वचसा वयं मित्रस्य वरुणस्य च। ब्रह्मणा स्थापितं पात्रं पुनरुत्थापयामसी त्यपरेणाग्निमुदपात्रं परिहृत्योत्तरणाग्नि।

ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे॥ *(अथर्ववेद १.५.१)*

ॐ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः॥ *(अथर्ववेद १.५.२)*

ॐ तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः॥ *(अथर्ववेद १.५.३)*

ॐ ईशाना वार्याणां क्षयन्तीश्चर्षणीनाम्। अपो याचामि भेषजम्॥

मापो हि ष्ठा मयोभुव इति मार्जयित्वा बर्हिषि पत्न्याञ्जलौ निनयति समुद्रं वः प्र हिणोमीतीदं जनास इति वा। वीरपत्न्यहं भूयासमिति मुखं विमार्ष्टि। व्रतानि व्रतपतय इति समिधमादधाति। सत्यं त्वर्तेनति परिषिच्योदङ्ङ्ि हविरुच्छिष्टान्युद्वासयति। पूर्ण पात्रं दक्षिणा।

करौ प्रक्षाल्यः हस्ते पुष्पाणी गृहित्वा अग्निं अर्चयेत ॐ पूर्वे अग्नये नमः ॐ आग्नेयां अग्नये नमः ॐ दक्षिणे अग्नये नमः ॐ नैर्ऋत्यां अग्नये नमः ॐ पश्चिमे अग्नये नमः ॐ वायव्ये अग्नये नमः ॐ उत्तरे अग्नये नमः ॐ ऐशान्ये अग्नये नमः ॐ मध्ये यज्ञ पुरुषाय नमः॥ आचमनं ॐ ऋग्वेदाय स्वाहा। ॐ यजुर्वेदाय स्वाहा। ॐ सामवेदाय स्वाहा। करौ प्रक्षाल्यः। हस्ते जलाक्षत पुष्पाणी गृहित्वा संकल्प वाक्यान स्मैरेयुः स्वस्ति पूर्वोच्चारित ग्रह, गुण, गण, विशेषण, विशिष्टायाम, शुभ पुण्य तिथौ, अमुख गोत्रा, अमुख नाम शर्मामः षड दिवस साद्य अद्य................दिने।

हवन कुण्ड में षोडशोपचार पूजनम्

आवाहनम्—ॐ सहस्रबाहुः पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥ (अथर्ववेद १९.६.१)

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवार श्री महाविष्णावे नमः, आवाहयामि आवाहनं समर्पयामि।

आसनम्—ॐ त्रिभिः पद्भिर्द्यामरोहत्पादस्येहाभवत्पुनः। तथा व्यक्रामद्विष्वङशनानशने अनु॥ (अथर्ववेद १९.६.२)

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, । आसनं समर्पयामि।

पाद्यम्— ॐ तावन्तो अस्य महिमानस्ततो ज्यायांश्च पूरुषः। पादोस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥ (अथर्ववेद १९.६.३)

ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम्। श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, । पादारविंदयोः पाद्यं पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यं— ॐ पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्येश्वरो यदन्येनाभवत्सह॥ (अथर्ववेद १९.६.४)

ॐ कां सोस्मितां हिरण्य प्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।

पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहो पह्वये श्रियम्॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्) ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, हस्तयोः अर्घ्यमर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनम्—ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्य किं बाहू किमूरू पादा उच्येते ॥ (अथर्ववेद १९.६.५)

ॐ चंद्रां प्रभासां यशसा ज्वलंतीं श्रियं लोके देवजुष्टा मुदाराम्।

तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मेनश्यतां त्वां वृणे ॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः,। मुखे आचमनीयं समर्पयामि।

पञ्चामृत स्नानम् (दूध)— ॐ सं सिंञ्चामि गवां क्षीरं समाज्येन बलं रसम्।

संसिक्ता अस्माकं वीरा ध्रुवा गावो मयि गोपतौ ॥ (अथर्ववेद २.२६.४)

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः,। पयः स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः।

भवे भवेनातिं भवे भवस्वमाम् भवोद्भवाय नमः ॥ (यजुर्वेद-महानारायणोपनिपत् आरण्यक)

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः,। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि

दहि— ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्यवाजिनः। सुरभि नो मुखा करत्प्र ण आयूंषि तारिषत् ॥ (अथर्ववेद २०.१३७.३)

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः,। दधि स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल—ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमःश्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमःकालविकरणाय

नमोबलाय नमो बलप्रमथनाय नमस्सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः। (यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, । शुद्धोदक स्नानं सपर्मयामि।

घी— ॐ घृतं ते अग्ने दिव्ये सधस्थे घृतेन त्वां मनुरद्या समिन्धे।
घृतं ते देवीर्नप्त्य१ आ वहन्तु घृतं तुभ्यं दुह्रतां गावो अग्ने ॥ *(अथर्ववेद ७.८२.६)*

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, । घृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल— ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः।
सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥ *(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)*

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, । शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।

मधु (शहद)— ॐ मधुमान् भवति मधुमदस्याहार्यं भवति। मधुमतो लोकान् जयति य एवं वेद ॥ *(अथर्ववेद ६.१.२३)*

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः,। मधु स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल— ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥ *(यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)*

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, । शुद्धोदक स्नानं सपर्पयामि।

शर्करा (शक्कर)— ॐ स्वादोःस्वादीयः स्वादुना सृजा समदः सु मधु मधुनाभि योधीः ॥ *(अथर्ववेद ५.२.३)*

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, । शर्करा स्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जन— ॐ ईशानस्सर्वविद्यानामीश्वरस्सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणो

अधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम् ॥ (यजुर्वेद-महानारायणोपनिषत्-आरण्यक)

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णवे नमः, । शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ।

फल— ॐ पुष्पवतीः प्रसूमतीः फलिनीरफला उत । संमातरं इव दुह्रामस्मा अरिष्टतातये ॥ (अथर्ववेद ८.७.२७)

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णवे नमः, । फल स्नानं समर्पयामि ।

शुद्धोदक—ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन । महे रणाय चक्षसे ॥ (अथर्ववेद १.५.१)

ॐ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः । उशतीरिव मातरः ॥ (अथर्ववेद १.५.२)

ॐ तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ । आपो जनयथा च नः ॥ (अथर्ववेद १.५.३)

ॐ ब्राह्मणो स्य मुखमासीद्बाहू राजन्यो भवत् । मध्यं तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत ॥ (अथर्ववेद १९.६.६)

ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः ।
तस्य फलानि तपसा नुदंतु मायांतरा याश्च ब्राह्या अलक्ष्मीः । (ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णवे नमः, । शुद्धदक स्नानं समर्पयामि ।

वस्त्र— ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत । मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायत ॥ (अथर्ववेद १९.६.७)

ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥ (ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, । वस्त्रं समर्पयामि ।

यज्ञोपवीतं—ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात् । आयुष्यमग्रयं प्रतिमुञ्चशुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥

ॐ विराडग्रे समभवद्विराजो अधि पूरुषः । स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥ (अथर्ववेद १६.६.६)

ॐ क्षुत् पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् । अभूतिमसमृद्धिं च सर्वान्निर्णुद मे गृहात् ॥ (पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, । यज्ञोपवीतं समर्पयामि ।

आभरण—ॐ यद्धिरण्यं सूर्येण सुवर्णं प्रजावन्तो मनवः पूर्व ईषिरे ।

तत् त्वां चन्द्रं वर्चसा सं सृजत्यायुष्मान् भवति यो बिभर्ति ॥ (अथर्ववेद १६.२६.२)

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, । आभरणं समर्पयामि ।

गन्ध— ॐ गंधं द्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् । ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ (पञ्चम मराडलस्य परिशिष्टम्)

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ।

पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन् ॥ (अथर्ववेद १६.६.८)

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, । गन्धं समर्पयामि ।

अक्षत—ॐ अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत । अर्चन्तु पुत्रका उत पुरं न धृष्णवर्चत ॥ (अथर्ववेद २०.६२.५)

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः, । अक्षतान् समर्पयामि ।

पुष्पाणि—ॐ विराडग्रे समभवद्विराजो अधि पूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः॥ (अथर्ववेद १९.६.९)

ॐ पुष्पवतीः प्रसूमतीः फलिनीरफला उत। संमातर इव दुह्रामस्मा अरिष्टतातये॥ (अथर्ववेद ८.७.२७)

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥ (ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णवे नमः, । पुष्पाणि समर्पयामि।

प्रथमावरण पूजनम्—पूर्वादिक्रमेण ॐ विमलायै नमः १। ॐ उत्कर्षिण्यै नमः २। ॐ ज्ञानायै नमः ३। ॐ क्रियायै नमः ४। ॐ योगायै नमः ५। ॐ प्रह्व्यै नमः ६। ॐ सत्यायै नमः ७। ॐ ईशानायै नमः ८। मध्ये ॐ अनुग्रहायै नमः ९।

द्वितीयावरण पूजनम्—ॐ ब्राह्मयै नमः। पूर्वे ॐ माहेश्वर्यै नमः। आग्नेय दिशि। ॐ कौमार्यै नमः। दक्षिण दिशि। ॐ वैष्णव्यै नमः। नैऋत्यां दिशि। ॐ वाराह्यै नमः पश्चिम दिशि। ॐ इन्द्राण्यै नमः। वायव्यां दिशि। ॐ चामुण्डायै नमः। उत्तरस्यां दिशि। ॐ गिरिजायै नमः ऐशान्यां दिशि। (अनुष्ठान पद्धति)

तृतीयावरण पूजनम्—ॐ इन्द्राय सुराधिपतये पीतवर्णाय वज्रहस्ताय ऐरावत वाहनाय सशक्ति काय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवारायश्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐ अग्नये तेजोधिपतये पिंगलवर्णाय शक्ति हस्ताय मेष वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय स वाहनाय स परिवाराय श्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐ यमाय प्रेताधिपतये कृष्णवर्णाय दण्ड हस्ताय महिष वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐ निषतये रक्षोधिपतये रक्तवर्णाय खड्ग हस्ताय नरवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐ वरुणाय जलाधितये कुंदवर्णाय पाशहस्ताय मकरवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐ वायवे प्राणाधिपतये धूम्रवर्णाय अंकुश हस्ताय हरिणवाहनाय सशक्ति काय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐ सोमाय नक्षत्राधिपतये शुक्लवर्णाय गदा हस्ताय अश्व वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री

महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। ॐईशानाय विद्याधिपतये स्फटिकवर्णाय त्रिशूल हस्ताय वृषभ वाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री महाविष्णुमूर्तिपार्षदाय नमः। ॐअनंताय नागाधिपतये क्षीरवर्णाय चक्रहस्ताय गरुड वाहनाय स शक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। नैर्ऋत्यं एवं पश्चिम दिशा के बीच में अनन्त का पूजन करें। ॐब्रह्मणे लोकाधिपतये कंजवर्णाय पषहस्ताय हंसवाहनाय सशक्तिकाय सांगाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय श्री महाविष्णुमूर्ति पार्षदाय नमः। पूर्व एवं ईशान दिशा के बीच में ब्रह्मा जी का पूजन करें। *(अनुष्ठान पद्धति)*

चतुर्थावरणपूजनम्—ॐवज्राय नमः। (पूर्व में) ॐशक्त्यै नमः। (आग्नेय में) ॐदण्डाय नमः। (दक्षिण में) ॐखड्गाय नमः। (नैऋत्य) ॐपाशाय नमः। (पश्चिम में) ॐअंकुशाय नमः। (वायव्य में) ॐगदायै नमः। (उत्तर में) ॐत्रिशूलाय नमः। (ईशान में) ॐचक्राय न मः। (पश्चिम नैऋत्य के बीच में) ॐपद्माय नमः। (पूर्व ईशान के बीच में) *(अनुष्ठान पद्धति)*

अष्टोत्तर शतनाम पूजा

ॐविष्णवे नमः। ॐलक्ष्मीपतये नमः। ॐ कृष्णाय नमः। ॐ वैकुण्ठाय नमः। ॐ गरुडध्वजाय नमः। ॐ जगन्नाथाय नमः। ॐपरब्रह्मणे नमः।ॐवासुदेवाय नमः। ॐत्रिविक्रमाय नमः। ॐ दैत्यान्तकाय नमः। ॐ मधुरिपवे नमः। ॐ तार्क्ष्यवाहनाय नमः। ॐसनातनाय नमः। ॐनारायणाय नमः। ॐपद्मनाभाय नमः। ॐहृषीकेशाय नमः। ॐसुधाप्रदाय नमः। ॐ माधवाय नमः। ॐ पुण्डरीकाक्षाय नमः। ॐ स्थितिकर्त्रे नमः। ॐपरात्पराय नमः। ॐवनकालिने नमः। ॐयज्ञ रूपाय नमः। ॐचक्र पाणये नमः। ॐगदाधराय नमः। ॐउपेन्द्राय नमः। ॐकेशवाय नमः। ॐ हंसाय नमः। ॐ समुद्रमथनाय नमः। ॐ हरये नमः। ॐगोविन्दाय नमः। ॐ ब्रह्मजनकाय नमः ॐ कैटभासुरमर्दनाय नमः। ॐ श्रीधराय नमः। ॐ कामजनकाय नमः ॐ शेषशायिने नमः। ॐ चतुर्भजाय

नमः। ॐ पाञ्चजन्यधराय नमः। ॐ श्रीमते नमः। ॐ शार्ङ्गपाणये नमः। ॐ जनार्दनाय नमः। ॐ पीताम्बरधराय नमः। ॐ देवाय नमः। ॐ सूर्यचन्द्रविलोचनाय नमः। ॐ मत्स्यरूपाय नमः। ॐ कूर्मतनवे नमः। ॐ क्रोडरूपाय नमः। ॐ नृकेसरिणे नमः। ॐ वामनाय नमः। ॐभार्गवाय नमः। ॐ रामाय नमः। ॐ बलिने नमः। ॐ कल्किने नमः। ॐ हयाननाय नमः। ॐ विश्वम्भराय नमः। ॐ शिशुमाराय नमः। ॐश्रीकराय नमः। ॐ कपिलाय नमः। ॐ ध्रुवाय नमः। ॐ दत्तात्रेयाय नमः। ॐ अच्युताय नमः। ॐअनन्ताय नमः। ॐ मुकुन्दाय नमः। ॐ दधिवामनाय नमः। ॐ धन्वन्तरये नमः। ॐ श्रीनिवासाय नमः। ॐप्रद्युम्नाय नमः। ॐ पुरुषोत्तमाय नमः। ॐ श्रीवत्सकौस्तुभधराय नमः। ॐ मुरारातये नमः। ॐ अधोक्षजाय नमः। ॐ ऋषभाय नमः। ॐ मोहिनी रुप धारिणे नमः। ॐ सङ्कर्षणाय नमः। ॐ पृथवे नमः। ॐ क्षीराब्धिशायिने नमः। ॐ भूतात्मने नमः। ॐ अनिरुद्धाय नमः। ॐ भक्तवत्सलाय नमः। ॐनराय नमः। ॐ गजेन्द्रवरदाय नमः। ॐ त्रिधाम्ने नमः। ॐ भूतभावनाय नमः। ॐ श्वेतद्वीपसुवास्तव्याय नमः। ॐ सनकादिमुनिध्येयाय नमः। ॐ भगवते नमः। ॐ शङ्करप्रियाय नमः। ॐ नीलकान्ताय नमः। ॐ धराकान्ताय नमः। ॐवेदात्मने नमः। ॐ बादरायणाय नमः। ॐ भागीरथीजन्मभूमि पादपद्माय नमः। ॐ सतांप्रभवे नमः। ॐस्वभुवे नमः। ॐ विभवे नमः। ॐ घनश्यामाय नमः। ॐ जगत्कारणाय नमः। ॐ अव्ययाय नमः। ॐ बुद्धावताराय नमः। ॐ शान्तात्मने नमः। ॐ लीलामानुष विग्रहाय नमः। ॐ दामोदराय नमः। ॐ विराड्रूपाय नमः। ॐ भूतभव्यभवत्प्रभवे नमः। ॐ आदिदेवाय नमः। ॐ प्रह्लादपरिपालकाय नमः। ॐ श्रीमहाविष्णवे नमः। अष्टोत्तर शतनाम पूजां समर्पयामि।

धूप— **ॐ वनस्पति रसोत्पन्नो गंधाढ्यः सुमनोहरः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम्॥**

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तो अस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥ *(अथर्ववेद १९.६.१०)*

ॐ कर्दमेन प्रजा भूता मयि संभव कर्दम। श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णवे नमः, धूपं आघ्रापयामि। *(अनुष्ठान पद्धति)*

दीपम्—आज्यं त्रिवर्ति संयुक्तं वह्निना योजितं मया। गृहाण मङ्गलं दीपं त्रैलोक्य तिमिरापह॥

ॐ तं यज्ञं प्रावृषा प्रौक्षन्पुरुषं जातमग्रशः। तेन देवा अयजन्त साध्या वसवश्च ये॥ (अथर्ववेद १९.६.११)

ॐ आपः सृजंतु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे। निच देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥ (पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णवे नमः दीपं दर्शयामि। धूपदीपानंतरं आचमनीयं समर्पयामि।

नैवेद्यम्—देवस्याग्रे स्थलं संशोध्य गोमयेन मण्डलं कृत्वा तत्र शुद्धं पात्रं न्यस्य अभिघार्य निर्मलं हविः तदुपरि न्यस्य आज्येन द्रवीभूतं कृत्वा "ॐभूर्भुवः स्वः इति गायत्र्या प्रोक्ष्य वायु बीजं जप्त्वा निवेद्यान्नं संशोध्य दक्षिणहस्ते अग्निबीजं विलिख्य तेन हस्तेन संदह्य वामहस्ते अमृत बीजं विलिख्य तेन हस्तेन हविराप्लाव्य सुरभिमुद्रां बध्वा अमृतमयं भावयित्वा मल धातु रसांशं विभाज्य देवस्य निवेद्य ग्रहणेच्छां कुर्यात्। "**सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि**" इत्यनेन परिषिच्य हस्तभ्यां पुष्पैः देवस्य जिह्वार्चीरुचिं निवेद्ये निपात्य निवेदयामि भवते जुषाणेदं हविर्विभो इति वामहस्तेन ग्रासमुद्रां प्रदर्श्य दक्षिणहस्तेन प्राणादि मुद्राः प्रदर्शयेत्। अन्नात् मलांशं धात्वंशं च परित्यज्य रसांशं देवस्य वदनार्चिषि समर्पयेत्। वं अबात्मना इति नैवेद्य मुद्रां प्रदर्शयेत्। नैवेद्य सारं रससमर्पणात् जातं सुधांशं देवे समर्प्य अंजलिमुद्रा बध्वा नैवेद्यसारसमर्पित जातामृतमय सुधांशुना पुनः पुनः वर्धितं देवं हृन्मूर्ति देवं ध्यायन् स्व स्व मूलमंत्र यथा शक्ति जप्त्वा।

कलश के आगे स्थल शुद्धि कर गोमय से शुद्धि कर चतुरस्र मण्डल को बनाकर उस पर शुद्ध पात्र को रखें। पात्र में थोडा सा घी डालें। उस पात्र में निर्मलहविस् (नैवेद्य पदार्थ को) को घी पर रखें। उस हविस् को घीं से भिगोयें।

गायत्री मंत्र से नैवेद्य का प्रोत्क्षण करें—"यं यं यं" इस वायुबीज को जपकर हविस् को शुद्ध करें। दाहिने हाथ में (रं) अग्नि बीज को लिखकर उस अग्नि से हविस् में विद्यमान कश्मलों को जलाऐं (कल्पना करें)। बायें हाथ में अमृत बीज (वं) को लिखकर उस हाथ से हविस् को शुद्ध करें (घोने

की कल्पना करें) ॐनमो नारायणाय। इस मन्त्र का आठ बार जप करें। हविस् को मंत्रमय एवं अमृतमय छोने की कल्पना करें। सुरभि मुद्रा से अमृतमय हुआ है मानकर मलांश, धातु का अंश एवं रसांश को अलग अलग करने की कल्पना करें। देवता को नैवेद्य ग्रहण करने की इच्छा उत्पन्न करती चाहिये। **"सत्यं त्र्तेन परिषिचामि"** इससे परिषिञ्चन करें। दोनों हाथों में पुष्प लेकर देवता का जीभ नैवेद्य तक पहुँचने का चिन्तन करें।

"निवेदयामि भवते जुषाणोदं हविर्विभो" कहकर नैवेद्य स्वीकार करने की प्रार्थना करते हुए। बायें हाथ से ग्रास मुद्रा (जैसे बछडे को घास देते है) को दिखाकर दाहिने हाथ से प्राणाय स्वाहा-अङ्गुष्ठ कनिष्ठिका मिलाकर अपानाय स्वाहा-अङ्गुष्ठ एवं तर्जनी मिलाकर व्यानाय स्वाहा-अङ्गुष्ठ एवं अनामिका मिलाकर उदानाय स्वाहा-अङ्गुष्ठ एवं अनामिका मिलाकर समानाय स्वाहा। सभी अङ्गुलियों को मिलाकर। अन्त से मलांश एवं धातु के अंध को अलग कर केवल रसांश को अर्पित करने की कल्पना करें।

"वं अबात्मना नैवेद्यं कल्पयामि" कहकर नैवेद्य मुद्रा का प्रदर्शन करें (अङ्गुष्ठ एवं अनामिका मिलाने से नैवेद्य मुद्रा)। नैवेद्य का सार जो रसांश था उसका भी सार अमृत का जो अंश है उसे देवता को समर्पित कर, हाथ जोडकर, नैवेद्य के सार अमृत से भगवान् को बढते हुए मानकर उसे हृदय में स्थित मानकर यथाशक्ति "ॐनमो नारायणाय"—इस मूल मंत्र का जप करें।

ॐ स्वादोःस्वादीयः स्वादुना सृजा समदः सु मधु मधुनाभि योधीः॥ *(अथर्ववेद ५.२.३)*

ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

यथा संभव नैवेद्यं निवेदयामि। अमृतापिधानमसि कहकर उत्तरापोशन देवें। हस्तप्रक्षालनार्थे जलं समर्पयामि। गण्डूषार्थे जलं समर्पयामि। शुद्धाचमनार्थे जलं समर्पयामि। करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि।

ताम्बूल—ॐ तस्मादश्वा अजायन्त ये च के चोभयादतः। गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः॥ *(अथर्ववेद १९.६.१२)*

पूगीफल समायुक्तं नागवल्या दलैर्युतं। चूर्ण कर्पूर संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥ ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः। क्रमुक तांबूलं समर्पयामि।

नीराजन (आरति)—ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे।

छन्दो ह जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत॥ *(अथर्ववेद १६.६.१३)*

ॐ एह यांतु वरुणः सोमो अग्निर्बृहस्पतिर्वसुभिरेह यांतु।

अस्य श्रियमुपसंयांत सर्व उग्रस्य चेत्तुः संमनसः सजाताः॥ *(अथर्ववेद ६.७३.१)*

ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः। मङ्गल नीराजनं समर्पयामि।

मंत्रपुष्प—ॐ सहस्रबाहुः पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥ *(अथर्ववेद १६.६.१)*

ॐ मूर्ध्नो देवस्य बृहतो अंशवः सप्त सप्ततीः। राज्ञः सोमस्याजायन्त जातस्य पुरुषादधि॥ *(अथर्ववेद १६.६.१६)*

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्। पशूँस्ताश्चक्रे वायव्या नारण्या ग्राम्याश्च ये॥ *(अथर्ववेद १६.६.१४)*

ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्। सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥ *(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐसपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः। मंत्रपुष्पं समर्पयामि।

प्रदक्षिणा नमस्कार—यानि कानि च पापानि जन्मांतर कृतानि च। तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे पदे॥ *(देवपूजा-स्मृति संग्रह)*

ॐ सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन्पुरुषं पशुम्॥ *(अथर्ववेद १६.६.१५)* **ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विंदेयं पुरुषानहम्॥**

(पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः। प्रदक्षिणा नमस्कारान् समर्पयामि।

प्रसन्नार्घ्य—ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि। तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्॥

इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यं, इदमर्घ्यम्। (कहकर तीन बार पुष्पमिश्रित जल छोड़ें।)

सर्वोपचार पूजनम्—ॐ छत्रं समर्पयामि। चामरेण वीजयामि। गीतं गायामि। नाट्यं नटामि। आंदोळिकामारोहयामि। अश्वमारोहयामि। गजमारोहयामि। समस्त राजोपचार देवोपचार पूजां समर्पयामि।

ॐ मूर्ध्नो देवस्य बृहतो अंशवः सप्त सप्ततीः। राज्ञः सोमस्याजायन्त जातस्य पुरुषादधि॥ *(अथर्ववेद १९.६.१६)*

ॐ यः शुचिः प्रयतोभूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्। सूक्तं पंचदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्॥ *(ऋग्वेद-पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)*

ॐ सपरिवाराय श्री महाविष्णावे नमः। सर्वोपचार पूजां समर्पयामि।

प्रार्थना—विष्णुं जिष्णुं महाविष्णुं प्रभविष्णुं महेश्वरम्। अनेकोत्पात शमनं नमामि पुरुषोत्तमम्॥

ॐ कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुध्यात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि॥ *(पौराणिकम्)*

ॐ ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविः ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्। ब्रह्मैव तेन गंतव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना॥ *(श्री भगवद्गीते)* ॐ सपरिवाराय श्री महा विष्णावे नमः। अनेन पूजनेन सपरिवारः श्री महा विष्णुः प्रीयताम्। षोडशोपचार पूजनं संपूर्णम्।

बलि प्रदान विधान—पूजन के बाद बलि प्रदान करें। यजमानः प्रतिबलिं संकल्प्य साक्षतजलं त्यजेत्। यजमान प्रत्येकबलि का संकल्प कहकर

अक्षत सहित जल छोडें। अग्न्यायतनस्य समंतात् दिक्षु माषभक्त कूष्माराड बलीन् दिक् पालेभ्यो दद्यात्। यज्ञ शाला के चारों अडद चावल कद्दू के बलि को दिक् पालकों को देना चाहिये। प्रत्येक बलि में दीप लजायें। १. पूर्व में चन्द्र को बलि प्रदान करें।

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं हवेंहवे सुहवं शूरमिन्द्रम् ॥
हुवे नु शक्रं पुरुहूतमिन्द्रं स्वस्ति न इन्द्रो मघवान् कृणोतु ॥ (अथर्ववेद ७.८६.१)

इन्द्राय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एष माषभक्तकूष्माराड बलिर्नमम। भो इन्द्र दिशं रक्ष बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को पूर्वाभिमुख छोडना चाहिये।

२. आग्नेय दिश में अग्नि को बलिप्रदान करें।

ॐ अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्व वेंदसम्। अस्य यज्ञस्यं सुक्रतुं ॥ (अथर्ववेद २०.१०१.१)

अग्नये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एष माषभक्त कूष्माराड बलिर्नमम। भो अग्ने दिशं रक्ष बलिं क्षुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि आग्नेयाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को आग्नेयाभिमुख छोडना चाहिये।

३. दक्षरा दिशा में यम को बलिप्रदान करें।

ॐ यमाय सोमः पवते यमायं क्रियते हविः। यमं ह यज्ञो गच्छत्यग्निदूंतो अरंकृतः ॥ (अथर्ववेद १८.२.१)

यमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्ति काय एष माषभक्तकूष्माराड बलिर्नमम। भो यम दिशं रक्ष बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि दक्षिणाभिमुखस्त्जेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को दक्षिणाभिमुख छोडना चाहिये।

४. नैऋत्य दिशा में निऋति को बलिप्रदान करें।

ॐ यत् ते देवी निर्ऋतिराबबन्ध दाम ग्रीवास्वविमोक्यं यत्।
तत् ते वि ष्याम्यायुषे वर्चसे बलायादोमदमन्नमद्धि प्रसूतः ।। *(अथर्ववेद ६.६३.१)*

निऋतये साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एष माषभक्त कूष्माण्ड बलिर्नमम। भो निऋते दिशां रक्ष बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षत जलानि नैऋत्याभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल नैऋत्याभिमुख छोडना चाहिये।

५. पश्चिम दिशा में वरुण को बलिप्रदान करें।

ॐ आप्सु ते राजन् वरुण गृहो हिरण्ययो मिथः। ततो धृतव्रतो राजा सर्वा धामानि मुञ्चतु ।। *(अथर्ववेद ७.८३.१))*

वरुणाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एष माषभक्त कूष्माण्ड बलिर्नमम। भो वरुण दिशं रक्ष बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि पश्चिमाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को पश्चिमाभिमुख छोडना चाहिये।

६. वायव्य दिशा में वायु को बलिप्रदान करें।

ॐ गोसनिं वाचमुदेयं वर्चसा माभ्युदिहि। आ रुन्धां सर्वतो वायुस्त्वष्टा पोषं दधातु मे ।। *(अथर्ववेद ४.२०.१०)*

वायवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एष माषभक्त कूष्माण्ड बलिर्नमम। भो वायो दिशं रक्ष बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य ायुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि वायव्याभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को वायव्याभिमुख छोडना चाहिये।

७. उत्तर दिशा में सोम को बलिप्रदान करें।

ॐ अस्मिन् वसु वसवो धारयन्त्विन्द्रः पूषा वरुणो मित्रो अग्निः।
इममादित्या उत विश्वे च देवा उत्तरस्मिन् ज्योतिषि धारयन्तु॥ (अथर्ववेद १.९.१)

सोमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एष माषभक्त कूष्माण्ड बलिर्नमम। भो सोम दिशं रक्ष बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि उत्तराभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को उत्तराभिमुख छोडना चाहिये।

८. ईशान्य दिशा में ईशान को बलिप्रदान करें।

ॐ मा नो मर्ता अभि द्रुहन् तनूनामिन्द्र गिर्वणः। ईशानो यवया वधम्

ईशानाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एष माषभक्त कूष्माण्ड बलिर्नमम। भो ईशान दिशं रक्ष बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेकर्ता शंतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि ऐशान्यभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जे ईशान्याभिमुख छोडना चाहिये।

९. इन्द्रेशानयोर्मध्ये ब्रह्म बलिदान पूर्व एवं ईशान्य दिशा के बीच में ब्रह्मा का बलिदान करें।

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरताद् वि सीमतः सुरुचो वेन आवः।
स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च वि वः॥ (अथर्ववेद ४.१.१)

ब्रह्मणे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एष माषभक्त कूष्माण्ड बलिर्नमम। भो ब्रह्मान् दिशं रक्ष बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि पश्चिमाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को पश्चिमाभिमुख छोडना चाहिये।

१०. पश्चिम एवं नैऋत्य के बीच में अनन्त को बलिप्रदान करें। आयङ्गौः सार्पराज्ञी अनन्तो गायत्री अनन्त प्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीदसंदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः॥ *(अथर्ववेद ६.३१.१)*

अनन्ताय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एष माषभक्त कूष्माण्ड बलिर्नमम। भो अनन्त दिशं रक्ष बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को पूर्वाभिमुख होकर छोडना चाहिये।

नवग्रह बलि—१. पूर्व में अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित सूर्य को बलिदान करें। अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित आदित्य प्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ उच्चा पतंन्तमरुणं सुपर्णं मध्ये दिवस्तरणिं भ्राजमानम्।
पश्याम त्वा सवितारं यमाहुरजस्रं ज्योतिर्यदविन्दुदत्रिः॥ *(अथर्ववेद १३.२.३६))*

आदित्याय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय अधिदेवता अग्नि प्रत्यधिदेवता रुद्रसहिताय इमं सदीपमाषभक्तकूष्माण्डबलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो आदित्य बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षंतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजनानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को पूर्वाभिमुख छोडना चाहिये।

२. आग्नेय में अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित सोम को बलिदान करें। अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित सोम प्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ सुतासो मधुमत्तमाः सोमा इन्द्राय मन्दिनः। पवित्रवन्तो अक्षरन्देवान्गच्छन्तु वो मदाः॥ *(अथर्ववेद २०.१३७.४)*

सोमाय साङ्गाय सपरिवाराय सायधाय सशक्तिकाय अधिदेवता अप प्रत्यधिदेवता गौरीसहिताय इमं सदीपमाषभक्त्कूष्माण्डबलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो

सोम बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को पूर्वाभिमुख छोडना चाहिये।

३. दक्षिण में अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित अङ्गारक को बलिदान करें। अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित अङ्गारक प्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ अग्निर्वासाः पृथिव्यं सितज्ञूस्त्विषीमन्तं संशितं मा कृणोतु॥ (अथर्ववेद १२.१.२१)

अङ्गारकाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय अधिदेवता भूमि प्रत्यधिदेवतात स्कन्दसहिताइमंसदीपमाषभक्तकूष्माण्डबलिंसमर्पयामि। इदं न मम। भो अङ्गारक बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि उत्तराभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को उत्तराभिमुख छोडना चाहिये।

४. ईशान्य में अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित बुध को बलिदान करें। अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित बुध प्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ कपृंन्नरः कपृथमुद्दंधातन चोदयंत खुदत वाजंसातये।
निष्टिग्र्यंः पुत्रमा च्यांवयोतय इन्द्रं सबाधं इह सोमंपतये॥ (अथर्ववेद २०.१३७.२)

बुधाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय अधिदेवता विष्णु प्रत्यधिदेवता पुरुष सहिताय इमं सदीपमाषभक्तकूष्माण्डबलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो बुध बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि दक्षिणाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को दक्षिणाभिमुख छोडना चाहिये।

५. उत्तर में अधदेवता प्रत्यधिदेवता सहित बृहस्पति को बलिदान करें । अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित बृहस्पति प्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ बृहस्पतिर्नः परिं पातु पश्चादुतोत्तंरस्मादधंरदघायोः।

इन्द्रः पुरस्तादुत मध्यतो नः सखा सखिभ्यो वरीयः कृणोतु ॥ (अथर्ववेद ७.५१.१)

बृहस्पते साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय अधिदेवता इन्द्र प्रत्यधिदेवता ब्रह्मसहिताय इमं सदीपमाषभक्तकूष्माण्डबलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो बृहस्पते बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकार्त शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि दक्षिणाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को दक्षिणाभिमुख छोडना चाहिये।

६. पूर्व में अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित शुक्र को बलिदान करें। अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित शुक्र प्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ द्यौश्च म इदं पृथिवी च प्रचेतसौ शुक्रो बृहन् दक्षिणाया पितर्तु।
अनु स्वधा चिकितां सोमो अग्निर्वायुर्नः पातु सविता भगश्च ॥ (अथर्ववेद ६.५३.१)

शुक्राय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय अधिदेवता इन्द्राणी प्रत्यधिदेवता इन्द्र सहिताय इमं सदीपमाषभक्तकूष्माण्डबलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो शुक्र बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि पश्चिमाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को पश्चिमाभिमुख छोडना चाहिये।

७. पश्चिम में अधिदेवता प्रयिधिदेवता सहित शनैश्चर को बलिदान करें। अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित शनैश्चर प्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ शं नो वातो वातु शं नस्तपतु सूर्यः।
अहानि शं भवन्तु नः शं रात्री प्रति धीयतां शमुषा नो व्युच्छतु ॥ (अथर्ववेद ७.६९.१)

शनैश्चराय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय अधिदेवता प्रजापति प्रत्यधिदेवता यमसहिताय इमं सदीपमाषभक्तकूष्माण्डबलिं समर्पयामि। इदं न

मम। भो शनैश्चर बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को पूर्वाभिमुख छोडना चाहिये।

८. नैर्ऋत्य दिशा में अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित राहु को बलिदान करें। अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित राहु प्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ शं नो ग्रहांश्चान्द्रमसाः शमादित्यश्च राहुणा। शं नो मृत्युर्धूमकेतुः शं रुद्रास्तिग्मतेजसः ॥ *(अथर्ववेद १९.९.१०)*

राहवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय अधिदेवता सर्प प्रत्यधिदेवता मृत्यु सहिताय इमं सदीपमाषभक्तकूष्माण्डबलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो राहो बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि पश्चिमाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को पश्चिमाभिमुख छोडना चाहिये।

९. वायव्य दिशा में अधीदेवता प्रत्यधिदेवता सहित केतु को बलिदान करें। अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहित केतु प्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः ॥ *(अथर्ववेद २०.२६.६)*

केतवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय अधिदेवता ब्रह्म प्रत्यधिदेवता चित्रगुप्त सहिताय इमं सदीपमाषभक्त कूष्माण्डबलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो केतो बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि उत्तराभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को उत्तराभिमुख छोडना चाहिये।

६. कर्म साद्गुण्य देवताओं का बलिदान पश्चिम दिशा में करना चाहिये।

कर्म साद्गुण्य देवता बलिदान—१. पश्चिम दिशा में गणपति को बलिदान करें। गणपति प्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ यस्य कृण्मो हविर्गृहे तमग्ने वर्धया त्वम्। तस्मै सोमो अधि ब्रवदयं ब्रह्मणस्पतिः ॥ *(अथर्ववेद ६.५.३)*

विनायकाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपमाषभक्तकूष्माण्डबलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो विनायक साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपक्माषभक्तकूष्माण्डबलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो विनायक बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को पूर्वाभिमुख छोडना चाहिये।

२. पश्चिम दिशा में दुर्गा को बलिदान करें। दुर्गाप्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ देवानां पत्नीरुशतीरवन्तु नः प्रावन्तु नस्तुजये वाजसातये।
याः पार्थिवासो या अपामपि व्रते ता नो देवीः सुहवाः शर्म यच्छन्तु ॥ *(अथर्ववेद ७.४६.१)*

दुर्गायै साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै इमं सदीपमाषभक्तकूष्माण्डबलिं समर्पयामि। इदं न ममम। भो दुर्गे बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्त्री क्षेमकर्त्री शांतिकपुष्टिकर्त्री वरदा भव। इति पुष्पाक्षतजलानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को पूर्वाभिमुख छोडना चाहिये। उत्तर से दिक्षरा की ओर बडना चाहिये। ३. पश्चिम दिश में क्षेत्रपाल को बलिदान करें। क्षेत्रस्य वामदेवः क्षेत्रपालोनुष्टुप् क्षेत्रपालप्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ मधुमतीरोषधीर्द्याव आपो मधुमन्नो भवत्वन्तरिक्षम्।
क्षेत्रस्य पतिर्मधुमान्नो अस्त्वरिष्यन्तो अन्वेनं चरेम॥ *(अथर्ववेद २०.१४३.८)*

क्षेत्रपालाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपमाषभक्तकूष्माण्डबलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो क्षेत्रपाल बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजनानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को पूर्वाभिमुख छोडना चाहिये।

५. पश्चिम दिशा में वायु को बलिदान करें। वायुप्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ वायोः पूतः पवित्रेण प्रत्यङ् सोमो अति द्रुतः। इन्द्रस्य युज्यः सखा ॥ (अथर्ववेद ६.५१.१)

वायवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपमाषभक्तकूष्माण्डबलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो वायो बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को पूर्वाभिमुख छोडना चाहिये।

५. पश्चिम दिशा में आकाश को बलिदान करें। आकाश प्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ आशानामाशापालेभ्यश्चतुर्भ्यो अमृतेभ्यः। इदं भूतस्याध्यक्षेभ्यो विधेमं हविषा वयम् ॥ (अथर्ववेद १.३१.१)

आकाशाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपमाषभक्तकूष्माण्डबलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो आकाश बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को पूर्वाभिमुख छोडना चाहिये।

६. पश्चिम दिशा में अश्विनी देवताओं को बलिदान करें। अश्व्यावाहने विनियोगः।

ॐ यदुन्तरिक्षे यद्दिवि यत्पञ्च मानुषाँ अनु। नृम्णं तद्धत्तमश्विना (अथर्ववेद २०.१३९.२)

अश्विभ्यां साङ्गाभ्यां सपरिवाराभ्यां सायुधाभ्यां सशक्तिकायभ्यां इमं सदीपमाषभक्तकूष्माण्डबलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो अश्विनौ बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्तारौ क्षेमकर्तारौ शांतिकर्तारौ पुष्टिकर्तारौ वरदौ भवताम्। इति पुष्पाक्षतजलानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर फूल अक्षत जल को पूर्वाभिमुख छोडना चाहिये।

सपरिवार प्रधान देवता विष्णु को बलिदान—प्रधान देवता विष्णु एवं उनके परिवार की पाँच बलियाँ उत्तर में करें।

१. ॐ सर्वभूतपतये नमः। सर्वभूतपतये इमं सदीप माष भक्त कूष्माण्डबलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो सर्वभूतपते बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर पुष्प अक्षत एवं जल को पूर्वाभिमुख छोडना चाहिये।

२. ॐ विष्णवे नमः। विष्णवे इमं सदीप माष भक्त कूष्माण्डबलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो विष्णो बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर पुष्प अक्षत एवं जल को पूर्वाभिमुख छोडना चाहिये।

३. ॐ ईश्वराय नमः। ईश्वराय इमं सदीप माष भक्त कूष्माण्डबलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो ईश्वर बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर पुष्प अक्षत एवं जल को पूर्वाभिमुख छोडना चाहिये।

४. ॐ सर्वोत्पातशमनाय नमः। सर्वोत्पातशमनाय इमं सदीपमाषभक्तकूष्माण्ड बलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो सर्वेत्पातशमन बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुंबस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर पुष्पा अक्षत एवं जल को पूर्वाभिमुख छोडना चाहिये।

५. विष्णु प्रीत्यर्थे बलिदाने विनियोगः।

ॐ इ॒दं विष्णु॒र्वि च॑क्रमे त्रे॒धा नि द॑धे प॒दा। समू॑ढमस्य पांसु॒रे। (अथर्ववेद ७.२६.४)

ॐ विष्णवे नमः। साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीप माष भक्त कूष्माण्डबलिं समर्पयामि। इदं न मम। भो विष्णो सपरिवारा बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। इति पुष्पाक्षतजलानि पूर्वाभिमुखस्त्यजेत्। इतना कहकर पुष्प अक्षत एवं जल को पूर्वाभिमुख छोडना चाहिये।

कूष्माण्ड बलिदान

यज्ञशालात् बहिः ऐशान्यदिग्भागे कूष्माण्डे विष्णुं क्षेत्रफलं च आवाहयेत्। पञ्चोपचार पूजां च कुर्यात्। यज्ञ शाला के बाहर ईशान्य दिशा में कद्दू में विष्णु एवं क्षेत्रपाल का आवाहन कर पूजन करें। ॐलं पृथिव्यात्मना गंधं कल्पयामि। ॐहं आकाशात्मना पुष्पं कल्पयामि। ॐयं वाय्वात्मना धूपं कल्पयामि। ॐरं अग्न्यात्मना दीपं कल्पयामि। ॐबं अबात्मना नैवेद्यं कल्पयामि। ॐपं परमात्मना पञ्चोपचारपूजां समर्पयामि। ॐविष्णवे नमः। ॐक्षेत्रपालाय नमः। विष्णवे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीप कूष्माण्ड बलिं समर्पयामि। क्षेत्रपालाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीप कूष्माण्ड बलिं समर्पयामि।

भो विष्णो बलिं भुंक्ष्व ममयजमानस्य सकुटुम्बस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। भो क्षेत्रपाल बलिं भुंक्ष्व मम यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिमर्ता पुष्टिकर्ता वरदो भव। ॐह्रींविष्णो हुं फट् कहकर कूष्माण्ड को प्रदक्षिणाकार में घुमाकर पटक देवें। उस बलि को इतरों के द्वारा स्वच्छ करने के बार ''शांता पृथिवी शिवमन्तरिक्षं द्यौर्नोदेव्यभयंनो अस्तु।

शिवादिशः प्रदिशउद्दिशोन आपो विद्युतः परिपांतु सर्वतः शांति शांति शांति। *(ऋग्वेद १० मण्डलस्यान्ते)*

इस मंत्र से भूमि प्रोक्षण कर यजमान एवं आचार्य हाथ पैर धोकर आचमन कर लेवें।

पूर्णाहुति होम से पहले पूर्ण फल होम—

ॐ पुष्पंवतीः प्रसूमंतीः फलिनींरफला उत। संमातरं इव दुह्रामस्मा अंरिष्टतांतये॥ *(अथर्ववेद ८.७.२७)*

ओषधिभ्यः इदं न मम। कहकर पूर्णफल का होम करें। इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव। तेन मे सफलावाप्तिर्भवेद् जन्मनि जन्मनि। एतद् होम संपूर्ण

फलावाप्त्यर्थ महाव्याहृति भिर्होष्ये।

ॐ सं सं स्त्रवन्तु सिन्धवः सं वाताः सं पतत्रिणः। इमं यज्ञं प्रदिवो मे जुषन्तां संस्त्राव्येण हविषा जुहोमि॥
इहैव हवमा यात म इह संस्त्रावणा उतेमं वर्धयता गिरः। इहैतु सर्वो यः पशुरस्मिन् तिष्ठतु या रयिः॥
ये नदीनां संस्त्रवन्त्युत्सासः सदमक्षिताः। तेभिर्मे सर्वैः संस्त्रावैर्धनं सं स्त्रावयामसि॥
ये सर्पिषः संस्त्रवन्ति क्षीरस्य चोदकस्य च। तेभिर्मे सर्वैः संस्त्रावैर्धनं सं स्त्रावयामसि॥ *(अथर्ववेद १.१५.१-४)*

इन चार मंत्रों से घी की आहुतियाँ देवें। ॐभूः स्वाहा। अग्नये इदं न मम। ॐभुवः स्वाहा। वायव इदं न मम। ॐस्वः स्वाहा। सूर्याय इदं न मम। ॐभूर्भुवः स्वः स्वाहा। प्रजापतये इदं न मम।

पूर्णाहुति होम संकल्प—हाथ में पुष्पाक्षत जल लेकर संकल्प करें। सर्वकर्म प्रपूरिणीं भद्र द्रव्यदां पूर्णाहुतिं होष्ये। स्त्रुचि द्वादशगृहीतमाज्यं तस्यां गंधपुष्पाक्षतालंकृताग्रं स्त्रुवं अधो बिलं निधाय स्त्रुक् स्त्रुवं शंखमुद्राय गृहीत्वा ऊर्ध्वस्तिष्ठन्। स्त्रुवा से स्त्रुक् में १२ बार घी डालकर उस पर नीचे बिल वाला गंधपुष्प एवं अक्षता से लङ्कृत स्त्रुव को रखें। दोनों को शंखमुद्रा से पकडकर खडे होंवे। मंत्र पाठ करें। घी की धारा गिरते रहना चाहिये।

आचमनं—ॐ ऋग्वेदाय स्वाहाः। ॐ यर्जूवेदाय स्वाहाः। ॐ सामवेदाय स्वाहाः। करौ प्रेक्षाल्यः प्राणायामः हस्तौ प्रेक्षाल्यः हस्ते जलाक्षत पुष्पाणि गृहित्वा ॐ स्वस्ति पूर्वोच्चारित ग्रह गुण विशेषण विशिशिष्टायाम शुभ पुण्य तिथौ अमुख गोत्रा अमुख नाम शर्मामः सर्व कर्म प्रपूर्णी भद्र द्रव्यदां पूर्णाहुतिं होष्ये मनसि पञ्चोपचार पूजनं करिष्ये। ॐलं पृथिव्यात्मने गंधं कल्पयामि। ॐहं आकाशात्मने पुष्पं कल्पयामि। ॐयं वाय्वात्मने धूपं कल्पयामि। ॐरं अग्न्यात्मने दीपं कल्पयामि। ॐअं अमृतात्मने नैवेद्यं कल्पयामि। ॐपं परमात्मने पञ्चोपचारपूजां समर्पयामि। उतिष्ठन्तु हस्ते पूर्णहुति निधायः (गृहित्वा) पूर्णाहुतिं होष्ये।

ॐ पूर्णादर्वे परा पत सुपूर्णा पुनरा पत। सर्वान् यज्ञान्त्संभुञ्जतीष्मूर्जं न आ भर स्वाहाः *(अथर्ववेद ३.१०.७)*

ॐ सं सं स्रवन्तु सिन्धवः सं वाताः सं पतत्रिणः। इमं यज्ञं प्रदिवो मे जुषन्तां संस्राव्येण हविषा जुहोमि॥

ॐ अभ्यर्चत सुष्टुतिं गव्यमाजिमस्मासु भद्रा द्रविणानि धत्त।
इमं यज्ञं नयत देवता नो घृतस्य धारा मधुमत् पवन्ताम्॥

मय्यग्रे अग्निं गृह्णामि सह क्षत्रेण वर्चसा बलेन।
मयि प्रजां मय्यायुर्दधामि स्वाहा मय्यग्निम्॥

इहैवाग्ने अधि धारया रयिं मा त्वा नि क्रन् पूर्वचित्ता निकारिणः।
क्षत्रेणाग्ने सुयममस्तु तुभ्यमुपसत्ता वर्धतां ते अनिष्टृतः॥

अन्वग्निरुषसामग्रमख्यदन्वहानि प्रथमो जातवेदाः।
अनु सूर्य उषसो अनु रश्मीननु द्यावापृथिवी आ विवेश॥

प्रत्यग्निरुषसामग्रमख्यत् प्रत्यहानि प्रथमो जातवेदाः।
प्रति सूर्यस्य पुरुधा च रश्मीन् प्रति द्यावापृथिवी आ ततान॥

घृतं ते अग्ने दिव्ये सधस्थे घृतेन त्वां मनुरद्या समिन्धे।
घृतं ते देवीर्नप्त्य१ आ वहन्तु घृतं तुभ्यं दुह्रतां गावो अग्ने॥ (अथर्ववेद ७.८२.१-६)

इति पठन् यवपरिमितां धारां संततां स्रुगग्रेण सशेषं हुत्वा। उपरोक्त मंत्रों को कहते हुए धान के बराबर मोटे घी की धारा से निरन्तर स्रुक् के अग्रभाग से होम करें। थोडा सा स्रुक् में बचे रहे।

पूर्णाहुति शेष होम—

यदाज्यधान्यां तत्संस्रावयति संस्रावभागास्तविषा बृहन्तः प्रस्तरेष्ठा बर्हिषदश्च देवाः।
इमं यज्ञमभि विश्वे गृणान्तः स्वाहा देवा अमृता मादयन्तामिति।

अग्नय इदं न मम। कहकर त्याग करें। ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा। विश्वेभ्यो देवेभ्य इदं न मम। कहकर संस्राव (शेष बचे घी का) होम कर त्याग करें।

वसोर्धारा—बडे यज्ञों में वसोर्धारा करना चाहिये। परिशिष्ट प्रकरण में इसे विस्तार से लिखा जायेगा। निरन्तर घी की धारा गिरते रहना चाहिये। इसमें प्रयुक्त मंत्रों का क्रम निम्नलिखित है।

ॐ सं सं स्रवन्तु सिन्धवः सं वाताः सं पतत्रिणः। इमं यज्ञं प्रदिवो मे जुषन्तां संस्राव्येण हविषा जुहोमि॥
इहैव हवमा यात म इह संस्रावणा उतेमं वर्धयता गिरः। इहैतु सर्वो यः पशुरस्मिन् तिष्ठतु या रयिः॥
ये नदीनां संस्रवन्त्युत्सासः सदमक्षिताः। तेभिर्मे सर्वैः संस्रावैर्धनं सं स्रावयामसि॥
ये सर्पिषः संस्रवन्ति क्षीरस्य चोदकस्य च। तेभिर्मे सर्वैः संस्रावैर्धनं सं स्रावयामसि॥ *(अथर्ववेद १.१५.१-४)*

यहाँ पर होम का पूर्णाहुति मार्जन विधान प्रकरण संपन्न हुआ। अथावभृथ स्थानीयं पूर्णपात्र जलेन मार्जनं कुर्यात। इसके बाद अवभृथ स्नान के स्थल पर पूर्ण पात्र जल से मार्जन करना चाहिये। पूर्वासादितं पूर्णपात्रं आस्तीर्णे दक्षिण पाणिना निधाय तत्रगङ्गादि पुण्यनीः स्मरन् दक्षिणपाणिना स्पृशन्। पहले स्थापित पूर्णपात्र को बिछाये गये बर्हिष् (कुशों) के ऊपर दाहिने हाथ से रखें दाहिने हाथ से छूकर वहाँ पर गङ्गादि पूण्यनदियों का स्मरण करें। पूर्णमसिपूर्णं मे

भूयाः सुपूर्णमसि सुपूर्णं मे भूयाः। सदसिसन्मेभूयाः सर्वमसि सर्वं मे भूयाः॥ अक्षितिरसिमामेक्षेष्ठाः।

उपरोक्त मंत्रों को पूर्णपात्र छूकर पाठ करं। कुशाग्रैः प्रागादि पञ्चदिक्षुजलं मंत्रैः यथालिङ्गं सिञ्चेत्। कुशा के अग्र भाग से पूर्वादि पाञ्च दिशाओं में प्रोक्षण करें। (पूर्व में) प्राच्यां दिशि देवा ऋत्विजो मार्जयन्ताम्। दक्षिणस्यां दिशि मासाः पितरो मार्जयन्ताम्। अप उपस्पृश्य। हाथ धो लेवें। (पश्चिम में) प्रतीच्यां दिशि ग्रहाः पशवो मार्जयन्तां। (उत्तर में) उदीच्यां दिशि आप ओषधिवनस्पतयो मार्जयन्ताम। (ऊपर में) ऊर्ध्वायां दिशि यज्ञः संवत्सरः प्रजापतिर्मार्जयताम्।

ब्रह्मा चार्य या यजमान के द्वारा मार्जन—

ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे॥ (अथर्ववेद १.५.१)

ॐ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः॥ (अथर्ववेद १.५.२)

ॐ तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः॥ (अथर्ववेद १.५.३)

सुमित्र्यान आप ओषधयः सन्तु। इतना कहकर मार्जन करें।

इतना कहकर नैऋत्य देश में कुशाग्र से जल छोडें। ततो ब्रह्मा यजमान वामपार्श्वे स्थित पत्यंजलौ तदभावे यजमानस्य अंजलौ पूर्णपात्रस्थं जलं आदाय जलं प्रत्यङ्मुखं निषिच्य। इसके बाद ब्रह्मा यजमान के अंजली में स्थित पूर्णपात्र के जल से प्रोक्षण करें।

ॐ माहं प्रजां परासिञ्चयानः सयावरीःस्थनं। समुद्रेवो निनयानि स्वंपाथें अपीथ। (श्रौत मन्त्र)

मंत्र को कहते हुए पाप नाश के लिए नीचे गिरे जल को समुद्र में गया मानकर हाथ में बचे शेष जल से अपना प्रोक्षण करें। ततः कर्ता अग्रेः वायव्ये स्थितः संस्थाजपेन उपतिष्ठते। इसके बाद यजमान अग्नि के वायव्य दिशा में खड़े होकर संस्था जप जो कि आगे बताया जा रहा है उसके हाथ जोडकर अग्नि की प्रार्थना करें।

ॐ अग्ने अच्छा वदेह नः प्रत्यङ् नः सुमना भव। प्र णो यच्छ विशां पते धनदा असि नस्त्वम्॥ *(अथर्ववेद ३.२०.२)*

त्वं नो अग्ने अग्निभिर्ब्रह्म यज्ञं च वर्धय। त्वं नो देव दातवे रयिं दानाय चोदय॥ *(अथर्ववेद ३.२०.५)*

अग्नये नमः। ॐ स्वस्ति।

श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां विद्यां बुद्धिं श्रियं बलं। आयुष्यं तेज आरोग्यं देहि मे हव्यवाहन॥ श्री यज्ञेश्वराय नमः।

कलश जलं मार्जन विधान—कलश जलेन मार्जनं करिष्ये। तदङ्गत्वेन पुनः पूजां करिष्ये। आवाहित देवताभ्यो नमः। ध्यायामि। ध्यानं समर्पयामि। आवाहयामि। आसनं समर्पयामि। स्वागतम्। पादारविन्दयोः पाद्यं पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोः अर्घ्य अर्घ्य समर्पयामि। मुखे आचमनीयं समर्पयामि। स्नानं समर्पयामि। वस्त्रं समर्पयामि। उपवीतं समर्पयामि। आभरणं समर्पयामि। गन्धं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि। पुष्पाणि समर्पयामि। धूपमाघ्रापयामि। दीपं दर्शयामि। अमृतोपहारं निवेदयामि। क्रमुकताम्बुलं समर्पयामि। नीराजनं समर्पयामि। मंत्रपुष्पं समर्पयामि। प्रदक्षिणा नमस्कारान् समर्पयामि। प्रसन्नार्घ्यं समर्पयामि। सर्वोपचारपूजां समर्पयामि। कलशों का पूजन करें।

ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवान् यज्ञेन बोधय। आयुः प्राणं प्रजां पशून् कीर्तिं यजमानं च वर्धय॥ *(अथर्ववेद १९.६३.१)*

आवाहित देवताभ्यो नमः। यथा स्नानं उद्वासयामि। कहकर आवाहितदेवताओं का अक्षत डालकर विसर्जन करें।

अथ मण्डप ईशाने ग्रहवेद्याः प्रागुदीच्यां शुचौ देशे संमृष्टे पञ्चरंगैः स्वस्तिकं कृत्वा चतुष्पदं दीर्घचतुरस्त्रं सोत्तरच्छदं पीठं निधाय तत्र उदगग्रान् आमूलान् हरितदर्भानास्तीर्य तत्र यजमानं परिहित नववस्त्रं प्राङ्मुखमुपवेश्य आचार्यः ऋत्विग्भिः सह मङ्गलवाद्यैः अभिषेक कुम्भोदकं पात्रान्तरे आदाय प्रत्यङ्मुखः तिष्ठन् स पलाशया औदुंबर्यार्द्रशाखया सहिरण्य

पवित्रया स कुश दूर्वा पल्लवया हस्तमन्तर्धाय उदक पृषद्भिरब्लिङ्गाभिः वारुणीभिः पावमानीभिः अन्याभिः च शान्ति पवित्र लिङ्गभिः ग्रहाभिषेकमन्त्रैः (सुरास्त्वा मिति) इमा आपः शिवतमा इति त्रि ऋचेन देवस्त्वेति च यजुषा भूर्भुवः स्वः इति व्याहृतिभिः। अभिषिञ्चेत्। *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

मण्डप के ईशान्य में ग्रहवेदी के ईशान्य में पवित्र देश में शुद्धीकृत भूमि पर पाँच रंगों से स्वस्तिक लिखें। चार पाँव वाला चौकार पीठ पर ऊपर वस्त्र बिछाकर उस पर हरे कुशाग्रों को उत्तर की ओर अग्र हो ऐसे बिछाना चाहिये। यजमान नवीन वस्त्रों को पहनकर उस पर पूर्वाभिमुख होकर बैठें। ऋत्विजों के साथ आचार्य मङ्गलवाद्यों को सुनते हुए कलशों के जल को एक अलग पात्र में निकाल लेवें। फिर पश्चिमाभिमुख खडे होकर पलाश, उदुम्बर, हिरण्यपवित्र कुश दूर्वा पल्लव इन सब का एक गुच्छे को हाथ में पकडकर जल के बिन्दुओं को जो कि वरुण देवता के प्रतीक है उन्हें वरुण देवताक मन्त्रों से, पवमान मन्त्रों से, इतर शान्ति मन्त्र, पवित्र मन्त्र, ग्रह मंत्र इमा आपः आदि तीन मंत्र देवस्यत्वा इस यजुर्वेद मंत्र से एवं व्याहृति मंत्रों का पाठ करते हुए अभिषेक (प्रोक्षण) करना चाहिये।

ॐ अम्बयो यन्त्यध्वभिर्जामयो अध्वरीयताम्। पृञ्चतीर्मधुना पयः॥

अमूर्या उप सूर्ये याभिर्वा सूर्यः सह। ता नो हिन्वन्त्वध्वरम्॥

अपो देवीरुप ह्वये यत्र गावः पिबन्ति नः। सिन्धुभ्यः कर्त्वं हविः॥

अप्स्व१न्तरमृतमप्सु भेषजम्।

अपामुत प्रशस्तिभिरश्वा भवथ वाजिनो गावो भवथ वाजिनीः॥ *(अथर्ववेद १.४.१-४)*

आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे॥ (अथर्ववेद १.५.१)

यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः॥ (अथर्ववेद १.५.२)

तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः॥ (अथर्ववेद १.५.३)

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् प्रसूत आ रभे॥ (अथर्ववेद १९.५१.२)

ॐ अप्सु ते राजन् वरुण गृहो हिरण्ययो मिथः। ततो धृतव्रतो राजा सर्वा धामानि मुञ्चतु॥ (अथर्ववेद ७.८३.१)

ॐ प्रास्मत् पाशान् वरुण मुञ्च सर्वान् य उत्तमा अधमा वारुणा ये।

दुष्वप्न्यं दुरितं नि ष्वास्मदथ गच्छेम सुकृतस्य लोकम्॥ (अथर्ववेद ७.८३.४)

सर्वादभुत् शान्तियाग में इस शमग्नि सूक्त का अधिक महत्व है। अतः। १५ मंत्रों से मार्जन करना चाहिए। शेष योगों में ३ या १५ मंत्रों से समयानुसार करनाा चाहिए।

अथ ग्रहमंत्राः—

ॐ उच्चा पतन्तमरुणं सुपर्णं मध्ये दिवस्तरणिं भ्राजमानम्।

पश्याम त्वा सवितारं यमाहुरजस्रं ज्योतिर्यदविन्ददत्रिः॥ (अथर्ववेद १३.२.३६)

ॐ सुतासो मधुमत्तमाः सोमा इन्द्राय मन्दिनः। पवित्रवन्तो अक्षरन्देवान्गच्छन्तु वो मदाः॥ (अथर्ववेद २०.१३७.४)

ॐ अग्निर्वासाः पृथिव्यसितज्ञूस्त्विषीमन्तं संशितं मा कृणोतु॥ (अथर्ववेद १२.१.२१)

ॐ कपृन्नरः कपृथमुद्दधातन चोदयत खुदत वाजसातये।
निष्टिग्र्यः पुत्रमा च्यावयोतय इन्द्रं सबाध इह सोमपतये॥ (अथर्ववेद २०.१३७.२)

ॐ बृहस्पतिर्नः परि पातु पश्चादुतोत्तरस्मादधरादघायोः।
इन्द्रः पुरस्तादुत मध्यतो नः सखा सखिभ्यो वरीयः कृणोतु॥ (अथर्ववेद ७.५१.१)

ॐ द्यौश्च म इदं पृथिवी च प्रचेतसौ शुक्रो बृहन् दक्षिणया पिपर्तु।
अनु स्वधा चिकितां सोमो अग्निर्वायुर्नः पातु सविता भगश्च॥ (अथर्ववेद ६.५३.१)

ॐ शं नो वातो वातु शं नस्तपतु सूर्यः।
अहानि शं भवन्तु नः शं रात्री प्रति धीयतां शमुषा नो व्युच्छतु॥ (अथर्ववेद ७.६९.१)

ॐ शं नो ग्रहाश्चान्द्रमसाः शमादित्यश्च राहुणा। श नो मृत्युर्धूमकेतुः शं रुद्रास्तिग्मतेजसः॥ (अथर्ववेद १९.९.१०)

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः॥ (अथर्ववेद २०.२६.६)

ॐ ग्रहाणामादिरादित्यो लोकरक्षणकारकः। विषमस्थान संभूतां पीडां हरतु ते रविः॥
रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रः सुधाशनः। विषमस्थान संभूतां पीडां हरतु ते विधुः॥
भूमिपुत्रो महातेजा जगतां भयकृत्सदा। वृष्टिकृदृष्टिहर्ता च पीडां हरतु ते कुजः॥
उत्पातरूपो जगतां चन्द्रपुत्रो महाद्युतिः। सूर्यप्रियकरो विद्वान् पीडां हरतु ते बुधः॥

देवमंत्री विशालाक्षः सदालोकहितेरतः। अनेक शिष्यसंपूर्णः पीडां हरतु ते गुरुः॥
दैत्यमंत्री गुरुस्तेषां प्राणदश्चमहामतिः। प्रभुस्ताराग्रहाणां च पीडां हरतु ते भृगुः॥
सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः। मंदचारः प्रसन्नात्मा पीडां हरतु ते शनिः॥
महाशिरामहावक्त्रो दीर्घदंष्ट्रो महाबलः। अतनुश्चोर्ध्व केशश्च पीडां हरतु ते तमः॥
अनेक रूप वर्णैश्च शतशोथ सहस्त्रशः। उत्पातरूपो जगतां पीडां हरतु ते शिखी॥ *(स्मृति सङ्ग्रह)*

यहाँ पर नवग्रह मार्जन मन्त्र पूर्ण हुए। अब देव मंत्रों से मार्जन करें।

सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्म विष्णु महेश्वराः। वासुदेवो जगन्नाथस्तथा संकर्षणणो विभुः॥
प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च भवंतु विजयायते। आखण्डलोग्नि र्भगवान् यमोवैनिर्ऋतिस्तथा॥
वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः। ब्रह्मणा सहिताः सर्वे दिक्पालाः पांतु ते सदा॥
कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रियामतिः। बुद्धिर्लज्जावपुःशान्तिः कान्तिस्तुष्टिश्च मातरः॥
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यः समागताः। आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुधजीव सितार्कजाः॥
ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुः केतुश्च तर्पिताः। देवदानवगंधर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः॥
ऋषयो मनवो गावो देवमातर एव च। देवपत्न्यो द्रुमानागादैत्याश्चाप्सरसां गणाः॥
अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च। औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्च ये॥
सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदानदाः। एतेत्वामभिषिञ्चंतु सर्वकामार्थ सिद्धये॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

श्री सूक्त से मार्जन करें। हिरण्यावर्णामिति पञ्चदशर्चस्य सूक्तस्य आनन्द कर्दम चिक्लीतेंदिरासुता ऋषयः श्रीरग्नि श्चेत्युभे देवते आद्यास्तिस्रो अनुष्टुभः चतुर्थी प्रस्तार पंक्तिः पञ्चमी षष्ठयौ त्रिष्टुभौ ततोष्टावनुष्टुभोंत्या प्रस्तार पंक्तिः मार्जने विनियोगः।

ॐ हिरंण्यवर्णां हरिंणीं सुवर्णरज॒तस्र॑जाम्। च॒न्द्रां हि॒रण्म॑यीं ल॒क्ष्मीं जात॑वेदो म॒ आ व॑ह॥
तां म॒ आ व॑ह जातवेदो ल॒क्ष्मीमन॑पगा॒मिनी॑म्। यस्यां॒ हिर॑ण्यं वि॒न्देयं॒ गामश्वं॒ पुरु॑षान॒हम्॥
अ॒श्वपू॒र्वां र॑थम॒ध्यां ह॒स्तिना॑दप्र॒मोदि॑नीम्। श्रियं॑ दे॒वीमुप॑ह्वये॒ श्री र्मा॑ दे॒वी जु॑षताम्॥
कां॒ सो॒स्मि॒तां हिर॑ण्य प्रा॒कारा॑मा॒र्द्रां ज्वल॑न्तीं तृ॒प्तां त॒र्पय॑न्तीम्। प॒द्मे॒स्थि॒तां प॒द्मव॑र्णां॒ तामि॒होप॑ह्वये॒ श्रिय॑म्॥
च॒न्द्रां प्र॑भा॒सां य॒शसा॒ ज्वल॑न्तीं॒ श्रियं॑ लो॒के दे॒व जु॑ष्टामुदा॒राम्। तां प॒द्मनी॑मीं॒ शर॑णा॒महंप्रप॑द्येऽलक्ष्मीर्मे॑ नश्यतां॒ त्वां वृ॑णे॥
आ॒दि॒त्यव॑र्णे तप॒सोऽधि॑जा॒तो व॑न॒स्पति॒स्तव॑ वृ॒क्षोऽथ॑ बि॒ल्वः।
तस्य॒ फला॑नि तप॒सा नु॑दन्तु मा॒यान्त॑रा॒ याश्च॑ बा॒ह्या अ॑ल॒क्ष्मीः॥
उपै॑तु मां दे॑वस॒खः की॒र्तिश्च॒ मणि॑ना स॒ह। प्रा॒दु॒र्भू॒तोऽस्मि॑ रा॒ष्ट्रेऽस्मिन् की॒र्तिमृ॑द्धिं द॒दातु॑ मे॥
क्षु॒त्पि॑पा॒साम॑लां ज्ये॒ष्ठाम॑ल॒क्ष्मीं ना॑शया॒म्यह॑म्। अभू॑ति॒मस॑मृद्धिं॒ च सर्वां॒ निर्णु॑द मे॒ गृहा॑त्॥
ग॒न्धद्वा॒रां दु॑राध॒र्षां नि॒त्यपु॑ष्टां करी॒षिणी॑म्। ई॒श्वरीं॑ सर्व॑भूता॒नां तामि॒होप॑ह्वये॒ श्रिय॑म्।
मन॑सः काम॒मामू॑तिं वा॒चः स॒त्यम॑शीमहि। प॒शू॒नां रू॒पम॑न्न॒स्य मयि॒ श्रीः श्र॑यतां॒ यशः॑॥
क॒र्दमे॑न प्र॑जा भू॒ता म॒यि सं॑भव॒ क॒र्दम। श्रियं॑ वा॒सय॑ मे कु॒ले मा॒तरं॑ प॒द्ममा॒लि॑नीम्॥
आपः॒ सृज॑न्तु स्नि॒ग्धानि॒ चिक्ली॑त व॒स मे गृ॒हे। नि च॑ दे॒वीं मा॒तरं॒ श्रियं॑ वा॒सय॑ मे कु॒ले॥

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥
आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्। सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह ॥
तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ॥

(ऋग्वेद पञ्चम मण्डलस्य परिशिष्टम्)

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

मार्जन विधान संपूर्ण—ततो यमजानः अभिषेक वस्त्रं आचार्याय दत्वा श्वेताम्बरं श्वेतचन्दनं श्वेतपुष्पाणि च धृत्वा अभिषेक शालातो अग्नि समीपं आगत्य आचम्य तीर्थ प्राशनं कुर्यात्। इसके पश्चात् अभिषेक के वस्त्र को आचार्य को देकर नूतन सफेद वस्त्र, सफेद चन्दन एवं सफेद फूलमाला धारण कर अभिषेक स्थल से अग्नि के पास जाकर आचमन करें एवं तीर्थ प्राशन करें।

आप इद्वा उ भेषजीरापो अमीवचातनीः। आपः विश्वस्य भेषजी स्तास्त्वा मुञ्चन्तु क्षेत्रियात् ॥ *(अथर्ववेद ३.७.५)*
आपो वै भेषजं भेषजमेवास्मै करोति। सर्वमायुरेति ॥ *(श्रुतिः)*

कहकर तीर्थ प्राशन करें। पुनः आचमन करें। **प्रधान कलश एवं उपकलश, नवग्रह धान्य एवं अन्य वस्तुओं का दान, गोदा**

प्रधान कलश दान—सवस्त्र प्रतिमं कुम्भं प्राप्तारिष्टनिवृत्तये। तुभ्यं दास्यामि विप्रेन्द्र यथोक्तफलदोभव ॥ *(स्मृति सङ्ग्रह)*

सदक्षिणाकं सवस्त्र प्रधान कलश दानं विष्णु प्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं संप्रददे। दत्तं न मम न मम।

उप कलशदान—सवस्त्र प्रतिमं कुम्भं प्राप्तारिष्ट निवृत्तये। तुभ्यं दास्यामि विप्रेन्द्र यथोक्त फलदोभव ॥ *(स्मृति सङ्ग्रह)*

सदक्षिणाकं सवस्त्र उपकलशदानं आवाहित देवता प्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं प्रददे। दत्तं न मम न मम।

सूर्य प्रीत्यर्थे गोधूम धान्य दान—गोधूमाः सर्वजन्तूनां बलपुष्टिविवर्धकाः। यस्मादेषां प्रदानेन स मे सूर्यः प्रसीदतु॥ *(स्मृति सङ्ग्रह)*

स दक्षिणाकं गोधूम दानं आदित्य प्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं सप्रददे। दत्तं न मम न मम।

चन्द्र प्रीतये तण्डुल दानम्—तण्डुलं वैश्वदेवत्यं पाकेनान्नं प्रयच्छति। यस्मादस्य प्रदानेन स मे चन्द्रः प्रसीदतु॥ *(स्मृति सङ्ग्रह)*

स दक्षिणाकं तण्डुलदानं चन्द्र प्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं संप्रददे। दत्तं न मम न मम।

अङ्गारक प्रीतये गुडाढक दानम्—आढकाः सर्वजन्तूनां बलपुष्टिविवर्धकाः। यस्मोदेशषां प्रदानेन स मे भौमः प्रसीदतु॥ *(स्मृति सङ्ग्रह)*

स दक्षिणाकं गुडाढक दानं अङ्गारक प्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं संप्रददे। दत्तं न मम न।

बुध प्रीतये मुद्गदानम्—मुद्गबीजानि वै यस्मात् प्रियाणि परमेष्ठिनः। यस्मादेषां प्रदानेन स मे तु॥ *(स्मृति सङ्ग्रह)*

स दक्षिणाकं मुद्गदानं बुध प्रीतिं कागयमानः तुभ्यमहं संप्रददे दत्तं न मम न मम।

बृहस्पति प्रीतये चणकदानम्—गोवर्धनाचलोद्धार समये हरिभक्षिताः। यस्मादेषां प्रदानेन स मे जीवः प्रसीदतु॥ *(स्मृति सङ्ग्रह)*

स दक्षिणचणकदानं बृहस्पति प्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं संप्रददे। दत्तं न मम न मम।

शुक्र प्रीतये निष्पावदानम्—विष्पावाः सर्वजन्तूनां बल पुष्टिविवर्धकाः। यस्मादेषां प्रदानने स मे शुक्रः प्रसीदतु॥ *(स्मृति सङ्ग्रह)*

स दक्षिणाकं निष्पावदानं शुक्र प्रीतिं कामयामानः तुभ्यमहंसंप्रददते। दत्त न मम न मम।

शनैश्चर प्रीतये तिलदानम्—तिलाः कश्यपसंभूताः तिलाः पापहराः शुभाः। तिलदान प्रदानेन स मे मन्दः प्रसीदतु॥ *(स्मृति सङ्ग्रह)*

स दक्षिणाकं तिलदानं शनैश्चर प्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं संप्रददे। दत्तं न मम न मम।

राहु प्रीतये माषदानम्—यस्मान्मधुवधे काले विष्णोर्देहसमुद्भवाः। यस्मादेषां प्रदानेन स मे राहुः प्रसीदतु॥ *(स्मृति सङ्ग्रह)*

स दक्षिणाकं माषदानं राहु प्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं संप्रददे। दततं न मम न मम।

केतु प्रीतये कुलित्थ दानम्—अग्निगर्भोद्भवाः सौम्याः केतु प्रियंकराः सदा।
कुलित्थाः सर्व पापघ्नाः अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥ *(स्मृति सङ्ग्रह)*

स दक्षिणाकं कुलित्थदानं केतु प्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं संप्रददे। दत्तं न मम न मम।

गोदान—गवामङ्गेषु तिष्ठन्ति भुवनानि चतुर्दश। यस्मादस्याः प्रदानेन स म देवः प्रसीदतु॥ *(स्मृति सङ्ग्रह)*

स दक्षिणाकं गोदानं प्रधान देवता विष्णुप्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं संप्रददे। दत्तं न मम नहरराय दान

हिरण्य दान—(आवाहित सभी देवताओं के प्रसन्नाता के लिए)

हिरण्य गर्भ गर्भस्थं हेम बीजं विभावसोः। अनन्त पुण्य फलदं अतः शान्तिं प्रयच्छमे॥ *(स्मृति सङ्ग्रह)*

स दक्षिणाकं हिरण्यदानं आवाहितानां देवानां प्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं संप्रददे दत्तं न मम न मम। आगे लिखने वाले दान ऐच्छिक है।

सूर्य के लिए—यज्ञस्य प्रतिष्ठासिद्धयर्थ श्रीसूर्य प्रीत्यर्थ इमां कपिलां अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे आचार्याय सदक्षिणां संप्रददे।

कपिले सर्वदेवानां पूजनीयासिरोहिणी। तीर्थ देवमयी यस्मादतः शान्तिं प्रयच्छमे॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)* दत्तं न मम न मम।

सोमाय शङ्खम्—पुण्यस्त्वं शंख पुण्यानां मंगलानां च मगलम्। विष्णुनाविधृतोनित्यमतः शान्तिं प्रयच्छमे॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

सदक्षिणाकं शंखदानं सोमप्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं संप्रददे। दत्तं न मम न मम।

भौमाय वृषम्—धर्मस्त्वं वृषरूपेण जगदानन्दकारकः। अष्टमूर्ते रधिष्ठान मतः पाहि सनातन॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

स दखिणाकं वृषदानं भौमप्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं संप्रददे। दत्तं न मम न मम।

बुधाय हिरण्यम्—हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेमबीजंविभावसोः। अनन्तपुण्यफलदं अतः शान्तिं प्रयच्छमे॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

स दक्षिणाकं हिरण्यदानं बुध प्रीतिं कामयमानः तुश्यमहं संप्रददे। ददतं न मम न मम।

गुरवे पीतवस्त्रम्—पीतवस्त्रयुगं यस्मा द्वासुदेवस्यवल्लभं। प्रदानस्तस्य वै विष्णोस्ततः शान्तिं प्रयच्छमे॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

स दक्षिणाकं पीतवस्त्रदानं बृहस्पति प्रीतिं कामयमानः तूभ्यमहं संप्रददे। दत्तं न मम न मम।

शुक्राय अश्वम्—विष्णुस्त्वमश्वरूपेण यस्मादमृतसंभवः। चन्द्रार्क वाहनं नित्यमतः शान्तिं प्रयच्छमे॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

स दक्षिणाकं अश्वदानं शुक्र प्रीतिं कामयमानंः तुभ्यमहं स्त्रप्रददे। दन्तं न मम न मम।

शनये कृष्णां गाम्—यस्मात्वं पृथिवी कृष्णा धेनुः केशव संनिभा। सर्वपापहरानित्यं अतः शान्तिं प्रयच्छमे॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

स दक्षिणाकं कृष्णां गां शनैश्चर प्रीतिं कामय मानः तुभ्यमहं संप्रददे। दत्तं न मम न मम।

राहवे लोहम्—यस्मादायसकर्माणि त्वदधीनानि सर्वदा। लाङ्गलान्यायुधादीनि तस्माच्छन्तिं प्रयच्छमे॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

स दक्षिणाकं लोह दानं राहु प्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं संप्रददे। दत्तं न मम न मम।

केतवे छाङ्गम्—यस्मात्वं छागयज्ञानां अङ्गत्वेन व्यवस्थितः। यानं विभवसोर्नित्यमतः शान्तिं प्रयच्छमे॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

स दक्षिणाकं छाग दानं केतु प्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं संप्रददे। दत्तं न मम न मम। ततः कर्ता अग्नेः वायव्ये स्थितः। संस्थाजपेन उपतिष्ठेत। इसके बाद यजमान अग्नि के वायव्य दिशा में खड़ें होकर संस्था जप जो बताया जा रहा है उससे हाथ जोडकर अग्नि की प्रार्थना करें।

ॐ अग्ने अच्छां वदेह नः प्रत्यङ् नः सुमना भव। प्र णो यच्छ विशां पते धनदा असि नस्त्वम्॥ *(अथर्ववेद ३.२०.२)*

त्वं नो अग्ने अग्निभिर्ब्रह्म यज्ञं च वर्धय। त्वं नो देव दातवे रयिं दानाय चोदय॥ *(अथर्ववेद ३.२०.५)*

अग्नये नमः। ॐस्वस्ति। श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां विद्यां बुद्धिं श्रियं बलं। आयुष्यं तेज आरोग्यं देहि मे हव्यवाहन॥

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम्। त्रेधामृतस्य चक्षणं त्रीण्यायूंषि तेऽकरम्॥ *(अथर्ववेद ५.२८.७)*

इति स्रुव बिलपृष्ठैनैशानीगतां विभूतिं गृहीत्वा। उपरोक्त मंत्र का पाठ करेत हुए स्रुवा के बिल के पिछले हिस्से के ईशान भाग से भस्म (होम का) को

निकालें। ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेरिति ललाटे (ललाट में भस्म लगायें) ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषं इति कण्ठं में भस्म लगायें) ॐ अगस्त्यस्य त्र्यायुषं इति नाभौ (नाभि में भस्म लगायें) ॐ यद्देवानां त्र्यायुषमिति दक्षिणस्कन्धे (दाहिने भुजा में भस्म लगायें) ॐ तन्मे अस्तु त्र्यायुषं इति वामस्कन्धे (बायें भुजा पर भस्म लगायें) *(यजुर्वेद ब्राह्मण)* ततः अग्निं परिसमुह्य पर्युक्ष्य परिस्तरणानि विसृज्य।

अग्नि का परिसमूहन एवं पर्युक्षण करें। इसके बाद जिस प्रकार से डाले थे उसी प्रकार पूर्व से उन परिस्तरणी को अग्नि में डाल दें (विर्जन)। हाथों में जल लेकर पूर्वदिश से प्रारम्भ करके प्रदक्षिणाकार में चारों ओर मार्जन करने की क्रिया परिसमूहन कहलाता है। पहले हाथ धो लें फिर जलयुक्त हाथ से पूर्वादि दिशाओं को स्पर्श करना चाहिये। पुनः हाथ धोकर इसी क्रिया को दो बार और करना चाहिये यह क्रिया परिसमूहन कहलाता है। अग्नेरैशानतस्त्रिरंभसा परिषेचनं। हाथ में जल लेकर ईशान्य से ईशान्य तक तीन बार जल से परिषिञ्चन करें।

अग्नि पूजन— ॐ उदेनमुत्तरं नयाग्ने घृतेनाहुत। समेनं वर्चसा सृज प्रजया च बहुं कृधि॥ *(अथर्ववेद ६.५.१)*

(पूर्व, आग्नेय, दक्षिण, नैऋत्य, पश्चिम, वायव्य, उत्तर, ईशान्य में पुष्पाक्षत से अग्निदेव का पूजन करें) इन मंत्रों को कहकर पूजन एवं नमस्कार करें। (घी में छाया देखकर दान देने का मंत्र)।

ॐ घृतं ते अग्ने दिव्य सधस्थे घृतेन त्वां मनुरद्या समिन्धे।
घृतं ते देवीर्नप्त्य१ आ वहन्तु घृतं तुभ्यं दुह्रतां गावो अग्ने॥ *(अथर्ववेद ७.८२.६)*
कामधेनु समुद्भूतं सर्वक्रतुषुसं स्थितं। देवानामाज्यमाहारः अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

सदक्षिणाकं आज्यदानं विष्णु प्रीतिं कामयमानः तुभ्यमहं संपददे। दत्तं न मम न मम। अनेन अवेक्ष्याज्य दानेन विष्णुः सुप्रीतो अस्तु इति अनु ग्रह्णन्तु। तथास्तु। आचरित याग संपूर्ण फलावाप्तिरस्तु इति भवन्तो ब्रुवन्तु। तथास्तु। पुनः पूजां करिष्ये। ध्यायामि। ध्यानं समर्पयामि। आवाहयामि। आसनं समर्पयामि। स्वागतम्। पादयोः पाद्यं पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोः अर्घ्यं अर्घ्यं समर्पयामि। मुखे आचमनं समर्पयामि। स्नानं समर्पयामि। वस्त्रं समर्पयामि।

उपवीतं समर्पयामि। आभरणं समर्पयामि। गंधं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि। पुष्पाणि समर्पयामि। धूपमाघ्रा पयामि। दीपं दर्शयामि। हुतशिष्ट आज्योपहारं निवेदयामि। क्रमुकताम्बूलं समर्पयामि। मङ्गल नीराजनं समर्पयामि। मंत्रपुष्पं समर्पयामि। प्रदक्षिणा नमस्कारान् समर्पयामि। प्रन्नार्घ्यं समर्पयामि। सवोपचारपूजां समर्पयामि। ब्रह्मा आचार्य एवं ऋत्विजों को दक्षिणा देवें।

हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेमबीजंविभावसोः। अनन्तपुण्यफलदं अतः शान्तिं प्रयच्छमे॥ *(ब्रह्मकर्म समुच्चय)*

आचरित याग संपूर्ण फलावाप्त्यर्थं यथांशं दक्षिणां प्रतिपादयामि। संपूर्ण फलावाप्तिरस्तु।

अग्नि विसर्जन—गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थानं परमेश्वर। यत्र ब्रह्मदयो देवाः तत्र गच्छ हुताशन॥ *(उद्वासनं सङ्ग्रह)*

कहकर पुष्पाक्षत डालकर अग्नि का विर्सजन करें। ग्रहपीठ सहित शेष सामग्रियों को आचार्य को दान दे देवें।

ब्रह्मार्पण विधान—यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपो होम क्रियादिषु। न्यूनं संपूर्णतां यातु सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥ *(सङ्ग्रह)*

ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविः ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्। ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना॥ *(भगवद्गीता)*

अनेन सक्रहमख सर्वाद्भुत शान्ति होम कर्मणा सपरिवारः भगवान् विष्णुः प्रीयताम्। यागमध्ये मंत्रतन्त्रविपर्यासादि सर्वदोष परिहारार्थं नामत्रय जपं करिष्ये। ॐअच्युताय नमः। ॐअनन्ताय नमः। ॐगोविन्दाय नमः। ॐहराय नमः। ॐमृडाय नमः। ॐशंभवे नमः। इति जपेत्। कर्म के अन्तें पवित्र का विर्जन करके दो बार आचमन करें। ॐतत् सत्। यथाशक्ति ब्राह्मण सुवासिनी भोजन करवायें।

सर्वाद्भुत शान्तियाग संपन्न हुआ।

षष्ठ दिन द्वितीय प्रहर सम्पन्न

परिशिष्ट

सर्वाद्भुत शान्ति याग के भेद—शास्त्रों में अनेक प्रकार के सर्वाद्भुत वर्णित है। कुछ आचार्यों ने उन्हें ८ वर्गों में विभक्त किया है। प्रत्येक वर्ग में उत्पात या अद्भुतों का वर्णन हैं। उनके देवताओं का वर्णन भी है। वर्तमान में ५२८ पृष्ठों का जो सर्वाद्भुत शान्ति याग का प्रयोग प्रेषित है, वह इन ८ में एक है। सभी में प्रयोग विधन यही रहेगा। प्रधान देवता एवं उनके नाम बदलते हैं।

१-प्रथम प्रकार (राजकीय उत्पात शमन)—

पुरुषः पुत्रदारं वा धनधान्यमथापि वा। निमित्तैर्यैर्विनश्येत शांन्तिं तत्र निबोधत॥ १॥
इन्द्रायुधं भवेद्रात्रौ दृश्यते यस्य कस्यचित्। दर्वी करे वा भिद्येत मणिः कुम्भस्तथैव च॥ २॥
छत्रं शय्यासनं चैव अन्यद्वापि स्वयं क्वचित्। स्त्री हन्याच्च स्त्रियं वापि गौरवघ्रेदुलूखलम्॥ ३॥
श्वा बिद्गामनड्वाहं कलिः संपद्यते कुले। गजवाजिनो म्रियन्ते विवादो राजकीयकः॥ ४॥
कुटुम्बमशुभं सर्वमैन्द्रण्येतानि निर्दिशेत्। शाम्यन्ति येन सर्वाणि निर्वपेत् पयया चरुम्॥ ५॥
समावाय घृतं तत्र आहुतिं पुहुयादिम्। इन्द्रभिद्देवतातये स्थालीपाकस्य होमयेत्॥ ६॥
इन्द्रः शचीपतिः शक्रो वज्रपाणिः सुरेश्वरः। सर्वाद्भुतानां शमनो महाव्याहृतयस्तथा॥ ७॥
हुत स्विष्टकृतं चैव चरुतन्त्रं समापयेत्। विमुक्तोत्पातदोषस्तु जीवेत्तु शरदः शतम्॥ ८॥

नोटः-परिशिष्ट पूरा सर्वाद्भुत सार सङ्ग्रह से लिया गया है।

विभिन्न कारणों से जब कोई व्यक्ति पुत्र, पत्नी, धन, धान्य आदि वस्तुओं को खो देता है॥ १॥ जब रात्रि में इन्द्रधनुष दिखाई दें, होम करने वाले स्रुक् एवं

स्रुव भिन्न हो तो, रत्न एवं पूजा के कलश भग्न हो तब ॥ २ ॥ राजछत्र, सोने वाला पलङ्ग, बैछने वाला आसन आदि अकारण यदि टूट जाय, स्त्री द्वारा स्त्री की हत्या होने पर, गाय घर के अन्दर आकर उलूखल को सूंघे तो ॥ ३ ॥ कुत्तो के द्वारा साराड के भत होने पर, वंश में झगड़ा होने पर, विना कारण हाथी एवं घोडें मृत हो, राजकीय विवाद हो ॥ ४ ॥ कुटुम्ब में अशुभ हो उपरोक्त सभी उपद्रवों के शमनकर्ता इन्द्र हैं। उसके लिए दूध से बनाया गया चरु से होम करना चाहिये। उससे उपरोक्त उपद्रवों की शान्ति होती है। ५५ ॥ दूध में बने चरु में घी डालें। "इन्द्र भिद्देवतातये" इस मंत्र से होम करं ॥ ६ ॥ यह याग विशेषतः राजकीय घर्षण, एवं विवाद से जब देश को कष्ट हो तब करना चाहिये। विधान सभी पूर्वोक्त ही हैं। वहाँ पर प्रधान देवता विष्णु है यहाँ पर प्रधान देवता इन्द्र है। अत्यल्प परिवर्तनों के साथ इस याग को संपन्न कर सकते हैं। जिस प्रकार विष्णु के पाँच नाम मंत्र थे। उसी प्रकार इस विधान में, शचीपति, शक्र, वज्रपाणि एवं सुरेश्वेर नाम मंत्र है। इसके साथ सर्वाद्भुत शमन नाम मंत्र भी लेवें। महाव्याहृतियों से आज्य होम करें ॥ ७ ॥

स्विष्टकृत् होम करके याग को पूर्ण करना चाहिये। इससे उत्पात दोष निवारण होकर प्रजा १०० साल तक जीवित रहते हैं।

२-द्वितीय प्रकार (जल सम्बन्धी उत्पात शमन)—

उद्दीपिका गृहे यस्य वल्मीका मधु जालकम्। अब्जानां मणिके शब्दे तैलं स्थीयत एव वा ॥ १ ॥
अशुभा विकृतिर्दध्नां दुग्धानां वा यदा भवेत्। अकस्माच्च प्ररोहेयुर्बीजानि कृमयस्तथा ॥ २ ॥
कार्यो वरुणायागस्तु वारुणीविधिपूर्वकः। उदुत्तमं प्रधानं स्यात्पञ्चाज्याहुतयस्तथा ॥ ३ ॥
वरुणः पाशपाणिश्च यादसां पतिरेव च। शेषं तु पूर्ववच्चैव चरुतन्त्रं समापयेत् ॥ ४ ॥
हुत्वा स्विष्टकृतं चैव चरुतन्त्रं समापयेत्। विमुक्तोत्पातदोषस्तु जीवेत्तु शरदः शतम् ॥ ५ ॥

घरों में अनावश्यक उद्दीपन हो, घर में वल्मीक बनें तो, घर में शहद की मक्खी छत्ता बनाये तो, शंख अपने आप शब्द करें तो, तेल न बहे तो ॥ १ ॥ अकारण दूध एवं दहि में विकार उत्त्पन्न हो तो, अकाल में अपने आप बीजों से अंकुर निकले तो, घर मे कृमियों का उत्पत्ति हो तो ॥ २ ॥ ये सब वरुण

सम्बन्धी उत्पातों के पूर्व सूचनायें हैं। ऐसे स्थिति में वरुण याग को विधिपूर्वक संपन्न करें। ''उदुत्तमं'' मंत्र से चरु होम करें। पाँचच आज्याहुतियाँ नाम मंत्र से देवें॥ ३॥ पाँच नाम मंत्र वरुण, पाशपाणि, यादसांपति, प्रचेता, सर्वाद्भुतशमन है। प्रयोग विधान पूर्ववत् है। चरु होम करें॥ ४॥ इस याग से उत्पातों का शमन होकर सौ साल तक जीवित रहते हैं॥ ५॥

३-तृतीय विधान (मृत्यु सम्बन्धी उत्पात निवारण)—

गृहे यस्य पतेद्गृध्र उलेको वा कथञ्चन। कपोतः प्रविशेच्चैव जीवा वारण्यसंभवाः॥ १॥
धुर्यौ च पततो युक्तौ गोस्त्रीजन्म च वैकृतम्। जायन्ते यमलान्येव घोरः स्वप्नश्च दृश्यते॥ २॥
अभिद्रवन्ति रक्षांसि यत्र चैव कुमारकान्। उन्निद्रकोतिनिद्रो वा अत्यल्पमतिभोजनम्॥ ३॥
आलस्यं चैव मेतेषां देवता यम उच्यते। नाके सुपर्णं इत्येतत्स्थालीपाकस्य होमयेत्॥ ४॥
यमः प्रतपतिश्चैव दण्डपाणिस्तथेश्वरः। शमनः सर्वाद्भुतानां महाव्याहृतयस्तथा॥ ५॥
हुत्वा स्विष्टकृतं चैव चरुतन्त्रं समापयेत्। विमुक्तेत्पात दोषस्तु जीवेत्तु शरदः शतम्॥ ६॥

घर में गीध, उल्लू, कबूतर, एवं जङ्गली जानवर आयें तो॥ १॥ गाडी में बंधे दोनों बैल एक साथ गिरें तो, विकार गाय एवं स्त्री पैदा हो तो, बार-बार जुडवें पैदा हो तो, बुरे स्पप्न आयें तो॥ २॥ बच्चे भयभीत हो तो (बालग्रहादि से),वेग विना नींद के या अत्यधिक नींद से युक्त हो, अत्यल्प भोजन या अत्यधिक भोजन करें तो॥ ३॥ अधकता हो तो, उपरोक्त सभी उत्पात मृत्यु संबन्धी हैं, अतः इनके प्रधान देवता यम है। नाके सुपर्ण इस मंत्र से चरु होम करें। विधान पूर्ववत् है॥ ४॥ पाँच नाम मंत्र यम, प्रतपति, दण्डपाणि ईश्वर एवं सर्वाद्भुत शमन है। महा व्याहृतियों से आज्य होम करें॥ ५॥ स्विष्टकृत् होम करके याग को पूर्ण करना चाहिये। इससे उत्पात शमन होकर सौ साल तक जीवित रहते हैं।

४-चतुर्थ प्रकार (अग्नि संबंधी उत्पात निवारण)—

अनग्निरुत्थितो यस्य धूमो वापि गृहे क्वचित्। आमं वा ज्वलते मांसं भवेयुर्विस्फुलिङ्गकाः॥ १॥
छत्रध्वजपताकाश्च ज्वलन्ते तोरणानि च। आसनं चैव शय्या च वस्त्राणि कुसुमानि च॥ २॥
हस्त्यश्वानां च पुच्छानि वर्षत्यङ्गारवर्षणम्। अकाले च दिशं दाहमोषधीनां च पाचनम्॥ ३॥
हस्तिन्यश्चैव माद्यन्ते अग्निरूपं तदद्भुतम्। अग्निं दूतं वृणीमहे स्थालीपाकस्य होमयेत्॥ ४॥
अग्निर्हिरण्यपतिश्च अर्चिष्पाणिस्तथेश्वरः। शमनः सर्वाद्भुतानाम् महाव्याहृतयस्तथा॥ ५॥
हुत्वा स्विष्टकृतं चैव चरुतन्त्रं समापयेत्। विमुक्तोत्पातदोषस्तु जीवेत्तु शरदः शतम्॥ ६॥

अग्नि के विना हि जब घर में घुआँ उठें, बिना पकाये ही कच्चा मांस पक जाय, अग्नि में अधिक चिङ्गारियाँ निकालें॥ १॥ छत्र, ध्वज, पताका, तोरण, बैठने वाला आसन, बिस्तर, वस्त्र एवं फूल अपने आप जल जायें तो॥ २॥ हाथी एवं घाडां के पूँछ जल उटें, आकाश सं अङ्गारों की वर्षा हो, अकाल में दिशाओं में ज्वालायें उत्पन्न हो, औघधि सस्य समय से पहले पक जायें तो॥ ३॥ हथिनियों को मदजल स्राव हो, ये सब अग्नि के अद्भुत रूप हैं। अग्निं दूतं वृणीमहे इस मंत्र से चरु होम करें। विधान पूर्ववत् है॥ ४॥ पाँच नाम मंत्र अग्नि, हिरण्यपति, अर्चिष्पाणि, ईश्वर एवं सर्वाद्भुतशमन है। महाव्या से आज्य होम करें॥ ५॥ स्विष्ट होम करके या को पूर्ण करना च इससे अग्नि सम्बन्धी उत्पाश्त शमन होकर प्रजा सौ साल तक जीवित रहते हैं।

५-पञ्चम प्रकार (आर्थि उत्पात शम)—(इस संपूर्ण ग्रन्थ में इसी प्रकार का प्रयोग है)

सुवर्णं रजतं वज्रं वैडूर्यं मौक्तिकानि च। प्रवालवस्त्रनाशश्च भिक्षाणां च विपर्ययः॥ १॥
आरम्भाश्च विपद्यन्ते न सिद्धिः कर्मणामपि। चरुवैश्रवणस्तत्र अभित्यं देवमृक्स्मृता॥ २॥
विष्णुो यक्षपतिरर्थपाणिस्तथेश्वरः। शमनः सर्वाद्भुतानां महाव्याहृतयस्तथा॥ ३॥

हुत्वा स्विष्टकृतं चैव चरुतन्त्रं समापयेत्। विमुक्तोत्पातदोषस्तु जीवेत्तु शरदः शतम्॥ ४॥

जब आर्थिक समृद्धि के संकेत सोना, चाँदी, वज्र, वैडूर्य, मोती, प्रवाल एवं वस्त्रों का नाश होता है। दुर्भिक्ष (अकाल) हो जाता है॥ १॥ प्रारम्भ किये गये कर्म विपत्ति में फंस जाते हैं, किये गये कर्मो का फल नहीं मिलता है ऐसी स्थिति में अभित्यं देव इस मंत्र से विष्णु प्रीति के लिए चरु होम करना चाहिये॥ २॥ पाँच नाम मंत्र विष्णु, सक्षपति (यक्षाधिपति), अर्थंपाणि (हिरण्यपाणि) ईश्वर एवं सर्वाद्भुत शमन हैं। महाव्याहृतियों से आज्य होम करें॥ ३॥ स्विष्ट होम करके याग को पूर्ण करना चाहिये। इससे कुबेर देवता प्रसन्न होकर अर्थविषयक उत्पातों का निवारण कर प्रजा सौ साल तक जीवित रहते हैं।

६-छटा प्रकार (युद्ध विषयक उत्पात निवारण)—

अथ यस्य स्वनक्षत्रे उल्का निर्घात एव वा। राहुर्ग्रसति चन्द्रार्कौ कबन्धं दर्पणे भवेत्॥ १॥
पतेत्स्वयं वा मुसलं देवता वा कथञ्चन। उन्मीलते चैव यदा तथा चापि निमीलते॥ २॥
प्रछिद्यते च यदि वा तथा वापि प्रकम्पते। प्रयातो वापि दृश्येत प्रतिस्त्रोतो नदी वहेत्॥ ३॥
विमले नैवार्कछाया प्रतीपा वापि दृश्यते। परिवेषस्त्वनभ्रेषु दृश्यते चन्द्र सूर्ययोः॥ ४॥
कोशात्खड्ग निर्गिरन्ते तूणाच्चैव तु सायकाः। अनाहतानि वाद्यन्ते नदन्ते शब्दमातुरम्॥ ५॥
चरुणा वैष्णवेनैषां यागः कर्तव्य एव तु। इदं विष्णुः प्रधान स्यात्पञ्चाज्याहुतयस्तथा॥ ६॥
सर्वभूतपतिर्विष्णुश्चक्रपाणिस्तथेश्वरः। शमनः सर्वाद्भुतानां महाव्याहृतयस्तथा॥ ७॥
हुत्वा स्विष्टकृतं चैव चरुतन्त्रं समापयेत्। विमुक्तोत्पातदोषस्तु जीवेत्तु शरदः शतम्॥ ८॥

जिनके जन्म नक्षत्र में उल्कापात हो, राहुग्रस्त सूर्य ग्रहण या चन्द्रग्रहण हो, दर्पण में देखने पर सि न दिखें॥ १॥ दिवार आदि के सहारे खड़े किये मूसल

स्वयं गिरे, देवता प्रतिमा स्वयं गिरे, देखने पर आँख खोलते हुए या बंद करते जैसे भास हो॥ २॥ देवता प्रतिमा का कोई भाग अपने आप खण्डित हो जाय या काँपने लगे, प्रतिमा चलायमान दिखे, नदी ऊपर की ओर (उल्टी) बहने लगे॥ ३॥ आकाश निर्मल रहने पर भी सूर्य की छाया न दिखें, या विपरीत दिखाई दें, बादल के बिना भी सूर्य एवं चन्द्र की मण्डल दिखाई पडें॥ ४॥ म्यान से तलवार अपने आप बाहर निकले, तुणीर से बाण अपने आप बाहर , वाद्य बिना बजायें ही शब्द करने लगे, मन को आतंकित करने वाले शब्द सुनाई पडें॥ ५॥ ऐसी स्थितियाँ शुद्ध निमित्तका कहलाते हैं। ऐसी स्थिति में चरु होम से विष्णुयाग संपन्न करना चाहिये। इदं विष्णु इस मंत्र से प्रधान चरु होम करें। पाँच आज्याहुतियाँ देवें॥ ६॥ पाँच नाम मंत्र सर्वभूतपति, विष्णु, चक्रपाणि, ईश्वर, सर्वाद्भुत शमन है। महाव्याहृतियों से आज्य होम करें॥ ७॥ स्विष्टकृत् होम करके याग को पूर्ण करना चाहिये। इससे भगवान् विष्णु प्रसन्न होकर उत्पातों का निवारण कर प्रजा सौ साल तक जीवित रहते हैं।

७-सप्तम प्रकार (वायु सम्बन्धी उत्पात निवारण)—

अतिवातो यत्र भवेद्रूपं वा यत्र वैकृतम्। खरकरभमहिषा वराहा व्याघ्रसिंहकाः॥
गृध्राश्च तथा योमायुः कृकलासा वदन्ति च। मांसं पेशं च रुधिरं पांसुवृष्टिस्तथैव च॥
वायुरूपमिदं सर्वमद्भुतंपरिकीर्तितम्। वात आ वातु भेषजं वायवा यहि दर्शतेति स्थाली पाकस्य होमयेत्॥
वायुर्महान्नभपतिर्वज्रपाणिस्तथेश्वरः। शमनः सर्वाद्भुतानां महाव्याहृतयस्तथा॥
हुत्वा स्विष्टकृतं चैव चरुतन्त्रं समापयेत्। विमुक्तोत्पातदोषस्तु जीवेत्तु शरदः शतम्॥

जब आँधी आये, प्रजा जनों का मुख विकृत हो जाय, गधा, हाथी, भैंस, सुअर, बाघ, शेर, गीध, सियार जङ्गली चिपकली आदि चिल्लाने लगे तो, आकाश से मांस रक्त एवं धूली की वर्षा हो॥ १-२॥ यह सब वायु सम्बन्धी उत्पात कहताले हैं, युद्ध के पूर्व में भी यह उत्पात दिखाई पडते हैं। इनके निवारण के लिए वात आ वातु भेषजं एवं वायवा याहि दर्शत इन मंत्रों से चरु होम करें। पाँच आजयाहुतियाँ देवें॥ ३॥ पाँच नाम मंत्र वायु महान्, नभपति, वज्रपाणि

ईश्वर एवं सर्वाद्भुत शमन है। महाव्याहृतियों से आज्य होम करें॥ ४॥ स्विष्टकृत होम करके याग को पूर्ण करना चाहिये। इससे भगवान् वायु प्रसन्न हाकर उत्पातों का निवारण कर तक जीवित रहते हैं।

८-अष्टम प्रकार—

अथ चेदन्यशाखासु कर्ताभवति वेदवित्। पक्त्वा स ऋग्यजुः साम्नां शतमात्रं समाहितः॥
गायत्र्यष्टशतं जप्त्वा यजमानः समाहितः। वाचयेत्तमुपाध्यायं वस्त्रेण कनकेन वा॥
दृष्टं चैवाद्भुतं यस्मिन् तच्चापि प्रतिपादयेत्। एतास्तु दक्षिणाः सर्वाः शक्तियुक्तो न हापयेत्॥
यजमानस्तत् सुतो वा यः स्वयं कर्तुमर्हति। ब्राह्मणाय विशेषेण दद्यात्तां दक्षिणां शुभाम्॥
जप्त्वाथर्वशिरश्चैव ब्राह्मणान् स्वस्ति् वाचयेत्। शक्त्याथ भोजनं चैव कुर्याद्विप्रेषु पूजनम्॥
एतदेवं समाख्यातं अद्भुतानां विशोधनम्। चतुर्णामपि वर्णानां यः कुर्याच्छ्रद्धयान्वितः॥
मरणं न भवेत्तस्य न दुःखं न दरिद्रता। सिद्धयन्ति सर्वकार्याणि धर्मे चास्य मतिर्भवेत्॥
एतत्पुण्यं पवित्रं च देवतायागपूजनम्। सर्वशान्तिकरं चैव प्रतिपुरुषं निबोधत॥

यह सामान्य व्यक्तियों के द्वारा करने वाला उत्पात निवारण विधान एवं फलश्रुति है। उपरोक्त यागों को व्यक्ति के लिए, परिवार के लिए, राज्य के लिए, राष्ट्र के लिए एवं समस्त विश्व के लिए भी कर सकते हैं।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः